ग्रामीण-नगरीय जनसंख्या में प्रजननता विभिन्नता

[झाँसी उ0 प्र0 जिले के सन्दर्भ में एक विशिष्ट अध्ययन]

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

को

ग्रामीण अर्थशास्त्र एवं सहकारिता विषय

में

पी-एच. डी. डिग्री

हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

प्रस्तुत कर्त्री

अलका सक्सेना

[शोध छात्रा]

शोध निर्देशक

डा० श्रीराम अग्रवाल

[उपाचार्य एवं विभागाध्यक्ष]

ग्रामीण अर्थशास्त्र एवं सहकारिता विभाग

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

झाँसी [उ. प्र.]

मैं बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी के पुस्तकालयाध्यक्ष को धन्यवाद देती हूँ क्योंकि उन्होंने उपलब्धतानुसार सामग्री को उपलब्ध कराने में सहयोग प्रदान किया है।

मैं अपने पूज्य पापा श्री विनोद कुमार व मम्मी श्रीमती कीर्ति को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहती हूँ जिनका शोध कार्य को पूर्ण करने में प्रत्येक स्तर पर सहयोग प्राप्त हुआ इसके अतिरिक्त श्री बी० बी० सिंह, श्रीमती प्रभा जी व अपने पति श्री मनोज बरतरिया की तहे दिल से कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे हमेशा कार्य पूर्ण करने हेतु भावनात्मक रूप से प्रोत्साहित किया।

श्री राज श्रीवास्तव, श्रीमती अल्पना श्रीवास्तव एवं डा० पुष्पा जौहरी के अतिरिक्त प्रिय भैया आशीष, छोटी बहिन अन्जली व आ[illegible] अंकित को धन्यवाद देना जिनके पूर्ण [illegible]

परिश्रम, एकाग्रता [illegible] लगन से इस सहयोग प्रदान किया।

[illegible] 14/10/93

(अल्का सक्सेना)

शोध छात्रा

"विषय - सूची"

=:-:=:-:=:-:=:-:=:-:=:-:=:-:=:-:=:-:=:-:=:-:=:-:=:-:=

सारणी अनुक्रमणिका

सारणी क्रमांक		नाम	पृष्ठ सं०
3.8	:	जनपद में विभिन्न फसलों का प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन ।	- 174
3.9	:	जनपद में वृहत / मध्यम उद्योगों की स्थिति।	- 176-177
4.1	:	भारत की जनसंख्या का भौगोलिक विभाजन ।	- 193
4.2	:	भारत में क्षेत्रीय आधार पर जनसंख्या का घनत्व।	- 193-194
5.1	:	सर्वेक्षित बूढा के ग्रामीण परिवारों का जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में जन्म दिये बच्चों की संख्या ।	- 232-233
5.2	:	सर्वेक्षित ग्राम आरो के ग्रामीण परिवारों का जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में की संख्या ।	- 239-240
5.3	:	सर्वेक्षित ग्रा[illegible] के ग्रामीण[illegible] जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग जन्म दिये बच्चों की संख्या ।	- 241-242

" अध्याय - 1 "
==========

आर्थिक विकास, जनसंख्या और प्रजननता विभिन्नतायें

आर्थिक विकास का अर्थ भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से स्पष्ट किया है। अतः इन सभी विद्वानों को तीन वर्गों में रख सकते हैं। (1) प्रथम वर्ग में उन विद्वानों को रखते हैं जो राष्ट्रीय आय में दीर्घकालीन एवं लगातार वृद्धि को आर्थिक विकास का प्रतीक मानते हैं। इस वर्ग के विद्वानों में मेयर एवं बाल्डविन पाल एलबर्ट, कुजनेट्स आदि आते हैं। (2) द्वितीय वर्ग में उन विद्वानों को रखते हैं जो प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को आर्थिक विकास की प्रक्रिया मानते हैं। इस वर्ग के विद्वानों में विलियमसन एवं बट्रिक, हार्वे लिबिन्सटीन, लीविस, क्राउन रोस्टोव, बेन्जामिन, हिगिंस आदि आते हैं। (3) तृतीय वर्ग में उन विद्वानों को रखते हैं जो आर्थिक विकास की धारणा को और आर्थिक व्यापक अर्थ में प्रयोग करते हैं और वे जन-साधारण के सामान्य कल्याण में वृद्धि को ही आर्थिक विकास का प्रतीक मानते हैं। इस वर्ग के विद्वानों में ब्राइट सिंह, संयुक्त राष्ट्र संघ का औकन एवं रिचर्डसन आदि आते हैं। इन सभी वर्गों एवं विचार धाराओं के आधार पर आर्थिक विकास की प्रमुख परिभाषाएं इस प्रकार हैं :-

1.1) राष्ट्रीय आय में वृद्धि सम्बन्धी परिभाषाएं :-

मेयर एवं बाल्डविन के मत में, "आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक अर्थ-व्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में दीर्घकाल में वृद्धि होती है।"[1]

---

1. मेयर एवं बाल्डविन : इकनॉमिक डेवलपमेन्ट पे.3

पाल एलबर्ट के अनुसार, "किसी देश के द्वारा अपनी वास्तविक आय को बढ़ाने के लिए सभी उत्पादक साधनों का कुशलतम प्रयोग आर्थिक विकास कहलाता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं में तीन बातों पर जोर दिया गया है ‖1‖ आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है इसका अर्थ यह है कि आर्थिक विकास किसी उद्देश्य को प्राप्त करने का एक साधन है ‖2‖ आर्थिक विकास के अन्तर्गत लम्बे काल में राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है ‖3‖ राष्ट्रीय आय को बढ़ाने के लिए देश में उपलब्ध सभी उत्पादन साधनों का कुशलतम उपयोग किया जाता है।

इन परिभाषाओं से यह ज्ञात नहीं होता है कि प्रति व्यक्ति आय घट रही है या बढ़ रही है यह सम्भव है कि शुद्ध राष्ट्रीय आय बढ़ने पर भी जनसंख्या बढ़ने से प्रति व्यक्ति आय कम होती जाये। ऐसी स्थिति में आर्थिक विकास नहीं कहा जा सकता है।

1·2‖ प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि सम्बन्धी परिभाषाएं :-

रोस्टोव के अनुसार, "आर्थिक विकास एक ओर पूँजी व कार्यशील शक्ति में वृद्धि की दरों के बीच तथा दूसरी ओर जनसंख्या वृद्धि की दर के बीच एक ऐसा सम्बन्ध है जिससे प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि होती है।"[2]

हार्वे लिबिन्सटीन के मत में, "विकास में किसी अर्थ-व्यवस्था के प्रति व्यक्ति वस्तुओं एवं सेवाओं को उत्पादन करने की शक्ति में वृद्धि करना निहित है।"[3]

2· डब्ल्यू·डब्ल्यू· रोस्टोव; प्राब्लम्स ऑफ इकनामिक ग्रोथ पे· 10

3· हार्वे लिबिन्सटीन : इकनामिक बेकवार्डनेस एण्ड इकनामिक ग्रोथ पे· 10

विलियम्सन एवं बट्रिक की दृष्टि में, "आर्थिक विकास या वृद्धि से अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसमें किसी देश या क्षेत्र के निवासी उपलब्ध साधनों का प्रयोग करके प्रति व्यक्ति वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में निरन्तर वृद्धि करते हैं।"[4]

ब्राउन के शब्दों में, "आर्थिक विकास किसी अर्थ व्यवस्था में आर्थिक वृद्धि की प्रक्रिया को बताता है। इस प्रक्रिया का केन्द्रीय उद्देश्य अर्थ-व्यवस्था के लिए प्रति व्यक्ति वास्तविक आय का ऊँचा और बढ़ता हुआ स्तर प्राप्त करना होता है।"[5]

लीविस के अनुसार, "आर्थिक विकास प्रति व्यक्ति उत्पादन की मात्रा में वृद्धि को बताता है प्रति व्यक्ति उत्पादन-वृद्धि एक और उपलब्ध प्राकृतिक साधनों पर एवं दूसरी ओर मानवीय व्यवहार पर निर्भर है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से तीन निष्कर्ष निकलते हैं : {1} आर्थिक विकास में प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि होती है। {2} यह उत्पादन वृद्धि निरन्तर होती रहती है। यदि यह वृद्धि रुक जाती है तो इसको आर्थिक विकास नहीं कहा जा सकता है। {3} आर्थिक विकास के अन्तर्गत उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का विदोहन होता है।

यह परिभाषाएं भी उचित नहीं मानी जाती है। क्योंकि इसमें एक ही पक्ष, प्रति व्यक्ति, आय में होने वाले परिवर्तन को ही आर्थिक विकास माना गया है। आर्थिक विकास में इसके अतिरिक्त अन्य तत्व भी होते हैं।

---

4. विलियम्सन एण्ड बट्रिक : प्रिन्सपल्स ऑफ इकानामिक डेवलपमेन्ट पै.7
5. डब्ल्यू. ब्राउन : प्राब्लम्स ऑफ इकानामिक ग्रोथ पै.8।

1.3) सामाजिक कल्याण से वृद्धि सम्बन्धित अवधारणायें

बी० सिंह के अनुसार, "यह एक बहुमुखी धारणा है इसके अन्तर्गत केवल मौद्रिक आय में ही वृद्धि शामिल नहीं है, बल्कि वास्तविक आदतें, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिक आराम के साथ-साथ उन समस्त सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में सुधार भी शामिल है जो एक पूर्ण और सुखी जीवन का निर्माण करती है।"[6]

संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतिवेदन के अनुसार, "विकास मानव की केवल भौतिक आवश्यकताओं से ही नहीं, बल्कि उसके जीवन की सामाजिक दशाओं की उन्नति से भी सम्बन्धित होना चाहिए। अतः विकास में सामाजिक सांस्कृतिक संस्थागत तथा आर्थिक परिवर्तन भी शामिल है।"

ओकेन एवं रिचर्ड्सन के मत में, "आर्थिक विकास से अर्थ वस्तुओं और सेवाओं को अधिक से अधिक मात्रा में उपलब्ध करने से है जिससे कि जनसाधारण के भौतिक कल्याण में निरन्तर व दीर्घकालीन उन्नति हो सके।"

इस वर्ग के विद्वानों का कहना है कि आर्थिक विकास में आय वृद्धि के साथ-साथ सामाजिक कल्याण में भी उन्नति होना चाहिए।

यह अवधारणाएं भी संकुचित परिभाषाएं मानी जाती है। इनमें केवल सामाजिक उन्नति की बात कही गयी है जबकि आर्थिक विकास में अनेक पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।

---

6. बी० सिंह, इकनामिक डेवलपमेन्ट पे.5

अमेरिका की संस्था ओवरसीज डेवलपमेन्ट काउन्सिल आर्थिक विकास का अर्थ {फिजिकल क्वालिटी ऑफ लाइफ इन्डेक्स} में वृद्धि से लगाती है। इस संस्था द्वारा इस सूचकांक के तीन तत्वों को शामिल किया गया है: {1} प्रत्याशित आयु {2} बच्चों की मृत्युदर, {3} साक्षरता । जिस देश की प्रत्याशित आयु सबसे अधिक होती है उसे 100 अंक दिये गये हैं। इसी प्रकार मृत्यु दर व साक्षरता के सम्बन्ध में भी अंक दिये गये हैं। जिस देश की प्रत्याशित आयु सबसे कम होती है। यदि किसी देश के इस औसत सूचकांक में वृद्धि होती रहती है तो इसे आर्थिक विकास मानते हैं और यह मानते हैं कि भौतिक गुणों में वृद्धि हो रही है।

आर्थिक विकास की उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन के पश्चात हम आर्थिक विकास को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं: "आर्थिक विकास से अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसके परिणामस्वरूप देश में समस्त उत्पादन साधनों का कुशलतापूर्वक विदोहन होता है, राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर एवं दीर्घकालीन वृद्धि होती है तथा जनता के जीवन स्तर एवं सामान्य कल्याण का सूचकांक बढ़ता है।"[7]

आर्थिक विकास की प्रमुख विशेषताएं

आर्थिक विकास की विभिन्न परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर इसकी पाँच प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार स्पष्ट होती है - {1} आर्थिक विकास एक निरन्तर प्रक्रिया है। {2} इसमें वास्तविक राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है। {3} यह वृद्धि निरन्तर दीर्घ काल तक चलती रहती है। इसमें समस्त उत्पादन साधनों का कुशलतापूर्वक विदोहन होता है। {4} आर्थिक विकास के फलस्वरूप जनता के जीवन स्तर और आर्थिक कल्याण में वृद्धि होती है। इन विशेषताओं का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है ।

7. डॉ. चतुर्भुज मामोरिया एवं डॉ एस. सी. जैन, भारत की आर्थिक समस्यायें, 1986, साहित्य भवन आगरा, पे० 3

(1) निरन्तर प्रक्रिया :- आर्थिक विकास की सबसे पहली विशेषता यह है कि यह एक लगातार या निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। इसके कारण साधनों की पूर्ति एक वस्तु सम्बन्धी माँग समय-समय बदलती रहती है। साधनों की पूर्ति में परिवर्तन से अर्थ जनसंख्या उत्पादन साधन, पूँजी उत्पादन तकनीक या अन्य संस्थागत परिवर्तन, जनसंख्या की रचना में परिवर्तन व उपभोक्ताओं की रूचियों में परिवर्तन से है जैसे-जैसे किसी देश के आर्थिक विकास की प्रक्रिया आगे बढ़ती है वैसे ही वैसे इन सभी पूर्ति साधन एवं माँगो में परिवर्तन होता है।

(2) वास्तविक राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि :- आर्थिक विकास की दूसरी विशेषता यह है कि इससे वास्तविक राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है। राष्ट्रीय आय से अर्थ एक वर्ष में जितनी वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन एक देश में होता है इसके मूल में से घाटा आदि घटा कर जो बचता है उससे इसी को शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन या वास्तविक राष्ट्रीय आय कहते हैं। आर्थिक विकास की स्थिति में इसमें वृद्धि होती है जबकि राष्ट्रीय आय में कुल जन-संख्या का भाग देते हैं तो भागफल प्रति व्यक्ति औसत आय कहलाता है। आर्थिक विकास में इस प्रति व्यक्ति औसत आय में वृद्धि होती है।

(3) दीर्घकालीन वृद्धि या निरन्तर वृद्धि :- आर्थिक विकास का तीसरा महत्व पूर्ण लक्षण यह है कि वास्तविक राष्ट्रीय आय में निरन्तर वृद्धि होना चाहिये इसका अर्थ यह है कि यदि किसी विशेष कारण से कुछ समय के लिये राष्ट्रीय आय में वृद्धि हो जाती है तो उसे आर्थिक विकास नहीं कहा जा सकता है उदाहरण के लिये यदि किसी वर्ष समयानुसार वर्षा होने पर कृषि उत्पादन बढ़ जाता है और जिससे राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है तो उसे दीर्घकालीन वृद्धि या निरन्तर वृद्धि

नहीं कह सकते आर्थिक विकास में वृद्धि आकस्मिक न हो कर दीर्घकालीन होनी चाहिए।

§4§ उत्पादन साधनों का विदोहन :- आर्थिक विकास में चौथी विशेषता ये है कि इसमें देश के उत्पादन साधनों को अच्छी तरह काम में लाया जाता है। दूसरे शब्दों में बेकार पड़े उत्पादनों साधनों को कुशलतापूर्वक आय में लाये जाने का प्रयास किया जाता है।

§5§ जीवन स्तर एवं सामान्य कल्याण में वृद्धि :- आर्थिक विकास की पाँचवी विशेषता ये है कि इससे सामान्य जनता का जीवन स्तर ऊपर उठता है तथा सरकार द्वारा उसके लिये कल्याणकारी कारण में वृद्धि की जाती है। यदि आर्थिक विकास में धनी वर्ग को ही लाभ होता है और उन्हीं का जीवन स्तर ऊपर उठता है तो इसको आर्थिक विकास नहीं कह सकते। आर्थिक विकास में तो सभी का जीवन स्तर ऊपर उठना चाहिये या कल्याणकारी कार्यों में वृद्धि होना चाहिये।

मानवीय संसाधन या जनसंख्या का आर्थिक विकास में महत्व

"मानवीय संसाधन" का तात्पर्य देश विशेष की जनसंख्या, उसकी शिक्षा, कुशलता, दूरदर्शिता एवं उत्पादकता से है, अर्थात मानवीय संसाधन की गणना करते समय न केवल वहाँ रहने वालों की संख्या वरन् उनके गुणों पर भी विचार करना होता है। "मानवीय संसाधन" का विकास उस प्रक्रिया को सूचित करता है जिसमें समाज के व्यक्तियों के ज्ञान, कौशल एवं उत्पादकता में वृद्धि हुआ करती है। सरल शब्दों में, मानवीय संसाधन, मानवीय पूँजी का एक ऐसा संचय है जिसको अर्थ-व्यवस्था का विकास करने में प्रभावी रूप से

विनियोग किया जा सकता है।

किसी भी देश के आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों का उतना ही महत्व है जितना कि मानवीय संसाधनों का। लेकिन प्राकृतिक संसाधन वह निर्जीव आधार है जिस पर मानवीय संसाधनों के द्वारा अपनी कार्य कुशलता व योग्यता का जौहर दिखाया जाता है। इसीलिये मानवीय संसाधन एवं प्राकृतिक संसाधन एक ही गाड़ी के दो पहियों के समान हैं जिनका किसी देश के आर्थिक विकास के लिये होना अनिवार्य है। वर्तमान प्रगतिशील युग में कुछ विद्वान मानवीय संसाधन को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं और उनका कहना है कि आर्थिक विकास के लिए मानवीय संसाधन प्राकृतिक रूप से अधिक महत्वपूर्ण हैं। इस सम्बन्ध में कुछ विद्वानों के विचार निम्नलिखित हैं :

प्रो० एडम स्मिथ के मत में, "प्रत्येक राष्ट्र में मानवीय श्रम वह कोष है जो जीवन की समस्त आवश्यकताओं एवं सुविधाओं की पूर्ति करता है।"[8]

उपर्युक्त विचार प्रो० एडम स्मिथ जो अपनी पुस्तक "वैल्थ ऑफ नेशन" में व्यक्त किये हैं। इसका अर्थ यह है कि किसी देश की आवश्यकताओं व सुविधाओं को मानवीय श्रम से ही पूरा किया जा सकता है।

हार्बिसन एवं मायर्स के अनुसार, "आधुनिक राष्ट्रों का निर्माण मानव के विकास एवं मानवीय क्रियाओं के संगठन पर निर्भर करता है। निःसन्देह पूँजी, प्राकृतिक साधन, विदेशी सहायता एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आर्थिक विकास में अपनी भूमिका निभाते हैं, लेकिन इनमें से कोई भी इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना

---

8. एडम स्मिथ - वैल्थ ऑफ नेशन

कि मानव शक्ति।"[9]

प्रो0 हार्बिसन एवं मायर्स ने अपनी पुस्तक "एजूकेशन, मैनपावर एण्ड इकनॉमिक ग्रोथ में यह विचार व्यक्त किये हैं। उनकी दृष्टि में राष्ट्र निर्माण के लिए मानव शक्ति सबसे महत्वपूर्ण है।

प्रो0 हिव्पल की दृष्टि में, "एक राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति उसकी भूमि, जल, वनों, खानों, पशु सम्पत्ति या डालरों में निहित नहीं होती है बल्कि उस राष्ट्र के समृद्ध एवं प्रसन्नचित पुरुषों और बच्चों में निहित होती है।"[10]

{प्रो0 हिव्पल ने भी मानव शक्ति के समुदाय-पुरुष,स्त्री व बच्चों को ही महत्वपूर्ण माना है और उनकी दृष्टि में प्राकृतिक सम्पदा व पशुधन इतना महत्वपूर्ण नहीं है।}

प्रो0 रिचर्ड टी0 गिल की राय में, "आर्थिक विकास एवं यन्त्रीकरण प्रक्रिया नहीं है। यह एक मानवीय उद्यम है, तथा अन्य समस्त मानवीय उद्यमों की तरह इसका परिणाम उन व्यक्तियों की योग्यता, गुण एवं दृष्टिकोण पर निर्भर करता है जो इसे अपने हाथ में लेते हैं।"[11]

प्रो0 गिल के अनुसार एक देश का आर्थिक विकास उस देश के व्यक्तियों की योग्यता, गुण एवं दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विद्वानों के विचारों का मनन करने के पश्चात यही

---

9. हार्बिसन फ्रेडरिक एण्ड मायर्स ए0 चार्ल्स : एजूकेशन, मैनपावर एण्ड इकनॉमिक ग्रोथ।
10. प्रो0 हिव्पल
11. प्रो0 रिचर्ड टी0 गिल

इससे निष्कर्ष निकलता है कि "मानव संसाधन प्राकृतिक संसाधनों से अधिक महत्वपूर्ण है। जो देश अपनी मानव शक्ति में जितना अधिक कार्यकुशलता एवं योग्यता से कार्य ले सकेगा वह देश उतना ही अधिक विकास कर सकेगा।"

<u>जनसंख्या राष्ट्र के लिए सम्पत्ति और दायित्व भी</u>

विद्वानों का मत है कि "राष्ट्र की जनसंख्या उस राष्ट्र की सम्पत्ति है लेकिन इसके साथ-साथ वह दायित्व भी है। विद्वानों का यह भी कहना है कि किसी राष्ट्र की उन्नति मानवीय संसाधनों को संगठित करने की क्षमता पर निर्भर है। जनशक्ति राष्ट्र की पूँजी है। यदि किसी प्रकार से इस जनशक्ति का उचित प्रकार से उपयोग न हो तो नवीन रोजगार के अवसर नहीं मिलेंगे और इस प्रकार यह साधन एक भार बन जायेगा।" [12]

"जनसंख्या राष्ट्र के लिए सम्पत्ति है"- इस सम्बन्ध में अग्रलिखित कारण प्रस्तुत किये जा सकते हैं :-

1) <u>प्राकृतिक साधनों का विदोहन या उपयोग</u> :- जनसंख्या के द्वारा ही प्राकृतिक साधनों का समुचित विदोहन या उपयोग किया जा सकता है। इसके अभाव में उचित विदोहन या उपयोग नहीं हो सकता है। इस प्रकार जनसंख्या वास्तव में एक राष्ट्र की सम्पत्ति है।

2) <u>राष्ट्र की रक्षा</u> :- राष्ट्र की रक्षा का कार्य भी जनसंख्या या मानव द्वारा ही किया जा सकता है। इस दृष्टि से भी जनसंख्या एक देश के लिए

---

12. मामोरिया एवं जैन, भारत की आर्थिक समस्यायें, पृ. 51-56

सम्पत्ति है।

3) विस्तृत बाजार :- जनसंख्या पर एक देश का बाजार भी निर्भर करता है। यदि जनसंख्या अधिक है तो बाजार विस्तृत होगा। इसके विपरीत, यदि जनसंख्या सीमित या कम है तो बाजार भी सीमित होगा। इस प्रकार बाजार के लिए जनसंख्या का होना आवश्यक है।

4) अनुसन्धान एवं विकास :- जनसंख्या राष्ट्र के लिए सम्पत्ति है, क्योंकि इसके द्वारा ही अनुसन्धान एवं विकास कार्य का यह बताया जाता है कि कौन-कौन से खनिज व अन्य पदार्थ देश में उपलब्ध हैं तथा उनका उपयोग किन-किन कार्यों के लिए किया जा सकता है।

5) श्रम विभाजन के लाभ :- यदि जनसंख्या पर्याप्त है तो उद्योगों में श्रम विभाजन की नीति अपनाकर लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं।

"जनसंख्या राष्ट्र के लिए दायित्व है"- इस सम्बन्ध में निम्न तथ्य प्रस्तुत किये जा सकते हैं :-

1) खाद्यान्नों की पूर्ति :- जनसंख्या के लिए तीन आधारभूत आवश्यकताओं- भोजन, कपड़ा व मकान की पूर्ति करना आवश्यक होता है। इसमें भी भोजन परम आवश्यक है। यदि किसी देश में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती है लेकिन खाद्य उत्पादन उस गति से नहीं बढ़ता है तो जनसंख्या के भोजन के लिए खाद्यान्नों की पूर्ति करना एक गम्भीर दायित्व बन जाता है।

2) **आवास व्यवस्था :-** आधुनिक प्रगतिशील सरकारों के लिए जनसंख्या सम्बन्धी दूसरा दायित्व उनकी आवास व्यवस्था है जिसके लिये मकान, पार्क व सड़कें आदि बनानी पड़ती है।

3) **स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाएं :-** राष्ट्र के लिए तीसरा दायित्व जनसंख्या को उचित स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाएं देना है जिससे कि वे राष्ट्र कल्याणकारी राष्ट्र के रूप में अपना मस्तक ऊँचा कर सकें।

4) **शिक्षा सुविधाएं :-** एक राष्ट्र की जनसंख्या के सम्बन्ध में चौथा दायित्व है कि वह अपनी जनसंख्या की उचित शिक्षा एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था करें जिससे कि उनके ज्ञान में वृद्धि हो और वे अपना अच्छा जीवन-स्तर प्राप्त कर सके।

5) **रोजगार सुविधाएं :-** अपनी सभी जनसंख्या को पूर्ण रोजगार की सुविधा देना भी राष्ट्र का एक उत्तरदायित्व है।

6) **यातायात एवं सन्देशवाहन सुविधाएं :-** एक राष्ट्र का यह भी उत्तर-दायित्व है कि वह अपनी जनसंख्या को यातायात एवं सन्देशवाहन सुविधाएं भी पर्याप्त मात्रा में दे जिससे कि आर्थिक क्रियाओं का भी विकास हो सके।

7) **शान्ति एवं सुरक्षा :-** एक सुदृढ़ प्रशासन के लिए यह भी उत्तरदायित्व है कि वह देश में शान्ति एवं सुरक्षा को बनाये रखे।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि जनसंख्या की वृद्धि से उत्तरदायित्वों में वृद्धि हो जाती है जो आगे चलकर देश के आर्थिक विकास में बाधा उपस्थित करते हैं।

जनसंख्या एवं आर्थिक विकास का सम्बन्ध

जनसंख्या एवं आर्थिक विकास का एक-दूसरे से गहरा सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध का अध्ययन दो शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है-

(1) जनसंख्या का आर्थिक विकास पर प्रभाव :- सामान्यतया: यह माना जाता है कि प्रारम्भ में जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक विकास पर अच्छा प्रभाव पड़ता है क्योंकि इससे प्राकृतिक साधनों के उचित प्रकार से काम में लाने में सहायता मिलती है तथा साधनों का उचित विदोहन होने लगता है। ऐसा होने से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होने लगती है। यह वृद्धि कुछ समय तक चलती रहती है और एक समय ऐसा आ जाता है जहाँ प्रति व्यक्ति आय अपनी उच्चतम सीमा तक पहुँच जाती है। यदि इस समय के बाद भी जनसंख्या में वृद्धि होती रहती है तो इसका आर्थिक विकास पर बुरा प्रभाव पड़ता है और प्रति व्यक्ति आय कम होने लगती है। यह सिद्धान्त अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त पर आधारित है।

उपर्युक्त सिद्धान्त उन देशों में ही लागू होता है जहाँ जनसंख्या कम है व प्राकृतिक साधन काफी हैं लेकिन उन देशों में जहाँ जनसंख्या पहले से ही अधिक है और वे अल्प-विकसित देश हैं वहाँ बढ़ती हुई जनसंख्या आर्थिक विकास में बाधा ही उपस्थित करती है। इस बाधा को हटाने के लिए मानव शक्ति नियोजन होना आवश्यक है।

जिस देश में कार्यशील जनसंख्या अधिक होती है वह देश उतना ही अधिक आर्थिक विकास कर सकता है।

§II§ <u>आर्थिक विकास का जनसंख्या पर प्रभाव</u> :- एक देश के आर्थिक विकास का उस देश की जनसंख्या पर प्रभाव पड़ता है। इस प्रभाव को जनांकिकीय संक्रान्ति सिद्धान्त द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। इस सिद्धान्त के अनुसार एक देश की जनसंख्या को तीन अवस्थाओं में होकर गुजरना पड़ता है। पहली अवस्था में देश अविकसित होता है जहाँ अशिक्षा, बाल-विवाह, अन्ध धार्मिक विश्वासों के कारण जन्म-दर अधिक होती है। साथ ही स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में मृत्यु-दर भी अधिक होती है। अतः इस अवस्था में जन-संख्या में कोई विशेष वृद्धि नहीं होती है। दूसरी अवस्था में देश विकासशील स्थिति में होता है जिसमें स्वास्थ्य सुविधाओं के बढ़ने के कारण मृत्यु-दर कम हो जाती है लेकिन जन्म-दर में कोई विशेष कमी नहीं होती है। तीसरी अवस्था में शिक्षा में वृद्धि व रहन-सहन के स्तर में वृद्धि होने लगती है। रूढ़ि-वादी दृष्टिकोण समाप्त होने लगता है। उत्पादन बढ़ने लगता है। इससे जन्म-दर व मृत्यु-दर दोनों में कमी हो जाती है। इससे जनसंख्या में वृद्धि की दर भी कम हो जाती है और समाज में आर्थिक सन्तुलन होने लगता है।

जनसंख्या वृद्धि का भारत के आर्थिक विकास पर प्रभाव

भारत के सभी विचारक, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री व राजनीतिज्ञ यह मानते हैं कि "तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या भारत के आर्थिक विकास में सबसे बड़ी बाधा है।" कुछ लोग तो बढ़ती हुई जनसंख्या को "अभिशाप" मानते हैं और उनका कहना है कि इससे §1§ प्रति व्यक्ति आय कम होती है। §2§ पूँजी निर्माण की गति धीमी पड़ती है। §3§ खाद्यान्नों की पूर्ति की समस्या पैदा

होती है। (4) मुद्रा-स्फीति को प्रोत्साहन मिलता है। (5) भुगतान सन्तुलन बिगड़ता है। (6) कल्याणकारी कार्यों पर सरकार को अधिक व्यय करना पड़ता है। (7) प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि नहीं होती है। इन सभी कारणों से देश की प्रगति तेजी से नहीं हो पाती है। इन सभी कारणों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है :-

1) पूँजी निर्माण की धीमी गति :- बढ़ती हुई जनसंख्या बचतों को प्रभावित करती है इससे बचत की दर कम हो जाती है जिसके फलस्वरूप पूँजी निर्माण की गति भी धीमी रहती है। भारत में जनसंख्या 2.5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से बढ़ रही है। इन बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए पूँजी निर्माण की गति और तेज होनी चाहिए। 1983-84 में पूँजी की दर 18.4 प्रतिशत रही है। यदि जनसंख्या इतनी तेज गति से न बढ़ती होती तो पूँजी निर्माण की दर भी अधिक होती ।

2) खाद्यान्न पूर्ति की समस्या :- जनसंख्या व खाद्यान्न पूर्ति का सीधा सम्बन्ध है। बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए बढ़ता हुआ खाद्यान्न उत्पादन भी होना चाहिए। भारत में आर्थिक विकास के कारण खाद्यान्न उत्पादन यद्यपि बराबर बढ़ रहा है लेकिन फिर भी कभी-कभी उत्पादन माँग से कम ही होता है। इस प्रकार इस बढ़ती हुई जनसंख्या के द्वारा खाद्यान्नों की पूर्ति की समस्या पैदा कर दी गयी है जो कि देश के आर्थिक विकास को प्रभावित कर रही है।

3) भुगतान सन्तुलन की समस्या :- जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव भुगतान सन्तुलन पर भी पड़ रहा है। अरबों रुपये के मूल्य को खाद्यान्न खाद्य समस्या की पूर्ति के लिए आयात करने पड़ते हैं जिससे भुगतान सन्तुलन की समस्या पैदा होती है। यदि

खाद्यान्न आयात न करना पड़ता तो इस धन को देश के आर्थिक विकास में लगाया जा सकता था ।

4) कृषि भार में वृद्धि :- बढ़ती हुई जनसंख्या का कृषि के विकास पर भी प्रभाव पड़ता है। एक ओर कृषि में लगने वाली जनसंख्या में वृद्धि हो जाती है दूसरी ओर भूमि के उपविभाजन व अपखण्डन से नयी-नयी समस्यायें पैदा होती हैं और इस प्रकार यह सभी देश के आर्थिक विकास में बाधा पहुँचाती है।

5) बेरोजगारी की समस्या :- जनसंख्या वृद्धि से बेरोजगारी पैदा हो जाती है जिसको कम करने के लिए सरकार को अपने बहुमूल्य साधनों को लगाना पड़ता है। जो अन्ततगत्वा देश के आर्थिक विकास को प्रभावित करता है। भारत की भी यही स्थिति है।

6) मूल्य स्तर में वृद्धि :- जनसंख्या वृद्धि से वस्तुओं की माँग बढ़ जाती है लेकिन उत्पादन उतना ही बढ़ता है। इसका परिणाम यह होता है कि वस्तुओं के मूल्य स्तर में वृद्धि हो जाती है। यह मूल्य वृद्धि देश के आर्थिक विकास पर प्रभाव डालती है तथा इससे विकास व्ययों में वृद्धि हो जाती है।

7) उत्पादन तकनीक पर प्रभाव :- जनसंख्या वृद्धि उत्पादन तकनीकी पर भी प्रभाव डालती है। बेरोजगारी को कम करने के लिए श्रम प्रधान तकनीके काम में लायी जाती है तथा पूँजी प्रधान तकनीकों को त्याग दिया जाता है। इससे प्रति वस्तु उत्पादन लागत अधिक आती है जो आर्थिक विकास की गति को धीमी कर देती है। भारत भी इसी दिशा में बढ़ रहा है और इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास को प्रभावित कर रही है।

8) <u>अन्य समस्यायें</u> :- जनसंख्या वृद्धि अन्य बहुत सी समस्याओं को पैदा कर आर्थिक विकास की गति को धीमा कर देती है। सरकार को स्वास्थ्य एवं कल्याण, शिक्षा, आवास, परिवहन सुविधाओं व अन्य बहुत सी बातों पर भारी व्यय करना पड़ता है और इस प्रकार अपनी व्यय प्राथमिकताओं में आवश्यक हेर-फेर कर देने से आर्थिक विकास प्रभावित होता है।

अतः आर्थिक विकास के सुफलों का आनन्द तब ही उठाया जा सकता है जबकि जनसंख्या की वृद्धि को अवरुद्ध किया जाये।

<u>भारतीय जनसंख्या के विशिष्ट लक्षण</u>

भारतीय जनसंख्या की विशेषताओं का अध्ययन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है:- (1) जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति, (2) जनसंख्या का घनत्व, (3) ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या, (4) स्त्री-पुरुष अनुपात, (5) साक्षरता अनुपात, (6) प्रत्याशित आयु, (7) आयु संरचना, (8) जन्म दर व मृत्यु दर एवं (9) जनसंख्या का व्यवसायिक वितरण ।

(1) <u>जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति</u>

जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़े इस बात की पुष्टि करते है कि भारतीय जनसंख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति पायी जाती है। भारत की पहली जनगणना 1871 में की गयी थी और उसके अनुसार उस समय भारत की जनसंख्या 25.4 करोड़ थी जो ठीक 100 वर्षों में बढ़कर 1971 में 54.8 करोड़ हो गयी जो कि वर्तमान में 74 करोड़ से अधिक है। 1901 के उपरान्त जनसंख्या की वृद्धि निम्न प्रकार हुई है।

1911 में 23.8 करोड़ वृद्धि दर शून्य, 1951 में 25.2 करोड़ वृद्धि दर 5.7 प्रतिशत; 1921 में 25.1 करोड़, वृद्धि दर 0.39 प्रतिशत; 1931 में 27.9 करोड़, वृद्धि दर 11 प्रतिशत; 1941 में 31.9 करोड़, वृद्धि दर 14.2 प्रतिशत; 1951 में 36.1 करोड़, वृद्धि दर 13.3 प्रतिशत; 1961 में 43.9 करोड़, वृद्धि दर 21.6 प्रतिशत; 1971 में 54.8 करोड़, वृद्धि दर 24.8प्रतिशत; 1981 में 68.5 करोड़, वृद्धि दर 25 प्रतिशत।

उपर्युक्त विवरण इस बात को स्पष्ट करता है कि प्रारम्भ में जनसंख्या वृद्धि की दर धीमी थी लेकिन बाद में इसमें तीव्र गति से वृद्धि हुई। 1921 से 1951 के बीच दस-वर्षीय वृद्धि की दर 11 से 14 प्रतिशत तक रही लेकिन 1951 से 1961 के बीच इसमें 21.6 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई। इसी प्रकार 1961 व 1971 के बीच की दर में और अधिक वृद्धि हुई और यह 24.8 प्रतिशत तक पहुँच गयी। 1971 व 1981 के बीच इस दर में लगभग समानता रही और यह दर 25 रही है।[13]

2॥ जनसंख्या का घनत्व

जनसंख्या का घनत्व से अर्थ "मानव भूमि अनुपात से है। दूसरे शब्दों में किसी क्षेत्र में प्रति वर्ग किलोमीटर में निवास करने वाले व्यक्तियों की औसत संख्या को ही जनसंख्या का घनत्व कहते हैं। इस जनसंख्या घनत्व को एक देश की कुल भूमि में कुल जनसंख्या का भाग देकर निकाला जाता है। 1981 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर 216

---

13. मामोरिया एवं जैन, भारत की आर्थिक समस्यायें, पेज 57-59.

व्यक्ति है जो 1921 की गणना के समय 81 व्यक्ति था। जनसंख्या का घनत्व किसी स्थान या क्षेत्र में अधिक है तो किसी में कम। इसके कारण भूमि की उर्वरा शक्ति, जलवायु, सिंचाई साधन, व्यापार, राजधानी, परिवहन साधन, उद्योग, प्राकृतिक देन, माल व जीवन की सुरक्षा आदि है। भारतीय जनसंख्या के घनत्व से सम्बन्धित मुख्य विशेषताएं निम्न प्रकार हैं:-

1) <u>जनसंख्या के घनत्व में लगातार वृद्धि :-</u>

पिछली जनगणनाओं के आँकड़ो से यह पता चलता है कि भारत में जनसंख्या के घनत्व में बराबर वृद्धि हो रही है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य भूमि अनुपात बराबर बढ़ रहा है। विभिन्न वर्षों में प्रति वर्ग किलोमीटर में जनसंख्या का घनत्व निम्न प्रकार रहा है :-

1921 में 81, 1931 में 90, 1941 में 103, 1951 में 117, 1961 में 142, 1971 में 177 व 1981 में 216.

2) <u>भारत की मध्यम स्थिति :-</u>

विश्व के विभिन्न देशों में जनसंख्या की दृष्टि से भारत की स्थिति मध्यम है; जैसे "जापान में 316, पश्चिमी जर्मनी में 248, ब्रिटेन में 229, चीन में 104 अमरीका में 10, रूस में 25, कनाडा में 2 व आस्ट्रेलिया में 2, विश्व औसत 34." [14]

3) <u>राज्यों में जनसंख्या घनत्व में भारी भिन्नता होना</u>

भारत के विभिन्न राज्यों में जनसंख्या घनत्व में भारत भिन्नता पायी

---

14. वर्ल्ड डेवलपमेन्ट रिपोर्ट 1983

जाती है। 1981 की जनगणना के अनुसार जहाँ सिक्किम में प्रति वर्ग किलो मीटर में 45 व्यक्ति रहते हैं वहाँ दिल्ली में 4,194, चण्डीगढ़ में 3,961, केरल में 655 व पश्चिमी बंगाल में 615 व्यक्ति रहते हैं। विभिन्न राज्यों में जनसंख्या घनत्व 1971 व 1981 में निम्न प्रकार है।[15]

आन्ध्र प्रदेश 157 व 195, असम में 186 व 254, बिहार 324 व 402, गुजरात 136 व 174, हरियाणा 227 व 292, हिमाचल प्रदेश 62 व 77, जम्मू व कश्मीर कर्नाटक 153 व 194, केरल 649 व 655, मध्य प्रदेश 94 व 118, महाराष्ट्र 164 व 204, मनीपुर 48 व 64, मेघालय 45 व 60, नागालैण्ड 31 व 47, उड़ीसा 141 व 169, तमिलनाडु 317 व 372, पंजाब 269 व 333, राजस्थान 75 व 100, सिक्किम 29 व 45, त्रिपुरा 149 व 196, उत्तर प्रदेश 300 व 377, पश्चिमी बंगाल 504 व 615, सम्पूर्ण भारत का औसत 177 व 215।

<u>जनसंख्या का घनत्व एवं आर्थिक विकास</u>

अब प्रश्न यह है कि क्या किसी देश की जनसंख्या के घनत्व का उस देश के आर्थिक विकास से सीधा सम्बन्ध है ? इसका उत्तर यह है कि ऐसा नहीं है। जनसंख्या का घनत्व न तो किसी देश की निर्धनता का ही सूचक है और न उस देश की सम्पन्नता का। अमरीका में जनसंख्या का घनत्व एक किलो-मीटर में सिर्फ 22 व्यक्तियों का है लेकिन यह देश बहुत ही सम्पन्न है। जापान में घनत्व 290 होते हुए भी वह एक सम्पन्न देश है। इसके विपरीत ब्राजील व

---

15. इण्डिया 1984

आस्ट्रेलिया जिसमें जनसंख्या का घनत्व क्रमशः 12 व 2 है वे अमरीका के बराबर सम्पन्न नहीं हो सके है। वास्तव में, किसी देश का आर्थिक विकास उस देश के प्राकृतिक साधन व औद्योगिक प्रगति पर निर्भर करता है। जनसंख्या का घनत्व उतना महत्वपूर्ण नहीं है।

3) ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या

किसी भी देश के नगरीयकरण में प्रगति उस देश के विकास की गति को बताती है। अतः नगरीकरण का आर्थिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। यही कारण है जिसकी वजह से यह कहा जाता है कि नगरीकरण व आर्थिक विकास का घनिष्ठ सम्बन्ध है। जिस देश में नगरीकरण का अनुपात जितना अधिक होगा वह देश उतना ही अधिक विकसित होगा। भारत की 1981 की जनगणना के अनुसार देश की कुल जनसंख्या 68.5 करोड़ है जिसकी 23.7 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में रहती है शेष 76.3 प्रतिशत गाँवों में रहती है गत 60 वर्षों में ग्रामीण व शहरी जनसंख्या का प्रतिशत निम्न प्रकार रहा है।[16]

1921 में 88.8 व 11.2 प्रतिशत; 1931 में 88.0 व 12 प्रतिशत; 1941 में 86.1 व 13.9 प्रतिशत; 1951 में 81.7 व 17.3 प्रतिशत; 1961 में 82 व 18 प्रतिशत, 1971 में 80.1 व 19.9 प्रतिशत तथा 1981 में 76.3 व 23.7 प्रतिशत ।

उपर्युक्त विवरण से यह बात स्पष्ट होती है कि वर्तमान में देश में 4 व्यक्तियों में से एक व्यक्ति शहर में रहता है, जबकि 60 वर्ष पूर्व 9 व्यक्तियों

---

16. कम्पाइल्ड फ्रॉम द डाटा प्रोवाइडेड इन सेनसस ऑफ इण्डिया, 1981, सिरिज-1

में से एक व्यक्ति शहर में रहता है।

नगरों में जनसंख्या की वृद्धि के कारण

(1) औद्योगीकरण एवं नवीन उद्योगों का विकास, (2) देश विभाजन, (3) गाँवों में सुरक्षा की कमी, (4) नगरों में चिकित्सा, शिक्षा, मनोरंजन, प्रशिक्षण व रोजगार सुविधाओं का न होना, (5) शहरों में रोजगार क्षमता का होना, तथा (6) जमींदारों की शहरों में बसने की प्रवृत्ति आदि। भारत में नगरों में रहने वाली जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ा है। इस पर भी वह अभी अन्य देशों की तुलना में बहुत ही कम है। यह भारत में 23·7 प्रतिशत है जबकि "इण्डोनेशिया में 20 प्रतिशत, यूगोस्लाविया में 42 प्रतिशत, चैकोस्लोवाकिया में 63 प्रतिशत, ईराक में 72 प्रतिशत, अमरीका में 73 प्रतिशत, जापान में 78 प्रतिशत, कनाडा में 80 प्रतिशत, आस्ट्रेलिया में 89 प्रतिशत व ब्रिटेन में 91 प्रतिशत है।"

1981 की जनगणना के अनुसार देश में 12 नगरों की जनसंख्या 10 लाख या इससे अधिक, 28 नगरों की जनसंख्या 5 लाख व 10 लाख के बीच, 8 नगरों की जनसंख्या 4 लाख से 5 लाख के बीच, 21 नगरों की जनसंख्या 3 लाख 4 लाख के बीच, 33 नगरों की जनसंख्या 3 लाख से 2 लाख के बीच, 114 नगरों की जनसंख्या 1 लाख से 2 लाख के बीच है। इस प्रकार कुल 216 नगरों की जनसंख्या 1 लाख से ऊपर है। 10 लाख से ऊपर वाले 12 नगर हैं। जिनकी जनसंख्या इस प्रकार है- 1) कलकत्ता (19·6 लाख), (2) बम्बई (82·3 लाख), (3) दिल्ली (57·1लाख), 4) मद्रास (42·8 लाख), (5) बंगलौर (29·1 लाख), (6) हैदराबाद (25·3लाख),

(7) अहमदाबाद (25.2 लाख), (8) कानपुर (16.9 लाख), (9) पूना (16.9 लाख), (10) नागपुर (13 लाख), (11) लखनऊ (10.1 लाख), व (12) जयपुर (10.0 लाख) है।

भारत में कुल 6.05,224 गाँव है। सर्वाधिक गाँव (1,12,561) उत्तर प्रदेश में हैं। तत्पश्चात मध्य प्रदेश (70,883) और बिहार (67,566) का स्थान है। सबसे कम गाँव (960) नागालैण्ड में है। इनके अतिरिक्त हरियाणा में 6,731, महाराष्ट्र में 35,788, पंजाब में 12,178, राजस्थान में 33,305 गाँव हैं।

4) <u>स्त्री-पुरूष अनुपात</u> :-

किसी भी देश की जनसंख्या में स्त्री-पुरूष अनुपात या लिंग अनुपात काफी महत्वपूर्ण होता है जो जन्म दर व मृत्यु दर को प्रभावित करता है। इससे विवाह दर व बच्चों की संख्या भी प्रभावित होती है तथा प्रतिकूल लिंग अनुपात की स्थित में (अर्थात जबकि स्त्रियों की संख्या कम होती है) भिन्न-भिन्न प्रकार की नैतिक एवं सामाजिक बुराइयाँ भी पैदा हो जाती है साथ ही चूँकि स्त्रियों की कार्य शक्ति सामान्यतः कम होती है, इसलिये स्त्रियों का अनुपात अधिक होना राष्ट्रीय आय पर कुप्रभाव डाल सकता है।

स्त्री-पुरूष अनुपात की गणना 1,000 के आधार पर की जाती है। इसका अर्थ यह है कि 1,000 पुरूषों के पीछे कितनी स्त्रियाँ हैं। 1971 की गणना के अनुसार भारत में प्रति 1000 पुरूषों के पीछे 930 स्त्रियाँ रह गयी थी लेकिन अब फिर बढ़ने लगी है और 1981 की जनगणना के अनुसार यह बढ़कर 934 हो गयी है। इस

सम्बन्ध में अन्य विशेषतायें निम्न प्रकार है :-

1) स्त्री-पुरूष अनुपात में कमी :- देश की पिछली जनगणनाओं के आंकड़ों से पता लगता है कि देश में स्त्रियों की संख्या में बराबर गिरावट हो रही है। 1901 में 1000 व्यक्तियों पर 972 स्त्रियाँ थीं जिनकी संख्या 1971 में घटकर प्रति 1000 पुरूष पर 930 रह गयी थी लेकिन यह फिर बढ़ने लगी है। 1981 की जनगणना के अनुसार यह 934 हो गयी। इस कमी के कारण (i) पुरूष शिशुओं का अधिक जन्म, बाल्यावस्था में लड़कियों की उचित देखभाल न होना और उनकी मृत्यु हो जाना, (ii) बाल विवाह होने पर मातृत्व का भार वहन करने के अयोग्य होने के कारण लड़कियों की प्रसूतिकाल में मृत्यु आदि है।

2) विभिन्न राज्यों में विभिन्न स्थिति :- देश में स्त्री-पुरूष अनुपात एक समान नहीं है। दिल्ली में प्रति हजार पुरूषों पर 801 स्त्रियाँ है जबकि केरल में प्रति हजार पुरूषों पर 1032 है, अन्य राज्यों में स्त्री अनुपात प्रति हजार पुरूषों पर इस प्रकार है-- बिहार 946, हरियाणा 870, हिमाचल प्रदेश 973, मध्य प्रदेश 941, पंजाब 879, राजस्थान 919, उत्तर प्रदेश 885 ।

3) ग्रामीण तथा शहरीय क्षेत्रों में स्त्री-पुरूष अनुपात में अन्तर :- 1981 की जनगणना के अनुसार प्रति हजार पुरूषों के पीछे शहरी क्षेत्रों में 859 स्त्रियाँ हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में 952 हैं। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि शहरों में पुरूष अपनी स्त्रियों को गाँव में छोड़कर नौकरी के लिए शहरों में आ जाते हैं।

4) विपरीत स्थिति :- यदि हम इस सन्दर्भ पर भारत की स्थिति का अन्य

देशों की स्थिति से मुकाबला करें तो यह पायेंगे कि भारत की स्थिति ठीक विपरीत है। अमरीका में प्रति हजार पुरुषों पर 1050 स्त्रियाँ हैं, सोवियत रूस में 1170 स्त्रियाँ व ब्रिटेन में 1060 स्त्रियाँ हैं।

5) साक्षरता अनुपात :- जिस देश में साक्षरता अनुपात जितना अधिक होगा उतना ही उस देश के विकास में सुविधा मिलेगी ।

चेस्टर बोल्स के अनुसार, "प्राकृतिक शक्तियों के नियन्त्रण और संरूपण तथा एक व्यवस्थित प्राविधिक और न्याय-आधारित समाज के निर्माणों में जो विभिन्न उपकरण सहायक होते हैं उनमें शिक्षा सबसे शक्तिशाली उपकरण है।" इस दृष्टिकोण से हमारे देश में स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। यद्यपि यहाँ साक्षरता के प्रतिशत के बराबर वृद्धि हो रही है। 1951 की जनगणना के अनुसार भारत में साक्षरता का प्रतिशत 16·7 था जो 1961 में बढ़कर 24, 1971 में 29·5 व 1981 में 36·2 हो गया । इस प्रकार पिछले 30 वर्षों में साक्षरता दर में 116 प्रतिशत वृद्धि हुई है। साक्षरता के अनुपात के सम्बन्ध में अन्य विशेषतायें इस प्रकार हैं:-

1) स्त्रियों की साक्षरता-दर पुरुषों की साक्षरता-दर से कम

स्त्रियों की साक्षरता-दर पुरुषों की तुलना में कम है। 1981 की जनगणना के अनुसार स्त्रियों की साक्षरता प्रतिशत 24·8 प्रतिशत है जबकि पुरुषों की 46·9 प्रतिशत ।

2) ग्रामीण क्षेत्रों व शहरी क्षेत्रों की साक्षरता-दर में अन्तर

ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता शहरी क्षेत्रों की तुलना में कम है। 1981 की

जनगणना के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता का प्रतिशत 33.8 था जबकि शहरी क्षेत्रों का प्रतिशत 61.3 था। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों की साक्षरता का प्रतिशत 13.2 था जबकि शहरी क्षेत्रों की स्त्रियों का यह प्रतिशत 42.3 था ।

3) विभिन्न राज्यों की साक्षरता प्रतिशत में अन्तर

देश के भिन्न-भिन्न राज्यों में साक्षरता का प्रतिशत एक सा नहीं है। 1981 की जनगणना के अनुसार भारत में केरल राज्य ऐसा राज्य है जहाँ साक्षरता का प्रतिशत 60.4 है जो सबसे ऊँचा है। भारत में सबसे कम साक्षरता बिहार में है जिसका साक्षरता प्रतिशत 26.2 है। शेष सभी राज्यों का प्रतिशत इन दोनों सीमाओं के बीच है। आन्ध्र 29.9 प्रतिशत, गुजरात 43.7 प्रतिशत, हरियाणा 36.1 प्रतिशत, जम्मू-कश्मीर 26.7 प्रतिशत, कर्नाटक 38.5 प्रतिशत, केरल 70.4 प्रतिशत, मध्य प्रदेश 27.9 प्रतिशत, महाराष्ट्र 47.2 प्रतिशत, उड़ीसा 40.9 प्रतिशत, मनीपुर 41.4 प्रतिशत, मेघालय 34.1 प्रतिशत, नागालैण्ड 42.6 प्रतिशत, राजस्थान 24.4 प्रतिशत, सिक्किम 34.1 प्रतिशत, तमिलनाडु 46.6 प्रतिशत, त्रिपुरा 42.1 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश 27.2 प्रतिशत, पश्चिमी बंगाल 40.9 प्रतिशत, दिल्ली 61.5 प्रतिशत ।

6) प्रत्याशित आयु :- प्रत्याशित आयु से अर्थ जीवित रहने की उस आयु से है जिसे देश के निवासी जन्म के समय आशा कर सकते हैं। इसी बात को इस प्रकार भी कह सकते हैं कि एक देश में एक बच्चा जब जन्म लेता है तो उसके कितने वर्ष तक जीवित रहने की आशा की जाती है इस जीवित रहने की आशा को ही

प्रत्याशित आयु या औसत आयु कहते हैं। यदि मृत्यु-दर ऊँची होती है या मृत्यु कम आयु पर हो जाती है तो प्रत्याशित आयु कम होती है। इसके विपरीत यदि मृत्यु दर नीची होती है तो व्यक्तियों की आयु अधिक होती है और इस प्रकार प्रत्याशित आयु भी अधिक होती है।

लगभग 70 वर्ष पूर्व भारत में प्रत्याशित आयु 24 वर्ष थी लेकिन इसमें धीरे-धीरे वृद्धि होती गयी और वह 1971-81 में 54 वर्ष व वर्तमान में 56 वर्ष हो गयी है। गत वर्षों की प्रत्याशित आयु का विवरण निम्न प्रकार है :-

1911 में 24 वर्ष, 1921 में 20.2 वर्ष, 1931 में 26.4 वर्ष, 1941 में 31.8 वर्ष, 1951 में 32.1 वर्ष, 1961 में 41.2 वर्ष, 1971 में 46.4 वर्ष, 1981 में 54 वर्ष तथा वर्तमान में 56 वर्ष।

भारत की प्रत्याशित आयु बढ़ रही है जो 80 वर्षों में दुगने से भी अधिक हो गयी है। इसके बढ़ने के कारण सामान्य मृत्यु-दर व बाल मृत्यु-दर में तेजी से कमी होना है जो शिक्षा, चिकित्सा, सुविधाओं रहन-सहन स्तर में वृद्धि आदि का परिणाम है।

लेकिन फिर भी भारत की प्रत्याशित आयु अन्य देशों की तुलना में काफी कम है जैसे-प्रत्याशित आयु स्विट्जरलैण्ड में 79, स्वीडन में 78, जापान में 77, कनाडा में 76, अमरीका व ब्रिटेन में 74 व संयुक्त अरब अमरीका में 71 वर्ष है।

7} आयु संरचना :- किसी भी देश की जनसंख्या में आयु संरचना का विशेष

~~संरचना के बहुत सी महत्वपूर्ण~~

महत्व है। इस आयु संरचना से बहुत सी महत्वपूर्ण बातों की जानकारी मिलती है जैसे स्कूल जाने वाली जनसंख्या, श्रम करने वाली जनसंख्या, विवाह योग्य जनसंख्या मतदाताओं की जनसंख्या आदि ।

1981 की जनगणना के अनुसार भारत में 14 वर्ष तक के बच्चों का प्रतिशत 39.5 था। 6.5 जनसंख्या ऐसी थी जिसकी आयु 60 वर्ष या इससे अधिक थी। इस प्रकार 46 प्रतिशत जनसंख्या बूढे व बच्चों की थी तथा शेष 54 प्रतिशत की आयु 15 वर्ष से लेकर 59 वर्ष तक की थी ।

भारत में 14 वर्ष तक के बच्चों का प्रतिशत 39.5 है, जो बहुत ही ऊँचा है। अन्य देशों में यह प्रतिशत कम है जैसे फ्रान्स में 24.7, अमरीका में 21.2 व ब्रिटेन में 29.6 है। इस प्रतिशत को कम करने के लिए जन्म-दर जो 33.3 है गिरकर 25 रह जाती है तो 1991 में बच्चों का प्रतिशत भी गिरकर 35.8 रह जायेगा। इससे आश्रितों की संख्या में कमी होगी जिससे जीवन स्तर व बचत पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा ।

ब) जन्म-दर व मृत्यु-दर :-

जन्म-दर : जन्म-दर से अर्थ एक वर्ष में प्रति हजार जनसंख्या के पीछे बच्चों के जन्म से है। भारत में जन्म-दर में बराबर कमी होती है। 1901-11 के मध्य यह दर 49.2 प्रति हजार थी जो 1961-71 के मध्य कम हो कर 41.1 प्रतिहजार हो गयी लेकिन विभिन्न परिवार नियोजन कार्यक्रमों के अपनाने से इसमें और भी कमी हुई है अतः 1981 की जनगणना के अनुसार यह 1971-81 के मध्य 36 प्रति हजार रही जबकि वर्तमान में यह 33.3 प्रति हजार है। यह अन्य देशों की तुलना में

काफी ऊँचा है। "औसत जन्म-दर आस्ट्रेलिया में 16 प्रति हजार, पश्चिमी जर्मनी में 10 प्रति हजार, ब्रिटेन में 13 प्रति हजार, अमरीका में 16 प्रति हजार, जापान में 13 प्रति हजार, कनाडा में 16 प्रति हजार, फ्रांस में 15 प्रति हजार व सोवियत रूस में 11 प्रति हजार है।"

भारत में ऊँची जन्म-दर के कारण

1) सामाजिक विश्वास :- भारतीय समाज में विशेष रूप से हिन्दुओं में यह धारणा है कि पुत्र अवश्य होना चाहिए। अतः कई लड़कियों के जन्म के बाद भी सन्तान उत्पत्ति करते रहते हैं साथ ही जिस ग्रहणी के कोई सन्तान नहीं होती है उसको समाज में अच्छा नहीं समझा जाता है।

2) पारिवारिक मान्यता :- भारत में बड़ा परिवार सामाजिक सुरक्षा व समृद्धि का द्योतक माना जाता है और समाज में ऐसे व्यक्तियों को अच्छा स्थान मिलता है।

3) बाल विवाह :- भारत में कम उम्र में ही शादी या विवाह कर दिया जाता है, इससे छोटी उम्र में बच्चे पैदा होना प्रारम्भ हो जाते हैं और माँ की बच्चे उत्पन्न करने की अवधि लम्बी हो जाती है।

4) विवाह की अनिवार्यता :- भारत में विवाह करना एक अनिवार्यता मानी जाती है और माता-पिता इस कार्य को करना अपना सामाजिक उत्तर-दायित्व मानते हैं। यहाँ विवाह एक धार्मिक क्रिया भी माना जाता है।

5) ईश्वरीय देन :- भारत में सन्तान एक ईश्वरीय देन मानी जाती है और इसकी प्राप्ति को अपने भाग्य की देन मानते हैं अतः अधिकांश जनसंख्या का

सन्तान निरोध उपायों पर विश्वास नहीं है।

6) मनोरंजन साधनों का अभाव :- अधिकांश जनसंख्या गाँवों में रहती है जहाँ मनोरंजन के साधन नहीं होते हैं अतः लोग यौन सम्पर्क को ही मनोरंजन मानते है इससे जनसंख्या वृद्धि होती है।

7) निम्न आय व निम्न जीवन-स्तर :- भारत में प्रति व्यक्ति आय अन्य देशों की तुलना में काफी कम है। इसी कारण यहाँ जीवन स्तर भी भिन्न है। अधिक सन्तान होने से आय वृद्धि होती है व जीवन-स्तर सुधरता है क्योंकि भारत में 7-8 वर्ष का बच्चा भी अपने पिता के काम में हाथ बँटाने लगता है।

8) जलवायु :- भारतीय जलवायु गर्म है जिसके कारण भारतीय स्त्रियों की प्रजनन शक्ति अधिक है ।

9) ग्रामीण क्षेत्रों में निरोधक सुविधाओं की कमी :- ग्रामीण क्षेत्रों में गर्भ धारण को रोकने के लिए आवश्यक चिकित्सा व अन्य सुविधाओं का अभाव है।

मृत्यु-दर :- मृत्यु-दर से अर्थ एक वर्ष में प्रति हजार जनसंख्या के पीछे मृत्युओं की संख्या से है। इस दर में काफी कमी हुई है। 1911-20 के मध्य यह दर 47.2 थी जो 1961-71 के बीच 18.9 रह गयी और अब 1971-81 के बीच 14.8 रह गयी तथा वर्तमान में यह 12.5 है। इस प्रकार पिछले 70 वर्षों में मृत्यु-दर घटकर लगभग एक तिहाई रह गयी है। यह भी अन्य देशों की तुलना में ऊँची है।

मृत्यु-दर की कमी के कारण :-

भारत में मृत्यु-दर में कमी के कई कारण है लेकिन इनमें से प्रमुख है

(1) अकालों व महामारियों में कमी, (2) चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुधार कार्यक्रमों का विस्तार, (3) स्त्रियों की शिक्षा में वृद्धि, (4) विवाह आयु में वृद्धि, (5) मनोरंजन साधनों का विस्तार, (6) अन्ध विश्वास में कमी, (7) शहरीकरण, (8) जीवन-स्तर में वृद्धि आदि ।

जनसंख्या का व्यावसायिक वितरण

जनसंख्या के व्यावसायिक वितरण से अर्थ कुल जनसंख्या के उस अनुपात से है जिसमें जनसंख्या विभिन्न प्रकार के व्यवसाय से लगी है। दूसरे शब्दों में, कुल जनसंख्या विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में जिस अनुपात में लगी है इसी को जनसंख्या का व्यावसायिक वितरण कहते हैं।

कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या का अनुपात भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न है तथा एक ही देश में अलग-अलग समयों पर अलग-अलग है। इसके प्रमुख कारण है - प्रत्याशित आयु, रोजगार अवसरों की उपलब्धि, कार्य के प्रति जनता का दृष्टिकोण, भारत की 1981 की जनगणना के अनुसार 68.5 करोड़ कुल जनसंख्या में से कार्यशील जनसंख्या 22.8 करोड़ व्यक्ति है जो कुल जनसंख्या का 33 प्रतिशत है। यह प्रतिशत पिछले दशकों में घटता-बढ़ता रहा है। 1901 में कार्यशील जनसंख्या 46.6 प्रतिशत थी जबकि 1931 में 42.3 प्रतिशत, 1961 मे 43 प्रतिशत व 1971 में 33 प्रतिशत ।

यदि हम अन्य देशों से भारत की कार्यशील जनसंख्या की तुलना करते है तो पाते है कि हमारा प्रतिशत जो 30 है वह बहुत ही कम है। जैसे पश्चिमी जर्मनी की 73 प्रतिशत, जापान की 50 प्रतिशत, इंग्लैण्ड की 45 प्रतिशत व

फ्रांस की 43 प्रतिशत जनसंख्या कार्यशील है।

1981 की जनगणना के अनुसार भारत की कार्यशील जनसंख्या का व्यावसायिक विभाजन इस प्रकार है -- कृषि 42 प्रतिशत, श्रमिक 26.3 प्रतिशत, वन पशुपालन आदि 2.2 प्रतिशत, गृह उद्योग में 3.5 प्रतिशत व खनन 0.5 प्रतिशत, गृह निर्माण उद्योग के अतिरिक्त उद्योग 7.4 प्रतिशत, निर्माण कार्य 1.5, वाणिज्य व व्यापार 5.8 प्रतिशत, परिवहन एवं संचार 2.5 प्रतिशत व अन्य 8.3 प्रतिशत।

<u>व्यावसायिक वितरण एवं आर्थिक विकास</u>

यदि किसी देश की कुल जनसंख्या का एक बहुत बड़ा प्रतिशत कृषि पर निर्भर रहता है तो वह देश आर्थिक विकास की निम्न अवस्था में माना जाता है। इसके विपरीत, यदि किसी देश में कृषि पर बहुत कम प्रतिशत निर्भर करता है तो वह देश विकसित माना जाता है। इसी प्रकार यदि कोई देश विकास की ओर अग्रसर होता है तो उसकी जनसंख्या का कृषि व अन्य प्राथमिक व्यवसायों पर प्रतिशत कम होता जाता है।

आर्थिक विकास की प्रारम्भिक अवस्था में कार्यशील जनसंख्या का सर्वाधिक अनुपात प्राथमिक क्षेत्र में संलग्न होने के कई कारण हैं, जैसे:-

1. <u>अविकसित या अल्प विकसित देशों में खाद्य सामग्री का उत्पादन कम होना</u>

इसीलिए यहाँ अधिकांश जनसंख्या न्यूनतम भोजन आवश्यकता को ही पूरा

करने हेतु कृषि कार्य में संलग्न रहने के लिए विवश होती है।

2) <u>आवश्यक आयातों के भुगतान के लिए कच्चे पदार्थों का निर्यात किया जाना</u> :- अनेक अल्प विकसित देशों को अपने आयातों का भुगतान करने के लिए कृषि उपज व खनिज पदार्थों का निर्यात करना होता है। इस कारण से भी वहाँ जनसंख्या का अधिकतर भाग प्राथमिक क्षेत्रों में ही कार्य-संलग्न रहता है।

3) <u>गैर कृषि क्षेत्रों में रोजगार की कमी होना</u>

यह भी एक तथ्य है कि लोगों को कृषि क्षेत्र पर निर्भर रहना पड़ता है। किन्तु आर्थिक विकास के साथ-साथ दशाएँ बदलने लगती है। प्राथमिक क्षेत्र में उत्पादन बढ़ता है। श्रमिक निर्माणी उद्योगों की ओर जाने लगते हैं। क्योंकि विकास के साथ-साथ उनकी आय बढ़ती है और फलस्वरूप उद्योग निर्मित वस्तुओं के लिए माँग तेजी से बढ़ती है जिससे उद्योगों का विस्तार होकर वहाँ रोजगार के अवसर बढ़ जाते हैं। निर्माण क्षेत्र की उन्नति के साथ-साथ बैंकिंग, बीमा परिवहन, आदि क्षेत्रों का भी तेजी से विकास होता है। फलतः इस क्षेत्र में संलग्न कार्यशील जनसंख्या का अनुपात बढ़ता है।

कुछ विद्वानों का कहना है कि भारत में कृषि क्षेत्र से श्रमिकों को हटाकर उद्योगो व सेवाओं में लगाया जाना चाहिए क्योंकि कृषि में लगभग एक चौथाई व्यक्ति फालतू है जो कृषि उत्पादन में कोई महत्वपूर्ण योग नहीं देते हैं। ऐसा होने से प्रति व्यक्ति आय बढ़ेगी, राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी, उत्पादन बढ़ेगा, जीवन-स्तर में वृद्धि होगी, देश में गरीबी व बेरोजगारी कम होगी।

भारत में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है और अनुमान है कि लगभग 60 लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष श्रम-बाजार में प्रवेश करते हैं। देश की प्रत्याशित आयु बराबर बढ़ रही है। वर्तमान में लगभग 5 करोड़ व्यक्ति बेकार है। इन सबसे रोजगार चाहने वालों की संख्या में वृद्धि होगी। अतः उद्योग व सेवाओं के क्षेत्र में विस्तार किया जाना चाहिये। इससे कृषि क्षेत्र में श्रमिकों का अनुपात धीरे-धीरे कम हो जायेगा।[17]

जनसंख्या का प्रजननता विभिन्नता पर प्रभाव

जनसंख्या के अनेक कारणों का अध्ययन करने के लिये मानव प्रजननता का अध्ययन आवश्यक होता है। जैविक स्थानान्तरण के लिये मानव प्रजननता उत्तरदायी है। इसके अतिरिक्त मानव समाज की व्यवस्था मानव का उत्तरदायित्व होता है विश्व की जनसंख्या वृद्धि आन्तरिक रूप से मानव प्रजननता पर निर्भर होती है प्रत्येक समाज अपनी दुबारा पूर्ति मानव प्रजननता की प्रक्रिया द्वारा पूरी करता है इस प्रकार जनसंख्या गतिकी में प्रजननता एक धनात्मक स्थिति है जिसके द्वारा जनसंख्या में विस्तार और शक्ति की अन्तर्क्रियाओं के मृत्यु-दर निर्धारित होती है। यदि यह मान संख्या का बदलाव अपर्याप्त है और एक विशेष समाज में मृत्यु-दर निरन्तर जन्म-दर से अधिक है तो उस समाज के सामने उसमें अस्तित्व का खतरा पैदा हो जाता है। दूसरे शब्दों में मानव संख्या का अत्याधिक स्थानान्तरण अनेक सामाजिक और राजनैतिक समस्यायें एक देश के लिये संचित करता

---

17. मामोरिया एवं जैन, भारत की आर्थिक समस्यायें, पेज सं0 57-65 । साहित्य भवन, आगरा, 1986.

है एक समुदाय के स्थानान्तरण की प्रक्रिया प्रजननता के द्वारा एक जटिल प्रक्रिया है मानव प्रक्रिया की जैविक सीमाओं का विश्लेषण करने के लिये अनेक तथ्यों जो सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एवं आर्थिक और ये तथ्य भी प्रजननता की विभिन्नताओं और स्तरों को निर्धारित करने के लिये उत्तर-दायी होते हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारम्भिक-काल में मानव प्रजननता के अध्ययन की पहुँच मुख्यतः गणितो-मुख की उस समय सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक आर्थिक और राजनैतिक तथ्य प्रजननता की विभिन्नताओं और स्तरों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण स्थान नहीं रखते थे इस सीमित दृष्टिकोण का मुख्य कारण उस समय जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययन किसी भी स्तर पर विकसित नहीं था ।

प्रजननता की गतिकीय विशेषतायें उस समय महसूस की गई थीं, जब 1930 की महामंदी काल के प्रारम्भिक काल में, उत्तर पश्चिम यूरोप और उत्तरी अर्थात संयुक्त राज्य अमेरीका और कनाडा में जन्म-दर बहुत कम हो गई थी। जो कि या जिसकी प्रवृत्ति बहुत ही निम्न स्तर की और प्रतिष्ठापित हुई। अर्थात पहले बढ़ती, फिर स्थिर व ऊँची प्रवृत्ति के बाद पुनः गिरती हुई थी। उस समय से, जनांकिकीय विशेषज्ञों ने यह अपेक्षा की थी कि उत्तर पश्चिम यूरोप और उत्तरी अमेरिका ने जन्म-दर की प्रवृत्ति लगातार गिरती हुई होगी या बहुत ही कम स्तर पर स्थिर होगी। तदनन्तर इस अवस्था में परिवर्तन हुआ और गिरती हुई प्रवृत्ति की विशेषज्ञों की मान्यतायें असत्य साबित हुईं। यद्यपि

"बेबी बूम" भविष्यगत अवधारणा को स्पष्ट नहीं करता था परन्तु यह स्थिति जनांकिकीय विशेषज्ञों के लिए एक दिशा निर्देश अवश्य ही साबित हुआ । सामान्यता: समाज वैज्ञानिकों के लिए यह स्थिति एक वास्तविकता की स्थिति को स्पष्ट करने में सफल रहीं। और जनांकिकीय विशेषज्ञों ने प्रजननता के अध्ययन के लिए व विस्तृत विवेचन के लिए सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक तथ्यों का महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया । "बेबी बूम" की स्थिति से यह पक्ष भी प्रकाश में आया कि नियोजित परिवारों का आकार भी बड़ा हो सकता है और केवल छोटा ही नहीं होता, जैसा कि पहले विशेषज्ञों का विचार था।[18]

अनेक देशों के अनुभवों से यह प्रदर्शित हुआ है कि किसी देश की प्रजननता दरों में उतार-चढ़ाव का प्रभाव राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों पर पड़ता है। उदाहरणार्थ रोमानिया में कानूनी गर्भपात के परिणामस्वरूप जन्म-दर में गिरावट आई। 1956 में एक हजार जनसंख्या पर 24·2 थी जो 1966 में गिरकर एक हजार जनसंख्या पर 14·3 हो गई। जबकि 1966 में जब गर्भपात की कानूनी सुविधा समाप्त कर दी गई। तथा एक ही वर्ष में जन्म-दर 27·4 में पहुँच गई थी।[19] एक ही वर्ष में यह जन्म-दर बहुत ही स्पष्ट है कि खुली छूट देने पर जन्म-दर पर क्या प्रभाव पड़ता है। रोनाल्ड फ्रीडमैन के

---

18. कोनितकर, तारा एवं भेण्डे, ए०आशा, प्रिंसिपल्स ऑफ पोपुलेशन स्टडीज, हिमालया पब्लिसिंग हाउस, बम्बई, 1985, पेज नं० 205 - 209 से अनुवादित ।

19. यूनाइटेड नेशन्स, डेमोग्राफिक इयर बुक 1975, पेज नं० 500 - 501·

अनुसार, रोमानिया में यह उपकथा जनांकिकीय के इतिहास में प्राकृतिक प्रयोग का एक नाटकीय उदाहरण है।[20] उन्नीसवीं शताब्दी के छठे दशक में, यह तीव्रतम महसूस किया गया कि विकसित व विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि में समस्यागत तथ्य जन्म-दर थी। वर्तमान में अनेक देशों में वृद्धि दर प्रजननता और मृत्यु-दर के स्तर पर निर्भर करती है और अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास से इस पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता है। विकासशील देशों में मृत्यु-दर कम हुई है और यह आशा की जाती है कि यह आगे भी गिरेगी। तुलनात्मक रूप से इन देशों में जन्म-दर नहीं गिरी है । और अध्ययन से ज्ञात होता है कि इन देशों में जो बहुत अधिक जनसंख्या वृद्धि के अन्तर्गत है विकास विशेषज्ञों की राय में, समाज व आर्थिक विकास के लिए खतरनाक है। यद्यपि जनसंख्या की वृद्धि-दरें, जन्म-दरों में कमी से कम हो सकती थी। यह जल्दी ही महसूस किया गया था, कि यदि विकास वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक व्यवस्था के सन्दर्भ में प्रजननता के व्यवहार का पर्याप्त ज्ञान रखते हों। इस वास्तविक तथ्य ने अनेक विकासशील देशों में प्रजननता के व्यवहारिक अध्ययन में विशेष योगदान दिया। समाज विज्ञानियों ने अनेक क्षेत्रों जैसे आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और अपराध शास्त्र और जीवविज्ञानियों ने विशेष रुचि के साथ मानव प्रजननता के क्षेत्र में अध्ययन प्रारम्भ किया । नीति निर्माताओं, प्रशासकों, चिकित्सकों और समाचार संवाददाताओं ने मुख्य रूप से परिवार नियोजन कार्यक्रम का प्रभावकारिता

---

20. रोनाल्ड फ्रीडमैन, सोशलोजी ऑफ ह्यूमन फर्टीलिटी, न्यूयार्क; इर्विंग्टन पब्लिशर्स इन्क; 1975, पेज नं0 7

के सन्दर्भ में प्रजननता के अध्ययन में रुचि लेना प्रारम्भ की और उन्होंने शोध के क्षेत्र में भी विशेष योगदान किया । इन सभी विकासात्मक कदमों के फलस्वरूप विकासशील देशों में विशेष रूप से 1960 के बाद प्रजननता अध्ययनों में जान डाल दी।

प्रजननता के अध्ययन में विशेष रुचि बढ़ने के अन्य कारण भी विचारणीय हैं। इनमें से एक यह है कि किसी भी जनसंख्या का आयु ढांचा प्राथमिक रूप से प्रजननता द्वारा निर्धारित होता है और इस आयु समूह में आयु ढांचा अन्तराल पर सामाजिक आर्थिक और राजनीति का गम्भीर प्रतिघातात्मक पड़ सकता है। एक अन्य कारण यह है कि, विधिगत विकास के कारण जैसे न्यादर्श सर्वेक्षण विधि और प्रजननता मापन में नई तकनीकों का प्रवेश होने जैसे कोहॉर्ट प्रजननता अर्थात प्रजननता का वह अध्ययन जिसमें विभिन्न दृष्टिकोणों को ध्यान में लिया जा सकता है। सावधानीपूर्वक डिजाइनिंग और स्पष्ट न्यादर्श सर्वेक्षणों की सहायता से है कि मानव प्रजननता का अध्ययन बहुत से पहलुओं से सम्भव हुआ है जैसे कौटस कान्ट्रासेप्सन और गर्भपात आदि जो अब तक बिलकुल निजी और गुप्त समझा गया था । [21] वास्तव में वर्तमान में विभिन्न सांस्कृतिक व्यवस्थाओं में समायोजन के कारण मानव प्रजननता के बहुत से निजी तथ्यों का सफलतापूर्वक अध्ययन हुआ है ।

मानव प्रजननता की समस्या को समझने के क्रम में कुछ प्रमुख तथ्यों एवं विचारों का सामान्य अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है जो निम्नांकित है।

---

21. रोनाल्ड फ्रीडमैन, सोशालोजी ऑफ ह्यूमन फर्टीलिटी, पेज नं0 8-9

उर्वरता और प्रजननता :- उर्वरता और प्रजननता के बीच भिन्नता बहुत ही महत्वपूर्ण है। उर्वरता से तात्पर्य "मनुष्य स्त्री या एक जोड़ा की एक बच्चे की उत्पादन क्षमता से है।[22] दूसरी प्रजननता से तात्पर्य बच्चे के उत्पादन की वास्तविक सम्पादन स्थिति से है जो व्यक्तिगत या समूह रूप में लागू होता है।[23] जबकि उर्वरता के मापने का कोई सीधी विधि नहीं है और प्रजननता का अध्ययन जन्म के सांख्यिकीय आँकड़ों से किया जा सकता है, यद्यपि एक व्यक्ति की प्रजननता प्राय: उसकी उर्वरता से सीमित होती है जो उत्पादन की मनो वैज्ञानिक क्षमता से सम्बन्धित होती है। इस प्रकार एक व्यक्ति की उर्वरता या एक जोड़े की उर्वरता बिलकुल सामान्य हो सकती है, फिर भी प्रजननता सम्पादन नीचा हो सकता है, इस सन्दर्भ में उर्वरता जैविक है। जहाँ प्रजननता के सन्दर्भ में यह इंगित होता है कि बच्चा उत्पादन की वास्तविक सम्पादन सामाजिक, सांस्कृतिक मनो-वैज्ञानिक व आर्थिक तथ्यों पर भी निर्भर करता है। उर्वरता भी प्रजननता के उच्च स्तर पर पाया जा सकता है। यह ध्यान रखना चाहिए किन्तु यद्यपि जनांकिकीय विशेषज्ञों ने उर्वरता और प्रजननता में पहचान या भेद किया है। परन्तु यह चिकित्सा साहित्य में बहुत ही ढीले व कम महत्वपूर्ण सन्दर्भ में उपयोग किया गया है और कभी-कभी एक समानार्थी की तरह है।[24] जन्म के सन्दर्भ में के जीवित जन्म से है और यह उस समय जन्म को सम्मिलित करने से नहीं है।

---

22. यूनाइटेड नेशन्स, मल्टी लिंग्वल डेमोग्राफिक डिक्शनरी, पोपुलेशन स्टडीज नं0 29, न्यूयार्क, 1958 पेज 38
23. आइबिड, पेज 38
24. आइबिड, पेज 38

बाँझपन :- जब एक मनुष्य या औरत या एक जोड़ा जो कम से कम एक बच्चें को जन्म देता है, उसे जनन माना जाता है। एक जो एक भी बच्चा नहीं रखता, उसे बाँझ माना जाता है। बाँझपन व्यक्ति का समूह जिसमें स्त्री या पुरुष या दोनों के सम्बन्ध में प्रयोग किया जा सकता है। सामान्य व्यवहार में प्रजननता के सन्दर्भ में बाँझपन का मापन केवल औरत के लिए भी किया जाता है। यद्यपि बाँझपन या तो प्राकृतिक हो सकता है या अप्राकृतिक, वैसे बाँझपन को सामन्यतः प्राकृतिक सन्दर्भ में ही इंगित उपयोग किया जाता है।

परिवार का आकार :- सामान्य बातचीत के ढंग में परिवार के आकार से तात्पर्य परिवार में व्यक्तियों की कुल संख्या से है। जनांकिकीय सन्दर्भ में में एक परिवार परिवार के आकार का अर्थ एक निश्चित समय में एक औरत या एक जोड़े द्वारा जन्में कुछ बच्चों की संख्या से है। समग्र रूप से परिवार आकार इंगित करता है कि औरत या महिला ने अपने पूर्ण उत्पादन काल के अन्त तक कुल कितने बच्चों को जन्म दिया है।

जन्म की क्रम :- औरत के द्वारा जन्में बच्चों को क्रम के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे पहला बच्चे क्रम दूसरे, बच्चे का क्रम आदि ।

समानता :- जन्में बच्चों की संख्या के आधार पर औरत का वर्गीकरण किया जा सकता है। उदाहरणार्थ प्रथमथा में औरत की प्रथम समानता वह है जो एक बच्चे को जन्म दी है द्वितीय में औरत की दूसरी समानता वह है जो दो बच्चों दी है और इसी प्रकार अन्य का वर्गीकरण किया जा सकता है इस प्रकार जब जन्म क्रम बच्चों को संदर्भित करता है तो समानता माँ को संदर्भित करती है।

<u>प्राकृतिक और नियन्त्रित प्रजननता</u> :- प्राकृतिक प्रजननता वह प्रजननता है जिसमें जान बूझकर बच्चों के जन्म को नियन्त्रण नहीं किया जाता है जबकि नियन्त्रित प्रजननता वह प्रजननता है जिसमें जान बूझकर व समझ कर जन्म को नियन्त्रित किया जाता है। [25]

<u>परिवर्तनशील आर्थिक एवं सामाजिक परिवेश में भारतीय प्रजननता</u>

मानव प्रजनन की सीमा क्या है ? विशेषज्ञों के अनुसार यदि किसी स्त्री की शादी 16 वर्ष की उम्र में हो जाती है, यदि गर्भाधान रोकने का कोई प्रयत्न नहीं किया जाता है, यदि वैवाहिक जीवन 30 वर्ष का है और यदि दम्पत्ति प्रजनन की दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ हैं एवं इस समयावधि में साथ-साथ रहते हैं तथा बच्चा स्वस्थ उत्पन्न होता है तो उत्पन्न बच्चों की संख्या 15 से भी अधिक हो सकती है। वर्तमान जनसंख्या में सन्तानोत्पादन में समर्थ स्त्रियाँ औसतन गर्भधारण में समर्थ उम्र तक 10 बच्चों को जन्म देती है। स्वीस मूल को एनाबैपिस्ट धार्मिक जाति (Hutterites) जो संयुक्त राज्य अमरीका तथा कनाडा में रहती हैं की स्त्रियों ने जो गर्भाधान की उम्र पार कर चुकी हैं औसतन 9 बच्चों को जन्म दिया है। मलय मूल को कोकोस (Cocos) द्वीप की स्त्रियों ने औसतन 8.4 बच्चों को जन्म दिया है। इसी प्रकार क्यूबेक एवं ब्राजील के ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों ने क्रमशः 9.9 तथा 8.8 के उच्च औसत से बच्चों को जन्म दिया है।

---

25. यूनाइटेड नेशन्स, द डिटरमिनेन्ट्स एण्ड कन्सीक्वेन्सिज ऑफ पोपुलेसन ट्रेण्ड्स, वॉ0 1, एस टी/एस ओ ए/एस ई आर,ए/50, पोपुलेसन स्टडीज नं0 50 1973, पेज 78

इस प्रकार जन्मित बच्चों की संख्या का औसत मानव प्रजनन शक्ति के औसत से काफी कम है।[26]

भारतीय प्रजननता :- अनेक अन्य देशों की अपेक्षा भारतीय प्रजननता अपेक्षाकृत कम है। वर्तमान समय में एक भारतीय महिला जो युवावस्था में शादी करती है सन्तानोत्पादन की पूरी समयावधि में औसतन 6 अथवा 7 बच्चों को जन्म देती है। चीनी तथा इस्लामिक सभ्यताओं में यह औसत 7 और 8 के मध्य रहता है। केवल पश्चिमी देशों की स्त्रियों में तथा हाल ही जापानी स्त्रियों में यह औसत भारतीय औसत से काफी कम है। पश्चिमी देशों तथा जापानी मूल के लोगों में एक पूर्ण परिवार में औसतन 4 व्यक्ति होते हैं अर्थात मुश्किल से ही औसतन 4 बच्चों को जन्म देती है।

प्रजनन के स्तर में यह भिन्नता विभिन्न जाति समूहों में केवल प्रकृति दत्त जैविक भिन्नता के कारण नहीं है बल्कि इसके विपरीत यह बात और अधिक स्पष्ट होती जा रही है कि सांस्कृतिक कारण इस स्तर को निर्धारित करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण हैं।

मानव इतिहास ऐसी संस्कृतियों के उदाहरणों से भरा पड़ा है जिनका झुकाव प्रजनन का ऊँचा स्तर बनाये रखने की ओर रहा है। बाइबिल की कहावत "उपयोगी बनो और जनसंख्या बढ़ाते रहो", इसका एक उदाहरण है। हमारी स्वयं की संस्कृति में नई दुल्हन को वैदिक आशीर्वाद "ईश्वर करे तुम्हारे इस पति से

---

26 डा0 सी0 चन्द्रशेखरन, इण्डियन फर्टिलिटी इन ए चेन्जिंग इकोनोमिक एण्ड सोशल सेटिंग, फैमिली प्लानिंग न्यूज, अक्टूबर, 1962, पे0 228 से 230

10 बच्चे उत्पन्न हों और इसका स्थान ग्यारवाँ हो" इस बात का द्योतक है कि हमारे पूर्वज बड़ा परिवार बनाने को प्रोत्साहित करते आये हैं। अब तक अधिकांश देशों में उच्च प्रजनन को जो समर्थन प्राप्त होता आया है उसके पीछे कुछ सामाजिक औचित्य भी दृष्टिगोचर होता है। अठारवीं शताब्दि के अन्त तक संसार के प्रत्येक भाग में शायद ही कहीं मानव उम्र 40 वर्ष से अधिक आँकी गई हो। ऐसी दशा में जब शिशुओं एवं बच्चों की मृत्यु-दर बहुत अधिक हो, मानव जाति को जीवित रखने हेतु उच्च जन्म-दर द्वारा मृत्यु-दर को सन्तुलित रखना आवश्यक था। अधिकांश भली प्रकार से व्यवस्थित समाजों में ऐसी सामाजिक संस्थाओं एवं दृष्टिकोण को जन्म दिया जो अधिक प्रजनन की ~~अनुमती~~ अनुमति दें। इसके अपवाद स्वरूप है आदि जातियाँ एवं नानावदोस है जो बच्चों की संख्या सीमित रखने के लिए शिशुओं की हत्या तक कर देते थे।

<u>प्रजनन का बदलता स्वरूप</u> :- सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं में परिवर्तन के फल-स्वरूप प्रजनन ने जिस प्रकार प्रतिक्रिया की है तथा मृत्यु-दर में भी जिस प्रकार कमी आई है वह केवल शैक्षिक महत्व की ही वस्तु नहीं है वरन् उन लोगों के लिए विशेष शिक्षाप्रद है जो भविष्य के जनसंख्या वृद्धि से चिन्तित हैं। पश्चिम में अठारवीं शताब्दि के अन्त में मृत्यु-दर कम होना प्रारम्भ हो गई थी। लेकिन जन्म-दर 1880 के अन्त तक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर नहीं थी। उदाहरण स्वरूप इंगलैण्ड एवं वेल्स में जन्म-दर 1840 एवं 1880 के मध्य 1000 को जनसंख्या पर 35 थी (तालिका नं० 1), 1888 - 1912 की समयावधि में जन्म-दर घटकर 30.9 प्रति हजार आँकी गई। तदोपरान्त 1938 से 1942 तक ह्रास की यह गति प्रारम्भ

में धीमी रही लेकिन बाद में इसमें वृद्धि हो गई। अनेक यौरूप के देशों में जन्म-दर एवं मृत्यु-दर में गिरावट होना फिर केवल जन्म-दर में गिरावट होने के उपरान्त पुनः वृद्धि होना अपनी अलग विशिष्टता रखता है।

तालिका नं0 1.1 :- इंग्लैण्ड एवं वेल्स में 1938-1950 में जन्म-दर का औसत

समयावधि	जन्म - दर
1838 - 1842	31.5
1848 - 1852	33.4
1858 - 1862	34.5
1868 - 1872	35.3
1878 - 1882	34.4
1888 - 1892	30.9
1898 - 1902	28.8
1908 - 1912	25.2
1918 - 1922	20.9
1928 - 1932	16.1
1938 - 1942	14.7
1946 - 1950	18.0

स्रोत :- रीप्रोडक्शन फ्रॉम पोपुलेशन प्रॉब्लम्स बाइ वारन थामसन, मैक्ग्रा-हिल बुक कम्पनी न्यूयार्क, 1953, पेज 162.

जन्म दर में कमी मुख्य रूप से प्रति विवाहित स्त्री के औसतन कम बच्चे उत्पन्न होने के कारण हुई न कि कम स्त्रियों के विवाह करने के कारण। केवल

आयरलैण्ड के मामले में यह कहा जा सकता है कि जन्म-दर में कमी अधिक स्त्रियों के अविवाहित रहने के कारण हुई। इंग्लैण्ड एवं वेल्स के अनुभव से उत्पन्न बच्चों की संख्या में कमी पुनः देखी जा सकती है जहाँ शादी शुदा पूर्ण स्वस्थ स्त्रियों ने विक्टोरिया युग में औसत प्रति स्त्री 5 - 7 बच्चों को जन्म दिया जब कि 1920 - 24 के मध्य यह संख्या घट कर 2 - 4 रह गई।

छोटे परिवार की भावना का प्रसार जन्म दर में उपरोक्त कमी के लिए उत्तरदायी है। उच्च जन्म-दर क्रमशः घट रही है। द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व चार या उससे अधिक बच्चों के किसी दम्पत्ति से उत्पन्न होने वालों की संख्या इंग्लैण्ड, वेल्स तथा यू0 एस0 ए0 में कुल जन्म लेने वाले बच्चों की संख्या का 27 प्रतिशत था जब कि यह संख्या भारत तथा पूर्वी देशों में आज भी 40 प्रतिशत से ऊपर है।

जिस प्रकार से पश्चिमी देशों की जनसंख्या के बड़े भाग ने छोटे परिवार का लक्ष्य स्वीकार कर लिया है दिलचस्पी का विषय है। विशिष्ट परिस्थितियों में यह आन्दोलन पहले बड़े-बड़े नगरों में प्रारम्भ हुआ फिर धीरे-धीरे यह छोटे-छोटे शहरों में एवं ग्रामीण क्षेत्र में फैल गया । ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों ने छोटे परिवार के विचार को धीरे-धीरे ही स्वीकार किया । तालिका नं0 2 में यू0 एस0 ए0 के दिये गये आँकड़ों में प्रदर्शित करते हैं कि शहरी क्षेत्र की महिलाये ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की अपेक्षा कम गर्भधारण करती है। समय के व्यतीत होने के साथ-साथ शहरी एवं बि ग्रामीण क्षेत्र के किसान और गैर किसान महिलाओं में अन्तर बढ़ता ही गया ।

तारिणी नं0 2 :- 1940 एवं 1910 में 50 - 74 वर्ष की आयु वाली प्रति 1000 स्त्रियों में जन्मित बच्चों की संख्या ।

क्षेत्र	1940	1910
शहरी	2666	4297
ग्रामीण - गैर किसान	3318	4637
ग्रामीण - किसान	4211	5617
संयुक्त राज्य अमरीका (योग)	3094	4768

स्त्रोत :- यू0 एस0 ब्यूरो ऑफ सेन्सस, पोपुलेशन, डिफरेन्सियल फर्टीलिटी 1940 एण्ड 1910 स्टैण्डर्डाइज्ड फर्टीलिटी रेट्स एण्ड रीप्रोडक्शन रेट्स, पेज 8, जी0पी0ओ0, वाशिंगटन, डी0सी0, 1944.

पाश्चिमी देशों में सूक्ष्म अध्ययन से पता चला है कि प्रजनन में कमी तथा गर्भ निरोधक विधियों में वृद्धि में घनिष्ठ सम्बन्ध है। 1946-47 में रॉयल कमीशन द्वारा जनसंख्या पर किए गए सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि इंग्लैण्ड एवं वेल्स में 1910 के पूर्व विवाहित स्त्री-पुरुषों के केवल 16 प्रतिशत लोगों ने गर्भ निरोधकों का उपयोग किया जब कि 1940 में यह संख्या बढ़कर 60 प्रतिशत से भी अधिक हो गई। सर्वेक्षण से यह भी ज्ञात हुआ अन्य उपकरण विधि विशेषत: नियंत्रित यौन क्रिया का प्रयोग घटा तथा उपकरण प्रयोग की विधि में वृद्धि हुई। 1910 के पूर्व केवल 16 प्रतिशत विवाहित स्त्रियाँ उपकरण विधियों का प्रयोग करती थी जब कि हाल ही में विवाहित स्त्रियों की यह संख्या बढ़कर 50 प्रतिशत हो गई।

इंग्लैण्ड में हाल ही में राष्ट्रीय स्तर पर किए गये सर्वेक्षण से पूर्व में किए गए सर्वेक्षणों के परिणामों की पुष्टि होती है जिसके अनुसार गर्भ निरोधक विधियों के प्रसार में लगातार वृद्धि हो रही है। नव विवाहित दम्पत्तियों की सूचनानुसार 70 प्रतिशत लोग गर्भ निरोधकों का प्रयोग कर रहे हैं तथा और अधिक संख्या में दम्पत्तियों में इसका प्रयोग आरम्भ हो जायेगा जब उनका परिवार बड़ा होने लगेगा । यह भी ज्ञात हुआ है कि परिवार नियोजन में विभिन्न वर्गों की संख्या में अन्तर भी धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। अब शारीरिक परिश्रम करने वाले श्रमिक भी गैर शारीरिक परिश्रम करने वाले लोगों के द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलने लगे हैं।

परिवार को सीमित रखने की भावना की प्रबलता इस बात से देखी जा सकती है कि प्रजनन में सक्षम दम्पत्तियों में अर्थात जिनमें सफल प्रजनन करने में किसी प्रकार का शारीरिक दोष नहीं है, परिवार नियोजन को कितनी तीव्रता से अपना रहे हैं। संयुक्त राज्य अमरीका की गोरी जातियों में यह पाया गया है कि लगभग सभी सक्षम दम्पत्ति परिवार को सीमित रखने के उद्देश्य से परिवार नियोजन को अपना रहे हैं। अधिकांश व्यक्ति जो परिवार नियोजन को न तो अपना रहे हैं और न भविष्य में अपनाने की सोच रहे हैं, शारीरिक रूप से प्रजनन में अक्षम व्यक्ति हैं। "कंडोम" का प्रयोग लोकप्रियता की दृष्टि से प्रथम है, नसबन्दी द्वितीय स्थान रखती है। अधिक गर्भाधान अर्थात इच्छा के विरुद्ध अधिक गर्भधारण का होना समर्थ दम्पत्तियों में केवल 13 प्रतिशत है। अत्याधिक प्रजनन शील दम्पत्तियों में आवश्यकता से केवल एक अधिक बच्चे का जन्म लेना पाया गया है तथा बहुत ही कम दम्पत्ति

ऐसे है जिनके तीन या उससे भी अधिक बच्चे हैं।

मानव प्रजनन को नियंत्रित करने का सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण पश्चिमी देशों में द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व एवं उपरान्त जन्म-दर के झुकाव से देखा जा सकता है। पूर्व में हमने इन देशों में जन्म-दर की गिरावट को देखा पर प्रवृत्ति द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व तक जारी रही सबसे कम जन्म-दर 1941 में इंग्लैण्ड में आँकी गई जो प्रति हजार 13.9 थी। संयुक्त राज्य अमरीका में सबसे कम जन्म-दर 18.4 प्रति हजार 1936 में आँकी गई। द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारम्भ होने के उपरान्त पश्चिमी योरूप के देशों में जन्म-दर में भी वृद्धि होना प्रारम्भ हो गई परन्तु यह एक अस्थायी वृद्धि सिद्ध हुई। इस घटना का मुख्य कारण द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आर्थिक अपचयन के समयान्तराल में सन्तानोत्पादन को स्थगित करना प्रभावशाली ढंग से परिवार को सीमित रखने के उद्देश्य से एवं भविष्य में हाल ही में विवाहित युगलों द्वारा सन्तान को गोद लेना है। जब द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ लोगों को आर्थिक स्थिति अधिक सन्तान उत्पन्न करने के अनुकूल थी। अब न केवल बच्चों की संख्या बल्कि उनके जन्म का समय भी मनुष्य के नियंत्रण में है। जिस तीव्रता से मानवीय प्रजनन के सम्बन्ध में जैविक एवं वैज्ञानिक प्रगति हो रही है, निकट भविष्य में ही मनुष्य प्रजनन पर और भी नियंत्रण प्राप्त कर लेगा। जब कि गर्भ निरोधक विधियाँ पश्चिमी संस्कृति में प्रजनन को नियन्त्रित रखने में मुख्य रूप से उत्तरदायी है। जापान के हाल के अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि राज्य उसका अनुमोदन करें और जनता का बड़ा वर्ग उसे स्वीकार करे, अन्य विधियाँ भी समान रूप से प्रभावशाली हो सकती है। जापान में जो जन्म-

दर 1947 के पूर्व 30 प्रति हजार थी वह बाद के 12 वर्षों में घट कर लगभग आधी रह गई। 1959 में वहाँ जन्म-दर 175 प्रति हजार थी। जन्म-दर में यह गिरावट प्रेरित गर्भपात में भारी वृद्धि तथा अधिकतर स्त्रियों के सन्तान निरोधक ऑपरेशन कराने से हुई। उदाहरण के लिए 1959 में प्रेरित गर्भपातों की संख्या 11 लाख थी तथा बंध्याकरण की संख्या 40000 थी। यद्यपि जापान में भी गर्भ निरोधकों का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है लेकिन जन्म-दर में कमी मुख्य रूप से उपरोक्त कारणों से ही हुई।

भारत के प्रजनन के सम्बन्ध में सूचना नमूने के तौर पर सीमित सर्वेक्षण जो पिछले 15 वर्षों में किए गये, प्राप्त हुई इन सर्वेक्षणों से जो आँकड़े प्राप्त हुए उनकी जो जाँच की गई उससे भारतीय प्रजनन उसके उतार चढ़ाव एवं समान के सम्बन्ध में कुछ विशेष परिणाम निकाले गये। यद्यपि देश के कुछ भागों में इन परिणामों से भिन्नता को असम्भव समझ कर अस्वीकार नहीं किया जा सकता फिर भी मोटी सी आकृति जो नीचे दी जा रही है भारत की परिस्थितियों के अनुसार यथेष्ट रूप में प्रतीक स्वरूप है तथा इन्हें भारत की जनसंख्या के सम्बन्ध में नीति निर्धारण में प्रयोग किया जा सकता है।

स्तर एवं विभिन्नता :- भारत में विवाहित स्त्रियाँ प्रजनन की आयु तक औसतन 6 अथवा 7 बच्चों को जन्म देती है। इस संख्या में देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। सारणी नं0 3 में दिये गये आँकड़ों से इसे देखा जा सकता है।

सारणी नं0-13:- बच्चों की औसत संख्या जिन्हें भारतीय स्त्री अपने प्रजनन काल तक जन्म देती है।

बंगाल का सर्वेक्षण (1946 - 47)		
	: उच्च मध्यम वर्ग (नगरीय क्षेत्र)	5.7
बैनिया टोला	: निम्न मध्यम वर्ग (")	6.2
सिंगुर	: ग्रामीण	7.3
मैसूर का सर्वेक्षण (1952)		
बंगलौर शहर		6.2
ग्रामीण क्षेत्र		6.0
पूना सर्वेक्षण		
पूना शहर		6.4
पूना (शहरी क्षेत्र के बाहर)		6.4
राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे		
भारत (नगरीय)		5.86
सम्पूर्ण भारत (ग्रामीण)		5.92
पूना नगर (1956)		5.9
बनारस ग्रामीण क्षेत्र		6.8 - 7.3

स्त्रोत :- कोष्ठक में दिए गए वर्ष सर्वेक्षण के वर्ष को दर्शाते हैं

नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों के मध्य प्रजनन में कोई विशेष अन्तर नहीं है। जनगणना आयुक्त ने उन स्त्रियों के आँकड़ों के आधार पर जो एक बच्चे को जन्म दे चुकी थी तथा जो जनगणना के दिन विवाहित थी, 1951 की अपनी जनगणना आख्या [रिपोर्ट] में ग्रामीण एवं नगरीय प्रजनन में अन्तर पर विचार प्रगट किये हैं ट्रावन कोर -कोचीन राज्य में जो स्त्रियाँ 45 वर्ष अथवा उससे अधिक आयु तक विवाहित रही है के औसतन नगरीय क्षेत्र में 6.4 बच्चे एवं ग्रामीण क्षेत्र में 6.6 बच्चे उत्पन्न हुए हैं। जनगणना आयुक्त के शब्दों में "नगरीय औसत और ग्रामीण औसत का अन्तर इतना कम है कि वह एक प्रकार से महत्वहीन है" डाडेकर ने पूना शहर तथा उसके बाह्य क्षेत्रों में विवाहित स्त्रियों ने सम्पूर्ण विवाहित जीवनकाल में औसतन क्रमश: जितने बच्चों को जन्म दिया है उनमें कोई अन्तर नहीं पाया है। दोनों दशाओं में यह औसत 6.4 बच्चे थे। मैसूर राज्य में संयुक्त राष्ट्र संघ एवं भारत सरकार ने जनसंख्या के अध्ययनोपरान्त पाया कि 45 वर्ष की उम्र तक विवाहित जीवनकाल में स्त्रियों ने बंगलौर शहर में औसतन 5.9 एवं ग्रामीण क्षेत्रों में 5.8 बच्चों को जन्म दिया है। राष्ट्रीय सेम्पिल सर्वेक्षण के चौथे दौर से ज्ञात हुआ कि नगरीय पत्नियों ने औसतन 5.86 बच्चों [अजन्में शिशुओं सहित] एवं ग्रामीण पत्नियों ने औसतन 5.92 बच्चों को जन्म दिया। बंगाल के अध्ययन में चन्द्रशेखरन तथा जॉर्ज ने बतलाया कि कलकत्ता में उच्च एवं निम्न श्रेणी के विवाहित स्त्रियों ने 45 वर्ष की उम्र तक 5.7 एवं 6.2 बच्चों को जन्म दिया जब कि कलकत्ता से 20 मील दूर ग्रामीण क्षेत्रों में यह संख्या 7.3 थी। पटना के सर्वेक्षण में प्रजनन में समर्थ आयु तक विवाहित स्त्रियों ने औसतन 5.9 बच्चों

बच्चों को जन्म दिया ।

जो कुछ ऊपर कहा गया है उससे प्रतीत होता है कि सामान्य नगरीकरण ने विवाहित स्त्रियों के गर्भाधान की उम्र तक जन्मित बच्चों की संख्या को प्रभावित नहीं किया है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि कलकत्ता के निवासियों में भी, जहाँ लोगों का जीवन भारत में सर्वाधिक नगरीय परिस्थितियों से प्रभावित है, बच्चों की जन्म-दर को बहुत थोड़ा प्रभावित किया है।

हाल ही में प्रजनन के स्वरूप में जो भिन्नता पाई गई है जब सम्पूर्ण प्रजनन आयु में उत्पन्न बच्चों के औसत पर ध्यान जाता है, ध्यान देने योग्य नहीं है। वर्तमान में नगरीय एवं ग्रामीण स्त्रियों में प्रजनन में जो अन्तर आया है उसे वर्तमान जन्म-दर को देख कर आँका जा सकता है। दुर्भाग्यवश दोषपूर्ण रजिस्ट्रेशन से, सरकारी जन्म-दर की तुलना सामान्यतः नहीं की जा सकती। भारत में कुछ चुने हुए क्षेत्रों की जन्म-दर सारणी नं0 14 में दी जा रही है।

सारणी नं01.4 :- भारत के कुछ चुने हुए क्षेत्रों की जन्म-दर

मैसूर सर्वेक्षण (1950 - 51)	जन्म-दर
बंगलौर शहर	33.0
नगर	38.9 - 39.8
मैदानी ग्रामीण क्षेत्र	39.9
पहाड़ी ग्रामीण क्षेत्र	44.5

राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे (सातवाँ दौर) - (1952 - 53)

नगर क्षेत्र	29·7
ग्रामीण क्षेत्र	34·6
पटना शहर (1955)	39·9

राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे (चौदहवाँ दौर) (1957 - 59)

सम्पूर्ण भारत ग्रामीण क्षेत्र	38·3
बम्बई शहर 1951	27·0

मैसूर जनसंख्या अध्ययन के अनुसार बंगलौर में जन्म-दर प्रति 1000 पर 33·0 ग्रामीण क्षेत्रों में 40·0 थी। डांडेकर के पूना अध्ययन ने भी यही संकेत दिया कि पूना शहर की जन्म-दर ग्रामीण क्षेत्रों की जन्म-दर से कम हो सकती है। राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों की जन्म-34·6 प्रति हजार तथा शहरी क्षेत्र में 29·7 है। लेकिन चौथे दौर की गणना में ग्रामीण क्षेत्र की जन्म-दर 38·3 प्रति हजार थी अतः सम्भव है कि सातवें दौर की गणना में ग्रामीण जन्म-दर कम आँकी गई हो फिर भी जो भी अन्तर बतलाया गया है वह महत्वपूर्ण समझा जा सकता है। बम्बई शहर की जन्म-दर को, आयु एवं लिंग के अन्तर को इस प्रकार सन्तुलित करने के उपरान्त ताकि वह सम्पूर्ण देश की परिस्थितियों के अनुकूल हो जाये, 1000 पर 27 से अधिक नहीं पाया गया जैसा कि डैमोग्राफिक ट्रेनिंग तथा रिसर्च सेन्टर के अप्रकाशित अध्ययन से आँका गया।

कुछ नगरीय क्षेत्रों में जन्म-दर में गिरावट प्रारम्भ हो गई है। क्योंकि

भारत की जनसंख्या का अधिकांश भाग गाँवों में रहता है ऐसी आशा की जा सकती है, कि सम्पूर्ण देश में संस्थागत एवं सांस्कृतिक कारण देश के प्रजनन स्तर एवं दिशा को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भाग निबाह करेंगे। विवाह के समय आयु, विधवा होते समय आयु एवं अन्तिम बच्चों की संख्या को प्रभावित करने वाले रीति रिवाज विशेष महत्व रखते हैं। इन कारणों पर अब विचार किया जायेगा।

प्रजनन पर विवाह के समय की आयु का प्रभाव

यद्यपि भारत में विवाह के समय की आयु में धीरे-धीरे बढ़ोत्तरी हो रही है, फिर भी यह अपेक्षाकृत कम है। सम्पूर्ण देश की गणना कर ज्ञात हुआ है कि लड़कियों की विवाह के समय की औसत आयु 1921-31 में प्रतिवर्ष 13.0 वर्ष से बढ़कर 1931-41 के मध्य 14.9 तथा 1941-51 के मध्य 15.4 वर्ष हो गई है। ट्रावनकोर - कोचीन राज्य मद्रास, आसाम, पंजाब, मैसूर एवं बम्बई में यह आयु देश के अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक आँकी गई। नगरीय क्षेत्रों में लड़कियों की शादी की उम्र ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक है। राष्ट्रीय सैम्पिल के चौथे दौरे के अनुसार 1946-51 के मध्य शादी करने वाली लड़कियों की औसत उम्र 14.6 वर्ष ग्रामीण क्षेत्रों में तथा 16.4 वर्ष नगरीय क्षेत्रों में थी। विवाह आयु पर जातिगत एवं परम्परागत विचारों पर सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ रहा है और नगरों में स्त्रियों का विवाह

होने लगा है विशेषकर उच्च शिक्षित वर्ग में । बंगाल के सर्वेक्षण में 1942-47 के मध्य स्त्रियों की विवाह के समय की औसत उम्र उच्च मध्यम वर्ग में 19.3 - 16.8, निम्न मध्यम वर्ग में तथा 13.7 ग्रामीण क्षेत्रों में पाई गई। मैसूर में जनसंख्या पर वर्तमान अध्ययन से पता चला है कि मिडिल स्कूल तक शिक्षा प्राप्त 25% स्त्रियों ने तथा हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त 50% स्त्रियों ने 20 वर्ष की आयु के पहले विवाह नहीं किया है। बंगलौर शहर में हाल ही में विवाहित स्त्रियों में से 17% ने 20 वर्ष की आयु प्राप्त होने के बाद विवाह किया जब कि 10% स्त्रियों ने कस्बों में, 8% ने ग्रामीण पहाड़ी क्षेत्रों में तथा 2% ने मैदानी ग्रामीण क्षेत्रों में 2% के । बम्बई शहर में संक्षिप्त सर्वेक्षण से संकेत मिलता है कि हाल ही में विवाहित स्त्रियों में से लगभग एक तिहाई की आयु 20 वर्ष से अधिक हो सकती है। सम्पूर्ण देश को यदि देखा जाये तो सन्देह है कि 5% से 10% तक या अधिक स्त्रियों ने पहली बार 20 वर्ष से अधिक की आयु में विवाह किया हो।

विवाह की उम्र में बढ़ोत्तरी से प्रजनन में कमी की आशा की जा सकती है क्योंकि इससे प्रजनन का समयान्तराल कम हो जाता है। विवाह की की आयु में विशेष बढ़ोत्तरी के वास्तविक प्रभाव को आँकना सरल नहीं है जब तक कम या अधिक आयु में विवाह करने वाले व्यक्तियों के परिवारों में पालित आदतों के अन्तर का ज्ञान नहीं होता। हाल ही के अध्ययन में बनारस के ग्रामीण क्षेत्रों से प्राप्त आँकड़ों का प्रयोग कर रैले ने 14 वर्ष से कम उम्र में

विवाह करने वाली, 15-16 एवं 17-19 वर्षों की उम्र में विवाह करने वाली स्त्रियों की प्रजनन शक्ति की तुलना की है। इन तीन समूह की स्त्रियों के उत्पन्न बच्चों की औसत संख्या क्रमशः 7.3, 7.05 और 6.8 पाई गई जिससे ज्ञात हुआ कि उम्र की बढ़ोत्तरी के साथ जन्म-दर में कमी आई। यह भी रोचक बात है कि 20 वर्ष की आयु के बाद उत्पन्न बच्चों की औसत संख्या तीनों समूहों में क्रमशः 6.2, 6.35 और 6.6 पाई गई जिससे ज्ञात हुआ कि विवाह को स्थगित करने से ऊँची उम्र में प्रजननता अधिक पाई गई। एक महत्व-पूर्ण बिन्दु जो विचारणीय है कि जब विवाह की उम्र कम होती है, जैसा कि भारतीय परिवेश में है, विवाह एवं प्रथम सन्तान के उत्पन्न होने का समयान्त-राल विवाह की उम्र में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ कम होता जाता है आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि अधेड़ावस्था में प्रजनन शक्ति का ह्रास होना एवं कुछ इसलिए कि सामाजिक प्रथानुसार नव विवाहित दम्पत्तियों का विवाहोपरान्त बीच-बीच में अधिक समय के लिए जुदा होना।

गणना से स्पष्ट है कि विवाह की उम्र में परिवर्तन जो पहले से ही हो गया है या निकट भविष्य में हो सकता है, प्रजनन को विशेष सीमा तक कम या प्रभावित नहीं कर सकता। यदि विवाह की न्यूनतम उम्र 18 वर्ष कर दी जाती है, तो प्रजनन में समर्थ विवाहित स्त्री के सम्पूर्ण जीवनकाल में उत्पन्न बच्चों की संख्या घट सकती है। न्यूनतम आयु में और अधिक वृद्धि करने पर जन्मित बच्चों की संख्या और घट सकती है परन्तु स्त्रियों में इसकी सम्भावना कम प्रतीत होती है।

<u>प्रजनन पर वैधव्य की उम्र का प्रभाव</u>

विधवा का पुनर्विवाह भारत में उस वर्ग में भी जहाँ रीति रिवाज इसकी अनुमति देते हैं, अधिक प्रचलित नहीं है। जहाँ मृत्यु-दर अधिक होती है विधवा का पुनर्विवाह न होना प्रजनन को कम करने में विशेष प्रभावशाली हो सकता है। मैसूर के जनसंख्या अध्ययन में इसका प्रभाव विशेष रूप से देखा गया है। आशा के विपरीत बंगलौर शहर की सभी स्त्रियों ने, चाहे उनकी शादी किसी भी उम्र में हुई हो यदि वे प्रजनन के सर्वथा योग्य हैं, ग्रामीण क्षेत्रों की स्त्रियों की अपेक्षा अधिक बच्चों को जन्म दिया है। आर्थिक रूप से अधिक सम्पन्न स्त्रियों ने आर्थिक रूप से विपन्न स्त्रियों की अपेक्षा अधिक बच्चों को जन्म दिया है। बहुत अधिक सीमा तक यह अन्तर इन वर्गों से मृत्यु-दर के अन्तर के कारण है। ग्रामीण क्षेत्रों में और निम्न आर्थिक स्तर के लोगों में अधिक मृत्यु-दर के कारण अधिक स्त्रियों के कम उम्र में विधवा होने के कारण प्रजनन समय घट जाता है।

मैसूर के अध्ययन में यह पाया गया कि पत्नी की प्रजनन आयु समाप्त होने के पूर्व ही पति की मृत्यु हो जाने से पूर्ण रूप प्रजनन में समर्थ स्त्रियों ने औसतन ग्रामीण क्षेत्र में एक कम बच्चे और बंगलौर शहर में .5 कम बच्चे को जन्म दिया। मृत्यु की परिस्थितियों में सुधार से असामयिक वैधव्य रूकने से प्रजनन में वृद्धि हो सकती है। इस प्रश्न पर एक वैज्ञानिक अध्ययन से यह प्रगट हुआ है कि जीवनकाल यदि 30 वर्ष की उम्र से बढ़कर 50 वर्ष हो जाता है तो प्रजनन का प्रतिशत 15

प्रतिशत बढ़ जायेगा। इस देश में स्वास्थ्य की दशा में सुधार होने से प्रजनन में वृद्धि हो सकती है।

प्रजनन को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक एवं शारीरिक कारण

इस बात का संकेत पहले ही दिया जा चुका है कि भारत में प्रजनन अन्य सांस्कृतिक वर्गों की अपेक्षा कम नहीं है। यह अन्तर इस कारण विशेष रूप से दिलचस्प है कि यहाँ विवाह की उम्र भी कम है तथा बड़े परिवार के प्रति अनुकूल धारणा है। कुछ कारण सांस्कृतिक प्रतिबंधों से भी हो सकते हैं जो दो बच्चों के बीच के समय को बढ़ाने और बच्चों की संख्या सीमित रखने के लिए बाध्य करते हैं। इनमें से एक कारण विधवाओं की शादी का निषेध जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है तथा जो कुल उत्पन्न बच्चों की संख्या को प्रभावित करता है। कुछ महत्वपूर्ण कारण दो बच्चों के बीच के अन्तर से भी सम्बन्धित है क्योंकि औसत दो सफल प्रजनन के बीच का समय काफी लम्बा है। चौथे राष्ट्रीय सांख्यिकी सर्वेक्षण के अनुसार दो सफल जन्मों के बीच का अन्तर सम्पूर्ण भारत के लिए 1930 के बाद विवाहित युगलों के लिए नगरीय क्षेत्र में 34 माह तथा ग्रामीण क्षेत्र में 32 माह है। बंगाल एवं बनारस के ग्रामीण क्षेत्रों में यह अन्तर 3 वर्ष है। लगभग यही अन्तर अन्य क्षेत्रों में भी पाया गया है।

भारत में यौन सम्बन्धों से बचने के अनेक परम्परागत रीति रिवाज पाये जाते हैं, जैसे मासिक धर्म के समय स्त्रियों से यौन सम्बन्धों पर निषेध, बच्चा छोटा हो तो यौन क्रिया से बचना अथवा धार्मिक दिनों पर यौन सम्बन्ध न

करना इत्यादि। दो बच्चों के जन्म के बीच का अन्तर के अधिक होने का एक महत्वपूर्ण कारण भारतीय महिलाओं का अपेक्षाकृत लम्बे समय तक बच्चे को दूध पिलाना भी है ताकि अगले गर्भधारण के समय को बढ़ाया जा सके। एक महत्वपूर्ण शारीरिक कारण जिसका सम्बन्ध माँ के बच्चों को दूध पिलाने से हो सकता है पर भी लोगों का ध्यान गया है। परिवार नियोजन की रिदम प्रणाली के अध्ययन से प्रारम्भिक सर्वेक्षण में पाया गया कि एक ग्राम रामनगरम में 42% स्त्रियों में आखिरी बच्चे के जन्म के उपरान्त मासिक धर्म पुनः प्रारम्भ नहीं हुआ। इस ऊँचे प्रतिशत से पता चलता है कि मासिक धर्म के समाप्त होने पर पुनः प्रारम्भ होने के मध्य समय का बड़ा अन्तर होता है। पायलट अध्ययन से यह भी पता चला है कि केवल 50% स्त्रियों में पिछले बच्चे के जन्म के 12 माह उपरान्त ही मासिक धर्म प्रारम्भ होता है। 25% स्त्रियों में मासिक धर्म अन्तिम उत्पन्न बच्चे के 20 माह अथवा उसके बाद प्रारम्भ होता है। इसी प्रकार के परिणाम बम्बई के एक परिवार नियोजन चिकित्सालय में 57% महिलायें जिनके 9 से 12 महीनों तक दूध निकलता है में पाये गये। यौरूप तथा अमरीकी स्त्रियों की अपेक्षा भारतीय स्त्रियों में दूध निकलने का समय अधिक होता है। यह अन्तर अंशतः दो बच्चों के जन्म के बीच के अधिक अन्तर का होना है फिर भी इसके पीछे क्या और कारण है समझना आवश्यक है। यदि इसके पीछे शारीरिक कारण - भोजन एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी है, तो भविष्य में इसका प्रभाव प्रजनन पर निश्चित रूप से पड़ सकता है। स्त्रियों के दूध निकलने के समय में कमी होने से प्रजनन में वृद्धि होना सम्भव हो

सकता है।

परिवार सीमित रखने की विधियों का प्रयोग

परिवार को सीमित रखने की विधियों का प्रयोग भारत के लोगों के लिए बिलकुल नया विचार है। यद्यपि कामसूत्र जैसी पुस्तक में ऐसी अनेक विधियाँ लिखी है जो गर्भाधान की प्रक्रिया को रोकने में विशेष प्रभावशाली है, लेकिन देश के अनेक भागों में किए गए सर्वेक्षण से प्राप्त परिणाम एक मत हैं कि केवल कुछ नगरीय क्षेत्रों को छोड़कर परिवार नियोजन के पुराने एवं आधुनिक विधियों का ज्ञान लोगों को नगण्य अथवा शून्य है। मैसूर के जनसंख्या अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षात्कार करने पर पाया गया कि केवल 11% पत्नियों एवं 15% पतियों को परिवार नियोजन विधियों की जानकारी है। इनमें से भी अधिकांश लोगों को केवल "गोलियों" एवं "इन्जेक्शनस" की अस्पष्ट सी जानकारी है। ग्रामीण स्त्रियों में केवल 5-9% को स्त्रियों के बंधीकरण विधि की जानकारी है। जब कि पुरुषों में केवल 5-3% को स्त्री बंधीकरण पुरुष बंधीकरण एवं सुरक्षित समय की जानकारी है। केवल 3% या उससे कम स्त्रियों एवं पुरुषों को अन्य विधियों की जानकारी है। बंगलौर शहर में 38% स्त्रियों एवं इतनी ही संख्या में पुरुषों को परिवार नियोजन की जानकारी है। इनमें से केवल आधे स्त्री पुरुषों को अन्य यांत्रिक विधियों की जानकारी है। पूना शहर के अध्ययन से पता चला कि केवल 15% पुरुषों को गर्भ निरोधकों की कुछ जानकारी है। बाह्य क्षेत्रों में इससे भी कम पुरुषों को इसकी जानकारी है। नई दिल्ली की लोदी कोलोनी में परिवार नियोजन की विस्तृत जानकारी थी।

अध्याय - 2

प्रजननता विभिन्नता का अर्थ, रूप एवं महत्व

प्रजननता का अर्थ :-

प्रजननता का अभिप्राय किसी स्त्री या स्त्री समूह द्वारा काल विशेष के अन्तर्गत सजीव बच्चों को जन्म देने की क्षमता से है। इसके विपरीत सन्तानोत्पादन की शक्ति से आशय, गर्भ धारण करने की क्षमता से है। यदि कोई स्त्री गर्भित करने वाले पति के होने के बावजूद भी गर्भ धारण नहीं करती तो उसे बाँझ कहा जाता है। विश्व के प्रत्येक देश में लगभग 1-3 प्रतिशत स्त्रियाँ ऐसी पाई जाती हैं। इस प्रकार सन्तानोत्पादन की शक्ति गर्भ धारण करने की क्षमता को दर्शाती है, और प्रजननता गर्भ में धारण किए हुए बच्चें को पूरे समय बाद जन्म देने की क्षमता को बतलाती है। अनेक स्त्रियाँ गर्भवती हो जाती हैं किन्तु गर्भपात के कारण सजीव बच्चे को जन्म नहीं दे पाती। ऐसी स्त्रियों में सन्तानोत्पादन शक्ति तो होती है किन्तु प्रजननता नहीं होती। प्रजननता के अभाव में सन्तानोत्पादन शक्ति तो होती है किन्तु प्रजननता नहीं होती। प्रजननता के अभाव में सन्तानोत्पादन शक्ति तो होती है किन्तु सन्तानोत्पादन शक्ति के अभाव में प्रजननता नहीं होती।

प्रजननता की व्याख्या किसी काल विशेष में उत्पन्न होने वाली सजीव बच्चों की बारम्बारता के आधार पर की जाती है। इसके लिए हमें मुख्य रूप से प्रजननता की प्रकृति और प्रजननता में पाई जाने वाली विभिन्नता की ओर ध्यान

देना पड़ता है। प्रजननता की दर स्थिर नहीं रहती। इसमें उतार-चढ़ाव होता है। इसके अतिरिक्त एक ही समय में जनसंख्या के विभिन्न समूहों के बीच प्रजननता की दर में विभिन्नता पाई जाती है।

प्रजननता सम्बन्धी आँकड़ों की विशेषतायें

प्रजननता की दरें, जन्म सम्बन्धी आँकड़ों पर आधारित होती हैं। जन्म-दर सम्बन्धी आँकड़े अन्य प्रकार के आँकड़ों से भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए जन्म-दर एक ऐसा तथ्य है जिसका निर्धारण सामाजिक तथा आर्थिक शक्तियों द्वारा होता है। जन्म-दर का अभिप्राय किसी अवधि विशेष के अन्तर्गत जनसंख्या के अनुपात में हुए कुल जन्मों से है। जन्म-दर सम्बन्धी आँकड़ों की मुख्य विशेषतायें निम्न प्रकार हैं :-

1) मृत्यु केवल एक बार होती है। लेकिन बच्चों को जन्म दे सकने की क्षमता वाले स्त्री-पुरुषों को अनेक बार माँ-बाप बनने का अवसर प्राप्त होता है। यह सम्भावना बच्चों की संख्या वृद्धि और बढ़ती हुई आयु के अनुसार कम होती जाती है।

2) जन्म-दर स्त्रियों की आयु पर भी निर्भर रहती है। सन्तानोत्पादन की एक निश्चित आयु सीमा होती है। इस आयु से पूर्व न कोई स्त्री बच्चे उत्पन्न कर सकती है, और न उसके बाद। इसका कारण आयु विशिष्ट दर की गणना स्त्रियों में ही की जाती है।

3) अनेक बार जुड़वा बच्चे उत्पन्न होते हैं। अतः यह समस्या उत्पन्न होती है कि उसकी गणना एक घटनामेंकी जाये या दो घटनाएँ मानी जायें। अधिकांश राष्ट्रों में केवल सजीव बच्चों की गणना की जाती है।

4) जन्म-दर लोगों की पसन्द पर भी निर्भर करती है। अनेक व्यक्ति बच्चों की एक निश्चित संख्या के बाद अतिरिक्त बच्चों का होना पसन्द नहीं करते हैं। अतः वे कृत्रिम उपायों से बच्चों के जन्म को रोक देते हैं।

उपर्युक्त विशेषताओं के कारण, जन्म-दर सम्बन्धी आँकड़े एकत्र करते समय विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है।

पुनरूत्पादन दर

प्रजननता के सन्दर्भ में पुनरूत्पादन दर महत्वपूर्ण होती है। यह दो प्रकार की होती है (1) सम्पूर्ण पुनरूत्पादन दर, (2) वास्तविक पुनरूत्पादन दर।

1) सम्पूर्ण पुनरूत्पादन दर :-

सम्पूर्ण पुनरूत्पादन दर का अभिप्राय किसी स्त्री के सन्तानोत्पादन काल में जन्म लेने वाली कन्याओं की संख्या से है। इस दर को निकालने के लिए हम कुल जनसंख्या में से पुरूषों, बच्चे उत्पन्न न करने वाली स्त्रियों तथा जन्म लेने वाले

पुरुष बच्चों की गणना से अलग कर लेते हैं । इस दर को निकालने के लिए हम यह मान कर चलते हैं कि प्रत्येक स्त्री बच्चों उत्पन्न करने के काल तक जीवित रहती है ।

2) वास्तविक पुनरुत्पादन दर :-

किसी देश की जनसंख्या बढ़ रही है, स्थिर है या घट रही है । इसकी जानकारी के लिए वास्तविक पुनरुत्पादन को ज्ञात करना आवश्यक है । यदि जन्म-दर अधिक और मृत्यु-दर कम है तो यह माना जाता है कि जनसंख्या बढ़ रही है । यदि जन्म-दर और मृत्यु-दर समान है तो माना जाता है कि जनसंख्या स्थिर है । इसके विपरीत यदि जन्म-दर कम है और मृत्यु-दर अधिक है तो जनसंख्या घटती है । किन्तु जन्म-दर और मृत्यु-दर के अन्तर से जनसंख्या की वास्तविक स्थिति का ज्ञान नहीं होता । जनसंख्या की वृद्धि ह्रास या स्थिरता, पुनरुत्पादन दर से निर्धारित होती है ।

इस दर का प्रतिपादन राबर्ट कुजिन्सकी ने किया । कुजिन्सकी के अनुसार, "जनसंख्या की प्रतिस्थापना वास्तविक पुनरुत्पादन दर पर निर्भर करती है । किसी भी देश की जनसंख्या मूल रूप से स्त्री-जनसंख्या के ऊपर निर्भर रहती है । अतः स्त्री जनसंख्या की वृद्धि दर को ज्ञात करना आवश्यक है । वास्तविक पुनरुत्पादन दर को ज्ञात करने के लिए हम निम्न प्रकार गणना करते हैं :-

1) सर्वप्रथम 15 से 49 वर्ष तक की माताओं को 5-5 वर्ष की आयु-विशिष्ट समूहों में विभाजित करते हैं ।

2) इसके बाद प्रत्येक समूह की स्त्रियों द्वारा उत्पन्न लड़कियों की संख्या को उस समूह के सामने अंकित कर लेते हैं।

3) इन लड़कियों की संख्या में से उन लड़कियों की संख्या घटा देंगे जो बच्चे उत्पन्न करने की आयु से पूर्व ही मर जाती हैं। इसी प्रकार अविवाहितों और विधवाओं की संख्या को भी कम कर देते हैं।

4) इस प्रकार उन लड़कियों की संख्या ज्ञात होती है जो बच्चे उत्पन्न करने की अवस्था से गुजरती हैं और लड़कियों को जन्म देती हैं।

कुजिन्सकी के अनुसार, "जिस दर से स्त्री जाति अपने आपको प्रतिस्थापित करती है, वह वास्तविक पुनरुत्पादन दर है।"

किसी भी देश की जनसंख्या के अध्ययन की दृष्टि से वास्तविक पुनरुत्पादन दर का विशेष महत्व है। प्रकृति ने मनुष्य को असीम सन्तानोत्पादन शक्ति प्रदान की है। किन्तु इस शक्ति की तुलना में सन्तानोत्पादन सम्भव नहीं होता। अनेक स्त्रियाँ अपने पूरे सन्तानोत्पादन काल तक जीवित नहीं रहती। जन्म निरोध के कृत्रिम उपायों के कारण भी प्रजननता कम हो जाती है, इसलिए सन्तानोत्पादन शक्ति की तुलना में वास्तविक सन्तानोत्पादन की दर कम होती है। माल्थस ने अपने सिद्धान्त में इस पक्ष का विचार नहीं किया।

जनसंख्या के विकास क्रम को मापने की दृष्टि से यह सिद्धान्त विशेष उपयोगी है। यह सिद्धान्त बताता है कि किसी भी देश की पुनरुत्पादन क्षमता

उत्पन्न होने वाली कन्याओं (भावी माताओं) पर निर्भर करती है। इस सिद्धान्त द्वारा हम जनसंख्या की सम्भावित वृद्धि, कमी या स्थिरता का अनुमान लगा सकते हैं। फिर भी इसे जनसंख्या का एक पूर्ण सिद्धान्त नहीं माना जा सकता। यह केवल जनसंख्या के विकास की दिशा को बतलाता है और जनसंख्या सम्बन्धी अन्य पक्षों की व्याख्या नहीं करता।

प्रजननता का माप

प्रजननता दर को मापने के लिए अनेक विधियों का उपयोग किया जाता है। इसमें प्रमुख विधियाँ निम्न प्रकार हैं :-

(1) अशोधित जन्म-दर :-

अशोधित जन्म-दर का अभिप्राय किसी अवधि विशेष के अन्तर्गत 1000 की जनसंख्या पर जन्मे बच्चों की संख्या से है। अशोधित जन्म-दर को भी अशोधित मृत्यु-दर की भाँति ही निकालते हैं। इसमें हम निम्न प्रकार निकाल सकते हैं :-

$$\text{अशोधित जन्म-दर} = \frac{\text{अवधि विशेष में जन्मे कुल बच्चों की संख्या}}{\text{अवधि विशेष की कुल जनसंख्या}} \times 1000$$

इस दर को निकालते समय हम जनसंख्या की संरचना की ओर ध्यान नहीं देते। हम वर्ष के मध्य तक प्रजनन दरों की संख्या तथा कुल जनसंख्या के आँकड़ों से यह दर निकालते हैं। अशोधित जन्म-दर प्रत्येक देश की भिन्न-भिन्न होती

है । इसके अलावा एक ही देश की अशोधित जन्म-दर अलग-अलग समय में भिन्न हुआ करती है ।

अशोधित जन्म-दर का उपयोग मौजूदा प्रजनन दर को ज्ञात करने और जनसंख्या की वृद्धि पर प्रभाव देखने के लिए किया जाता है । लेकिन इस दर द्वारा प्रजननता का मापन कठिन होता है । इसमें हम सम्पूर्ण जनसंख्या की गणना करते हैं जिनमें बच्चे भी होते हैं जो प्रजनन नहीं कर सकते । बूढ़े भी होते हैं जो सन्तान उत्पन्न करने की आयु को पार कर चुके होते हैं इसके अतिरिक्त प्रजनन दर में पुरुषों की अपेक्षा सन्तान उत्पन्न करने योग्य स्त्रियों की संख्या का अधिक महत्व होता है यदि जनसंख्या का गठन इस प्रकार है जिसमें पुरुषों की संख्या अधिक है तो जन्म दर कम होती है। इसके विपरीत पुरुषों की तुलना में यदि स्त्रियों की संख्या अधिक है तो जन्म दर अधिक होती है अतः अशोधित जन्म-दर द्वारा हम केवल जनसंख्या विकास की दिशा को जान सकते हैं ।

2) संशोधित जन्म दर :-

संशोधित जन्म दर निकालने के लिए हम अशोधित जन्म दर में ऐसी सम्भावित संख्या को जोड़ देते हैं जिसकी गणना नहीं हो सकती । प्रायः गणना के दौरान भी कुछ बच्चे उत्पन्न हो जाते हैं । इसके अतिरिक्त अनेक ऐसे बच्चे भी जन्मे होते हैं जिनका पंजीकरण ही नहीं हो पाता । अतः जन्म लिये हुए बच्चों की संख्या में हम सम्भावित संख्या भी जोड़ देते हैं । अतः संशोधित जन्म-दर

अशोधित जन्म से अधिक हुआ करती है। संशोधित जन्म दर को हम निम्न प्रकार निकाल सकते हैं :-

$$\frac{\text{अवधि विशेष में जन्में बच्चों की संख्या + सम्भावित जन्म संख्या}}{\text{अवधि विशेष की कुल जनसंख्या}} \times 1000$$

3. **सामान्य प्रजनन दर :-**

सामान्य प्रजनन दर को निकालने के लिए हम केवल जन्मों और सन्तान उत्पादन योग्य स्त्रियों की संख्या तक की गणना को सीमित रखते हैं। अर्थात पुरुषों को और स्त्रियों के उस भाग को गणना से अलग कर देते हैं जो सन्तानोत्पादन की आयु से कम है या उस आयु को पार कर चुकी है। पुरुषों की कुल जनसंख्या को अलग कर लिया जाता है। स्त्रियों में से उस संख्या को अलग कर लेते हैं जो सन्तानोत्पादन के योग्य नहीं है। सामान्यतः सन्तानोत्पादन की आयु 15 से 50 वर्ष मानी जाती है। भारत में यह 15 से 35 वर्ष है। इस प्रकार वर्ष के अन्तर्गत सजीव जन्में बच्चों की संख्या में सन्तानोत्पादन योग्य स्त्रियों की संख्या से भाग दे कर एक हजार से गुणा किया जाता है इसे निम्न प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं

$$\text{सामान्य प्रजनन दर} = \frac{\text{वर्ष के अन्तर्गत सजीव जन्में बच्चों की संख्या}}{\text{उस अवधि विशेष में सन्तानोत्पादन योग्य स्त्रियों की कुल संख्या}} \times 1000$$

सामान्य प्रजनन दर, अशोधित प्रजनन दर से तीन या कभी-कभी चार

कमी हुआ करती है। सामान्यतः सन्तानोत्पादन योग्य स्त्रियों की संख्या कुल जनसंख्या का 1/4 या 1/5 भाग हुआ करती है। सन्तानोत्पादन योग्य स्त्रियों का प्रतिशत प्रत्येक स्थान तथा देश में भिन्न-भिन्न हुआ करती है।

आयु - विशिष्ट प्रजनन दर :-

आयु विशिष्ट प्रजनन दर को विभिन्न आयु समूह की प्रति 1000 जनसंख्या में वर्ष विशेष के अन्तर्गत जन्में बच्चों की संख्या से निकाला जाता है। इसे निम्न प्रकार से निकालते हैं।

$$\text{आयु विशिष्ट प्रजनन दर} = \frac{\text{वर्ष विशेष के अन्तर्गत आयु विशेष की स्त्रियों द्वारा उत्पन्न बच्चे}}{\text{आयु-विशेष की स्त्रियों की संख्या}} \times 1000$$

5) कुल प्रजनन दर :-

कुल प्रजनन दर निकालने के लिए वर्ष के अन्तर्गत उत्पन्न बच्चों की संख्या को विभिन्न आयु समूह की माताओं में वितरण कर देते हैं। गणना करते समय आयु समूह की विभिन्न प्रजनन दरों का योग करते हैं और फिर बाद में इस योग का आयु के वर्गान्तर से गुणा कर देते हैं। सन्तानोत्पादन योग्य स्त्रियों की संख्या तक सीमित रहने के कारण इस दर को अच्छा समझा जाता है। साथ ही इस दर को निकालते समय हम यह मान कर चलते हैं कि प्रत्येक स्त्री सन्तानोत्पादन के काल तक जीवित रहती है।

6) योगान्तर प्रजनन दर :-

गणना की दृष्टि से योगान्तर प्रजनन दर भी कुल प्रजनन दर की भाँति होती है। इसमें वास्तविक रूप से ध्यान इस तथ्य की ओर देते हैं कि 1000 स्त्रियों का समूहगण, सन्तानोत्पादन काल में कितने बच्चों को जन्म देता है। गणना करते समय प्रथम आयु विशिष्ट प्रजनन दर में आगे की आयु विशिष्ट प्रजनन दरों का योग करते जाते हैं। इससे इस बात का पता चलता है कि कौन से आयु समूह में कौन सी प्रजनन दर होगी।

7) प्रामाणिक प्रजनन दर :-

इस दर को निकालने में जनसंख्या के गठन सम्बन्धी पक्षों की ओर ध्यान दिया जाता है। प्रजनन दर एक निश्चित आयु तक बढ़ती रहती है। उसके बाद धीरे-धीरे गिरती जाती है। अन्त में एक निश्चित आयु तक पहुँचने पर शून्य हो जाती है। जैसे 45 या 49 वर्ष के बाद किसी स्त्री को बच्चा नहीं होता। इस प्रकार यदि स्त्रियों के आयु समूह में कोई अन्तर होता है तो उसका प्रभाव प्रजनन दर के ऊपर भी पड़ता है। साथ ही शिक्षा स्तर, पारिवारिक आमदनी तथा व्यवसाय आदि भी प्रजनन दर को प्रभावित करते हैं। अतः परिवेश तथा आयु सम्बन्धी प्रभावों से बचने के लिए प्रामाणित प्रजनन दरों की सहायता ली जाती है। उदाहरणार्थ आयु की भिन्नता को दूर करने के लिए जीवन तालिका की सहायता ली जाती है और विशिष्ट दरों के प्रयोग द्वारा यह अनुमान लगाया जा

सकता है कि प्रजनन दर क्या रहेगी । इस दर को हम निम्न प्रकार से निकाल सकते हैं ।

$$\text{प्रामाणित प्रजनन दर} = \frac{\text{प्रत्याशित जन्मों का योग}}{\text{प्रमाणित जनसंख्या का विवरण}} \times 1000$$

प्रमाणित प्रजनन दर और कुल प्रजनन दर में काफी समानता होती है। कुल प्रजनन दर की गणना भी प्रति 1000 स्त्रियों के आयु समूह के आधार पर की जाती है । प्रत्येक समूह में स्त्रियों का आयु गणना समान होता है । फल-स्वरूप प्रजनन दर में बाहरी प्रभावों से अन्तर नहीं होता । अतः प्रजननता सम्बन्धी भिन्नताओं के अध्ययन के लिए कुल प्रजनन दर अथवा प्रामाणित प्रजनन दर विशेष रूप से उपयोगी होते हैं । [1]

जनसंख्या की दृष्टि से भारत का एशियायी देशों में द्वितीय स्थान है । यहाँ जन्म दर और मृत्यु दर दोनों ही अधिक रही है। इस शताब्दी के आरम्भ में जन्म दर 48.1 थी जो 1951-1961 की अवधि में घटकर 41.7 हो गई । इसके विपरीत मृत्यु दर जो 1901-1910 की अवधि में 42.6 थी वह 1951-1960 की अवधि में घट कर 22.8 रह गई । इस प्रकार एक ओर जन्म दर में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ और दूसरी ओर स्वास्थ्य सेवाओं के प्रसार के कारण मृत्यु दर में काफी कमी हो गई । फलस्वरूप जनसंख्या की वृद्धि

1- तिवारी कुंवर सिंह, जनांकिकी के सिद्धान्त, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ 1982, पेज - 64 से 90.

दर बनी रही । निम्न सारणी द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है ।

"सारणी 2.1"

जन्म दर (प्रति हजार)

दशक	पंजीकृत	अनुमानित
1901-11	37	49.2
1911-21	37	48.1
1921-31	33	46.4
1931-41	34	45.2
1941-51	28	39.9
1951-61	22	41.7
1961-71	-	39.0

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि जन्म दर छः दशक पूर्व 49.2 थी । जो 1960 में घटकर 41.7 हुई । इसके विपरीत मृत्यु दर जो छः दशक पूर्व 42.6 थी वह घट कर 1960 में 22.8 हो गई । इस प्रकार जनसंख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि होती गई । सन् 1961 की जनगणना के आँकड़ों पर आधारित अध्ययनों के अनुसार जन्म दर 42 प्रति हजार वर्ष रही । सन् 1971 में यह 39 प्रति हजार हो गई। मृत्यु दर 23 प्रति हजार प्रति वर्ष रही।

इस प्रकार जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि 19 प्रति हजार प्रति वर्ष रही । [2]

जहाँ तक भारत के विभिन्न प्रान्तों में जन्म दर का प्रश्न है, इसमें एक रूपता नहीं है । किसी प्रान्त में जन्म दर अधिक है और किसी में कम। सन् 1961 की जनगणना के अनुसार भारत के विभिन्न प्रान्तों में जन्म दर निम्न प्रकार थी :-

"सारणी 2.2"

प्रान्त	जन्म दर	वृद्धि जन्म दर- मृत्यु दर
आन्ध्र प्रदेश	39.7	15.7
आसाम	49.3	34.5
बिहार	43.4	13.8
गुजरात	45.7	26.9
जम्मू-कश्मीर	37.8	9.4
केरल	38.9	24.8
मध्य प्रदेश	43.2	24.2
तामिलनाडु	34.3	11.9
महाराष्ट्र	41.2	23.6
मैसूर	41.6	21.6

2- इण्डिया 1970, पेज-8

प्रान्त	जन्म दर	वृद्धि जन्म दर - मृत्यु दर
उड़ीसा	40.4	19.8
पंजाब	44.7	25.9
राजस्थान	42.7	26.2
उत्तर प्रदेश	41.5	16.7
पश्चिमी बंगाल	42.9	32.8

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि प्रान्तों में सबसे अधिक जन्म दर आसाम में है और सबसे कम तमिलनाडु में । भारतीय औसत से अधिक जन्म दर वाले प्रान्त गुजरात, पंजाब, बिहार, पश्चिमी बंगाल और राजस्थान हैं।

इसी प्रकार क्षेत्रीय आधार पर भी जन्म दर में भिन्नता है । सबसे कम जन्म दर दक्षिणी क्षेत्र में है । सबसे अधिक उत्तरी क्षेत्र में है। इसे निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :-

" सारणी - 2.3 "

क्षेत्र	सम्मिलित राज्य	अनुमानित जन्मदर
उत्तरी क्षेत्र	पंजाब और राजस्थान	43.6
केन्द्रीय क्षेत्र	उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश	42.0

क्षेत्र	सम्मिलित राज्य	अनुमानित जन्मदर
पूर्वी क्षेत्र	आसाम, बिहार, उड़ीसा और पश्चिमी बंगाल	43·3
दक्षिणी क्षेत्र	आन्ध्र, तामिलनाडु, केरल और मैसूर	38·5
पश्चिमी क्षेत्र	गुजरात और महाराष्ट्र	42·8

सबसे अधिक जन्म दर उत्तरी क्षेत्र (43·6) में है और सबसे निम्न जन्म दर दक्षिणी क्षेत्र (24·4) में है और सबसे कम मृत्यु दर उत्तरी क्षेत्र (43·0) में है। जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि की सबसे उच्च दर उत्तरी क्षेत्र (~~24·6~~ 43.6) में है और सबसे कम दक्षिणी क्षेत्र (~~16·2~~ 38.5) में है।

प्रजननदर और जीवन प्रत्याशा

भारत में प्रजनन दर तथा जीवन प्रत्याशा एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। प्रजनन दर में विशेष कमी न होने और जीवन प्रत्याशा में वृद्धि होने के फलस्वरूप जनसंख्या में भी वृद्धि हुई है।

विगत वर्षों में स्वास्थ्य सेवाओं के विकास और प्रसार के फलस्वरूप जहाँ एक ओर मृत्यु दर काफी कम हुई है, वहाँ दूसरी ओर व्यक्ति की औसत आयु में वृद्धि हो गई है। औसत आयु की वृद्धि भी जनसंख्या की वृद्धि का एक कारक है। निम्न सारणी द्वारा जीवन-प्रत्याशा में वृद्धि के

अनुमानों को स्पष्ट किया जा सकता है :-

" सारणी - 2.4 "

जीवन - प्रत्याशा

दशक	पुरुष	महिलायें
1891-1900	23.63	23.96
1901-1910	22.59	23.31
1911-1920	19.42	20.91
1921-1930	26.91	26.56
1931-1940	32.09	31.37
1941-1950	32.45	31.66
1951-1960	41.90	40.60
1961-1970	47.10	45.60

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 1891 से लगातार वृद्धि हो रही है। 1911 से 1920 की अवधि में जीवन-प्रत्याशा गिर गई। इसका कारण इन्फ्लुएन्जा के कारण मृत्युदर में वृद्धि थी। सन् 1951 से लेकर 1970 की अवधि में जीवन-प्रत्याशा में काफी वृद्धि हुई।[3]

3- इण्डिया 1976, पेज-8

आयु विशिष्ट प्रजनन दर :-

आयु के अनुसार प्रत्येक देश में प्रजनन दर भिन्न होती है । सन् 1961 की जनगणना के अनुसार भारत की सामान्य प्रजनन दर 41·7 प्रति हजार थी । सन् 1971 में यह दर गिरकर 39·0 प्रति हजार हो गई । राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के चौदहवें सर्वेक्षण के अनुसार, भारत की वैवाहिक आयु विशिष्ट प्रजनन दर निम्न प्रकार थी :-

"सारणी - 2.5 "

वैवाहिक आयु - विशिष्ट प्रजनन दर

आयु - काल	दर
15 - 19	228
20 - 24	315
25 - 29	264
30- 34	225
35 - 39	161
40 - 44	95

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि सबसे अधिक प्रजनन दर 20-24 आयु वर्ग में और सबसे कम 40-44 के आयु वर्ग में है । प्रारम्भ में यह दर कम

होती है । इसके बाद एक निश्चित आयु काल तक बढ़ती है। उसके बाद कम होनी आरम्भ होती है । प्रजनन काल के समापन के बाद यह लगभग शून्य हो जाती है ।

भारत में उच्च प्रजनन दर के कारण

भारत में उच्च प्रजनन दर के लिए अनेक कारण उत्तरदायी हैं । उच्च प्रजनन दर विभिन्न आर्थिक समाजिक और धार्मिक कारकों से प्रभावित होती है। कुछ प्रमुख कारण निम्न प्रकार हैं :-

1) कम आयु में विवाह होना :-

भारत में विभिन्न धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं के कारण लड़की का विवाह जल्दी किया जाता है । लड़की का विवाह जितनी जल्दी होता है, माता-पिता अपने को उतना ही निश्चिन्त समझते हैं। 1929 में पारित शारदा अधिनियम के बावजूद भी लाखों लड़कियों की शादी बाल्यकाल में ही हो जाती है । सन् 1951 की जनगणना के अनुसार, 1 करोड़ विवाहित लड़के-लड़कियों की आयु 18 और 14 वर्ष से कम थी । 1951 में विवाह के समय लड़कियों की औसत आयु 15.6 वर्ष थी । इस प्रकार कम आयु में विवाह होने से स्त्रियों का प्रजनन काल लम्बा होता है । इससे सन्तानोत्पादन की संख्या अधिक रहती है। इसके विपरीत, यदि लड़कियों का विवाह 25 वर्ष की आयु के बाद होता है, तो इससे न केवल प्रजनन काल कम रहता है बल्कि प्रजनन शक्ति में भी कमी हो जाती है।

इंग्लैण्ड में विवाह की औसत आयु पुरुषों में 30 वर्ष लड़कियों में 25 वर्ष है । भारत में विवाह की औसत आयु पुरुषों में 18 और लड़कियों में 15 वर्ष है । इसके अतिरिक्त विधवा पुनर्विवाहों में वृद्धि होती जा रही है । सन् 1881 में जहाँ प्रति हजार 187 विधवाएं थीं वहाँ 1971 में प्रति हजार 112 थीं ।

2) गरीबी :-

भारत में गरीबी और अधिक जन्म-दर एक दूसरे के पर्यायवाची हो गये हैं । कुछ विचारकों का मत है कि जहाँ गरीबी होती है, वहाँ बच्चे अधिक होते हैं । इसके विपरीत जहाँ सम्पन्नता होती है, वहाँ जन्म-दर कम होती है। भारत आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा है अधिकांश जनसंख्या गरीब है । तीसरी पंच-वर्षीय योजना के प्रारम्भिक वर्ष (1960-61) में भारत की राष्ट्रीय आय 14,500 करोड़ रुपया थी । प्रति व्यक्ति औसत वार्षिक आय 330=00 रुपया थी । इससे स्पष्ट होता है कि जनता का जीवन-स्तर अत्याधिक पिछड़ा हुआ है । आर्थिक पिछड़ेपन के कारण लोगों में अन्धविश्वास और अशिक्षा व्याप्त है । जन्म को लोग ईश्वरीय मानते हैं । वे जन्म-दर को नियन्त्रित करने के लिए बाहरी हस्तक्षेप को उचित नहीं मानते । उत्तर प्रदेश में परिवार नियोजन की एक अग्रगामी योजना के सर्वेक्षणानुसार 90 प्रतिशत माता-पिता बच्चों को ईश्वरीय देन मानते हैं । केवल 2 प्रतिशत माताएँ और 12 प्रतिशत पिता बच्चों को मनुष्य के हाथों की बात मानते हैं ।

3) शिक्षा का अभाव :-

उच्च प्रजनन दर का एक कारण शिक्षा का अभाव भी है। प्राय: यह देखा गया है कि शिक्षित व्यक्तियों की अपेक्षा अशिक्षितों में बच्चों की संख्या अधिक होती है। शिक्षितों में यह समझ होती है कि अधिक बच्चे जीवन-स्तर को गिराते हैं, किन्तु अशिक्षित व्यक्ति बच्चों को ईश्वरीय वर-दान मानते हैं। वे धार्मिक और परम्परात्मक मान्यताओं से अधिक प्रभावित रहते हैं। भारत की अधिकांश जनता अशिक्षित है। सन् 1961 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल आबादी 43,90,72,582 थी। सन् 1969 में यह 53,25,53,000 हो गई। सन् 1961 की जनगणना के अनुसार साक्षरता का प्रतिशत 24 है, शेष 74 प्रतिशत में निरक्षर लोग आते हैं। साक्षर के अन्तर्गत जो लोग शामिल हैं, उनमें भी अधिकांश प्रतिशत उन लोगों का है जो हस्ताक्षर मात्र जानते हैं। साक्षरता का यह प्रतिशत सबसे अधिक केरल में (46.8) है और सबसे कम राजस्थान (15.2) में है। इन आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि भारत में अधिकांश लोग अशिक्षित हैं।

4) संयुक्त परिवार-प्रणाली :-

औद्योगीकरण और नगरीकरण की संख्या धीरे-धीरे कम हो रही है, किन्तु अधिकांश भारतीय परिवारों का रूप संयुक्त है। संयुक्त परिवार प्रत्येक सदस्य को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। इसलिए यदि किसी व्यक्ति के अधिक बच्चे उत्पन्न होते हैं, तो उसके पालन पोषण का बोझ उस व्यक्ति विशेष

को ही वहन नहीं करना पड़ता बल्कि समूचे परिवार में बाँट दिया जाता है। इस आर्थिक सुरक्षा के कारण व्यक्ति परिवार के आकार को सीमित करने की चिन्ता नहीं करते।

5) जलवायु :-

जलवायु भी प्रजनन दर को प्रभावित करता है। भारत एक अविकसित देश है। अधिकांश अविकसित देश उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में आते हैं। उष्ण जलवायु के कारण लड़कियाँ कम आयु में ही स्त्रीत्व को प्राप्त कर लेती है। भारत में लड़कियाँ सामान्य रूप से 15 वर्ष में रजस्वला हो जाती हैं। इसके विपरीत ठंडे देशों में रजस्वला होने की आयु 20 वर्ष है। इससे प्रजनन दर में वृद्धि होती है।

6) निम्न जीवन-स्तर :-

प्रजनन दर जीवन स्तर से भी प्रभावित होता है। जिन लोगों का जीवन स्तर उच्च होता है, उनमें बच्चों की संख्या कम होती है। अधिक बच्चों के कारण जीवन स्तर गिर जाता है। अतः उच्च आर्थिक स्तर के व्यक्ति बच्चों की एक निश्चित संख्या के बाद, परिवार के आकार को बढ़ने नहीं देते। लेकिन निम्न आर्थिक स्तर के व्यक्तियों को स्तर गिरने का कोई भय नहीं है। अतः जन्म-दर अधिक रहती है। भारत की अधिकांश जनता का जीवन-स्तर निम्न है।

डा० चन्द्र शेखर के शब्दों में -"भारत के करोड़ो लोगों का जीवन

स्तर अत्यन्त सोचनीय है । नियोजित विकास के काल में गाँवों और शहरों का जीवन स्तर अत्यन्त सोचनीय है । नियोजित विकास के काल में गाँवों और शहरों का जीवन स्तर निश्चय ही बढ़ा है, परन्तु आज भी उतना नहीं है जितना हम चाहते हैं ।" सन्तुलित भोजन तो अलग रहा, सभी लोगों को भर पेट भोजन भी उपलब्ध नहीं है। यदि भोजन से प्राप्त कैलोरीज की दृष्टि से विचार करें, तो यह तथ्य अधिक स्पष्ट हो जाता है । संयुक्त राज्य अमेरीका, कनाडा तथा यूरोप के अधिकांश देशों में प्रति व्यक्ति 3000-4000 कैलोरीज सुलभ है। भारत में सन् 1960 तक प्रति व्यक्ति 1950 कैलोरीज उपलब्ध थी ।

भारत में प्रजनन दर की अधिकता के लिए विभिन्न कारक उत्तरदायी हैं । देश के आर्थिक और औद्योगिक विकास के साथ-साथ जन्म-दर में कमी आई है । साथ ही नियोजित परिवार के आदर्श में भी प्रसार हुआ है। फिर भी भारतीय जनसंख्या का एक नगण्य प्रतिशत परिवार नियोजन में रुचि रखता है । भारत की आबादी 34,690 व्यक्ति प्रति दिन के हिसाब से बढ़ रही है। डा0 एस0 चन्द्रशेखर के अनुसार, "भारत की जनांकिकीय प्रवृत्ति की एक विशेषता यह है कि जहाँ पाश्चात्य देशों में जनसंख्या आर्थिक विकास से कम हुई है, वहाँ भारत में आर्थिक विकास को सुलभ करने के लिए जनसंख्या को कम करना पड़ रहा है"।[4]

4- तिवारा, कुंवर सिंह, जनांकिकी के सिद्धान्त ।

"वर्तमान समय में विश्व में प्रति वर्ष करीब 12 करोड़ 70 लाख बच्चे पैदा होते हैं। 9 करोड़ 50 लाख बच्चे पाठशाला [विद्यालय] जाने लायक उम्र के हो जाते हैं तथा 1 करोड़ 90 लाख व्यक्ति 65 वर्ष की उम्र को प्राप्त कर लेते हैं। आगामी वर्षों में इन आँकड़ों में निश्चित ही वृद्धि होगी, क्योंकि अधिकतम वयस्क व्यक्ति माता-पिता के वर्ग में प्रवेशित हो सकेंगे, स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं के विकास से लोगों की आयु में अधिकाधिक वृद्धि होगी - उक्त परिस्थिति में प्रत्येक राष्ट्र, प्रत्येक समदाय तथा प्रत्येक परिवार को इतना विस्तृत अनुमान लगाना चाहिये कि इन प्रवृत्तियों का उन्नत जीवन, अधिक अच्छी शिक्षा तथा बेहतर स्वास्थ्य और सुख का उसकी अपेक्षाओं पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

विश्व की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। विश्व जनसंख्या की औसत प्रतिशत वृद्धि दर 1900 से 1950 के मध्य 0.8%, 1950 से 1965 के मध्य 1.8% तथा 1972 में 2% थी। प्रो0 हेनरी एस0 विलार्ड के अनुसार, "यदि विश्व जनसंख्या की वृद्धि 1.5 की दर से होती रही तो सन् 4250 में विश्व की जन-संख्या का भार स्वयं पृथ्वी के बराबर हो जायेगा।

सन् 1970 के प्राप्त आँकड़ों के अनुसार विश्व की जनसंख्या 860 करोड़ थी। इस जनसंख्या का वितरण विश्व में बहुत ही असन्तुलित ढंग से हुआ है। विश्व की आधी से अधिक जनसंख्या एशिया के देशों में निवास करती है। यदि विकसित एवं अर्द्ध-विकसित देशों के दृष्टिकोण से देखा जाये तो पता चलता है कि कुल जनसंख्या का 66% अर्द्ध-विकसित देशों में निवास करता है। जनसंख्या के

इस असमान वितरण को विश्व जनसंख्या की एक आधुनिक प्रवृत्ति की संज्ञा दी जा सकती है। विश्व जनसंख्या के वितरण को निम्न सारणी के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

" सारणी - 2.6 "

विश्व की जनसंख्या का वितरण

	क्षेत्र	1970 संख्या (करोड़ों में)
1-	एशिया तथा ओशियाना	205.01
2-	अफ्रीका	34.06
3-	यूरोप तथा सोवियत संघ	70.04
4-	उत्तरी अमेरिका	22.06
5-	लैटिन अमेरिका	28.00
	योग	360.07

वृद्धि दर की विभिन्नता :-

विश्व की जनसंख्या की एक आधुनिक प्रवृत्ति यह भी है कि विश्व के विभिन्न देशों में जनसंख्या वृद्धि की दर में विभिन्नता पाई जाती है। विभिन्न देशों की जनसंख्या वृद्धि की दरों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट है कि तीव्र

तथा अलसाल्वाडोर में वृद्धि की दर सबसे अधिक है तथा पूर्वी जर्मनी में सबसे कम वृद्धि दर है। जनसंख्या वृद्धि की दरों में विभिन्नता को निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :-

" सारणी - 2.7 "

विश्व की जनसंख्या वृद्धि की दरें

क्षेत्र	वृद्धि दर (प्रतिशत प्रति वर्ष)
1- लीबिया एवं अलसाल्वाडोर	3.6
2- अफ्रीका	2.6
3- एशिया	2.3
4- दक्षिण अमेरिका	2.1
5- यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका	1.0
6- पूर्वी जर्मनी	0.0

मृत्यु दर में कमी :-

मृत्यु दर में होने वाली कमी चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं के विकास की ओर संकेत करती है। वर्तमान समय में विश्व के अधिकांश देशों में मृत्यु दर में कमी की प्रवृत्ति रही है। मृत्यु दर से केवल जनसंख्या की मात्रा ही निर्धारित नहीं होती बल्कि जनसंख्या की आयु संरचना, लिंग संरचना व जातीय संरचना आदि भी प्रभावित होती है। सन् 1946 - 1948 में सम्पूर्ण

विश्व में मृत्यु दर 12 से 25 प्रति हजार थी । मृत्यु दरों के अध्ययन के लिए संसार के विभिन्न क्षेत्रों को तीन स्पष्ट वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:-

1) <u>प्रथम वर्ग</u> :-

इस वर्ग में उत्तरी-पश्चिमी मध्य एवं दक्षिण यूरोप, उत्तरी अमेरिका आदि सम्मिलित हैं । इस वर्ग के देशों में मृत्यु-दर 12 प्रति हजार थी ।

2) <u>द्वितीय वर्ग</u> :-

इस वर्ग में लैटिन अमेरिका, जापान, पूर्वी यूरोप तथा रूस का एशियाई भाग सम्मिलित है । इस वर्ग के देशों में मृत्यु दर 15 से 17 प्रति हजार थी ।

3) <u>तृतीय वर्ग</u> :-

इस वर्ग में अफ्रीका, निकट पूर्व दक्षिण मध्य एशिया तथा सुदूर पूर्व सम्मिलित है । इस वर्ग में सम्मिलित देशों में मृत्यु दर 25 से 40 प्रति हजार के मध्य थी ।

<u>जन्म-दर में कमी की प्रवृत्ति</u> :-

विश्व के अधिकांश विकसित राष्ट्रों में उन्नीसवीं शताब्दी से जन्म की दर प्रवृत्ति निरन्तर कम होने जा रही है । सन् 1946-48 में सम्पूर्ण विश्व में जन्म-दर औसतन 36 प्रति हजार थी । जन्म-दरों के अध्ययन के लिए संसार

के विभिन्न क्षेत्रों को तीन प्रमुख वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है । ये वर्ग इस प्रकार है :-

1) <u>प्रथम वर्ग :-</u>

इस वर्ग में उत्तरी-पश्चिमी मध्य एवं दक्षिण यूरोप उत्तरी अमेरिका आदि सम्मिलित देशों में जन्म-दर 22 प्रति हजार थी ।

2) <u>द्वितीय वर्ग :-</u>

इस वर्ग में लैटिन अमेरिका, जापान, पूर्वी यूरोप तथा रूस के एशियाई भाग को शामिल किया गया है। इस वर्ग में सम्मिलित देशों में जन्म-दर 28 से 40 प्रति हजार थी ।

3) <u>तृतीय वर्ग :-</u>

इस वर्ग में अफ्रीका, निकट पूर्व, दक्षिण मध्य एशिया तथा सुदूर पूर्व सम्मिलित है । इस वर्ग में सम्मिलित देशों में जन्म-दर 40 से 45 प्रति हजार थी ।

ब्रिटिश जनगणना तथा सर्वेक्षण द्वारा हाल ही में प्रसारित प्रारम्भिक आँकड़ों से पता चलता है कि इंग्लैण्ड तथा वेल्स में बहुत अधिक गिरावट आ गयी है । अल्प विकसित देशों में जन्म-दर की प्रवृत्ति गिरने की ओर अग्रसर है ।

प्रत्याशित आयु में वृद्धि :-

विश्व जनसंख्या की एक प्रवृत्ति यह भी है कि आधुनिक समय में प्रत्याशित आयु में निरन्तर वृद्धि हो रही है। जन्म के समय एक बालक औसतन कितने वर्ष जीवित रहने की आशा कर सकता है, इसे ही प्रत्याशित आयु कहा जाता है। वर्तमान समय में विश्व के अधिकांश देशों में जनसंख्या की प्रत्याशित आयु में वृद्धि हो रही है। प्रत्याशित आयु में वृद्धि जन स्वास्थ्य में सुधार की ओर संकेत करती है तथा प्रत्याशित आयु में कमी जन "स्वास्थ्य में गिरावट की ओर संकेत करती है। आज से एक शताब्दी पूर्व जन्म लेने वाले बच्चे की सिर्फ 25-30 वर्ष तक ही जीवित रहने की आशा की जाती थी जबकि वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व के व्यक्तियों का प्रत्याशित आयु औसतन 50 वर्ष है। जन्म के समय आयु की प्रत्याशिता को निम्न सारणी के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

" सारणी - 2.8 "

जन्म के समय आयु की प्रत्याशा

देश	वर्ष	पुरुष (वर्ष)	महिलायें (वर्ष)
1	2	3	4
स्वीडन	1962	71.32	75.39
नीदरलैण्ड	1954-60	71.4	74.08
सोवियत संघ	1970	70.0 (औसत)	-

1	2	3	4
न्यूजीलैण्ड	1954-60	68·2	73·0
सं०रा०अमेरिका	1963	66·6	73·4
जापान	1963	67·21	72·34
त्रिनीडाड	1957	59·88	63·35
मलाया	1956-58	55·78	59·19
भारत	1961-70	46·0	45·06

<u>प्रवासी प्रवृत्ति में वृद्धि :-</u>

गत कुछ दशाओं से विश्व में प्रवासी प्रवृत्ति जोर पकड़ती जा रही है विश्व की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास की प्रवृत्ति से प्रभावित हुआ है। यूरोप तथा एशिया के लोगों का अमेरिका, कनाडा तथा आस्ट्रेलिया की ओर देशान्तरण हुआ है। अमेरिका, कनाडा की जनसंख्या वृद्धि का एक प्रमुख कारण अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास की प्रवृत्ति है।

विश्व की जनसंख्या में जो वृद्धि हुई है वह अपने स्वाभाविक रूप में हुई है।

<u>जनसंख्या में वृद्धि चक्रवृद्धि ब्याज की तरह :-</u>

विश्व में जनसंख्या वृद्धि की जो प्रवृत्ति है वह चक्रवृद्धि ब्याज की तरह

है इसका कारण यह है कि बढ़े हुए लोग और अधिक जनसंख्या को बढ़ा रहे हैं। आबादी की मशीन जब एक बार गर्मा जाती है तो उसे ठण्डा होने में कई वर्ष लग जाते हैं। अब तक जो लड़कियाँ पैदा हुई हैं वे 15 या 20 वर्ष पश्चात माँ बनेंगी और उनके द्वारा जो लड़कियाँ जन्म लेंगी वे भी निश्चित ही 15 या 20 वर्ष पश्चात माँ बनेंगी और इस प्रकार लड़कियाँ उत्पन्न होने एवं उनके माँ बनने का क्रम निरन्तर चलता रहेगा तथा देश की आबादी में निरन्तर वृद्धि होती रहेगी ठीक उसी प्रकार से चक्रवृद्धि ब्याज की अवधि के अन्तर्गत ब्याज मिलता रहता है।

उक्त अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। जनांकिकी विशेषज्ञों का कथन है कि प्रतिदिन मरने वालों की संख्या को कम करने के पश्चात भी प्रतिदिन 2 लाख व्यक्ति विश्व की आबादी में नये जुड़ जाते हैं। एक महीने में 60 लाख तथा एक वर्ष में इस विश्व मे 7 करोड़ 20 लाख व्यक्ति विश्व की आबादी में जुड़ जाते हैं। गत दो हजार वर्षों से विश्व की जनसंख्या ढाई करोड़ से बढ़कर तीन करोड़ तक पहुँच गयी है। सन् 1900 में विश्व की कुल जनसंख्या 1 अरब 65 करोड़ थी, परन्तु पिछले 70 वर्षों में यह दुगनी हो गयी है। कहने का आशय यह है कि उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ से ही विश्व की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है तथा वृद्धि का यह सिलसिला यदि इसी प्रकार अनाधिक रूप से जारी रहा तो सन् 2000 तक विश्व की जनसंख्या 6·5 अरब के करीब हो जायेगी। सन् 2000 तक विश्व

के प्रमुख क्षेत्रों की जनसंख्या इस सारणी के अनुसार हो जाने के अनुमान लगाये गये है।

"सारणी - 2.9"

क्षेत्र	सन् 1972 की जनसंख्या [करोड़ों में]	जनसंख्या [अनुमानित [करोड़ों में]
एशिया	215.4	377.7
यूरोप	46.9	56.8
सोवियत संघ	24.8	53.0
अफ्रीका	36.4	81.8
संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा	23.1	33.3
दक्षिणी अमेरिका	30.0	65.2
ओशीनिया	2.0	3.5
सम्पूर्ण विश्व	378.6	651.3

यदि जनसंख्या में इसी प्रकार से वृद्धि होती रही तो इसके जो परिणाम हमारे सामने आयेंगे वह काफी दुखदायी होंगे। सम्पूर्ण विश्व निर्धन एवं धनवान दो वर्गों में वर्गीकृत हो जायेगा तथा धनवान एवं निर्धनों के जीवन यापन स्तरों की वर्तमान विषमता स्थायी बन कर रह जायेगी। निर्धन एवं धनवान वर्ग में कभी न समाप्त होने वाला एक संघर्ष छिड़ जायेगा तथा यह संघर्ष एक दिन सम्पूर्ण विश्व के विनाश का कारण बन सकता है। एक ओर निर्धन एवं धनवान

के मध्य संघर्ष होंगे दूसरी ओर बढ़ती हुई जनसंख्या की भूख को शान्त करने के लिये अधिक खाद्यान्न की आवश्यकता होगी, उनके रहने के लिये मकानों की आवश्यकता होगी, उनकी बीमारी एवं अस्वस्थता की दशा में उनके लिये डाक्टरों एवं चिकित्सालयों की आवश्यकता होगी जिनकी पूर्ति करने की प्रतिस्पर्धा में विशाल कारखाने दिन रात पर्यावरण को दूषित करेंगे । आज समझदारी इसी में है कि समय रहते जनसंख्या वृद्धि को प्रभावपूर्ण तरीकों से नियन्त्रित किया जाये ।[5]

<u>प्रजननता-विभिन्नता से आशय</u>

प्रजनन दर, सभी समूहों और सभी राष्ट्रों में समान नहीं होती । इन दरों में काफी भिन्नता पाई जाती है । एक ही देश के अन्दर भी विभिन्न क्षेत्रों तथा समुदायों के बीच प्रजनन दरों की भिन्नता पाई जाती है। उदाहरण के लिए सन् 1971 में भारत की प्रजनन दर 89.0 प्रति हजार है जबकि पाकिस्तान की प्रजनन दर 45.7 है और बंगलादेश की 46.3 है । अतः इस भिन्नता के लिए कौन-कौन से कारक उत्तरदायी होते हैं, इसे स्पष्ट करना भी आवश्यक होता है । प्रजनन दर की भिन्नता के कारणों को दो प्रकार के अध्ययनों द्वारा ज्ञात किया जा सकता है ।

1) <u>योगात्मक उत्पत्तिक्रम :-</u>

योगात्मक उत्पत्तिक्रम में किसी आयु विशेष की स्त्रियों द्वारा सन्तानोत्पादन काल आरम्भ होने से लेकर गणना के काल तक कुल उत्पन्न सन्तानों

की गणना की जाती है ।

वर्तमान उत्पत्तिक्रम :-

वर्तमान उत्पत्तिक्रम में अवधि विशेष के अन्तर्गत विशिष्ट विशेषताओं वाली स्त्रियों द्वारा जन्में बच्चों की औसत संख्या आती है ।[5]

जनसंख्या वृद्धि की दर जन्मदर अथवा मृत्युदर का फलन होती है । अतः जन्म एवं मृत्यु दरों में उपस्थित परिवर्तनों के आधार पर ही जनसंख्या की स्वाभाविक वृद्धि दर का विश्लेषण किया जाता है। प्रजननता योग्यता रखने वाले दम्पत्तियों के सन्दर्भ में जन्म की घटना कई बार घटित होती है। कभी-कभी ऐसा देखा गया है कि एक साथ दो बच्चे या जुड़वाँ और या तो उससे भी अधिक बच्चे पैदा होते हैं । जन्म-समंकों के वितरण में व्यक्तिगत चुनाव और पसन्दगी (जिसका जन्म-दर पर भारी प्रभाव पड़ता है।) के कारण जटिलता उत्पन्न हो जाती है परन्तु मृत्यु समंकों में ऐसी ही जटिलता सम्मिलित नहीं होती ।

प्रजननता विभिन्नता को प्रभावित करने के लिए अनेक कारक सहायक होते हैं । इससे यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता कि इनमें से कौन-कौन से साधनों का अधिक महत्व है या फिर कौन से साधन प्रजननता में कमी लाने में

5- तिवारा, कुंवर सिंह, जनांकिकी के सिद्धान्त पेज- 90-91।

सहायक होते हैं। इस बात को पूर्ण रूप से प्रमाणित करने के लिए कोई विशेष प्रकार के जनसंख्यकीय साधन उपलब्ध नहीं हैं । जिससे प्रजननता विभिन्नतों को मापा जा सके । क्योंकि विकासशील देशों में प्रजननता की दर वहाँ के आर्थिक प्रकृति की विभिन्नता को भी प्रभावित करती है । समाजशास्त्री एवं जनसंख्यकीय शास्त्रियों ने इनमें से किसी भी एक कारक को सर्वमान्य नहीं बताया है । उन समुदायों में प्रजननता विभिन्नता पर किसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है, जिसको कि वह इसका आधार मान कर भविष्य में होने वाली प्रजननता विभिन्नता के स्वरूप को निर्धारित कर सके । इस सन्दर्भ में प्रजननता विभिन्नता को मापने के लिये कुछ कारकों का विस्तार पूर्वक अध्ययन से स्पष्ट किया जा सकता है कि हम किन कारकों को सर्वमान्य घोषित कर सकते हैं या फिर सब एक समान प्रभाव डालते हैं ।

सामान्य रूप से प्रजनन सम्बन्धी भिन्नता के लिए निम्न कारकों का योगदान होता है ।

सामाजिक स्तर :-

कुछ अर्थशास्त्रियों ने प्रजननता विभिन्नता में कमी के लिये कुछ प्रमुख कारकों को दर्शाया है । समाजशास्त्रियों ने प्रजननता में कमी का होना प्रमुख रूप से मनुष्यों की इच्छाशक्ति मुख्य रूप से प्रभावित होना बताया है। जो कि प्रत्येक व्यक्ति के प्रेरणात्मक साधनों पर निर्भर करती है । इससे महिलाओं के बच्चे पैदा करने का व्यवहार भी प्रभावित होता है । 19वीं शताब्दी में बहुत

से फ्रेन्च दम्पत्तियों ने अपने परिवारों के आकार को बहुत सीमित कर दिया है। जिससे कि उनका सामाजिक स्तर ऊँचा उठने में सहायता मिली है। इस सम्बन्ध में यह बात अनुभव की गयी कि व्यक्ति अपने समाज की पूर्ण सामाजिक मान्यताओं को एवं उस सामाजिक स्तर को जिसमें उसने जन्म लिया है, उस समाज का व्यक्ति पर प्रेरणात्मक प्रभाव पड़ता है और वह अधिक उन्नति व अवनति की ओर अग्रसर होता है।

उन कारकों का जिनका कि सामाजिक तौर पर वर्णन नहीं हुआ है। ऐसे साधनों की समाजशास्त्रियों ने ऊँचा उठाने की लालसा को और सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाने में विभिन्न प्रकार के कारक प्रभावित करते हैं। इसके लिए अदृश्य रूप जिसमें विभिन्न प्रकार के भार एक परिवार को उठाने पड़ते हैं, सामाजिक स्तर पर इसका प्रभाव बहुत अधिक एक सीमित परिवार पर पड़ता है। जिस प्रकार एक बड़े बर्तन में किसी पदार्थ को भरा जाये और उस पर अदृश्य प्रभाव डाला जाये तो उस का भार ऊँचा उठेगा जबकि उसको किसी छोटे बर्तन में डालें और उस पर वही प्रभाव डालें तो छोटे बर्तन पर प्रभाव अधिक होगा।

इस बात को पुन: स्पष्ट किया जा सकता है कि मनुष्य को अपने सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिये समाज की उन्नति करना आवश्यक है। और उसको केवल समाज में ही मापा जा सकता है। किसी भी व्यक्ति विशेष ने अपने समाज के लिये, अपनी जाति के स्तर को, अपने जन्म के बाद कितना बढ़ाया अर्थात अपने पैदा होने के बाद समाज में उसका सामाजिक विकास में क्या योगदान रहा। सामाजिक स्तर में प्रभाव के कारण समाज में प्रजननता विभिन्नता पाई जाती है।

जो कि सदैव ऊँची होती है। डनमोर का ऐसा मानना था कि, प्रजातन्त्र में मनुष्य को अपने व्यक्तित्व विकास के लिए और अधिक साधनों को प्राप्त करना होगा। उन्होंने इस बात पर अधिक जोर दिया कि व्यक्ति अपने सामाजिक स्तर को समाज में एक सीमा तक ही ऊँचा उठा पायेंगे। उनका विचार है कि उनकी सन्तान भविष्य में अपने समाज के सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाने में सदैव प्रगतिशील रहे। अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वह एक धारणा बना कर चलते हैं कि सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए कम बच्चों को जन्म दें। डैकन के अनुसार, बाँझपन की प्रजननता में कमी आयी है। इसका मुख्य प्रभाव उनके सामाजिक स्तर पर पड़ता है।

किसी भी समाज की आर्थिक उन्नति के लिए सामाजिक प्रजननता विभिन्नता के सर्वमान्य सिद्धान्तों में सामाजिक स्तर को ही अच्छा माना जाता है। इस प्रभाव के परिणामस्वरूप जनसंख्याशास्त्रियों ने इस सिद्धान्त को माना है। जिसमें कि प्रजननता विभिन्नता के सिद्धान्तों में परिवर्तन आया उसका पूर्ण रूप से सामाजिक प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ है।

यद्यपि इसकी बहुत आलोचनायें हुई हैं कि एक भी सभ्यता किसी सांख्यकीय विधियों का प्रयोग नहीं करती लेकिन डमोंट के अनुसार, मनुष्य का व्यक्तिगत झुकाव उसकी सामाजिक परिस्थितियों पर पड़ता है जो कि किसी देश की जनसंख्या को प्रभावित करता है, पर दिशा उसे प्रभावित नहीं करती है।

शिशु एवं स्त्री प्रजननता के अनुपात की गणना एक बड़ी जाति एवं भाग के उसके सामाजिक स्तर के आधार पर की जा सकती है।

"सारणी - 2.10"

हिन्दू समुदाय में शिशु-स्त्री अनुपात का सामाजिक वर्गीकरण

जाति	जाति की संख्या	सम्पूर्ण या क्रम जनसंख्या	बच्चे 0-6 वर्ष की आयु प्रति हजार स्त्रियों के साथ 14-43 आयु	शिशु 0-6 वर्ष प्रति हजार विवाहित महिलाओं आयु 14-43	विधवा/विवाहित महिलाओं प्रति हजार महिलायें
ब्राहम्ण	1	13,628,000	746	967	235
दूसरी जातियाँ	4	4,244,000	779	1,021	233
उत्तम	7	19,154,000	815	982	149
सामान्य	10	21,852,000	876	1,052	127
बाहरी	17	25,968,000	849	1,033	137
जाति सम्बन्धी	6	5,522,000	872	1,075	119
योग	45	96,375,000	-	-	-

सारणी से स्पष्ट है कि सामान्य जातियों में प्रजननता का अनुपात अधिक पाया जाता है। जाति के बाहरी एवं जनजाति में भी भिन्नता पायी जाती है। लेकिन हिन्दू जाति में सामाजिक स्तर पर प्रजननता का सम्बन्ध पाया गया है। प्रजननता विभिन्नता का अध्ययन करते समय यह ध्यान देना आवश्यक है कि एक जाति को एक इकाई माना जाती है। इसमें किसी एक जाति एवं एक समुदाय के सामाजिक स्तर, को

ध्यान में रखा जाता है न कि एक व्यक्ति विशेष को, जिसमें कि वर्गीकरण करते समय व्यवसाय, शिक्षा का भी ध्यान रखना पड़ता है। जब परिवार का आकार कम होता है तो सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हो जाती है। प्रजनन की उच्च दर सामाजिक गतिशीलता को बाधित करती है। क्योंकि बच्चों के जन्म के लिए धन, समय और प्रयत्नों की आवश्यकता होती है जिनको बच्चों के अभावों के कारण सामाजिक गतिशीलता की वृद्धि में लगाया जा सकता है।

अल्पविकसित देशों का समाज रूढ़िवादी होता है। यहाँ विवाह को धार्मिक संस्कार माना जाता है। विकसित देशों की तुलना में यहाँ विवाह की औसत आयु कम होती है। फलतः स्त्रियों का मातृत्व काल अधिक रहता है। बच्चों को ईश्वरीय देन समझा जाता है। अधिकांश जनसंख्या निरक्षर होती है। जो सीमित परिवार के महत्व से अनभिज्ञ है। परिवार का आकार प्रतिष्ठा का प्रतीक भी माना जाता है। कुछ समुदायों में विधवाओं का पुनर्विवाह तथा बहु-पत्नी प्रथा का प्रचलन है। दूसरी ओर विकसित देशों का समाज शिक्षित और प्रगतिशील विचार वाला है। यहाँ विवाह की औसत आयु तुलनात्मक दृष्टि से अधिक है। फलतः स्त्रियों का मातृत्व काल कम रहता है। पिछड़े हुए समाजों की तरह, यहाँ विवाह की अनिवार्यता भी नहीं देखी जाती क्योंकि यहाँ अनियन्त्रित सामान्य सहवास प्रचलित है। व्यक्तिवादी भावनाओं के कारण परिवार का औसत आकार छोटा पाया जाता है। धर्म के प्रति वैसी अन्धी निष्ठा नहीं पायी जाती। जैसी कि पिछड़े हुए समाज में पायी जाती है इन्हीं सब कारणों से प्रगतिशील समाज में नीची प्रजनन दर पायी जाती है और विकसित व विकासशील देशों में प्रजननता विभिन्नता पायी जाती है। स्पष्टीकरण के लिए सामान्य

अनुपात से भिन्नता अधिक होने का कारण इन दोनों का आपस में बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध होना है जिसमें सामाजिक स्तर व प्रजननता में विभिन्नता प्रभावित करती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विवाहित स्त्रियों से विधवा स्त्रियों का अनुपात कम है। विधवा स्त्रियों का अनुपात जितना अधिक होगा उतना ही सामान्य अनुपात कम होगा। इस गणना में विधवा को छोड़ कर वर्गीकरण किया गया है जो उससे जो अनुपात शिशु और विवाहित महिलाओं का होगा वह सब अनुपात सामान्य होगा। इसमें यह अनुमान लगाया जा सकता है कि ऊँची जातियों में प्रजननता कम पायी जाती है।

जाति एवं समुदाय :-

प्रजननता विभिन्नता दर पर जाति एवं सामुदायिक स्थिति का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। धर्म एवं जाति समुदाय के आधार पर सर्वेक्षण करने पर जिले के शहरी क्षेत्रों में मुसलमान, ईसाई, सिख जैन या दूसरी गैर हिन्दू जातियों में प्रजननता दर अधिक पायी गई। हिन्दुओं में ब्राह्मणों में प्रजननता दर कम पाई गई। पिछड़ी एवं जनजातियों के आधार पर सर्वेक्षण से पूना जिले के गैर शहरीय क्षेत्रों में गैर धर्म या जाति का प्रजननता से स्पष्ट सम्बन्ध पाया गया। भारत के जिलों में जाति एवं जनजातियों में प्रजननता विभिन्नता बहुत अधिक पायी गई।

प्रजननता विभिन्नता जाति के वर्ग में पीढ़ी दर विभिन्नता भी पायी जाती है। उदाहरणार्थ ब्राह्मणों में जन्म दर में कमी आयी है, और अन्य

समुदाय के अलावा ये लोग अपनी जाति की जनसंख्या रोकने में किसी हद तक सहायक हुए है। परन्तु इस प्रकार की प्रजननता विभिन्नता को हम बहुत कठिनाई से सिद्ध कर सकते हैं, क्योंकि अधिकांश माता-पिता बच्चे के जन्म की सूचना को सार्वजनिक रूप से स्पष्ट नहीं करते इसलिये इस बात की सत्यता प्रमाणित करने के लिये किसी अन्य साधनों का प्रयास करना पड़ता है। 1931 की जनगणना में एक सामान्य दर प्रकाशित की गयी थी। जिससे कि प्रमुख जाति में आयु एवं सामाजिक स्तर को दिखाया गया था। इस प्रकार स्त्रियों में बच्चों का अनुपात विभिन्न शहरों में भिन्न-भिन्न होता है। जनगणना में व्यवसाय एवं जातियों में शिक्षा को भी दर्शाया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर, व्यवसाय एवं शिक्षा का प्रजननता विभिन्नता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

निम्न सामाजिक, आर्थिक, एवं व्यवसायिक स्तर वाले वर्गों में उनकी अधिकांश लोगों की बुरी चरित्रहीन आदतों के कारण एवं शिशुओं के पंजीकरण न कराने से अधिक शिशु मृत्यु दर भिन्नता को भी प्रभावित करता है। पहले यह सर्वेक्षण पंजाब में किया गया था शहरों में प्रजननता विभिन्नता से सामाजिक स्तर पर प्रभाव पड़ता है लेकिन वास्तव में यह पूरे देश के लिये सत्य प्रतीत होता है क्योंकि इसमें केवल विवाहित महिलायें जो शिशु स्त्री अनुपात एवं जाति से जुड़े होते हैं वह अनुपात कम होता है। प्रजननता विभिन्नता पर प्रमुख प्रभाव शिक्षा एवं बिना शादी शुदा का भी पड़ता है।

कुछ जैविकीय भिन्नतायें शहरी एवं ग्रामीण स्त्रियों की वजह से पायी जाती है। लेकिन यह प्रभाव नगण्य है क्योंकि हमारे गाँव में जातियों की प्रधानता होती है जिसमें इस वर्ग का सामाजिक, व्यवसायिक एवं शैक्षणिक प्रभाव पड़ता है लेकिन यह कहना कि प्रजननता विभिन्नता पर किसका कितना प्रभाव पड़ता है कहना कठिन है। लेकिन हमारे यहाँ बहुत सी छोटी-छोटी जातियाँ हैं जिनका अध्ययन करना दुष्कर कार्य है। भारत में सामाजिक प्रणाली के नियमों की प्रधानता है इसलिये इन प्रभावों का अध्ययन भी किया जाना चाहिये।

एक प्रमुख कारण यह है कि जब से समाज में मशीनीकरण प्रारम्भ हुआ है तभी से प्रजननता विभिन्नता भी प्रभावित हुई है लेकिन विवाहित स्त्री-पुरुषों में बहुत ही शिक्षित दम्पत्ति गर्भ-निरोधक साधनों का प्रयोग करके जनसंख्या वृद्धि को रोकने में सहायक हो रहे हैं। इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव कुछ ऐसी संस्था पर पड़ता है जो विधवा विवाह को पुनः विवाह की मान्यता नहीं देता। वर्तमान में प्रजननता विभिन्नता में कमी का होना उसका अप्रत्य। प्रभावकन संस्थाओं पर है जो कि लम्बे समय तक एक दूसरे से अलग रहते हैं। जिसमें जनसंख्या वास्तव में कुछ समय के लिए रूक जाती है परन्तु आज कल ऐसी संस्थायें स्वतः धीमें-धीमें खत्म हो रही है। जो कि जनसंख्या वृद्धि को रोकने में सहायक होती है और इसका जनसंख्या वृद्धि पर नगण्य प्रभाव पड़ रहा है।

अनेक अध्ययनों व सर्वेक्षित आँकड़ों से यह स्पष्ट हुआ है कि विभिन्न जाति समूहों में प्रजननता विभिन्नता पायी जाती है। इस पर इस तथ्य का भी

प्रभाव पड़ता है कि प्रत्येक जाति या समुदाय अपने जाति व समुदाय को अधिक सुदृढ़ व विशाल करने के लिए प्रजनन में संलग्न रहता था परन्तु जैसे-जैसे शैक्षिक वातावरण का प्रसार हो रहा है। इससे उनमें प्रजननता विभिन्नता उत्पन्न हुई है क्योंकि प्रत्येक समुदाय शैक्षिक वातावरण की पहुँच में नहीं है।

धार्मिक विभिन्नता :-

धर्म का प्रभाव प्रजननता विभिन्नता पर अधिक पड़ता है। यद्यपि प्रमुख रूप से जो प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं, वह आर्थिक एवं शैक्षणिक अधिक होते हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव मनुष्य की धार्मिक मान्यता का प्रजननता विभिन्नता पर पड़ता है। मुसलिमों में प्रजननता अधिक एवं हिन्दू समुदाय में मुसलमानों से कम प्रजननता पायी जाती है। भारत की 1951 की जनगणना के आधार पर मुसलमानों की जनसंख्या 80 लाख थी जब कि हिन्दुस्तान में बंगला देश भी सम्मिलित था। कुछ विभिन्न समय 1953-1955 में एवं 1960-1961 में जो राष्ट्रीय नमूने परीक्षण किये गये उससे यह परिणाम विदित हुआ कि मुस्लिम समुदाय में प्रजननता की दर अन्य समुदाय की अपेक्षा अधिक पायी जाती है। जो कि उस समय 14 प्रतिशत थी। कुछ जिलों में इन समुदायों का प्रतिशत इससे भी अधिक था। लेकिन 1963-64 में ग्रामीण मुस्लिम समुदाय में प्रजननता में कुछ कमी आयी। परन्तु हिन्दुओं की तुलना 1963-64 में यह अधिक थी। एक शहरीय सर्वेक्षण किया गया। जिसमें हिन्दू और मुस्लिम की प्रजननता की दर में कमी पायी गई।

इसी प्रकार के अध्ययन से पश्चिम बंगाल के मुस्लिमों में कम प्रजननता पाई गई हिन्दुओं की तुलना में । डा0 उमा गोहा, ने पश्चिम बंगाल के तीन गाँव में मुस्लिम परिवारों में किसी दो समूह का अध्ययन किया था । सिख जो बहुत गरीब थे और जो सिख अशिक्षित था एवं मुस्लिम परिवार से जो नमूने प्राप्त हुए थे उनमें प्रजननता में कमी हुई थी परन्तु हिन्दू एवं सिखों की तुलना में मुस्लिमों में प्रजननता की दर अधिक पायी गई थी । जबकि यह धार्मिक समुदाय अधिक गरीब था । डा0 नाग को इस बात परसन्देह था कि कुछ महिला रोगी होने के कारण उन की प्रजननता दर में कमी आयी है ।

संसार में सभी मुस्लिम समुदाय में प्रजननता की दर अधिक पायी जाती है । भारत के सभी मुस्लिम समुदाय में कुछ मुख्य भागों में यह और भी अधिक पायी जाती है । जिसका प्रमुख कारण विधवा पुनर्विवाह, जो कि प्रजननता दर का एक तिहाई भाग होता है । लेकिन बाद में उनका प्रभाव कुछ कम पाया जाने लगा है । जिसका प्रमुख कारण आधुनिक समाज में धार्मिक मान्यता के कारण विवाहित स्त्रियों को अधिक समय तक अपने माता-पिता के साथ रहना पड़ता है। विभिन्न प्रकार के बहुत से महत्वपूर्ण धार्मिक उत्सव हिन्दुओं को एक दूसरे से मिलने में बाधक होते हैं । आधुनिक गर्भ-निरोधक साधन उपलब्ध होने पर भी उसके प्रति मुस्लिम समुदाय विपरीत दृष्टिकोण रखता है क्योंकि उनके धर्म में अधिक धर्मावलम्बियों की अधिक संख्या बढ़ाना पुण्य का कार्य समझा जाता है । जबकि हिन्दू परिवारों में गर्भ निरोधक साधनों का प्रयोग धार्मिक रूप से निरूत्साहित नहीं है।

पूर्व में किये गये कुछ बंगलादेशी गाँवों के सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि हिन्दू विवाहित जोड़ों में 11.5 प्रतिशत गर्भ निरोधक परिवार नियोजन के साधनों का प्रयोग करते थे। जब कि मुस्लिम में 6.3 प्रतिशत इन साधनों का प्रयोग करते थे। 1967-69 में कृष्णा कुमार ने सर्वेक्षण द्वारा यह कहा कि मुस्लिम इस बात पर तर्क देते हैं वह क्यों प्रजननता में कमी नहीं ला पाते हैं। उनका एक प्रमुख कारण आर्थिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़ा होना है। मुस्लिम अधिक गरीब एवं बहुत ही कम शिक्षित है इसलिए इन कारकों का प्रभाव इस धर्म को मानने वालों की प्रजननता की दर पर अधिक पड़ता है।

ईसाई, सिख, मुस्लिम एवं हिन्दू धर्मों को मानने वाले समुदायों की गणना 1963-64 में राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के द्वारा की गई एवं ग्रामीण एवं शहरीय क्षेत्रों में जिसमें ईसाईयों की प्रजननता दर सबसे कम पायी गई उसके बाद सिखों की प्राप्त हुई। ग्रामीण ईसाईयों की औसत वार्षिक जन्म दर प्रति एक हजार व्यक्ति में 30-58 प्रतिशत थी। ग्रामीण हिन्दुओं का औसत 31.6 प्रतिशत था। मैसूर में एक सर्वेक्षण द्वारा ईसाईयों का बंगलौर शहर में किया गया जो कि शिक्षित और धर्मों को मानने वाले थे। इसमें उनकी प्रजननता दर कम पायी गयी एवं जो अशिक्षित थे उनकी प्रजननता की दर अधिक पायी गई। जिसकी तुलनात्मक व्याख्या उस सम्भाग में सर्वेक्षण के उपरान्त हिन्दुओं से की गई।[6]

6- श्री निवासन, 1967-68

बम्बई में पारसीयों के धर्म को मानने वालों के समुदाय में जिनका शैक्षिक स्तर बहुत अधिक है एवं उनकी आमदनी या आय भी अधिक है । सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि प्रजननता की दर और धर्म को मानने वालों में बम्बई के सन्दर्भ में कम सम्बन्ध है । धार्मिक प्रजननता का आपसी सम्बन्ध मुख्य रूप से उस समुदाय की आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक स्तर व उस धर्म को मानने वालों की धार्मिक विचार धारा को प्रभावित करता है । अतः स्पष्ट है कि किसी भी धर्म का प्रजननता दर से बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध होता है ।

यह सर्वविदित है कि मुसलमानों में प्रजननता की दर में तेजी से वृद्धि हो रही है । जबकि हिन्दुओं की जनसंख्या वृद्धि की दर धीमे-धीमे कम होती जा रही है एवं जन्म जाति जनसंख्या वृद्धि की दर स्थिर है । सन् 1881-1941 में तीनों धर्मों में कितने प्रतिशत की वृद्धि हुई यह निम्न सारणी द्वारा प्रदर्शित किया गया है ।

" सारणी - 2.11 "

प्रमुख तीन धर्मों का जनसंख्या वृद्धि का अनुपात
1881 - 1941

जातियाँ	वर्ष						
	1881	1891	1901	1911	1921	1931	1941
हिन्दू	75.1	74.2	72.9	71.7	70.7	70.7	69.8
मुस्लिम	20.0	20.4	21.9	22.4	23.2	23.5	24.3
जन-जाति	2.6	3.3	2.9	3.2	3.0	2.3	2.3

यह बढ़ोत्तरी मुसलमानों में कुछ धार्मिक परिवर्तन के कारण है, जब कि आज कल यह धार्मिक परिवर्तन बहुत कम हो रहा है। बहुत से हिन्दू जन-जातियों ने हिन्दू धर्म को छोड़ कर ईसाई, मुस्लिम एवं सिख धर्म अपनाया है। लेकिन यह बहुत ही महत्वपूर्ण उपलब्धि है कि इन धर्म परिवर्तन जातियों ने जनसंख्या का प्रतिशत नहीं बढ़ाया इस का एक अन्य कारण जन- जातियों में मृत्यु दर अधिक होना भी है जितनी कि मुस्लिम और हिन्दुओं में नहीं पायी जाती है ऐसा प्रतीत होता है कि जितनी शीघ्र मुस्लिम में उत्पत्ति होती है, उतनी ही धीमी हिन्दुओं में।

विभिन्न समुदायों की प्रजनन दर में भिन्नता पायी जाती है। यूरोप के यहूदियों की अपेक्षा कैथोलिक ईसाईयों में प्रजननता अधिक पायी जाती है। हिन्दू धर्म मोक्ष प्राप्ति तथा पितृ-तर्पण के लिये पुत्र का जन्म बहुत आवश्यक मानता है। इसलाम धर्म जनसंख्या वृद्धि का हामी है तथा सन्तति अवरोध के प्रयोग का विरोधी है। पारसियों में जन्म दरें बहुत कम पायी जाती है। भारत में प्रति हजार स्त्रियों के पीछे सर्वाधिक बच्चों की संख्या आदिवासियों में पायी जाती है। बच्चों की आवश्यकता एवं उनकी संख्या धर्म से प्रभावित होती है। उदाहरण के लिये - कैथोलिक-ईसाई इस परिकल्पना पर विश्वासपूर्वक सत्यतः प्रमाणित की जा सकती है। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि ब्रिटिश शासन काल में हेल्थ कमिश्नर ने जो रिपोर्ट उपलब्ध करायी थी वह धार्मिक आधार पर नहीं थी। यद्यपि कुछ भोगों के आँकड़े उपलब्ध हैं। वह भी उचित प्रकार में नहीं है। जहाँ कि मुस्लिम

अधिक पाये जाते हैं उनकी तुलना उन जिलों से करें जहाँ हिन्दू अधिक पाये जाते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि जन्म पंजीकरण में भिन्नता है ।

कुछ प्रमुख भारतीय धार्मिक समुदाय औसत वृद्धि का अध्ययन जनगणना से प्राप्त आँकड़ों से कर सकते हैं । अग्रिम तालिका में 1921 एवं 1931 की जनगणना द्वारा यह प्रदर्शित होता है कि सामाजिक स्तर, शहरी और उच्च शिक्षा प्राप्त पारसियों में एवं जैनों में सबसे कम वृद्धि हुई है । इसके विपरीत ईसाई और सिखों की संख्या में अधिक वृद्धि हुई निम्न श्रेणी के हिन्दुओं में कम आयु के लोगों में और नयी शादी के लोगों में छोटी आयु वर्ग का अनुपात अधिक एवं पारसियों से दुगुना होता है ।

हिन्दू-मुस्लिम समुदाय में विधवा, पुर्नविवाह का महत्व और उसका प्रभाव जानने के लिये दोनों धर्मों में कुल विधवा विवाह का अनुपात वही है जैसा कि यूनाईटेड स्टेट ऑफ अमेरिका में है । यदि इस बात की कल्पना की गई कि यदि विधवा स्त्रियों का पुर्नविवाह किया गया तो उनका प्रजनन अनुपात वही होगा जो कि एक विवाहित महिलाओं का होता है । इससे यह सम्भव है कि प्रजननता विभिन्नता की गणना शत प्रतिशत की जा सके । परन्तु तालिका में किसी एक जाति विशेष के लिये नहीं बल्कि प्रत्येक धर्म के लोगों के लिये विधवा एवं पुर्नविवाह स्त्रियों को छोड़ कर प्रतिशत बढ़ोत्तरी दर्शायी गई है ।

" सारणी - 2.12 "

प्रमुख धर्मों के आधार पर 1901 से 1941 में प्रतिशत वृद्धि

वर्ष	हिन्दू	मुस्लिम
1901	17.0	11.1
1911	14.9	11.1
1921	17.0	11.0
1931	14.4	9.6
1941	13.4	7.0

आकलन करते समय प्रारम्भिक जन्म दर दोनों धर्मों में वही जो कि सारणी में प्रदर्शित की गई है। शहरों में मुसलमानों की जन्म दर हिन्दुओं की अपेक्षा अधिक थी। एक बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न उस समय देखा जाता है कि क्या पुनर्विवाह विवाह ही जन्म दर की वृद्धि में अन्तर का कारण है। परन्तु इसका उत्तर बहुत ही जटिल है। कि जन्म दर की भिन्नता एक बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण कारक है। जिसका की वर्णन करते समय हिन्दू और मुस्लिम परिवारों की प्रधानता उन की प्रजननता विभिन्नता का माप इस विवाहित महिलाओं के बच्चों के अनुपात से मालूम कर सकते हैं। परन्तु इसमें हम विधवा स्त्रियों को छोड़ देते हैं। फिर भी मुस्लिम विधवा पुर्न विवाह का अनुपात अधिक पाया गया है। जो कि इस सारणी द्वारा प्रदर्शित किया जा रहा है।

"सारणी - 2·13"

मुस्लिम शिशु और महिलाओं और हिन्दू शिशु महिलाओं के अनुपात का प्रतिशत
(1891 - 1941)

वर्ष	सम्पूर्ण महिलाओं के बच्चों का अनुपात 15-43 आयु	विवाहित महिलाओं के बच्चों का अनुपात 15-43 आयु
1891	114·3	108·6
1901	119·6	115·1
1911	114·8	111·8
1921	114·1	110·0
1931	111·9	109·0
1941	112·2	108·6

समग्र रूप से विभिन्न धर्म और नैतिक समूहों की प्रजननता अध्ययन के साथ महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनैतिक जटिलतायें जुड़ी हुई हैं। एक प्रजातान्त्रिक समाज में जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को मत देने का अधिकार प्राप्त है वहाँ विशेष रूप से धार्मिक समूहों और नैतिक समूह राजनैतिक शक्ति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। विकसित और अविकसित देशों में बहुत से सर्वेक्षण यह पता लगाने के लिये किये गये हैं कि एक विशेष धर्म का प्रजननता के आचरण का क्या प्रभाव है ?

एक समय था जब बौद्धों को छोड़कर विश्व के सभी धर्म जन्म अनुयायी थे तथा जनसंख्या बढ़ाने के पक्ष में थे। विभिन्न धर्मों के लोग अधिक प्रजननता को महत्व देते थे जैसे उदाहरण इंगित करते हैं, "अधिक फल उगाओ गुणाओं में बढ़ो और पृथ्वी का अधिक शोषण करो।"

इस्लाम धर्म वालों का कहना है कि, उस स्त्री की शादी करो जो अपने पति को अधिक प्यार करती हो और अधिक बच्चे जन सकती हो। हिन्दू धर्म के मानने वालों के अनुसार स्त्री को अधिक और भाग्यशाली बच्चों की माँ बनाओ उसे आशीर्वाद दो कि वह दस बच्चों की माँ बने। जब समेत पति ग्यारहवाँ हो। यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि यह सब धार्मिक विश्वास सुदूर भूतकाल के हैं। जब कि मृत्यु दर बहुत ऊँची थी, उस समय अधिक प्रजननता और अधिक मृत्यु दर में एक अनुपात बना रखना पड़ता था ताकि वंशगत जनसंख्या स्थिर रहे। प्रजननता के साथ मानव छेड़छाड़ सभी धर्मों में लगभग वर्जित थी। जैसा कि प्रजननता के साथ छेड़छाड़ करने की प्रवृत्ति उन धर्म समूहों में कम थी जहाँ किसी केन्द्रीय प्रभुत्व का अभाव था। (लोरीमर एण्ड ओसबोर्न के अनुसार,) यही कारण है कि हिन्दू धर्म में किसी शीर्ष प्रमुख का अभाव है, जिससे वे जन्म-नियन्त्रण का विरोध कर सकें।

(जुडेइज्म एण्ड प्रोटेस्टेन्ट) क्रिश्चियन हरबेक प्रथा वाले पश्चिम देशों में किये गये विभिन्न सर्वेक्षणों के अध्ययन से यह पता लगा कि कैथोलिक धर्मावलम्बियों की प्रजननता और गैर कैथोलिक धर्मावलम्बियों वाले ईसाइयों की अपेक्षा

हर देश और सामाजिक आर्थिक समूह में अधिक है। संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में किये गये सर्वेक्षणों के अध्ययन से यह पता लगा कि प्रोटेस्टेन्ट ईसाई और यहूदियों की अपेक्षा रोमन कैथोलिक ईसाइयों में प्रजननता अधिक है। हाल के सर्वेक्षणों से यह पता चलता है कि कनाडा व यूरोपियन देशों में धार्मिक टकराव से प्रजननता में अन्तर कम हो रहा है। संयुक्त राज्य में इसके विपरीत यह खाई चौड़ी हो रही है। इस अन्तर में कमी के कारण विभिन्न धर्मों के आचार संहिता में बदलाव तथा जन्म नियन्त्रण सम्बन्धी धार्मिक विचारों में कमी होने का कारण हो सकता है। इस कमी का सामाजिक, आर्थिक तत्वों का प्रभाव है जो कि शहरीय निवास व शिक्षित होना प्रजननता पर प्रभाव डाल रहे हैं। जिसका परिणाम प्रजननता में कमी आ रही है।

आवासीय विभिन्नता :-

आवासीय साधन जो कि प्रजननता विभिन्नता को प्रभावित करते हैं यह एक जैविक कारण नहीं है। आवास पूर्ण रूप से व्यक्ति द्वारा उत्पन्न परिस्थितियों है। आवास पूर्णतः उसकी इच्छा पर निर्भर करती है। इसका निर्णय वह अपनी परिस्थितियों के ही अनुसार करते हैं जिससे मुख्य रूप से व्यक्ति सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों एवं सामाजिक रूप से प्रभावित होता है। इस प्रकार से यह एक मानवीय संरचना जो कि आर्थिक सामाजिक एवं सांख्यकीय कारकों से प्रभावित होता है।[7]

7- डोनाल्ड, जे० बोग, प्रिन्सिपल ऑफ डेमोग्राफी, न्यूयार्क; जॉन विली एण्ड सन्स, 1969, पेज - 753

एक प्रमुख साधन आवास का जो कि प्रजननता को प्रभावित करता है, का अध्ययन करने से यह पता चलता है कि जनसंख्या वृद्धि में परिवर्तन का आवास संरचना और उस पर भी प्रभाव पड़ता है। इस पर मृत्यु दर का प्रभाव भी पड़ता है। यह कभी भी कम या ज्यादा हो सकता है और किसी भी जनसंख्या वृद्धि में बहुत तीव्रता से किसी समुदाय पर पड़ता है। जबकि एक बहुत बड़ी संख्या में व्यक्ति किसी एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं तो इस प्रकार विधि पूर्वक अध्ययन करना बहुत जटिल होता है। क्योंकि मृत्यु दर या जन्म दर बहुत से कारकों से प्रभावित होते हैं। लेकिन अध्ययन करने के लिये पर्याप्त आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं। जिसके आधार पर परिणाम प्राप्त किये जा सकें।

प्रवासीय अध्ययन के अन्तर्गत किसी क्षेत्र की जनसंख्या के अध्ययन के लिये प्रजननता और उस की मृत्यु दर को मापना आवश्यक होता है कि किस अनुपात में जनसंख्या को उत्पादित हुई है एवं किस जनसंख्या में अधिक श्रमिकों की उपलब्धता है। प्रजननता एवं जनसंख्यकीय दृष्टि से ये कारक अत्याधिक महत्वपूर्ण हैं, साथ ही आर्थिक, सामाजिक, मानवीय, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, कानूनी विभागों के नीति निर्धारण करने वाले लोग योजनायें बनाने वाली सरकार व सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिये अधिक महत्वपूर्ण है।

एक अन्य कारक जो कि प्रवासीय विभिन्नता को प्रभावित करता है वह यह है कि विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले लोग जो कि एक शहर से दूसरे शहर

पर स्थानान्तरित होते है । वह अनेक प्रकार से सामाजिक परिवर्तन लाते है । बहुत से देशों में यह देखा गया है कि औद्योगिकीकरण एवं आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप बहुत ही बड़े पैमाने पर मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान या एक शहर से दूसरे शहर एक देश से दूसरे देश में चले जाते हैं। [8] उदाहरणार्थ एशिया, अफ्रीका, अमेरिका और अन्य देशों में जहाँ पर वर्तमान में तीव्र तकनीकी परिवर्तन बहुत जोर पर है वहाँ पर एक प्रकार का प्रवासीय विभिन्नता का अन्तर ग्रामीण एवं शहरीय क्षेत्रों में हो रहा है और इस परिवर्तन से महा-नगरों का निर्माण हो रहा है ।

आर्थिक पहलुओं का भी आवासीय विभिन्नता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है । प्रमुख रूप से विभिन्नता व्यापारिक प्रक्रिया से प्रभावित होती है। औद्योगिक उन्नति के परिणामस्वरूप वहाँ पर कार्य करने के लिये श्रमिक एवं गैर श्रमिक मजदूरों की आवश्यकता होती है । इस प्रकार गाँव के श्रमिक जा कर उन उद्योगों में जाना आरम्भ कर देते हैं और रोजगार प्राप्त करते हैं । योजनायें एवं नीति निर्धारण करना आवास के सन्दर्भ में इसलिए महत्व रखता है कि इससे समाज की आर्थिक उन्नति और देश की उन सभी सामाजिक आर्थिक उन्नति प्रभावित होती है । भारत और अन्य विकसित देशों में अनियन्त्रित जनसंख्या वृद्धि होने के प्रभाव

8- डोनाल्ड जे० बोग, "इन्टरनेशनल माइग्रेशन इन फिलिप एम०हौसर एण्ड हौलिस डब्लू डन्कन {एडी}, द स्टडी ऑफ पोपुलेशन, न्यू देहली; एशिया पब्लिसिंग हाउस, 1961, पेज - 486

के कारण आर्थिक एवं औद्योगिकीकरण की उन्नति को अत्यधिक प्रभावित किया है एवं विशाल जनसंख्या का भार गाँव एवं शहर के स्वरूप पर पड़ा है। नीति और योजना काल के अन्तर्गत, भारतीय योजना आयोग की सलाह पर जो 1956 में दी गई थी उसके अनुसार हमें किसी क्षेत्र से सम्बन्धित उसके विकास में जो समस्यायें उत्पन्न होती हैं उसका अध्ययन करके उन क्षेत्र में एक नई समस्या बहुत ही शीघ्र शहरीयकरण के कारण सामने आती है।[1]

समाज शास्त्री एवं मनोवैज्ञानिक, प्रवासियों के लिये अध्ययन करते समय उनसे सम्बन्धित जो भी सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्यायें उत्पन्न होती हैं, उनमें से ऐसे क्षेत्र में खास तौर से प्रवासियों के कारण अधिक समस्यायें उत्पन्न होती हैं। ये समस्यायें सभी देशों में उत्पन्न होती हैं जहाँ से प्रवासी आते हैं और जहाँ पर प्रवासीय आ कर बसते हैं। समाज शास्त्री एवं मनोवैज्ञानिक सम्बन्धित आँकड़ों में जो कि उम्र, लिंग मातृ भाषा, शैक्षिक एवं व्यावसायिक से सम्बन्धित उपलब्ध होते हैं वह उन्हीं आँकड़ों पर भविष्य की योजना किस प्रकार बनाई जाये यह निर्धारित करते हैं एवं उस समस्या का समाधान किस प्रकार किया जाये यह भी निर्धारित करते हैं। जो समस्यायें प्रवासीयता में वृद्धि के कारण उत्पन्न हुई हों एवं जिससे सामाजिक एवं आर्थिक विकास पर प्रभाव पड़ा हो उसका अध्ययन भी आवश्यक होता है।

आवासीय विभिन्नता के अन्तर्गत जीवन दर और प्रजननता विभिन्नता के समुदाय का भी अध्ययन करते हैं जिससे तुलना करके हम जो व्यक्ति एक स्थान

1- गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, प्लानिंग कमीशन सेकेण्ड फाइव इयर प्लान, 19, 56, पेज - 246 से 247.

से दूसरे स्थान पर आकर बसें हैं उनकी विशेषता ज्ञात कर सकते हैं और जो व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं या आ कर बसते हैं उनकी विशेषता ज्ञात करके हम इस आधार पर प्रजननता विश्लेषण भी कर सकते हैं। मगर जो आदमी अपने निवास स्थान को छोड़ता नहीं है बल्कि आजीवन रहता है और जो समुदाय अपने निवास स्थान को छोड़ कर रोजगार के लिये चला जाता है और वहाँ पर वह स्थाई तौर पर रहने लगता है। उसमें प्रजननता विभिन्नता का आँकलन करना अत्यन्त कठिन है।

जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययन में शोधकर्ता, समाजशास्त्री एवं सामाजिक वैज्ञानिक, जो कि आवासीय विभिन्नता के अन्य भागों का अध्ययन करते हैं उनमें प्रमुख रूप से आयु एवं लिंग आदि का अध्ययन जो उस स्थान पर आकर बसे हों का बहुत महत्व है इस प्रकार से उन आँकड़ों का जो प्रवासी स्थाई तौर पर रह रहे हैं या जो अन्य स्थान से आ कर बसें हों उनकी भिन्नता की तुलना करके यह ज्ञात कर सकते हैं कि उनकी जन्म दर और मृत्यु दर में कितनी भिन्नता है। एवं उनमें शिशु या बालक के स्कूल की शिक्षा ग्रहण करने में क्या अनुपात है। उस समाज का शैक्षिक स्तर क्या होगा ? या उसकी प्रजननता का स्तर क्या है इसके द्वारा सभी पहलुओं का अध्ययन करने के लिये हमें आवासीय विभिन्नता का अध्ययन करना आवश्यक है। जो कि इसके लिये सहायक सिद्ध होते हैं कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों चले जाते हैं ? और वहाँ बस जाते हैं जब कि कुछ व्यक्ति उसी स्थान पर आजीवन रुके रहते हैं। और वह व्यक्ति जो उसी स्थान पर रहते

है या जो व्यक्ति एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर नहीं जाते हैं। उनका विभाजन करना जो प्रवासियों के सिद्धान्तों को बनाते हैं एवं उसके नियम बनाने में सहायक होते हैं। कुछ शोधकर्ता इस बात पर महत्व देते हैं कि कौन सा विश्वविद्यालय आवासीय विभिन्नता को मान्यता देता है। जिसके विभिन्न विकास में यह सहायक होते हैं। कुछ इस बात को मानने के लिये विद्वानों का यह कथन आवासीयों की इस बात पर निर्भर करता है कि आवासीयों में कितनी गतिशीलता है। कुछ व्यक्ति जिन्होंने इसमें कुछ विशेषतायें जैसे लिंग, आयु सम्बन्धी या शिक्षा में उपलब्धियाँ प्राप्त की है वह किसी ऐसे स्थान पर जाना पसन्द करते हैं जहाँ पर उनका महत्व हो। उदाहरणार्थ - शहरीकरण की प्रारम्भिक स्थिति में पूर्व में यह चलन था कि ग्रामीण पुरुष एक आयु के बाद ही गाँव से शहर को जाते थे जब कि उस शहर के निवासी किसी महा नगर को जाते थे। एक महत्वपूर्ण साधन जो प्रवासियों में विभिन्नता को निर्धारित करता था उस विभिन्नता का चुनाव करना पड़ता है जैसे आयु, लिंग, विवाह का स्तर, उच्च शिक्षा प्राप्त करना एवं रोजगार प्राप्त करना।

जनसांख्यिकीय विभिन्नता में इच्छित आवासियों में मुख्य रूप से युवा व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर व राष्ट्रीय से अन्तर्राष्ट्रीय प्रदेशों को जाते हैं। सामान्यतः वह व्यक्ति जिनकी आयु 15 से 20 वर्ष से लेकर 30-35 वर्ष की पायी जाती है। वे ही बाहरी प्रवास विशेष रूप से करते हैं। 1961 में बम्बई

के अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि
के प्रवासियों और^उन में मुख्य रूप से युवा बाहर में जाते थे। उस वर्ष आवासियों का अनुपात 81.5 प्रतिशत था। जिसमें से 15.59 प्रतिशत ऐसे थे जो कार्य कर सकते थे। उनमें से 10 प्रतिशत से कम आवासियों की आयु 10.45 प्रतिशत थी।[10] यह विभिन्नता इस बात को प्रमाणित करती है कि युवा आयु वर्ग के लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं। इसकी सत्यता चार बड़े जनसंख्या वाले स्थान पर जैसे महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर-प्रदेश एवं बिहार है।[11] 1938 के प्रारम्भ में गहन अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि आवासीय के बारे में बहुत महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर यह निष्कर्ष निकला कि व्यक्ति अपनी 10 वर्ष, 20 वर्ष एवं प्रारम्भ के 30 वर्ष की आयु में एक स्थान से दूसरे स्थान को आवास को चले जाते हैं।

लिंग के आधार पर आवास का चुनाव करना बहुत कठिन है। आयु वर्ग के सम्बन्ध में ऐलि वैसल के कथन ने यह अपने आवासीय सिद्धान्त में इस बात की धारणा 1885 में बनायी कि महिलायें केवल पास के स्थान पर आवास करती है।[12]

10- के०सी० जकरिया, माइग्रेन्ट्स इन ग्रेटर बोम्बे, डैमोग्राफिक ट्रेनिंग एण्ड रिसर्च सेन्टर बोम्बे, रिसर्च मोनोग्राफ नं० 5 बोम्बे, एशिया पब्लिसिंग हाउस, 1968, पेज 80-91

11- के० सी० जकरिया, पेज - 82

12- डोरोदी एस थॉमस, रिसर्च मेमोरेन्डम ऑफ माइग्रेशन डिफरेन्सियल न्यूयार्क, सोशल साइन्स रिसर्च काउन्सिल बुलेटिन, 1938, पेज-43

जब कि पुरुष दूर और पास दोनों जगहों पर प्रवास या निवास कर सकते हैं। यद्यपि कुछ विद्वानों ने सूक्ष्म अध्ययन के बाद यह पाया कि एशिया एण्ड अफ्रीका में प्रारम्भ की स्थिति में जहाँ पर शहरीकरण हो रहा था वहाँ मनुष्य की अधिक प्रधानता थी। 1961 में बम्बई में यह पाया कि मनुष्य अधिक आये और पुरुषों का प्रतिशत 100 एवम् 181 प्रतिशत महिलाओं का था। जब कि आवासीय नागरिकों का 111 प्रतिशत। यह सामान्यतः लिंग का प्रतिशत इस बात का प्रतीक था कि बम्बई में जो आवासीय आये थे उनकी तुलना में सामान्य जनसंख्या से की गई थी। जहाँ से जिस प्रदेश में वह प्रवासी आये थे उससे यह निष्कर्ष निकाला गया कि पुरुष आवासियों की संख्या अधिक थी। उनसे जो वहाँ आकर बसे थे उनकी तुलना उस स्थान में करते हैं, जहाँ से वह आये थे। इनकी विभिन्नता का कारण ग्रामीण जनसंख्या अधिक थी। उनके ऐसे कारक रहे जिससे वे शहर की ओर प्रोत्साहित हुए। दक्षिण महाराष्ट्र में एक अध्ययन किया गया था और उससे यह निष्कर्ष निकाला कि गाँव से आने वाली जनसंख्या में स्त्रियों की प्रधानता थी। इसका एक सर्वविदित कारण यह था कि अधिकांश महिलायें जिनकी शादी हो जाने के कारण से गाँव से शहर में आयी हैं। एक अध्ययन उत्तरी अमेरिका, लेटिन अमेरिका, यूरोप आदि देशों में किया गया था जिससे निष्कर्ष निकला कि लिंग सम्बन्ध चुनाव प्रवासियों में मुख्य रूप से उस प्रदेश में रोजगार के साधन उपलब्ध न होने पर या दूसरा कारण पुरुष से शादी होना है।

विवाह के स्तर से सम्बन्धित आवास में विभिन्नता के साथ में किसी प्रकार के आँकड़े उपलब्ध नहीं है। जिससे उसकी सहायता से प्रमाणित की जा सके। सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण करने पर यह पाया गया कि बड़ी जन-संख्या में भारतीय युवा पुरुष आवासियों का विवाह उनके परिवार के स्तर के अनुसार गाँव में होता है। जिस संख्या में महिलायें एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ कर बसती हैं। उसमें से 50 प्रतिशत अपने आर्थिक सम्पन्नता के कारण शहर में रहना पसन्द करती है। इसके विपरीत अमेरिका में युवा विवाहित स्त्रियाँ गाँव में जाकर बसती है। रोजगार की तलाश में।

आवासीय विभिन्नता उच्च शिक्षित वर्ग में पर्याप्त मात्रा में पायी जाती है अर्थात यह भी आवासीय विभिन्नता के लिए प्रमुख कारक है। इसके साथ-साथ एक कारण सामाजिक, आर्थिक स्तर ऊँचा प्रदर्शित करना भी होता है। बम्बई, कलकत्ता में जो भी व्यक्ति कम शिक्षित थे वे ऐसे व्यक्ति जो लोग वहाँ पर आये थे उनमें से उनका अनुपात अधिक था जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु उस राज्य से जुड़ा हो जहाँ के वह निवासी थे। बम्बई के सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकाला गया कि वहाँ आने वाले प्रवासी को अपने मूल स्थान को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद व्यक्तियों को खोना पड़ा। जो समान स्तर के शिक्षित व्यक्ति उसी स्थान पर रह गया। वृहत बम्बई में शिक्षा का स्तर जो व्यक्ति वहाँ पर बसे थे उन व्यक्तियों से कम था जो वहाँ पर रुक गये थे।

एक अन्य सर्वेक्षण वृहत बम्बई में प्रवासियों का किया गया जिसमें प्रवासी स्त्रियाँ व आने वाले के अनुसार विभाजित किया दो भागों में एक वह स्त्रियाँ जिनकी ग्रामीण पृष्ठभूमि थी और दूसरी वह स्त्रियाँ जो शहरों से आयी थीं जिनकी उन शहरों की आबादी 30,000 हजार से अधिक थी । यह निष्कर्ष निकला कि उच्च शिक्षा प्राप्त वही महिलाओं थी जो शहरों से आयी थीं और उसी स्थान पर रुक गईं थीं और वह उन महिलाओं से अच्छी थी। कुछ पश्चिमी देशों में अध्ययन किया गया कि अमेरिका में ग्रामीण स्थान से आने वाली महिलायें 1940-50 में अवधि में कुछ अधिक थीं जिनका शैक्षिक स्तर अच्छा था । उनके साथ-साथ शिक्षा का स्तर कम था । इंग्लैण्ड में यह सर्वेक्षण किया कि वह व्यक्ति जिनकी शिक्षा ग्रामीण स्कूल तक थी । उनमें प्रवासी विभिन्नता दुगनी थी उन व्यक्ति से जो अशिक्षित थे । डैविस ने यह सर्वेक्षण किया और यह निष्कर्ष निकाला कि शिक्षा के स्तर को प्राप्त करने में बहुत से प्रवासियों में हैं। अपनी आर्थिक क्षमता के अनुरूप भिन्नता पायी जाती है ।

ग्रामीण एवं शहरी प्रजननता विभिन्नता :-

ग्रामीण और शहरीय क्षेत्रों को आधार मानकर कई बार प्रजननता विभिन्नता पर अध्ययन किया गया पिछले दशक के अन्त में विश्व के निम्न प्रजननता वाले क्षेत्रों के अध्ययन से यह देखा गया कि ग्रामों की अपेक्षा शहरों में प्रजननता कम थी । जब राष्ट्र का जन्म-दर गिरा तब प्रजननता विभिन्नतायें और अधिक चौड़ी

हो गयी । शहरी क्षेत्रों में धनी वर्ग में दूसरे वर्गों की अपेक्षा जन्म-दर कम पायी जाती है। ग्रामीण और शहरीय क्षेत्रों का अन्तर दूसरे विश्व युद्ध के काल में यह अन्तर और कम हो गया । वर्ष 1920 और 1940 के बीच संयुक्त राज्यों में शहरीय और ग्रामीण प्रजननता का अन्तर लगभग पहले जैसा ही रहा । किन्तु 1940 के पश्चात यह अन्तर इन दोनों के बीच कम हो गया । 1970 की जनगणना के अनुसार संयुक्त राज्यों में 35 से 49 वर्ष तक की ऐसी स्त्रियों में (जिन्होंने अपना प्रजनन काल पूरा कर लिया है) प्रति हजार स्त्रियों पर होने वाले बच्चों की संख्या 2323, 2990, 3114, 3265 और 3584 क्रमशः मुख्य नगरों में, नगरों से मिले ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य शहरी क्षेत्रों में ऐसे ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ कृषि कार्य नहीं होता हो, कृषि कार्य वाले ग्रामीण क्षेत्रों में रहा । बहुत से यूरोपीय देशों में विशेषता पूर्वी और दक्षिणी यूरोप के देशों में शहरीय और ग्रामीण प्रजननता विभिन्नता 1970 के आस पास बनी रही । यद्यपि यह अन्तर कुछ कम हो गया । ऐसी आशा की जाती है कि जैसे-जैसे ग्रामीण जनसंख्या शहरीय जनसंख्या के समान जीवन यापन का ढंग बदलती जायेगी । प्रजननता विभिन्नता का ये अन्तर मिटता जायेगा ।

भारत वर्ष में शहरीय और ग्रामीण प्रजननता विभिन्नता का अन्तर 1951 में सापेक्षित रूप से कम होता गया । 1931 की अपेक्षा कम होता गया । 1951 के पश्चात भारत वर्ष के अधिकांश राज्यों में शहरीय प्रजननता ग्रामीण प्रजननता से अधिक कम रही । वर्तमान काल में यह अन्तर अधिक हो गया है ।

" सारणी - 2.14 "

भारत में नगरीय एवं ग्रामीण प्रजननता विभिन्नता

वर्ष	ग्रामीण	नगरीय
1968	83.0	-
1969	38.8	32.8
1970	38.9	29.7
1971	38.9	30.1
1972	38.4	30.5
1973	35.9	28.9
1974	35.9	28.4

स्रोत: 1- पी0 बी0 ब्रह्मा, सैम्पल रजिस्ट्रेशन सिस्टम रजिस्ट्रार जनरल इण्डिया न्यू देहली एपेन्डिक्स -14.

स्रोत: 2- ऑफिस ऑफ द रजिस्ट्रार जनरल इण्डिया न्यू देहली सैम्पल रजिस्ट्रेशन बुलेटिन बी × नं0 2 अप्रैल 1976, पेज-2

नेशनल सैम्पिल सर्वे और सैम्पल रजिस्ट्रेशन स्कीम में भारत वर्ष में लगातार ग्रामीण जन्म-दर का शहरी जन्म-दर से ऊँचा दिखाया है । कुल प्रजननता दर ग्रामीण और शहरीय क्षेत्रों का क्रमशः 5.8 व 4.3 थी । कुल वैवाहिक प्रजननता दर भी ग्रामीण क्षेत्रों की [6.8] अन्य क्षेत्रों [6.0] ऊँची थी । प्रजननता

सम्बन्धी प्रत्येक गणना बताती है कि ग्रामीण प्रजननता दर नि:सन्देह शहरीय प्रजननता दर से ऊँची रहती है।

1979 अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के रूप में मनाया गया था इस वर्ष में सैम्पिल रजिस्ट्रेशन स्कीम में भारत वर्ष में स्त्री प्रजननता दर के बारे में अध्ययन किया गया था। जैसा कि इस सर्वेक्षण के निम्नलिखित आँकड़ों से ज्ञात होता है। विभिन्न वर्गों में शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों का दर ऊँचा है।

"सारणी - 2·15"

		ग्रामीण	शहरीय
साधारण प्रजननता दर	-	137	104
साधारण वैवाहिक प्रजननता दर	-	176	148
कुल प्रजननता दर	-	4·6	3·1
कुल वैवाहिक प्रजननता दर	-	5·6	4·7
कुल उत्पत्ति दर	-	2·24	1·59

निम्न प्रजननता दर वाले देशों में प्रजननता और परिवार आकार से सम्बन्धित दर विपरीत स्थिति में दिया है। प्रजननता और परिवार नियोजन सम्बन्धी अध्ययन जो 12 यूरोपीय देशों में वर्ष 1970 में किये था। उनमें प्रजननता

और क्षेत्रीय आकार में नकारात्मक सम्बन्ध देखा गया जो कि फिनलैण्ड हंगरी व पोलैण्ड अधिक था । 1931 और 1941 की जनगणना में यह देखा गया कि प्रजननता ग्रामों की अपेक्षा भारतीय नगरों में कम थी ये भी देखा गया कि नगर जितना बड़ा था प्रजननता उतनी ही कम थी । भारत में 1972 में एक सर्वेक्षण में ये भी दर्शाया गया कि एक लाख से अधिक जन-संख्या वाले नगरों में छोटे नगरों की अपेक्षा व्यवहारिक प्रजननता दर कम थी।

बहुत से सर्वेक्षणों में जो भारत वर्ष के कबॉल नगरों में किये गये उन से पता लगा है कि निवास सम्बन्धी परिस्थितियों के कारण में विभिन्नता प्रजननता में भी विभिन्नता उत्पन्न करती है । इन अध्ययनों में एक विशेष बात यह ज्ञात हुई कि ग्रामीण क्षेत्रों से कबॉल क्षेत्रों में आने वाले ग्रामीण में "प्रजननता दर उनकी प्रथा अनुसार" ऊँची रही । इन अध्ययनों में नगर और ग्रामीण प्रजननता अन्तर में एक नया अध्याय जोड़ दिया । बहुत से लोगों ने स्पष्ट लिखा है कि कबॉल क्षेत्रों में आने वाले की हैसियत को आधार मान कर ही नहीं वरन उनके पिछले निवास स्थान को भी ध्यान में रखते हुये देखा जाना चाहिए । प्रजननता और परिवार नियोजन अध्ययन से जो वर्ष 1966 में ग्रेटर बोम्बे में किया गया उसमें यह देखा गया कि ग्रामीण निवासों से आयी हुई स्त्रियों में जन्म दर सर्वाधिक (6.42) थी । जबकि शहरीय निवासों से आयी स्त्रियों में यह (2.90) कम थी और स्थानीय स्त्रियों में इन दोनों के बीच में (3.00) थी । विवाह की आयु भी प्रजनन दर को प्रभावित करती है ।

डा0 एस0 एन0 अग्रवाल का मत है, "कि भारत में यदि विवाह की आयु 19 वर्ष हो अर्थात प्रथम बच्चे के जन्म के समय आयु 20 वर्ष से कम न हो, तो भारत में प्रजनन दर 25 वर्षो के अन्दर 40 प्रतिशत कम हो जायेगी। इसी प्रकार लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार यदि विवाह की आयु 12·5 वर्ष से बढ़कर 17·5 वर्ष कर दी जाये तो उत्तर प्रदेश में अनुमानित जन्म-दर 43·63 प्रति हजार से गिर कर 40·67 प्रति हजार हो जायेगी। इस आयु को यदि 25·5 वर्ष कर दिया जाये तो प्रजनन दर 33·8 प्रति हजार तक कम हो जायेगी।

प्रजनन अवधि के प्रारम्भिक काल में प्रजनन दर अधिक होती है। अतः यदि विवाह देर से हुआ तो प्रजनन अवधि कम रहती है और सन्तानोत्पादन की संख्या कम हो जाती है। भारत में यह प्रजनन काल 15 से 45 वर्ष माना जाता है। इसके अतिरिक्त अधिक आयु में विवाह होने के कारण पुनरुत्पादन शक्ति भी कम होती है।

जनसंख्या का भावी वृद्धि क्रम वैवाहिक स्तर द्वारा भी प्रभावित होता है। प्रायः यह देखा गया है कि यदि विवाह के समय की आयु कम होती है तो सन्तानोत्पादन काल अधिक शेष रहता है। यदि विवाह देर से होते हैं तो सन्तानोत्पादन काल कम शेष रहता है और कम बच्चों के उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है। इसके अतिरिक्त आयु वृद्धि के साथ-

साथ सन्तानोत्पादन की क्षमता में भी कमी आ जाती है। विवाह विच्छेद, पृथक्करण आदि भी सन्तानोत्पादन में बाधा डालती है। कुछ समाजों में विवाह की अनिवार्यता के ऊपर विशेष बल दिया जाता है। इन सभी कारकों से जनसंख्या का विकास प्रभावित होता है।

अविवाहितों में स्त्रियों की अपेक्षा पुरूषों की संख्या अधिक है। इसी प्रकार विधवाओं की अपेक्षा विधुरों की संख्या अधिक है। जनसंख्या के अनुपात में तलाक और पृथक्करण की संख्या कम है। विवाहित स्त्रियों का अनुपात 25 से 29 के आयु वर्ग में सबसे अधिक है। पुरूषों में विवाहितों का अनुपात भी 25 से 29 के आयु वर्ग में सबसे अधिक है।

ग्रामीण और नगरीय वैवाहिक स्तर

जहाँ तक गाँवों और नगरों में वैवाहिक स्तर का प्रश्न है। इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि अविवाहित पुरूषों और स्त्रियों का अनुपात गाँवों की अपेक्षा नगरों में अधिक है। ग्राम और नगर दोनों में विधुर पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों का प्रतिशत अधिक है। इसे निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया गया है -

" सारणी - 2.16 "

वैवाहिक स्तर	ग्रामीण		नगरीय		कुल	
	पुरूष	स्त्रियाँ	पुरूष	स्त्रियाँ	पुरूष	स्त्रियाँ
1- अविवाहित	52.9	42.3	53.4	41.5	55.2	46.4
2- विवाहित	43.0	46.4	43.3	47.8	41.8	43.3

वैवाहिक स्तर	ग्रामीण		नगरीय		कुल	
	पुरुष	स्त्रियाँ	पुरुष	स्त्रियाँ	पुरुष	स्त्रियाँ
3- विधुर/ विधवा	3·7	10·8	3·9	11·0	2·8	9·9
4- तलाक या परित्यक्ता	0·4	0·4	0·4	0·5	0·2	0·4

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि विधुरों की अपेक्षा विधवाओं का प्रतिशत अधिक है। पुरुष आसानी से पुनर्विवाह कर लेते हैं। पुनर्विवाह के बाद उनकी गणना विवाहितों में हो जाती है। इसके विपरीत, स्त्री के पुनर्विवाह को यहाँ की सामाजिक मान्यतायें प्रोत्साहित नहीं करतीं। विधवा होने के बाद बहुत कम स्त्रियाँ पुनर्विवाह करती हैं।

विवाहित स्त्रियों की अपेक्षा विवाहित पुरुषों की संख्या कम है पुरुष अनेक कारणों से अविवाहित रहते हैं या विलम्ब से विवाह करते हैं। किन्तु स्त्रियों के लिए विवाह को अनिवार्य माना जाता है। स्त्रियाँ स्वतन्त्र जीवन की अपेक्षा विवाह को प्राथमिकता देती हैं।

<u>गाँवों तथा नगरों में आयु के अनुसार वैवाहिक स्तर</u>

ग्रामीण तथा नगरीय वैवाहिक स्तर में आयु के अनुसार काफी भिन्नतायें पाई जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कम आयु वर्ग के अन्दर विवाहितों का प्रतिशत

नगरों से अधिक है इसमें लड़कियों की संख्या अधिक है। निम्न सारणी द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है।

" सारणी - 2.17 "

आयु - वर्ग	ग्रामीण		नगरीय	
	पुरुष	स्त्रियाँ	पुरुष	स्त्रियाँ
10-14	7.7	22.1	1.9	6.8
15-19	26.7	73.8	11.2	51.7
20-24	59.1	93.2	40.3	85.6
25-29	81.8	94.5	72.2	92.9
30-34	69.2	91.5	87.1	91.2
35-39	90.8	87.0	91.6	87.2

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का विवाह शीघ्र हो जाता है। नगरों की अपेक्षा गाँवों में लड़कियों का विवाह कम आयु में हो जाता है। 10-14 वर्ष के आयु वर्ग के अन्दर गाँवों में 22.1 प्रतिशत लड़कियों का विवाह हो जाता है। इसके विपरीत, नगरों में इस आयु वर्ग की केवल 6.8 प्रतिशत लड़कियाँ विवाहित होती हैं। 20 से 24 वर्ष के आयु वर्ग में गाँव और नगर दोनों स्थानों में विवाहित पुरुषों की अपेक्षा

विवाहित स्त्रियों की संख्या अधिक रहती है।

भारत में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है। सन् 1881 में 90·7 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में रहती थी और 9·8 प्रतिशत नगरों में। किन्तु औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप नगरों में जनसंख्या की निरन्तर वृद्धि हुई। इस वृद्धि के मूल में मुख्य रूप से दो कारण थे - सर्वप्रथम नगरीय जनसंख्या में स्वाभाविक वृद्धि, द्वितीय ग्रामीण जनसंख्या का नगरों में प्रवास। नगरीय जनसंख्या की वृद्धि में ग्रामीण प्रवासियों की मात्रा अधिक है। भारत में ग्रामीण और नगरीय जनसंख्या की वृद्धि के क्रम को निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

" सारणी - 2·18 "

क्रम सं0	जनगणना वर्ष	ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत
1-	1881	90·7	9·3
2-	1891	90·6	9·4
3-	1901	90·0	10·0
4-	1911	90·6	9·4
5-	1921	89·8	10·2
6-	1931	88·9	11·1
7-	1941	87·2	12·8

क्रम सं0	जनगणना वर्ष	ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत
8-	1951	82·7	17·3
9-	1961	82·0	18·0
10-	1971	10·1	19·9

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 1911 की जनगणना के अतिरिक्त नगरों की जनसंख्या के प्रतिशत में निरन्तर वृद्धि हुई है । 1941 से 1951 की अवधि में नगरों की ओर ग्रामीण जनसंख्या का सबसे अधिक प्रवास हुआ । इस अवधि में नगरीय जनसंख्या की 4·5 प्रतिशत वृद्धि हुई ।

सन् 1971 की जनगणना के अनुसार, भारत में 10 लाख से अधिक आबादी वाले नगरों की संख्या 9 है, जिनके नाम इस प्रकार हैं :- बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास, हैदराबाद, अहमदाबाद, बंगलौर, कानपुर और पूना । राष्ट्रीय स्तर पर 1901 से 1911 की अवधि में ग्रामीण जनसंख्या में 6·4 और नगरीय जनसंख्या में 0·3 प्रतिशत की वृद्धि हुई । 1911 से 1921 की अवधि में ग्रामीण जनसंख्या में 1·3 प्रतिशत का ह्रास हुआ और नगरीय जनसंख्या में 8·3 प्रतिशत की वृद्धि हुई । 1921 से 31 वर्ष के दस वर्षों में ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि दर 9·9 और नगरीय जनसंख्या की 19·1

प्रतिशत रही । 1931 से 41 की अवधि में ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि दर 11.8 और नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर 31.9 प्रतिशत रही । 1941-51 की अवधि में यह वृद्धि दर क्रमश: 8.8 प्रतिशत और 41.4 प्रतिशत रही । 1951 से 1961 की अवधि में ग्रामीण जनसंख्या में 20.6 और नगरीय जनसंख्या में 26.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई । नगरीय तथा ग्रामीण जनसंख्या की इस वृद्धि क्रम से स्पष्ट होता है कि नगरीय जनसंख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है ।

सन् 1971 की जनगणना के अनुसार देश में छोटे बड़े सभी प्रकार के नगरों की संख्या 2643 है थी। भारत की 54.82 करोड़ जनसंख्या में से 10.92 या 20 प्रतिशत आबादी नगरों में रहती है थी

वर्तमान में नगरों के विकास क्रम में भौगोलिक दशाओं, यातायात साधनों तथा विभिन्न स्थान विकसित हो गए हैं । जबकि भौगोलिक दशाओं तथा उद्योगों के लिए कच्चे माल के सम्भरण के फलस्वरूप कुछ राज्यों में अधिक नगरों का विकास होता है, कुछ राज्यों में कम । जिन स्थानों में उद्योगों के लिए कच्चा माल सुलभ होता है, वहाँ उस कच्चे माल से संबंधित उद्योगों का विकास होता है । उद्योगों के विकास से, वहाँ जनसंख्या का केन्द्रीकरण आरम्भ होता है । कालान्तर में वह स्थान नगर के रूप में विकसित हो जाता है । इस तथ्य के फलस्वरूप भारत के विभिन्न राज्यों में

नगरों की संख्या कहीं कम और कहीं अधिक पाई जाती है ।

व्यवसायिक स्तर :-

किसी भी देश में जनसंख्या के व्यवसायिक वितरण को ज्ञात करने के पूर्व कार्यशील जनसंख्या को जानना आवश्यक है । 1961 की जनगणना के अनुसार सम्पूर्ण जनसंख्या को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :-

(1) काम करने वाली जनसंख्या; तथा

(2) काम न करने वाली जनसंख्या

काम करने वाली जनसंख्या के अन्दर उन लोगों को शामिल किया गया है जो किसी रोजगार, व्यवसाय, उद्योग तथा नौकरी आदि में लगे हुए हैं । इसके विपरीत काम न करने वालों में उन व्यक्तियों को शामिल किया गया है जो किसी प्रकार का उत्पादक कार्य नहीं करते, यथा बच्चे, बूढ़े पराश्रयी आदि । चिकित्सालयों, जेलों, तथा अनाथालयों में रहने वाले व्यक्तियों को भी काम न करने वालों में शामिल किया गया है । सन् 1901 से 1961 तक भारत में काम करने वाले लोगों का प्रतिशत निम्न प्रकार रहा ।

"सारणी - 2.19"

काम करने और काम न करने वाली जनसंख्या (1901 - 1971)

जनगणना वर्ष	काम करने वाले लोग	काम न करने वाले लोग
1901	46.61	53.39
1931	46.92	53.08
1951	39.10	60.90
1961	42.98	57.02
1971	32.92	67.08

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि भारत में आर्थिक विकास के बावजूद भी काम न करने वालों की संख्या में वृद्धि हुई है। 1901 में काम न करने वालों का प्रतिशत 53.39 था जो 1961 में बढ़कर 57.02 हो गया। इसका कारण एक ओर जन्म-दर में विशेष कमी न होना और दूसरी ओर औसत आयु में वृद्धि है। 1901 में काम करने वाले लोगों का प्रतिशत 46.61 था। 1961 में यह घट कर 42.98 हो गया। 1951 से 1961 के दशक में काम करने वाले व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि नहीं हुई है। इसी प्रकार सन् 1961 से 71 के दशक में काम करने वाली जनसंख्या का प्रतिशत काफी कम हुआ है। यद्यपि विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर

बढ़े किन्तु जनसंख्या की अत्याधिक वृद्धि के कारण आर्थिक विकास के प्रभाव तटस्थ हो गए ।

विभिन्न प्रदेशों में काम करने वाली जनसंख्या का अनुपात :-

प्रान्तों के अन्तर्गत काम करने वाली जनसंख्या का सबसे अधिक अनुपात तामिलनाडु {55·57}, मध्य प्रदेश {52·30}, आन्ध्र प्रदेश {51·87}, महाराष्ट्र {47·91}, राजस्थान {47·55} और मैसूर {47·48} तथा उड़ीसा {43·66} में है । यह औसत भारतीय औसत {42·98} से अधिक है । जिन प्रदेशों में काम करने वाली जनसंख्या का औसत राष्ट्रीय औसत से कम है, उनके नाम इस प्रकार हैं - जम्मू और काश्मीर {42·79}, बिहार {41·40}, गुजरात {41·07}, उत्तर प्रदेश {39·12}, पंजाब {34·97}, केरल {33·37} तथा पश्चिमी बंगाल {33·16} निम्न सारणी द्वारा काम करने वाली जनसंख्या का प्रादेशिक विवरण दर्शाया जा सकता है :-

" सारणी - 2·20 "

विभिन्न प्रदेशों में कार्यशील जनसंख्या का अनुपात

प्रदेश	पुरुष	स्त्रियाँ	कुल जनसंख्या
आन्ध्र प्रदेश	62·22	41·32	51·87
आसाम	54·10	39·91	43·27

प्रदेश	पुरुष	स्त्रियाँ	कुल जनसंख्या
बिहार	55·60	27·12	41·40
गुजरात	53·47	27·89	41·07
जम्मू काश्मीर	57·84	25·64	42·79
केरल	47·20	19·71	33·31
मध्य प्रदेश	60·21	43·99	52·30
तामिलनाडु	59·74	31·29	55·57
महाराष्ट्र	57·09	38·10	47·91
मैसूर	50·38	32·02	45·48
उड़ीसा	60·75	26·58	43·66
पंजाब	52·92	14·20	34·97
राजस्थान	58·14	35·89	47·55
उत्तर प्रदेश	58·19	18·14	39·12
पश्चिमी बंगाल	53·98	9·43	33·16
भारत	57·12	27·96	42·98

भारत में काम करने वाले पुरुषों का औसत [57·12] काम करने वाली स्त्रियों के औसत [27·96] से दुगना है। प्रदेशों के अन्तर्गत कार्यशील पुरुषों का सबसे अधिक अनुपात औसत मध्य प्रदेश [43·99] में और सबसे कम

पश्चिमी बंगाल (9·43) में है। स्त्रियों की कार्यशील जनसंख्या के कम होने के अनेक कारण हैं -यथा-शिक्षा की कमी, समाजिक रीतियाँ तथा रोजगार के अवसरों की कमी। यदि परिवार का आकार बड़ा है तो स्त्रियाँ पारिवारिक कार्यों में ही व्यस्त रहती है। इसके अतिरिक्त सभी प्रदेशों में स्त्रियों के उपयुक्त रोजगार की कमी है।

व्यवसायिक वितरण :-

किसी भी देश के अर्थतन्त्र में जनसंख्या के व्यवसायिक वितरण का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। एक विकसित अर्थतन्त्र के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न व्यवसायों के बीच जनसंख्या के वितरण में सन्तुलन हो। जिस देश में अधिकांश जनता कृषि व्यवसायों को संलग्न है, वह देश आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होता है। इसके विपरीत जिस देश में जनसंख्या का कम प्रतिशत कृषि में और अधिक प्रतिशत उद्योग व अन्य व्यवसायों में संलग्न होता है, वह देश आर्थिक दृष्टि से विकसित होता है।

भारत में 1961 की जनगणना के अनुसार, कार्यशील जनसंख्या का 52·8 प्रतिशत कृषक, 16·7 प्रतिशत कृषि श्रमिक थे। 2·8 प्रतिशत लोग खान, पशुपालन, बागान तथा मत्स्य उद्योगों में काम करने वाले। 1·1 प्रतिशत अन्य गृह उद्योगों से संलग्न, 4·1 प्रतिशत निर्माण कार्य और 1·6 प्रतिशत व्यापार तथा 10·4 प्रतिशत लोग अन्य व्यवसायों में संलग्न थे किन्तु

1971 की जनगणना के अनुसार कुल कार्यशील जनसंख्या में 51.82 पुरुष और 48.18 स्त्रियाँ हैं इसे हम निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं:-

" सारणी - 2.21 "

कार्यशील जनसंख्या का वितरण (1971)

श्रेणी	प्रतिशत
1) कुल काम करने वाले	32.12
2) काम न करने वाले	67.08
3) काश्तकार	43.34
4) कृषि श्रमिक	26.33
5) पशुपालन, बागान आदि	2.38
6) खानें	0.51
7) गृह उद्योग	3.52
8) गृह उद्योग के अतिरिक्त	5.44
9) निर्माण कार्य	1.23
10) वाणिज्य व्यापार	5.57
11) यातायात संचार	24.44
12) अन्य सेवायें	8.74

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि कृषि रोजगार का सबसे बड़ा साधन

है । कार्यशील जनसंख्या का आधे से अधिक भाग कृषि पर निर्भर है । 1931 की अवधि में कृषि के ऊपर निर्भरता कुछ कम हुई । उसके बाद इसमें निरन्तर वृद्धि होती गई है । इसके विपरीत, कृषि श्रमिकों की संख्या में कुछ कमी हुई है । 1951 में कृषि श्रमिकों का प्रतिशत 19.7 था जो 1961 में 16.7 हो गया । 1961 से 71 के दशक में यह बढ़कर 26.33 हो गया । इस प्रकार इस क्षेत्र में 3 प्रतिशत निर्भरता कम हुई । खान, बागान आदि में काम करने वाले व्यक्तियों के प्रतिशत में भी कमी हुई है । यातायात तथा संचार के क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तियों के प्रतिशत में वृद्धि हुई है ।

1901 से 1971 की अवधि में व्यावसायिक संरचना में किसी प्रकार का विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है कार्यशील जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि है । दूसरे शब्दों में प्रत्येक 10 व्यक्तियों में से 7 व्यक्ति कृषि कार्यों में संलग्न हैं । इसके विपरीत विकसित देशों में कृषि के ऊपर निर्भरता बहुत कम है ।

अन्य देशों की स्थिति :-

यदि भारत की कार्यशील जनसंख्या की तुलना अन्य देशों से की जाये तो यह स्पष्ट होता है कि कृषि पर निर्भरता भारत में सबसे अधिक है इसे हम निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं ।

" सारणी – 2·22 "

व्यवसाय	सं०रा०अमेरिका	इंग्लैण्ड	जापान	भारत
1– कृषि	12·5	5·0	19·4	69·77
2– उद्योग	30·6	43·0	29·3	9·7
3– निर्माण	6·4	5·2	6·6	1·1
4– यातायात व संचार	7·7	7·1	7·4	1·5
5– व्यापार	19·0	14·1	16·5	5·1
6– सेवायें	23·8	23·8	20·8	10·8

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि विकसित देशों में कृषि के ऊपर जनसंख्या का दबाव कम होता है। इसके विपरीत अविकसित देशों में कृषि के ऊपर जनसंख्या का दबाव अधिक होता है। औद्योगिक पिछड़ेपन के कारण रोजगार के अवसर कम होते हैं। अतः अधिकांश जनसंख्या कृषि-व्यवसाय में ही संलग्न रहती है। इसके विपरीत विकसित देशों में औद्योगिक विकास के कारण रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। अतः कार्यशील जनसंख्या का कृषि से उद्योगों की ओर व्यवस्थापन होता है।

भारत में कृषि के ऊपर जनसंख्या का अत्याधिक भार होने का एक कारण यह है कि जनसंख्या की वृद्धि के अनुपात में रोजगार के अवसर नहीं बढ़े हैं। कार्यरत व्यक्तियों में उन व्यक्तियों को भी शामिल किया गया है जो

अर्द्ध या मौसमी बेरोजगारी से पीड़ित हैं । उदाहरण के लिए कृषि श्रमिकों को कार्यशील जनसंख्या माना गया है । किन्तु वास्तविक स्थिति यह है कि कृषि श्रमिकों को पूरे वर्ष काम नहीं मिलता इस कारण उन्हें भी मौसमी बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है ।

शैक्षिक स्तर एवं प्रजननता विभिन्नता :-

शिक्षा स्तर तथा सन्तानोत्पादन के बीच पारस्परिक सम्बन्ध है सामान्यतः शिक्षितों की अपेक्षा अशिक्षितों में अधिक बच्चे होते है । शिक्षित स्त्रियों की अपेक्षा अशिक्षित स्त्रियों के अधिक बच्चे होते हैं । ज्यों - ज्यों आर्थिक सामाजिक स्थिति में सुधार होता है, उसी के अनुसार सन्तानोत्पादन की संख्या में भी कमी आती जाती है । शिक्षित लोग अपने जीवन स्तर को बनाये रखने के लिये नियोजित परिवार को अधिक महत्व देते हैं । इस प्रकार यह अनुमान है कि शिक्षा स्तर जन्म दर को प्रभावित करता है ।

1951 की जनगणना के अनुसार भारत में 16.6 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर थे । पुरुषों में 24.9 प्रतिशत लोग साक्षर थे और स्त्रियों में 7.9 प्रतिशत स्त्रियाँ साक्षर थीं । इस साक्षर का अभिप्राय अधिक शिक्षा न हो कर केवल किसी भाषा को पढ़ने और लिखने की योग्यता से है । सन् 1961 की जनगणना में साक्षरों की प्रतिशत में कुछ वृद्धि हुई । 1961 की जनगणना के अनुसार भारत में 24.0 प्रतिशत लोग साक्षर था पुरुषों में साक्षरता का अनुपात

34.5 प्रतिशत था और स्त्रियों में यह अनुपात लगभग 30.0 प्रतिशत साक्षर थीं।

साक्षरता का यह अनुपात देश के सभी प्रान्तों में समान नहीं है। साक्षरता का सबसे अधिक प्रतिशत केरल में है। इसके विपरीत, सबसे कम प्रतिशत जम्मू और काश्मीर में है। निम्न सारणी द्वारा भारत के विभिन्न प्रान्तों में साक्षरता के स्तर को स्पष्ट किया जा सकता है।

"सारणी - 2.23"

"विभिन्न प्रान्तों में साक्षरों का प्रतिशत"

राज्य	साक्षरों का प्रतिशत		कुल साक्षरों का प्रतिशत
	पुरुष	स्त्रियाँ	
आन्ध्र प्रदेश	30.2	12.0	21.2
आसाम	37.3	16.0	27.4
बिहार	29.8	6.9	18.4
गुजरात	41.1	19.1	30.5
जम्मू और काश्मीर	17.0	4.3	11.0
मध्य प्रदेश	27.0	38.0	46.8
तामिलनाडु	44.5	18.2	21.4
महाराष्ट्र	42.0	16.8	29.8
मैसूर	36.1	14.2	25.2

राज्य	साक्षरों का प्रतिशत		कुल साक्षरों का प्रतिशत
	पुरुष	स्त्रियाँ	
उड़ीसा	34·7	8·6	21·7
पंजाब	33·0	14·1	24·2
राजस्थान	23·7	5·8	15·2
उत्तर प्रदेश	27·3	7·0	17·6
पश्चिमी बंगाल	40·1	17·0	29·3
भारत	34·5	23·0	24·0

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि भारत में साक्षरता का प्रतिशत लगभग चौथाई है। अर्थात प्रत्येक 4 व्यक्तियों में से 3 अनपढ़ हैं। सन् 1951 में 19·2 व्यक्ति साक्षर थे। 1951 से 1961 के बीच 10 वर्षों में साक्षर व्यक्तियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। इसके साथ ही जनसंख्या में वृद्धि के फलस्वरूप निरक्षर व्यक्तियों की संख्या भी बढ़ी है। 5 से 19 वर्ष के आयु वर्ग में 45·6 प्रतिशत जनसंख्या निरक्षर है।

ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 15·7 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर है। पुरुषों में 23·5 और स्त्रियों में 7·5 जनसंख्या साक्षर है। नगरों में साक्षरता का प्रतिशत अधिक है। नगरीय जनसंख्या का 27·3 प्रतिशत साक्षर है नगरों में 31·2 प्रतिशत पुरुष और 22·5 प्रतिशत स्त्रियाँ साक्षर हैं।

किसी भी स्त्री पुरुष जोड़े के बच्चा पैदा करने की क्षमता पर शिक्षा का बड़ा प्रभाव पड़ता है। स्त्री का शिक्षित होना, समाज में उनके आधुनिक स्तर का संकेत भी है। निम्न प्रजननता वाले देशों में ऐतिहासिक दृष्टिकोण से स्त्री शिक्षा और प्रजननता का प्रभाव नकारात्मक देखा गया है। शैक्षिक स्तर जितना ऊँचा होता है उतना ही परिवार का आकार छोटा होता है। अभी हाल के कुछ सर्वेक्षणों में यह भी देखा गया है कि शिक्षा की सर्वोच्च स्थिति आ जाने पर ग्राफ ऊँचा उठा हुआ मिला। जिन देशों में प्रजननता अधिक है जैसे कि उच्च प्रजननता वाले देश में शिक्षित स्त्री और उसके परिवार के आकार के बारे में अधिक अध्ययन नहीं किया गया है। शहरीय क्षेत्रों में शिक्षा का स्त्री की प्रजननता पर प्रभाव का जहाँ तक सम्भव हो सका, कुछ अध्ययन किया गया है। बंगलौर नगर में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त स्त्रियों के परिवार, निम्न शिक्षा प्राप्त स्त्रियों की अपेक्षा बहुत छोटे पाये गये। राष्ट्रीय नमूने सर्वेक्षण [1960-61], शहरीय क्षेत्र के 16 वें चक्र के अध्ययन से शहरीय क्षेत्र की वैवाहिक स्त्रियों और उनके शैक्षिक स्तर तथा सम्पूर्ण पारिवारिक आकार के सम्बन्ध को अधिक स्पष्ट कर दिया है। यह देखा गया है कि अशिक्षित, जो प्राथमिक शिक्षा ग्रेटर बम्बई के 1966 के सर्वेक्षण के आधार पर आयु और शिक्षा के आधार पर प्रति महिला औसत जीवित बच्चों की संख्या निम्न सारणी से स्पष्ट की गयी है।

"सारणी - 2·24"

महिला की आयु	बिना औपचारिक शिक्षा के निरक्षर एवं साक्षर	प्राथमिक, जूनियर या हाईस्कूल स्तर के लिए अध्ययनरत	हाईस्कूल और ऊपर	समग्र शैक्षिक प्राप्ति
20 से नीचे	0·59	0·40	0·13	0·45
20 - 24	1·72	1·24	0·76	1·41
25 - 29	2·84	2·62	1·53	2·56
30 - 34	3·91	3·65	2·26	3·57
35 - 39	4·52	4·13	2·49	4·11
40 + औसत	4·86	4·48	2·95	4·51
औसत	3·41	3·01	1·94	3·07
	(3,980)	(2,905)	(979)	(7,872)
प्रमाणित औसत	3·39	3·07	1·90	3·07

संकेत - कोष्ठक में दी गई संख्या महिलाओं की संख्या को इंगित करती है।

आठ मामलों में महिलाओं की शिक्षा की सूचना उपलब्ध नहीं है।

स्त्रोत- जे0आर0रैले और तारा कनितकर, "रेजिडेन्स बैक ग्राउण्ड एण्ड फर्टीलिटी इन ग्रेटर बोम्बे "पौपुलेशन स्टडीज;वी0 28,जुलाई 1974,पेज-30

" सारणी - 2.25 "

हाल में विवाहित प्रति महिला की आयु एवं उसके शिक्षा स्तर के आधार पर जीवित जन्में बच्चों की औसत संख्या :-

महिला की वर्तमान आयु (वर्षों में)	अशिक्षित एवं प्राथमिक से नीचे	जूनियर हाईस्कूल	हाई स्कूल एवं अधिक	योग
योग 15 और ऊपर	3.57	3.43	2.26	3.35
15 - 19	0.47	0.38		0.42
20 - 24	1.43	1.39	0.96	1.35
25 - 29	2.58	2.62	1.66	2.41
30 - 34	3.82	3.33	2.22	3.41
35 - 39	4.58	4.17	3.06	4.26
40 - 44	4.78	4.86	3.54	4.65
45 और अधिक	4.59	4.93	4.17	4.66
वर्तमान आयु के लिए औसत प्रमाप				

स्रोत : आशा ए भेन्डे एण्ड जी० रामाराव, फर्टीलिटी एण्ड फैमली प्लानिंग इन पणजी, गोवा

" तारणी - 2.26 "

भारतीय ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं की शिक्षा के आधार पर प्रजननता विभिन्नता, 1972

	कुल मैरीटल प्रजननता दरें		प्रमापित सामान्य मैरीटल प्रजननता दरें	
	ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय
अशिक्षित	6.9	6.3	219.0	196.2
शिक्षित परन्तु हाई स्कूल के नीचे	7.1	5.0	224.4	195.1
हाई स्कूल और ऊपर	5.0	5	173.1	145.1

स्रोत - आफिस ऑफ दी रजिस्ट्रार जनरल, मिनिस्ट्री ऑफ होम एफेयर्स, फर्टीलिटी डिफरेंशियल इन इण्डिया 72, पेज-7 और 10

~~समाप्त कर चुके हैं, उनका औसत पारिवारिक आकार क्रमशः 6.10, 6.32 और 6.25 था। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त परिवारों का आकार क्रमशः 4.25 और 2.62 देखा गया स्पष्ट हुआ है।~~

वर्तमान में किये गये अनेक अध्ययनों से स्त्री की शिक्षा और उसकी प्रजननता के सम्बन्ध पर स्पष्ट सम्बन्ध स्थापित हुए हैं। उनमें प्रथम अध्ययन

मैट्रोपोलिटन नगर बोम्बे में 1966 और द्वितीय गोआ के पेंजी क्षेत्र में 1969 में किया गया । ग्रेटर बोम्बे में हाल की शिक्षित विवाहित स्त्रियों और प्रजननता के बीच एक नकारात्मक सम्बन्ध देखा गया और यह सम्बन्ध हर आयु समूह के लिये बहुत प्रभावशाली प्रमाणित हुआ था । 40 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग की स्त्रियों में जिन्होंने माध्यमिक तथा उससे अधिक शिक्षा ग्रहण की थी । सम्पूर्ण पारिवारिक आकार 2.95 था जो कि इसी आयु समूह की निम्न शिक्षा प्राप्त स्त्रियों की अपेक्षा बहुत कम था । पेंजी में पैदा होने वाले बच्चों की औसत संख्या आयु वर्ग के अनुसार अशिक्षित या प्राथमिक शिक्षा प्राप्त वर्ग में 3.51 थी । मैट्रिक तक पढ़ी स्त्रियों में 3.45 थी और मैट्रिक पास तथा उससे अधिक स्त्री समूह में ये 2.57 थी । संक्षिप्त विवरण के लिए सारणी 2.25 में 2.26 देख सकते हैं ।

भारत के रजिस्ट्रार जनरल द्वारा किये गये हाल के एक दूसरे अध्ययन में शिक्षित स्त्रियों और प्रजननता का सम्बन्ध विपरीत स्थिति में प्रदर्शित होता है । यह प्रतीत होता है कि शैक्षिक स्तर के ऊँचे होने से प्रजननता घटती है ।

उपरोक्त समस्त आँकड़ों के देखने से यह परिणाम निकलता है कि भारत वर्ष में महा नगरों और दूसरे शहरीय क्षेत्रों से आरम्भ हो कर प्रजननता विभिन्नता में क्रमिक बढ़ोत्तरी दिखाई देती है । यहाँ विशेष रूप से यह कहा जा सकता है कि स्त्रियों की शिक्षा प्राप्ति के प्रदर्शन में माध्यमिक/ तथा उससे

ऊपर की शिक्षा प्राप्त स्त्रियाँ, अशिक्षित या अर्ध शिक्षित स्त्रियों की अपेक्षा 1.0 से 1.5 बच्चों की उत्पत्ति कम दिखाई गई है। यह समस्त बातें विकास तथा भावी योजना के लिये स्त्री शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालती है।

स्त्रियों के शैक्षिक स्तर के कारण जो प्रजननता में अन्तर आता है उसके दो मुख्य कारण है - {1} विवाह के समय आयु में विभिन्नता {2} परिवार नियोजन विधियाँ अपनाने में अन्तर। उच्च शिक्षा प्राप्त स्त्रियों का विवाह अधिक आयु में होता है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि स्त्री शिक्षा का स्तर जितना बढ़ता जायेगा उतना ही उसका दृष्टिकोण प्रजननता का स्तर निम्न रखने, परिवार के आकार को छोटा रखने, और उच्च जीवन स्तर यापन में बढ़ता जायेगा। उच्च शिक्षा बार-बार बच्चों की पैदाइश के बारे में भी वैकल्पिक सुझाव सुझाती है। उच्च शिक्षा के कारण शिशु मृत्यु दर बहुत कम हो जाती है। क्योंकि बच्चों की देखभाल में बहुत सावधानी बरती जाती है और बच्चों के पालन पोषण में माताओं का कर्तव्य साधारणतः बढ़ता है शिशु के ही कारण जन्म नियन्त्रण उपायों का अधिक विकास हो सकता है। समग्र रूप से शिक्षा के स्तर में सुधार ला कर ही प्रजननता की दर को नियन्त्रित किया जा सकता है। शिक्षा बढ़ती जनसंख्या को नियन्त्रित करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है।

प्राकृतिक स्तर और प्रजननता विभिन्नता

भारत की जलवायु उष्ण है । अतः यहाँ युवकों तथा युवतियों में प्रजनन की दृष्टि से परिपक्वता जल्दी आती है । पाश्चात्य देशों में जिस उम्र में लड़कियां विवाह योग्य होती है, उस उम्र में अधिकांश भारतीय लड़कियाँ 1 या 2 बच्चों की माँ बन चुकी होती है ।

इसके अतिरिक्त अशिक्षा, जन्म निरोध साधनों की अनभिज्ञता और अविवेक पूर्ण मातृत्व भी सन्तानोत्पादन को प्रोत्साहन देते हैं । सन् 1951 की जनगणना के आयुक्त श्री गोपाल स्वामी के अनुसार, 'भारत में अधिक जन्म-दर के लिए अविवेकपूर्ण मातृत्व और उच्च मृत्यु दर उत्तरदायी है । मृत्यु-दर अधिक होने से कुछ लोग अधिक बच्चे उत्पन्न करने में विश्वास करते हैं ताकि यदि कुछ की मृत्यु भी हो जाये तो भी कुछ शेष बचे रहें । भारत में, प्रायः उन्हीं स्त्रियों के अधिक बच्चे होते हैं जो तीन या चार बच्चों की माँ बन चुकी होती है । यहाँ प्रति 1000 व्यक्तियों में 40 बच्चे उत्पन्न होते है जिनमें से अनुमानतः 8 प्रथम प्रसव, 8 द्वितीय प्रसव, 7 तृतीय प्रसव तथा 17 चतुर्थ तथा उससे अधिक प्रसव के होते हैं । यदि हम तीन बच्चों को आदर्श मान लें तो तीन से अधिक बच्चे अविवेक पूर्ण मातृत्व के प्रतिफल कहलायेंगे । इस प्रकार कुल जन्म में मातृत्व का प्रतिशत "अविवेकपूर्ण मातृत्व का आघात" कहलाता है ।

उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त, जनसंख्या के आवास से भी जनसंख्या की वृद्धि हुई है । देश के विभाजन के बाद, काफी जनसंख्या भारत में आई ।

इसके अलावा अन्तर्राष्ट्रीय आवास और प्रवास से भी जनसंख्या प्रभावित होती है। भारत में आजादी से पहले ही विदेशी नागरिकों की संख्या काफी थी। डा0 अग्रवाल के अनुसार 1907 में विदेशियों की संख्या 6.2 लाख थी। 1911 में 12.0 लाख, 1921 में 17.87 लाख और 1931 में 25.0 लाख थी। आजादी के बाद इनमें से अधिकांश विदेशी भारत में ही बस गए। देश के विभाजन के बाद लगभग एक करोड़ व्यक्ति पाकिस्तान से भारत आए। पिछले दस वर्षों में बर्मा, लंका, तिब्बत; केन्या आदि देशों से भी काफी लोग भारत में आ कर बसे हैं। इसी तरह 1971 के पाकिस्तानी संघर्ष के दौरान बंगला देश से काफी लोग भारत आए। इनमें से काफी लोग बंगला देश वापिस जाने के बजाय भारत में ही बस गए। अतः इन सभी कारणों से जनसंख्या में वृद्धि हुई है।

मृत्यु में कमी :-

देश की स्वाधीनता के बाद स्वास्थ्य सेवाओं में प्रसार, देरी से विवाह शिक्षा प्रसार तथा जीवन स्तर में सुधार के कारण मृत्यु दर में कमी हुई है। इस समय देश में मृत्यु दर 27 प्रति हजार से गिर कर 17 प्रति हजार रह गया है। निकट भविष्य में मृत्यु दर के और अधिक कम होने की सम्भावना है। भारत में औसत मृत्यु दर में होने वाली कमी को निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

" सारणी - 2.27 "

भारत में मृत्यु-दर

वर्ष	मृत्यु दर (प्रति हजार)
1891 - 1900	44.4
1901 - 1910	42.6
1911 - 1920	47.2
1921 - 1930	36.3
1931 - 1940	31.2
1941 - 1950	27.4
1951 - 1960	22.8
1961 - 1970	18.1

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि सन् 1891 से लेकर 1970 तक की अवधि में, मृत्यु-दर काफी कम हो गई है। फलस्वरूप जन्म-दर के अधिक न गिरने और मृत्यु-दर में अत्याधिक कमी होने के फलस्वरूप, जीवित शेष दर अथवा प्राकृतिक वृद्धि दर क्रमशः बढ़ती जा रही है। इसे निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

" सारणी - 2.28 "

वर्ष	जन्म-दर	मृत्यु-दर	प्राकृतिक वृद्धि-दर
1911	49.2	42.6	6.6
1921	48.1	47.2	0.9
1931	46.4	36.3	10.1
1941	45.2	31.2	14.2
1951	39.9	27.4	12.5
1961	41.7	22.8	18.9
1971	41.1	18.9	22.2

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि जन्म-दर में विशेष कमी नहीं हुई है। इसके विपरीत, मृत्यु-दर में उत्तरोत्तर कमी होती जा रही है। इस प्रकार भारत की जनसंख्या में प्रतिदिन 34,650 आदमी प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। [13]

13- तिलारा कुमार सिंह, जनांकिकी के सिद्धान्त, प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, पेज: 195-196

प्रभाव जन्म-दर पर :-

भारत में जन्म-दर का इतिहास इतना पुराना है जितना कि स्वयं मानव का । इतिहास के पन्ने पलटने पर हम यह पाते हैं कि गत कुछ दशकों में जन्म-दर की प्रवृत्ति उच्च रहने की रही है । जन्म-दर का मृत्यु-दर से ऊँचा रहना भारत में जनसंख्या विस्फोट का प्रमुख कारण है ।

यह सच है कि परिवार नियोजन के सफल एवं कारगार उपायों द्वारा जन्म-दर में कुछ गिरावट आई है लेकिन दूसरी ओर स्वास्थ्य सुविधाओं के विकास के परिणामस्वरूप मृत्यु-दर भी काफी तेजी से गिरी है फलतः जनांकिकी समस्यायें ज्यों की त्यों विद्यमान है । भारत में जन्म-दर की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति सदैव मृत्यु-दर से उच्च रहने की रही है । गत दो दशकों में जन्म-दर में यों कोई गिरावट नहीं आयी है लेकिन मृत्यु-दर काफी तेजी से घटी है । भारत में जन्म-दर में होने वाले उच्चावचन निम्न सारणी से स्पष्ट है:-

"सारणी - 2.29 "

वर्ष	जन्म-दर (प्रति हजार व्यक्तियों पर)
1901	45.8
1911	49.2
1921	48.1

वर्ष	जन्म-दर (प्रति हजार व्यक्तियों पर)
1931	46·4
1941	45·2
1951	40·0
1961	40·0
1971	39·3
1981	36·0

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि भारत में 1901 से 1981 के मध्य जन्म-दरों में काफी घट-बढ़ हुई है फिर भी अन्य देशों से तुलना की जाये तो हमारे देश में जन्म-दर बहुत अधिक है। कनाडा में 27·6, चीन में 20·4, जापान में 14·0, बर्मा में 37·8, श्रीलंका में 27·6, आस्ट्रेलिया में 16·4, हाँगकाँग में 19·2, थाईलैण्ड में 31·0, ब्रिटेन में 16·8, सिंगापुर में 17·8। अतः स्पष्ट है कि इन देशों की तुलना में जन्म-दर हमारे देश में बहुत अधिक है।

किसी भी देश में जनसंख्या आकार मुख्य रूप से जन्म-दर एवं मृत्यु-दर पर निर्भर करता है। यदि जन्म-दर अधिक है एवं मृत्यु-दर कम है

तो जनसंख्या का आकार विशाल होगा तथा यदि मृत्यु-दर अधिक है एवं जन्म-दर कम है तो जनसंख्या का आकार कम होगा । जन्म-दर एवं मृत्यु-दर के अन्तर को "अति जीवन दर" कहा जाता है । जनसंख्या में वृद्धि अथवा कमी इसी दर के आधार पर ज्ञात की जाती है । प्रति वर्ष एक हजार जनसंख्या पर होने वाले औसत जन्म तथा मृत्यु को क्रमशः जन्म-दर एवं मृत्यु-दर के नाम से सम्बोधित किया जाता है । भारत में ये दोनों दरें ही अन्य राष्ट्रों की तुलना में सबसे अधिक है ।

भारत में वर्तमान समय में जनाधिक्य की स्थिति विद्यमान है और इसका प्रमुख कारण जन्म-दर में वृद्धि व मृत्यु-दर में कमी होना है । गत कुछ वर्षों से भारत में स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं के विकास एवं विस्तार के फलस्वरूप मृत्यु-दर में निरन्तर कमी आ रही है तथा जन्म-दर में निरन्तर वृद्धि हो रही है । इसका ही परिणाम है कि भारत आज जनसंख्या विस्फोट की स्थिति से गुजर रहा है ।

" अध्याय - 3 "

झाँसी जिले की भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि

भारत वर्ष के उत्तरी क्षेत्र में बसा उत्तर प्रदेश क्षेत्र की दृष्टि से देश का दूसरा और जनसंख्या की दृष्टि से देश का प्रथम प्रान्त है। उत्तर प्रदेश औद्योगिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े हुये क्षेत्रों में है। उत्तर प्रदेश की पश्चिमी दक्षिणी सीमा पर स्थित बुन्देलखण्ड पाँच जिलों जालौन, हमीरपुर, बाँदा, झाँसी, ललितपुर से मिलकर बना हुआ प्रशासन सम्भाग है।

बुन्देलखण्ड आज भले ही राजनीति व सामाजिक स्तर पर पिछड़ा समझा जाता है पर वह सांस्कृतिक विरासत में बहुत धनी रहा है। इसके साक्ष्य के लिये बेतवा के किनारे प्राप्त पुरातात्विक अवशेष पर्याप्त उदाहरण हैं।

दूसरे रूप में यदि यह कहा जाये कि दस नदियों वाले दर्शाणा या बुन्देलखण्ड क्षेत्र भारत के हृदय कहे जाने वाले उत्तर प्रदेश में झाँसी को एक स्वर्णहार कहें तो कोई अनुचित नहीं होगी। झाँसी को विश्व के क्षितिज में ध्रुवतारे के सदृश एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है और उसका श्रेय वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई को है, जिन्होंने अपने शौर्य पराक्रम से झाँसी की स्वतन्त्रता को जीवित रखने के लिये अपने अपूर्व बलिदान से एक नया इतिहास लिखा।

प्रशासनिक दृष्टि से जनपद में 759 आबाद ग्राम, 602 ग्राम

सभायें, 65 न्याय पंचायतें, 6 नगरपालिकायें, 2 छावनी क्षेत्र, 5 नगर क्षेत्र समितियाँ तथा नोटीफाइड एरिया है। जनपद में 4 तहसीलें हैं, झाँसी, मौंठ, मऊरानीपुर एवं गरौठा है।

जनपद में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने हेतु 21 पुलिस स्टेशन हैं, जिसमें 4 ग्रामीण क्षेत्र में व अन्य 17 नगरीय क्षेत्र में स्थित हैं। इसके अतिरिक्त 32 पुलिस चौकियाँ भी कार्यरत हैं।

जनपद में सर्वांगीण विकास हेतु 8 सामुदायिक विकास खण्ड हैं, गरौठा में गुरसराय व बामौर, मौंठ में व चिरगाँव, झाँसी तहसील में, बड़ागाँव तथा बबीना, मऊरानीपुर तहसील में मऊरानीपुर व बंगरा विकास खण्ड है।

जनपद में वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार आबाद ग्रामों की संख्या तहसील के विकास खण्डवार निम्नलिखित हैं :-

"सारणी - 3.1"

तहसील का नाम	विकास खण्ड का नाम	आबाद ग्रामों की संख्या
1	2	3
मौंठ	1- चिरगाँव	107
	2- मौंठ	124

1	2	3
गरौठा	3- गुरसराय	107
	4- बामौर	100
मऊरानीपुर	5- मऊरानीपुर	83
	6- बंगरा	82
झाँसी	7- बबीना	74
	8- बड़ागाँव	82
योग		759

जनपद की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है । जमीन ऊँची नीची होने के कारण प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उत्पादन 27.4 किलोग्राम है । कृषि के साथ ही औद्योगिक प्रगति में भी यह जनपद प्रदेश में पिछड़ा है।

प्राकृतिक संसाधन :-

जनपद साधारणतः दो भागों में विभक्त किया जा सकता है प्रथम - पूर्वी-उत्तरी अधिकांश भाग जो कि अधिकांश मैदानी क्षेत्र है। इस क्षेत्र में माल, काबिर, एवं पडुवा किस्म की मिट्टी पायी जाती है । कृषि दृष्टि से उपजाऊ क्षेत्र है । इस क्षेत्र में बेतवा, धसान एवं पहूँज नदियां हैं, इस प्रथम खण्ड में चिरगाँव, मोठ, गुरसराय, बामौर, तथा मऊरानीपुर विकास

खण्ड आते हैं। द्वितीय क्षेत्र दक्षिणी पश्चिमी भाग है। इस भाग में विंध्याचल पहाड़ की श्रृंखला के कारण पठारी भूमि व लाल मिट्टी पायी जाती है, इस भू-भाग में पहाड़, झाड़ वन व जंगली भूमि मिलती है। इस क्षेत्र में विकास खण्ड बंगरा बड़ागाँव व बबीना पड़ते हैं।

खनिज सम्पदा :-

जनपद झाँसी में खनिज सम्पदा के रूप में ग्रेनाईट, पाईरोजिस एवं फ्लेस्थार ग्रेनाईट, विशेष रूप से पायी जाती है। जार पहाड़ की मिट्टी सड़कों के निर्माण एवं फ्लेस्कार चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने के काम में आती है। इसके अतिरिक्त नदियों के बेसिन से बहुत अच्छी बालू प्राप्त होती है जो कि काफी दूर तक भेजी जाती है।

नदियाँ तथा जल प्रवाह :-

बेतवा, धसान, लखेरी तथा पहूँज यहाँ की मुख्य नदियाँ हैं। बेतवा जनपद की सबसे लम्बी नदी है तथा राजघाट माताटीला होते हुए जालौन जनपद में प्रवेश करती है। पहूँज नदी मध्य प्रदेश के साथ सीमा बनाती है तथा जनपद के पश्चिमी भाग से बहती हुई मध्य प्रदेश में प्रवेश करती है। धसान नदी जनपद झाँसी और हमीरपुर के मध्य सीमा निर्धारित करती है। बेतवा नदी पर तीन बाँध हैं - पारीछा, सिंचाई बाँध है, जिससे भाण्डेर और गुरसराय में नहरें निकाली गयी हैं। दूसरा बाँध दुकवाँ है यह पारीछा की

पीडिंग स्विज वायर है इस नदी पर सबसे बड़ा एवं प्रथम बाँध माताटीला है, इस समय ललितपुर जनपद में स्थित है। धसान नदी पर बाँध मऊरानी-पुर-गरौठा सड़क पर है, लहचुरा सिंचाई बाँध जिससे धसान नहर प्रणाली निकाली है।

जलवायु तथा वर्षा :-

जनपद की जलवायु की विशेषता पठारी होने के कारण ग्रीष्मकाल शीघ्र प्रारम्भ होकर देर तक रहती है। परन्तु रात्रि ग्रीष्मकाल में ठण्डी रहती है। वर्ष 1988-89 में जनपद का उच्चतम तापमान 46.6 सेन्टीग्रेड तथा न्यूनतम 2.5 डिग्री रहा। वर्ष 1989 में सामान्य वर्षा 8.79 व वास्तविक वर्षा 7.86 मि0मी0 रिकार्ड की गयी।

मृदा :-

जनपद की मिट्टी मुख्यतः लाल व काली का मिश्रण है। जैसे मार, काँवर, पडुवा, तथा राँकर किस्म की मिट्टी भी पायी जाती है। जनपद में प्रथम खण्ड के जिसमें विकास खण्ड चिरगाँव, मोंठ, बामौर एवं मऊरानीपुर है। 50% भाग में मार, 30 प्रतिशत में काँवर एवं शेष 20 प्रतिशत भाग में पडुवा मिट्टी पायी जाती है। पडुवा मिट्टी धसान बेतवा नदी के कछार में पायी जाती है।

राँकर मिट्टी मुख्य रूप से दूसरे संभाग में पायी जाती है। जो पठारी

क्षेत्र में है मगर मिट्टी उपजाऊ है । कॉवर मिट्टी जनपद के उत्तरी पूर्वी भाग के मैदान में पायी जाती है । कॉवर मिट्टी कड़ी होने के कारण कम उपजाऊ है । पडुवा मिट्टी उपजाऊ तो होती है परन्तु बिना खाद्य एवं अच्छी सिंचाई के अधिक प्रकार की फसलें नहीं उगाई जा सकती है ।

राँकर मिट्टी पहाड़ी ढलान पर पायी जाती है । कमजोर किस्म की मिट्टी होती है और खेती हेतु अनुपयुक्त होती है । जनपद में काफी हिस्से में हल्की मिट्टी और सिंचाई सुविधाओं की कमी के कारण उन पर अच्छी खेती नहीं हो सकती है ।

भूगर्भ जल :-

जनपद झाँसी में विंध्याचल में पहाड़ी श्रृंखला होने के कारण विशेष भौतिक संरचना पायी जाती है । भूगर्भ का उपयोग सुगमता से कुछ क्षेत्रों में हो पाता था, परन्तु अब डी0 एच0 रिंग मशीन तथा ड्रावैलरिंग द्वारा इस कठिनाईयों को दूर किया गया है । इसके प्रयोग से जनपद में नलकूप खोदे जाने का कार्यक्रम शुरू किया गया है ।जनपद में राजकीय नलकूप भी इसी आधार पर लगाये जा रहे हैं । जनपद में भूगर्भ सर्वेक्षण हेतु एक रिपोर्ट सेन्स

यूनिट स्थापित है जो शीघ्र सर्वे करके जल भण्डार की सूचना स्थान बताता है, तथा उन स्थानों को भी इंगित करता है जहाँ जल भण्डार उपलब्ध है यह जनपद के लिए एक नई उपलब्धि है ।

वन सम्पदा :-

जनपद झाँसी की भूमि पथरीली और कम गहराई वाली है । यहाँ गर्मी में बहुत अधिक गर्मी और वर्षा ऋतु में कम वर्षा होती है तथा थोड़े समय के लिये अधिक जाड़ा पड़ता है । जो वनों के विस्तार के लिए अत्यन्त उपयोगी है । गर्मी में छोटे-छोटे पेड़ भी अधिक मात्रा में जलाने की लकड़ी उपलब्ध कराते है । धसान नदी के किनारे सागौन के वृक्ष पाये जाते हैं । महुआ इस जनपद में काफी पाया जाता है । वन की क्षति रोकने के लिये शासन द्वारा आम, नीम, पीपल, बरगद, तथा साल के वृक्षों के काटने पर रोक लगा दी गयी है । यहाँ के पठारी ढलानों पर बांस होता है । जनपद में 32543 हे० क्षेत्रफल वन है जो कि कुल पठारी ढलानों पर प्रतिबंधित क्षेत्र का 6.4 प्रतिशत है । वन विभाग के अन्तर्गत 970.75 हे० क्षे है ।

वन उत्पादन :-

यहाँ के जंगलों में बबूल, महुआ, तेन्दू, सलाई तथा ढाक बहुत पाया जाता है। तेन्दू के पत्ते बीड़ी बनाने में प्रयोग होते हैं। यहाँ के जंगलों में लाख भी अच्छी मात्रा में पायी जाती है। जंगल की 50 प्रतिशत से अधिक मात्रा ईंधन की लकड़ी वाले वृक्षों से आच्छादित है।

जनांकिकीय स्थिति :-

सम्भाग में 5 जनपद आते हैं जिनमें झाँसी, जालौन, ललितपुर, हमीरपुर एवं बाँदा हैं। सारणी 3.2 से स्पष्ट होता है कि सम्भागीय जनसंख्या में 80.83% जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है जबकि 19.97% जनसंख्या नगरों में निवास करती है। जनपद झाँसी में ग्रामीण जनसंख्या अन्य जनपदों की तुलना में सबसे कम यानि 62.07% तथा नगरीय जनसंख्या 37.93% प्रतिशत सर्वाधिक है। अधिक तुलनात्मक दृष्टि से सारणी 3.2 का अवलोकन किया जा सकता है।

" सारणी - 3.2 "

सम्भाग में जनपदवार ग्रामीण नगरीय जनसंख्या

क्रम	जनपद का	योग ग्रामीण नगरीय	कुल जनसंख्या		
			जनसंख्या	पुरुष	स्त्री
		योग	11,37,931 (100.00)	608,428	528,603
1-	झाँसी	ग्रामीण	7,05,677 (62.07)	380,341	325,336
		नगरीय	4,31,354 (37.93)	228,087	203,267
		योग	986,238 (100.00)	537,017	449,221
2-	जालौन	ग्रामीण	789,786 (80.09)	430,297	359,489
		नगरीय	195,452 (19.91)	106,720	89,732
		योग	577,648 (100.00)	310,854	266,794
3-	ललितपुर	ग्रामीण	500,646 (86.67)	269,927	230,719
		नगरीय	77,002 (13.33)	40,927	36,075
		योग	1,194,168 (100.00)	643,292	550,876
4-	हमीरपुर	ग्रामीण	995,772 (83.39)	536,425	459,347
		नगरीय	198,396 (16.61)	106,867	91,529
		योग	1,533,990 (100.00)	822,816	711,174
5-	बाँदा	ग्रामीण	1,352,905 (88.20)	723,695	629,210
		नगरीय	181,085 (11.80)	99,121	81,964
		योग	5,429,075 (100.00)	2,922,407	2,506,668
	सम्भागीय योग	ग्रामीण	4,344,786 (80.03)	2,340,685	2,004,101
		नगरीय	1,084,289 (19.97)	581,722	502,567

(कोष्ठक में दिये गये आँकड़े प्रतिशत को दर्शाते है।)

स्त्रोत : भारत की जनगणना रिपोर्ट, सीरीज-1 इण्डिया, 1981

जनगणना 1971 के अनुसार झाँसी जनपद की कुल जनसंख्या 8.70 लाख थी जो 1981 में 11.37 लाख हो गयी है। वर्ष 1971 में 4.33 लाख पुरुष एवं 4.07 लाख स्त्री थे जो 1981 में बढ़कर 6.08 लाख पुरुष तथा 5.29 लाख स्त्री हो गयी है। तुलनात्मक जनसंख्या का विवरण निम्न प्रकार है :-

"सारणी - 3.3"

तहसील का नाम		वर्ष 1971 की जनगणनानुसार (लाख में)	वर्ष 1981 की जनगणनानुसार (लाख में)
1		2	3
झाँसी जनपद	नगरीय	2.70	4.31
	कुल जनसंख्या	8.70	11.37
मोंठ तहसील	नगरीय	0.21	0.35
	कुल जनसंख्या	1.74	2.16
गरौठा तहसील	नगरीय	0.09	0.26
	कुल जनसंख्या	1.71	2.09
मऊरानीपुर	नगरीय	0.33	0.50
	कुल जनसंख्या	1.82	2.32
झाँसी तहसील	नगरीय	2.6	3.20
	कुल जनसंख्या	3.43	4.79

इस दशक में जनसंख्या वृद्धि दर 30.67 प्रतिशत रही।

"सारणी - 3.4"

जनपद झाँसी में तहसीलवार जनसंख्या एवं ग्रामों व नगरों की जनसंख्या, जनगणना - 1981

क्रमांक	तहसील का नाम	कुल जनसंख्या			ग्रामीण			नगरीय			ग्रामों की संख्या		
		योग जनसंख्या	पुरुष	स्त्री	योग ग्रामीण जनसंख्या	पुरुष	स्त्री	योग नगरीय जनसंख्या	पुरुष	स्त्री	कुल ग्राम	आबाद ग्राम	नाबाद ग्राम
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1.	मोंठ	216,460	116,446	100,014	181,654	97,713	83,936	34,806	18,728	16,078	270	231	3
2.	गरौठा	209,448	112,739	96,709	183,045	98,602	84,443	26,403	14,137	12,226	234	207	3
3.	मऊरानीपुर	231,683	123,602	108,081	131,372	96,956	84,416	50,311	26,646	23,665	175	230	3
4.	झाँसी	479,440	255,641	223,799	159,606	87,065	72,541	319,834	168,576	151,258	161	156	7
	कुल योग	1137,031	608,428	528,603	705,677	380,341	325,336	431,354	228,087	203,267	840	824	16

स्त्रोत - जनगणना रिपोर्ट, 1981

सारणी 3.3 में जनपद में तहसीलवार ग्रामीण व नगरीय जनसंख्या का आंकलन 1981 की जनगणना रिपोर्ट के आधार पर स्पष्ट किया गया है ।

जनपद की तहसील मौंठ में कुल जनसंख्या 216,460 थी जिनमें पुरूष की अपेक्षा स्त्रियों का अनुपात कम है । तुलनात्मक दृष्टि से पुरूष व स्त्री की जनसंख्या में सर्वाधिक अन्तर झाँसी जनपद में है । कहने का तात्पर्य यह है कि सम्पूर्ण जनपद व तहसीलवार पुरूष व स्त्री की जनसंख्या में पर्याप्त अन्तर है और पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों की जनसंख्या उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों के अनुपात से कम है ।

सम्पूर्ण जनपदीय जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 62.07 व नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 37.93 है अर्थात जनपद की अधिकांश जनसंख्या ग्रामों में निवास कर रही है ।

घनत्व :-

5024 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र वाले इस जनपद में 1971 की जनसंख्या के आधार पर घनत्व 173 प्रति व्यक्ति किमी0 था जब कि 1981 की जनसंख्या के आधार पर इसका घनत्व बढ़कर 226 व्यक्ति प्रति वर्ग मी0 हो गया । प्रदेश में जनसंख्या का घनत्व 377 प्रति वर्ग किमी0 है । इस जनपद का सबसे ज्यादा घनत्व वाला क्षेत्र तहसील झाँसी है । सबसे कम घनत्व वाला बबीना तथा बानमोर क्षेत्र है तथा बड़ागाँव विकास खण्ड क्षेत्र में सबसे बड़ा घनत्व वाला क्षेत्र है ।

ग्रामीण तथा नगरीय आबादी :-

1971 के अनुसार जनपद की 78.9 जनता ग्रामों में निवास करती थी । 1981 की जनगणनानुसार यह प्रतिशत 62.3 रह गया है । स्पष्ट है कि नगर में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या बढ़ रही है । जिसका कारण नये नगर क्षेत्रों की घोषणा तथा जनता का ग्रामों से नगरों की ओर सुविधा के दृष्टिकोण से पलायन हो रहा है ।

पुरुष तथा स्त्रियों की जनगणना :-

वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार पुरुष 6.00 लाख तथा 5.29 लाख स्त्रियाँ हैं । प्रति हजार पुरुषों में 869 स्त्रियाँ हैं ।

अनुसूचित जातियाँ :-

वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार जनपदों में 3.25 लाख अनुसूचित जाति के लोग निवास करते हैं जो कि कुल आबादी का 28 प्रतिशत है । 1971 से 1981 के दशक में जनपद की जनसंख्या में अनुसूचित जाति का प्रतिशत स्थिर रहा ।

श्रम शक्ति (कर्मकार):-

जनपद में कर्मकारों के 1971 व 1981 के तुलनात्मक आँकड़े सारणी में दिये जा रहे हैं :-

"सारणी - 3.5[अ]"

क्रम सं0	कर्मकारों की श्रेणी	1971 की जनगणना के अनुसार प्रति0	1981 की जनगणना के अनुसार प्रति0
1	2	3	4
1-	कृषक	47.4	48.0
2-	कृषक मजदूर	16.1	12.5
3-	पारिवारिक उद्यमों में लगे मजदूर	8.2	5.8
4-	अन्य कर्मकार	28.3	33.1
कर्मकारों का प्रतिशत कुल जनसंख्या		28	28

"सारणी - 3.5[बी]"

प्रदेश में कर्मकारों का प्रतिशत निम्न प्रकार है :-

क्रम सं0	कर्मकारों की श्रेणी	1971 की जनगणना के अनुसार प्रति0	1981 की जनगणना के अनुसार प्रति0
1	2	3	4
1-	कृषक	58 प्रतिशत	
2-	कृषक मजदूर	16.3 प्रतिशत	
3-	पारिवारिक उद्यम	4.4 प्रतिशत	
4-	अन्य	21.3 प्रतिशत	

इस तरह जनपद में कृषक कर्मकार प्रदेश के औसत से कम है और अन्य कार्यों में प्रतिशत अधिक है ।

साक्षरता :-

जनपद में 1981 की जनगणना के अनुसार 37.06 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर है । कुल ग्रामीण आबादी की 28.73 प्रतिशत व्यक्ति शिक्षित है तथा कुल नगरीय आबादी का 50.68 प्रतिशत साक्षर है । प्रदेश की साक्षरता दर का 27.4 प्रतिशत है । इस तरह प्रदेश के स्तर से अधिक व्यक्ति जनपद में साक्षर है जनपद के 50.67 प्रतिशत पुरुष तथा 21.01 प्रतिशत स्त्रियाँ साक्षर हैं जब कि प्रदेश में 38.9 प्रतिशत पुरुष तथा 14.3 प्रतिशत स्त्रियाँ साक्षर हैं ।

कृषि :-

अभी तक जनपद की ग्रामीण अर्थव्यवस्था पूर्णतः कृषि पर आधारित है । पिछले अभिलेखों के आधार से ज्ञात होता है कि पूर्वकाल में जनपद में कपास की अच्छी खेती होती थी जिसका क्षेत्र शनैः-शनैः समाप्त होता गया तथा अब नगण्य रह गया है । अत्य सिंचाई की दिशा में भूजल उपलब्ध कराने के क्षेत्र में इधर दो वर्षों से काफी परिवर्तन हुये हैं । तथा व्यक्तिगत एवं राजकीय नलकूपों की पर्याप्त स्थापना प्रारम्भ हो जाने से कृषक अब कम मात्रा में वर्षा पर आधारित रह जायेगा ।

वर्ष 1985-86 की कृषि गणना के आधार पर जनपद में कृषि जोतों का विवरण निम्न प्रकार है :-

" सारणी - 3.6 "

क्र0 सं0	जोत आकार	जोत संख्या	क्षे0 हे0
1-	1.0 हे0 से कम	85969	42754
2-	1.00 हे0 से 2 हे0 तक	49427	71489
3-	2.00 हे0 से 3 हे0 तक	21806	52732
4-	3.00 हे0 से 5 हे0 तक	17994	69493
5-	5.00 हे0 से अधिक	11871	143401
	योग	187067	379869

जनपद में औसत जोत 2.03 हे0 है, जबकि प्रदेश की औसत जोत 1.05 हे0 है। इससे स्पष्ट होता है कि जनपद की जोत प्रदेश की औसत जोत से लगभग दुगनी है। जनपद में बड़ी जोतों का क्षेत्रफल अधिक है जबकि ऐसे कृषकों की संख्या सामान्यतः और जोतों से कम है।

वर्ष 1987-88 व वर्ष 1988-89 के आँकड़ों के आधार पर जनपद के भूमि उपयोगिता के निम्न प्रकार हैं :-

" सारणी - 3.7 "

क्रम सं0	भूमि का विवरण	वर्ष 1987-88 (हेक्टे0 में)	वर्ष 1988-89 (हेक्टे0 में)
1	2	3	4
1-	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	502842	502842
2-	वन का क्षेत्रफल	32543	32543
3-	कृषि योग्य बंजर भूमि	52302	37696
4-	वर्तमान भारतीय	10900	15356
5-	अन्य	17043	19492
6-	ऊसर और कृषि के अयोग्य भूमि	29812	29644
7-	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लाई गई भूमि	38170	38272
8-	चारागाह	1019	994
9-	उद्यान व वृक्ष	2521	2243
10-	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	318532	326602
11-	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल	38583	22623
12-	सकल बोया गया क्षेत्रफल	35115	349225

जनपद में कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल से शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 64.95 प्रतिशत है । यह प्रतिशत प्रदेश के 57.2 प्रतिशत अधिक है । जनपद में

फसल गहनता 106·93 है0 है जो गत वर्ष से कम हो गयी है। तथा प्रदेश गहनता 142 प्रतिशत से कम है यह कृषि के पिछड़ेपन का सूचक है। इस प्रकार शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल सिंचित एवं फसल गहनता की स्थिति प्रदेश की तुलना में पिछड़ी हुई है। सिंचित क्षमता की वृद्धि से इसे कम किया जा सकता है।

वर्ष 1988-89 में जनपद में एकल बोये गये क्षेत्रफल कुल 349225 है0 क्षेत्रफल बोया गया जिसके अन्तर्गत 2302 है0 में धान, 35166 ज्वार, 35165 है0 उर्द, 14905 है0 मसूर, 31689 है0 मक्का का क्षेत्रफल, 2944 है0 अरहर, 11204 है0 गेहूँ, 108507 है0 चना का क्षेत्रफल, 103002 है0 जौ, मूँग, 3982 है0 मटर, 3043 है0 अन्य जिन्सों के प्रमुख खाद्यान्न बोये गये।

कैश क्राप्स के अन्तर्गत जनपद में तिल का क्षेत्रफल 2665 है0जो दूसरे स्थान पर आता है। अलसी, लाही तथा सरसों का क्षेत्रफल क्रमशः 2634 है0 व 2363 है0है। प्रथम स्थान पर 12706 है0मूँगफली है। जनपद में गन्ना का प्रतिशत 146 है जो कि नहीं के बराबर है। जनपद में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में 33·34 प्रतिशत में गेहूँ, 31·54 प्रतिशत में चना, 10·76 प्रतिशत में ज्वार, शेष 24·46 प्रतिशत क्षेत्र में अन्य फसलें बोयी गयी हैं जो गत वर्ष की तुलना में कमी दृष्टिगोचर हुई है।

खाद्यान्न उत्पादन :-

प्राकृतिक संसाधनों जैसे वर्षा, जलवायु, भूमि बनावट और भूमि

उत्पादकता में यह जनपद प्रदेश के अन्य मैदानी जनपदों से काफी पीछे है।
विभिन्न फसलों का उत्पादन सारणी में दिया गया है :-

" सारणी - 3.8 "

नाम फसल	उत्पादन मी०टन में			औसत उत्पादन (प्रति कु०हे०)		
	86-87	87-88	88-89	86-87	87-88	88-89
1- धान	2352	2002	2244	9.11	7.94	9.75
2- गेहूँ	15749	169438	187198	15.40	15.39	17.25
3- जौ	2874	4020	4483	10.89	15.61	16.55
4- ज्वार	31915	27060	28689	8.18	6.08	8.16
5- मक्का	4332	3572	3103	11.89	8.76	10.56
6- उर्द	1211	4253	2729	5.65	7.97	6.73
7- मूँग	210	556	674	4.10	3.86	3.69
8- चना	70975	72622	81722	6.67	7.22	7.93
9- मसूर	27764	24351	29407	8.90	8.53	9.28
10- मटर	1409	1549	4032	13.62	12.57	13.25
11- अलसी	481	922	1074	3.45	4.83	4.08
12- अरहर	9973	15283	10343	8.00	10.51	9.23
13- तिल	65	206	330	0.24	0.79	1.24
14- मूँगफली	8149	5498	12503	9.00	6.51	9.84
15- आलू	6024	8854	9493	198.81	193.73	183.98

उपरोक्त खाद्यान्न सारणी का अवलोकन करने पर विदित होता है कि खाद्यान्न गेहूँ, मूँग, जौ, चना, मटर, तिल और आलू का उत्पादन पिछले वर्षों से बढ़ा है, शेष फसलों में मक्का, उर्द, अरहर का उत्पादन वर्ष 1988-1989 से घटा है। प्रति व्यक्ति खाद्यान्न वर्ष 1986-1987, 1987-1988 एवं 1988-1989 में क्रमशः 466, 492 एवं 499 किलोग्राम रहा।

उद्योग एवं व्यवसाय

उत्तर प्रदेश में 36 जिलों को पिछड़े जिलों की श्रेणी में रखा गया है। झाँसी उन्हीं 36 जिलों में से एक है। औद्योगिक दृष्टि से भी यह जनपद

काफी पिछड़ा है। जनगणना 1981 के अनुसार कुल कर्मचारी में उद्योग में लगे कर्मचारी का प्रतिशत 1.4 आता है।

जनपद में औद्योगिक अधिनियम 1948 के अन्तर्गत वर्ष 1986-87 के अनुसार 65 पंजीकृत कारखाने है जिसमें 12543 व्यक्ति कार्यरत हैं और कारखानों में 1244 करोड़ रू0 का उत्पादन हुआ। वर्ष 1988-89 में 2882 लघु औद्योगिक इकाईयाँ पंजीकृत हैं।

वृहत /माध्यम स्तरीय उद्योग :-

जनपद में वृहत/मध्यम उद्योगों का विवरण निम्न प्रकार है :-

क्र0	उद्योग का नाम	भूमि का एकड़	उत्पादन की वस्तुयें	पंजी0 विनियोग लाख रू0 में	रोजगार में लगे व्यक्ति	अन्य किस्त
1-	भारत हैवी इले0 लि0 खैलार, झाँसी।	1079.53	ट्रान्सफार्मर	2000.00	1532	-
2-	उ0 प्र0 स्पिनिंग मिल झाँसी ग्वालियर रोड	76.86	सूत	480.00	1000	-
3-	श्री निवास स्टील लि0 ग्राम बिजौली, झाँसी।	-	स्टीलिंग	100.00	600	-
4-	इण्डि0 ह्यूम पाइप कं0 लि0 करारी, झाँसी।	-	ह्यूम पाइप	56.78	219	-
5-	कंक्रीट उद्योग आ0 बिजौली, झाँसी।	-	आर0सी0सी0 पाइप	20.29	54	-

क्र0 सं0	उद्योग का नाम	भूमि का एकड	उत्पादन की वस्तुयें	पूँजी विनियोग लाख रू0 में	रोजगार में लगे व्यक्ति	अन्य
6-	कान्हा इक्सटैशन	-	सोयाबीन तेल का इक्टैशन प्लान्ट	-	-	-
7-	डायमण्ड सीमेन्ट	-	सीमेन्ट	-	-	-

जनपद में सरकारी क्षेत्रों में निम्न उद्योग कार्यरत है :-

1- रेलवे कैरेज एण्ड वेगन रिपेयर वर्कशाप, झाँसी ।

2- भारत हैवी इले0 (डीजलान्टर्स यूनिट) खैलार, झाँसी बबीना ।

3- यू0 पी0 स्टेट स्पिनिंग मिल्स नया गाँव ।

4- पारीछा थर्मल पावर प्लान्ट बड़ा गाँव ।

5- कम्बल उद्योग हैबिल मार्केट, झाँसी

इस समय निम्नलिखित उद्योगों को लगाने की कार्यवाही चल रही है तथा इन उद्योगों के कार्य स्थल पर उत्पादन कार्य शुरू कर दिया गया है ।

1- झाँसी स्पन पाईप तथा कंक्रीट उद्योग,

2- रोलिंग मिल्स,

3- श्री निवासी फर्टिलाइजर्स गोरामछिया

4- इन्डो गल्फ एक्सप्लोसिव,

5- दीपक हेण्डलूम कलैण्डर प्लान्ट मऊरानीपुर ।

परिवहन संचार

जनपद में सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा वर्ष 1988-89 तक कुल 945 किलोमीटर पक्की सड़के व अन्य स्थानीय निकायों के अन्तर्गत 218 किमी0 सड़कों का रख - रखाव किया जा रहा है। जनपद के कुल क्षेत्रफल पर प्रतिसर्फ हजार वर्ग मीटर पर 231.4 किमी0 पक्की सड़के बनी हैं। इसके अतिरिक्त प्रति लाख जनसंख्या पर कुल पक्की सड़के 102.3 किमी0 है।

जनपद में 918 ग्राम पक्की सड़कों से जुड़े हैं। 45 ग्राम 1 किमी0 से कम दूरी पर हैं। 172 ग्राम 1 से 3 किमी0 की दूरी पर हैं। 178 ग्राम 3 से 5 किमी0 की दूरी पर शेष 169 ग्राम 5 किमी0 से अधिक दूरी पर हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना के अन्तर्गत 18.53 किमी0 सम्पर्क मार्ग का निर्माण किया गया जिससे ग्रामों को यातायात साधन उपलब्ध हुए।

रेल सेवा

जनपद में 171 किमी0 ब्राड गेज की रेलवे लाइनें हैं तथा हाल्ट्स सहित 15 रेलवे स्टेशन स्थापित हैं। झाँसी से जम्मू, जबलपुर, इलाहाबाद तथा गोरखपुर व दक्षिण भारत में कन्या कुमारी तक जैसे दूरस्थ स्थानों के लिये भी

रेल सेवा उपलब्ध है। दिल्ली से बीना तक रेल का मार्ग का विद्युतीकरण पूर्ण हो चुका है तथा बीना से भुसावल मार्ग पर कार्य चल रहा है। भारत की सबसे तेज चलने वाली "शताब्दी एक्सप्रेस" भोपाल-देहली के बीच चलना शुरू हो गयी है। यह पूरी ट्रेन वातानुकूलित है। तथा यात्रा अवधि में भोजन एवं चाय, कॉफी सभी यात्रियों को उपलब्ध करायी जा रही है। इसी वर्ष द्वितीय श्रेणी के यात्रियों के लिये वातानुकूलित प्रतीक्षालय की सेवा के लिये बनवा दिया गया है। यहाँ मध्य रेलवे का मण्डल कार्यालय भी स्थापित है और डीजल लोकोमोटिव की मरम्मत एवं रखरखाव की व्यवस्था के लिये रेलवे मध्य रेलवे का एक कारखाना/कार्यशाला निर्मित करा रही है।

जनपद रेल मार्ग से समृद्ध है। झाँसी रेल यातायात का बहुत बड़ा जंक्शन है। यहाँ से उत्तर भारत से दक्षिण भारत को जाने वाली शताब्दी जैसी सभी महत्त्वपूर्ण व सुपरफास्ट रेलगाड़ियाँ चल रही हैं। यहाँ से काश्मीर से कन्याकुमारी तक की रेल सेवा उपलब्ध हैं। जनपद में 15 रेलवे स्टेशन हैं जहाँ से ग्रामीणों को सुविधायें उपलब्ध हो रही हैं।

जनपद में सड़क यातायात राजकीय परिवहन निगम उ0 प्र0 बसों द्वारा होता है। राजकीय बसों द्वारा 80 किमी0 निजी बसों की सेवा के अन्तर्गत 450 किमी0 तथा राजकीय एवं निजी बस सेवा के अन्तर्गत 202 किमी0 सड़के हैं। झाँसी जनपद में राजकीय परिवहन निगम द्वारा सुदूर जनपद जैसे बरेली

आगरा, फर्रूखाबाद, इटावा, गोरखपुर, इलाहाबाद, जनपदों के लिये सेवायें चलायी गयी हैं। कानपुर, लखनऊ जनपदों की सेवाओं की संख्या में वृद्धि की गयी तथा रात्रि सेवायें शुरू हुईं। इस जनपद को मध्य प्रदेश परिवहन निगम द्वारा चालित सेवाओं का लाभ भी प्राप्त है। तथा इस प्रकार जनपद इन्दौर, जबलपुर, ग्वालियर, रीवा, सतना, छतरपुर, खजुराहो, शिवपुरी, चित्रकूट से जुड़ा हुआ है। जनपद में 94 बस स्टेशन/ बस स्टाप हैं।

200 डाकघर तथा 31 तारघरों की सेवा जनपद को उपलब्ध हैं। पाँच हजार जनसंख्या पर एक डाकघर सेवा उपलब्ध है। जब कि तारघर प्रति लाख जनसंख्या पर 3.5 ही उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त 2645 टेलीफोन व 37 पी०सी०ओ० भी कार्य कर रहे हैं। दूरभाष भवन का निर्माण पूर्ण हो चुका है, उपकरण आना शुरू हो गया है। शीघ्र ही दूरभाष प्रणाली में पर्याप्त सुधार होने की आशा की जाती है।

वायु सेवा

जनपद झाँसी में वायु सेवा शुरू करने के लिये हवाई पट्टी का निर्माण पूरा हो चुका है तथा इसका परीक्षण भी किया जा चुका है। सेवा शुरू होने की कुछ औपचारिकतायें पूर्ण की जानी शेष हैं। शीघ्र ही उनके पूर्ण हो जाने पर वायु सेवा शुरू हो जायेगी।

जनपद में पाँच वर्ष पूर्व दूरदर्शन प्रसारण केन्द्र स्थापित करके दूरदर्शन सेवा मानचित्र पर झाँसी का नाम अंकित हुआ अब आकाशवाणी केन्द्र कानपुर रोड पर महारानी लक्ष्मीबाई मेडीकल कालेज के सामने स्थापित हो चुका है। आकाशवाणी के भवन का निर्माण का कार्य पूर्ण हो चुका है। इस केन्द्र से प्रसारण की व्यवस्था शीघ्र सम्भावित है।

सामाजिक सेवायें

जनपद में आर्थिक विकास में शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं का महत्व-पूर्ण योगदान रहा है। अच्छे स्तर की शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं से नागरिकों का जीवन स्तर बढ़ता है। इन सेवाओं को अधिक से अधिक उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता है।

शिक्षा

वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार झाँसी जनपद में 50.33 प्रतिशत साक्षर हैं। जिसमें पुरुष 21.02 प्रतिशत, स्त्रियाँ 36.71 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर है जो कि प्रदेश के 27.48 प्रतिशत साक्षरता से अधिक है अतः जनपद शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है।

जनपद में शिक्षा सुविधा जो उपलब्ध है, उसका विवरण निम्न प्रकार है :-

1-	जूनियर बेसिक स्कूल	937
2-	सीनियर बेसिक स्कूल	224
3-	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	64
4-	डिग्री कालेज	4
5-	पॉलीटेकनिक	1
6-	इंजीनियरिंग कालेज	1

जनपद में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय का मुख्यालय भी है, जिसके अन्तर्गत बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित सभी डिग्री कालेज आते हैं साथ बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय का अपना शैक्षणिक संकाय भी संचालित है जिसके अन्तर्गत वर्तमान 4 संकाय हैं ।

प्राविधिक शिक्षा हेतु इन्जीनियरिंग कालेज, पॉलीटेकनिक तथा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान कार्यरत है जिसमें प्रतिवर्ष 886 प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण हेतु भर्ती होते हैं ।

जनपद में महारानी लक्ष्मीबाई मेडीकल कालेज तथा एक आयुर्वेदिक कालेज भी कार्यरत है ।

चिरगांव में एक प्रसार प्रशिक्षण केन्द्र तथा जनपद में 2 शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र कार्य कर रहे हैं ।

जनपद में जूनियर बेसिक स्कूलों की संख्या एक प्रति हजार, सीनियर

बेसिक स्कूल प्रति 5 हजार जनसंख्या पर एक है तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय 20 हजार जनसंख्या पर एक है इसी प्रकार डिग्री कालेज 3 लाख जनसंख्या पर एक है ।

जनपद में प्रौढ़ शिक्षा के 3 विकास खण्ड में 300 केन्द्र कार्यरत हैं ।

जनपद में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवायें वर्ष 1987-88 में 23 ऐलोपैथिक चिकित्सालय एवं औषधालय, 27 आयुर्वैदिक, 4 होम्योपैथिक चिकित्सालय तथा 41 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र उपलब्ध है । उपरोक्त ऐलोपैथिक चिकित्सालयों में 1867 शैयायें आयुर्वैदिक चिकित्सालय में, 115 शैयायें उपलब्ध हैं ।

परिवार कल्याण कार्यक्रम को प्रोत्साहित देने हेतु जनपद में 12 मुख्य केन्द्र, 251 उप परिवार केन्द्र कार्यरत हैं । वर्ष 1989-90 में 8822 नसबन्दी 15254 महिलाओं को लूप निवेशन हुआ है । इसके अतिरिक्त 22946 दम्पत्ति निरोध का प्रयोग करते हैं और पिल्स का प्रयोग 3297 महिलाओं द्वारा किया जा रहा है । इससे स्पष्ट है कि ये विधि ज्यादा प्रचलित हो रही हैं ।

जल मानव जीवन का आधार है । शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने का

प्रयास शासन द्वारा किया जा रहा है । जनपद में सभी समस्याग्रस्त ग्रामों सहित मार्च 1989 तक 759 ग्रामों को लाभान्वित किया गया है । जिसमें 151 ग्राम पाईप पेयजल योजनाओं से व 263 हैण्डपम्प के द्वारा लाभान्वित किये जा चुके हैं । शेष ग्रामों में कुओं द्वारा पेयजल सुविधा उपलब्ध है ।

पर्यटकों के भ्रमण हेतु झाँसी जनपद मुख्यालय पर होटल वीरांगना के नाम से एक पर्यटक गृह प्रारम्भ कर दिया गया है । जिसमें 50 कमरे हैं, जिसमें बेडवाला प्रति कमरा 60/- रू0 प्रतिदिन से तथा 10 बिस्तरों वाला एक हाल उपलब्ध है । इस पर्यटक गृह में 100 आदमियों के ठहरने की तथा भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित है । शीघ्र ही झाँसी की प्रसिद्ध वस्तुओं का क्रय-विक्रय केन्द्र तथा कुछ दुकानों की व्यवस्था इसी प्रक्रिया में की जा रही है । इसी होटल में एक कार्यालय क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी का स्थापित है जिसमें सम्पर्क करके स्थानीय स्थानों व मनोरंजन के स्थल को ज्ञात किया जा सकता है तथा अपनी रूचि के अनुसार क्षेत्र में भ्रमण की सुविधा भी प्राप्त की जा सकती है ।

वित्तीय संस्थायें

विकास कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक चलाने, गरीबी रेखा के नीचे वाले परिवारों को ऊपर उठाने हेतु वित्तीय संस्थानों का बहुत बड़ा योगदान है। जनपद में मार्च 90 तक निम्नलिखित शाखायें कार्यरत हैं :-

1-	पंजाब नेशनल बैंक	17
2-	इलाहाबाद बैंक	2
3-	स्टेट बैंक	18
4-	सेन्ट्रल बैंक	12
5-	अन्य व्यावसायिक बैंक	22
6-	सहकारी बैंक	17
7-	भूमि विकास बैंक	4
8-	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक	23
	योग	112

व्यावसायिक बैंक में वर्ष 1989-90 में 230075। हजार रुपये जमा धनराशि थी तथा 738460 हजार रुपया का ऋण वितरित किया गया। जमा वितरण अनुपात 30.0 प्रतिशत रहा। कुल ऋण वितरण में 59.0 प्रतिशत ऋण प्राथमिक क्षेत्र में वितरित किया गया। 2024 रुपया प्रति

व्यक्ति जमा धनराशि तथा ऋण वितरण 649/- रु0 प्रति व्यक्ति था ।

वर्ष 1988 - 89 में जनपद में 67 प्रारम्भिक ऋण सहकारी समितियाँ कार्यरत थीं जिनमें से जनपद के सभी 759 ग्राम लाभान्वित हुये हैं । सभी समितियों में 142511 सदस्य, 6075 लाख रूपये जमा धनराशि थी । 939.40 लाख अल्पकालीन, 182.05 लाख रूपया मध्यकालीन ऋण सहकारी बैंक द्वारा तथा 131.07 लाख रूपये दीर्घ-कालीन ऋण भूमि विकास बैंक द्वारा वितरण किया गया ।

" अध्याय - 4 "

पर्यावरण एवं ग्रामीण - नगरीय प्रजनन ता विभिन्नता

प्राणी के शरीर को छोड़ कर जो कुछ भी उसके चारों ओर है, वह पर्यावरण है। पेड़-पौधों, पशु, पक्षी और मनुष्य अपने अतिरिक्त जिस वस्तु के सम्पर्क में आते हैं वह इनके लिए पर्यावरण कहलाते हैं। यह सम्पर्क केवल महसूस भी हो सकता है। गर्भाधान के क्षण से ही जीवाणु पर पर्यावरण का प्रभाव पड़ने लगता है। गर्भाशय के अन्दर 9-10 महीनों तक विभिन्न स्थितियों-परिस्थितियों में बढ़ता हुआ शिशु अपने मूलरूप में जन्म नहीं लेता। जन्म ले कर भी वह असहाय होता है। माता-पिता, घर द्वार,कपड़े, पानी, दूध आदि जो कुछ भी नवजात शिशु को प्रभावित करता है। वह पर्यावरण है। पर्यावरण और जीवन इतने अधिक सम्बंधित है कि बिना पर्यावरण के जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

गुलाब का पौधा हर स्थान पर नहीं उगाया जा सकता। इसी प्रकार संतरा, सेब, गेहूँ, गन्ना आदि भी एक विशेष प्रकार की मिट्टी, जलवायु और स्थितियों में उगाये जा सकते हैं। जहाँ वर्षा बिलकुल कम होती हो वहाँ कुछ भी पैदा करना कठिन है। दलदल और गीले तथा निचले स्थानों में मच्छर बहुत अधिक होते हैं। शेर रेगिस्तान में नहीं पाये जाते और न ऊँट पहाड़ों पर। शिमला और मंसूरी में जून के महीने में भी रात

को कम्बल ओढ़कर सोया जाता है। जबकि बम्बई में बारह महीने लगभग एक जैसा मौसम रहता है। बंगाली लोग चावल और मछली बड़े चाव से खाते हैं और पंजाबी गेहूँ की रोटी। मुसलमान स्त्रियाँ बुर्का पहन कर बाहर निकलती हैं और अमरीकन स्त्रियाँ "स्कर्ट"। गाँव का आदमी प्राचीनता को पसन्द करता है, और शहरों का नवीनता को। मनुष्य के भोजन, वस्त्र, रीति रिवाज आदि में जो अन्तर दिखाई पड़ता है वह पर्यावरण के अन्तर के कारण है।

इसके अतिरिक्त जो कुछ इर्द-गिर्द दिखाई देता है या महसूस होता है उसका नाम पर्यावरण है। रास के अनुसार - "कोई भी बाहरी शक्ति जो हमें प्रभावित करती है पर्यावरण है"।

पर्यावरण मनुष्य को अपनी प्रकृति, अपना वेश, खान-पान तथा विचार तक बदलने को बाध्य कर देता है। प्राणी के जन्म से लेकर मृत्यु तक जो कुछ भी उस पर प्रभाव डालता है, वह पर्यावरण है। जीवन का प्रारम्भ, विकास, पतन और अन्त पर्यावरण का फल है। [मैकाइवर और पेज]

पर्यावरण में परिवर्तन होते ही जीवन की दशाओं में भी परिवर्तन हो जाता है। जीवन और पर्यावरण दोनों को एक दूसरे से अलग करके नहीं समझा जा सकता।

जीवन और पर्यावरण वास्तव में सहसम्बन्धी है।" "मैकाइवर और पेज"

प्राणी को प्रभावित करने वाला प्रत्येक कारक पर्यावरण है। प्रकृति के समस्त अंग जमीन, आसमान, सूर्य, चन्द्र और सितारे, पहाड़, नदियाँ और समुद्र, हवा, पानी, रेगिस्तान और मैदान आँधी-तूफान और वर्षा सब कुछ प्राणियों के जीवन को प्रभावित करते हैं। हर जीव पर दूसरे जीवों का प्रभाव पड़ता है। परिवार, स्कूल, क्लब, गुरुद्वारा, मन्दिर, विवाह, धर्म और राजनीति, मोटर, रेल, चरखा, रेडियो और बहुत सब वस्तुयें और विचार भी मनुष्य जीवन को प्रभावित करती हैं। जीवन किसी भी रूप में पर्यावरण पर आधारित है। इसको किसी एक शब्द में समाहित नहीं किया जा सकता है।

"यह जीवन के हर अंग में अंतर्निहित है यह मनुष्य की शक्तियों को संचालित करता है या मोड़ता है, उत्तेजित करता है या दबाता है, यह उसकी बोलचाल को ढालता है, यह इसके ढाँचा को कोमलता से बदलता है।"

"आर0 एम0 मैकाइवर"

वास्तव में हम सब स्वयं एक पर्यावरण के प्रतीक हैं। मनुष्य प्राकृतिक अथवा भौतिक, जीवशास्त्रीय तथा सामाजिक तीनों ही प्रकार के पर्यावरण से प्रभावित होता है। वह भिन्न-भिन्न पर्यावरण को सभ्यता के सहारे अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न करता है। प्रकृति के अंग उसकी सम्पत्ति बन जाते हैं। मैदान उसके खेत बन जाते है। मकानों को वह घर का रूप देता है। कैलाश, मानसरोवर, गंगा, यमुना पुरी उसके श्रद्धा के

के केन्द्र बन जाते हैं। इन प्राकृतिक वस्तुओं में सामाजिक मूल्यों की स्थापना करके मनुष्य भौतिक और सामाजिक पर्यावरण को मिला कर एक कर देता है। गाय और बैल केवल पशु मात्र न रह कर हिन्दू के लिए इष्टदेव का निवास स्थान बन जाता है और सरकन्डे का बना हुआ कलम ज्ञान की देवी माता सरस्वती का अग्रदूत बन जाता है। इस प्रकार मानव जीवन सम्मिलित रूप से पाँचों प्रकार के पर्यावरणों से प्रभावित होता है। भौतिक, जीव-शास्त्रीय, सामाजिक, समाजोपरि और मानसिक पर्यावरण मिल कर सम्पूर्ण इकाई के रूप में मनुष्य को प्रभावित करते हैं। इन सबके साथ सामंजस्य करके ही मनुष्य जीवन का सच्चा आनन्द प्राप्त कर सकता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने पर्यावरण की महत्ता के परिप्रेक्ष्य में निम्न प्रकार अपने विचार प्रकट किया है :-

सकल पदारथ है जग माही ।
कर्म हीन नर पावत नाही ।।

वर्तमान समय में आधुनिक युग की अन्धी दौड़ ने हमारे पर्यावरण को बुरी तरह से प्रभावित किया है। पर्यावरण को प्रभावित करने में अनेक कारकों का योगदान होता है और पर्यावरण को प्रभावित होने पर व असंतुलित होने की स्थिति में उसका दुष्प्रभाव मनुष्य व समाज पर पड़ता है। संक्षेप में यह विवरण देना प्रासंगिक है कि किन-किन कारकों का प्रभाव पर्यावरण

पर पड़ रहा है।

मनुष्य की लगभग प्रत्येक सामाजिक क्रिया पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में भौगोलिक पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है। स्वयं मनुष्य की उत्पत्ति भौगोलिक पर्यावरण से हुयी। पंच तत्व जिसके योग का परिणाम मनुष्य जीवन है, वे पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश भौगोलिक पर्यावरण से ही सम्बन्धित हैं। भौगोलिक पर्यावरण सामाजिक जीवन पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से प्रभाव डालता है जब भौगोलिक दशायें सीधे सामाजिक जीवन के किसी अंग को प्रभावित करती है तो हम उसे प्रत्यक्ष मानते है और जब सामाजिक जीवन भौगोलिक पर्यावरण द्वारा प्रभावित अन्य कारकों से प्रभावित होता है तो उसे अप्रत्यक्ष प्रभाव माना जाता है।

जिस भू-भाग में मनुष्य रहते हैं वह उनके स्वास्थ्य, सम्पत्ति, कार्य अवसर और रहन-सहन के ढंग को प्रभावित करता है। प्रत्येक व्यक्ति उसी स्थान पर रहना पसन्द करेगा जहाँ उसकी दैनिक आवश्यकतायें आसानी से पूरी हो सके जहाँ उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उचित साधन उपलब्ध नहीं होंगे वहाँ वह मनुष्य रहेगा ही नहीं अर्थात स्थान का भी अपना ही महत्व होता है।

मनुष्य की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि भूमि, जल, मिट्टी और जलवायु पर निर्भर करती है। जहाँ की जलवायु स्वास्थ्यप्रद होगी, जहाँ की

मिट्टी उपजाऊ होगी, जहाँ का पीने का पानी और सिंचाई का ठीक प्रबन्ध होगा वहीं लोग अधिक सुविधापूर्वक जीवन बिता सकेंगे। भोजन, मकान तथा अन्य मौलिक आवश्यकतायें भौगोलिक साधनों से ही पूरी होती हैं। बड़े-बड़े रेगिस्तानों में जहाँ जल और वनस्पति का अभाव होता है वहाँ कोई भी रहना पसन्द नहीं करता है। भारतवर्ष को सोने की चिड़िया कहा जाता था इसलिए कि यहाँ की नदियाँ, मैदान और खनिज सम्पत्ति लोगों को सोना देते थे। कनाडा की आबादी बहुत कम है और इतना विशाल देश है फिर भी उसकी जनसंख्या कम है। अफ्रीका इतना बड़ा महाद्वीप होते हुए भी वहाँ की जनसंख्या सबसे कम है यूरोप का प्रत्येक कोना (यदि रूस को छोड़ दिया जाये) मानव जाति से भरा हुआ है।

भूगोल जनसंख्या के आकार ही नहीं वरन् घनत्व को भी प्रभावित करता है। कुछ प्रदेश घने आबाद होते हैं। कुछ आवश्यकता से अधिक आबाद होते हैं, और कुछ बहुत कम बसे हुये होते हैं। हमारी जनसंख्या का अधिकांश भाग उत्तरी मैदान तथा दक्षिणी नदियों के मैदानों में रहता है। अकेली कावेरी (दक्षिण) नदी के प्रांगण में लगभग ढाई करोड़ लोग रहते हैं। पहाड़ों और रेगिस्तान में बहुत कम जनसंख्या पाई जाती है। हिमाचल प्रदेश और राजस्थान की भूमि सबसे कम आबाद है। नीचे की सारणी से भारत की जनसंख्या भौगोलिक पर्यावरण का प्रभाव स्पष्ट हो जायेगा।

"सारणी - 4.1"

भारत की जनसंख्या का भौगोलिक विभाजन

भू-भाग	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
हिमालय का भाग	4.8
उत्तरी मैदान	39.9
दक्षिणी पठार और मैदान	30.4

जनसंख्या का आकार भौगोलिक अवस्थाओं पर निर्भर है। हिमालय के भाग में खेती, आवागमन आदि की असुविधा के कारण ही जनसंख्या कम है। जनसंख्या के घनत्व पर भी भौगोलिक पर्यावरण का प्रभाव निम्न प्रकार है।

"सारणी - 4.2"

भारत में क्षेत्रीय आधार पर जनसंख्या का घनत्व

क्षेत्र	जनसंख्या का घनत्व (प्रति वर्ग मील)
रेगिस्तानी क्षेत्र	61
पश्चिमी हिमालय	68
पूर्वी हिमालय	118
उत्तर पश्चिमी पहाड़ियाँ	163

क्षेत्र	जनसंख्या का घनत्व (प्रति वर्ग मील)
उत्तरी मध्य पहाड़ियाँ और पठार	164
उत्तरी पूर्वी पठार	192

रेगिस्तान और हिमालय प्रदेश में जनसंख्या का घनत्व कम होने का प्रमुख कारण वहाँ की जटिल भौगोलिक स्थिति है। टुन्ड्रा प्रदेश की जनसंख्या बहुत कम है। संसार के उन्हीं भागों की जनसंख्या अधिक होती है जो भौगोलिक दृष्टि से सम्पन्न है। बाढ़ग्रस्त, दलदली इलाकों से जनसंख्या उजड़ने लगती है।

किन्तु भौगोलिक पर्यावरण जनसंख्या का एक मात्र निर्णायक कारण नहीं है। सामाजिक कारणों का भी जनसंख्या के आकार और घनत्व पर प्रभाव पड़ता है। तात्पर्य यह है कि भौगोलिक पर्यावरण जनसंख्या को आकर्षित अवश्य करता है पर वह उसके आकार और घनत्व का निश्चायक नहीं है।

जनसंख्या के अतिरिक्त भौगोलिक पर्यावरण मनुष्यों की भौतिक आवश्यकताओं द्वारा भी प्रभावित करता है। यद्यपि भोजन, वस्त्र, मकान-व्यवसाय आदि भौगोलिक पर्यावरण के कारण मालूम नहीं होते हो भी ये

जलवायु और भौगोलिक दशाओं पर आधारित है पर वह उसके आकार और घनत्व का निश्चायक नहीं ।

भौगोलिक पर्यावरण विवाह, परिवार, कला और साहित्य आदि सामाजिक संस्थाओं पर भी प्रभाव डालता है । यौन सम्बन्ध भौगोलिक पर्यावरण से प्रभावित होते हैं । जिन स्थानों पर भौगोलिक पर्यावरण आर्थिक विकास में सहायक होता है, और आसानी से मनुष्य की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा कर देता है वहाँ विवाह जरूरी संस्था बन जाता है । बहुपत्नी विवाह भी प्रचलित हो जाता है, क्योंकि इन स्थानों पर जनसंख्या बढ़ जाने से अधिक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसके विपरीत पहाड़ी और दूसरे ऐसे स्थानों पर जहाँ भौगोलिक पर्यावरण आर्थिक विकास में सहायक नहीं होता ऐसे तरीके अपनाये जाते हैं जिनसे जनसंख्या न बढ़ सके । अधिक उम्र में विवाह करना या विवाह बिलकुल न करना बहुपत्नी विवाह प्रथा विरोध आदि की व्यवस्था हो जाती है और यौन सम्बन्धी नियम ढीले हो जाते हैं ।

भौगोलिक पर्यावरण आर्थिक जीवन को प्रभावित करके अप्रत्यक्ष रूप से यौन सम्बन्धी नियमों, विवाह की आयु आदि को प्रभावित करता है । किन्तु विवाह के प्रकार और उससे सम्बन्धित प्रथायें उस पर आधारित नहीं मानी जा सकती । यह बात किसी हद तक ठीक है कि भौगोलिक पर्यावरण व्यवसाय को प्रभावित करके परिवार के स्वरूप को प्रभावित करता है ।

पर्यावरण को प्रभावित करने वाले अन्य महत्वपूर्ण कारक

जनसंख्या वृद्धि का वातावरण पर प्रभाव :-

किसी देश के आर्थिक विकास में जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव अवश्य पड़ता है । अनेक सर्वेक्षणों व वैज्ञानिक परीक्षणों से यह तथ्य सामने आये हैं कि जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ पृथ्वी के वातावरण व प्राकृतिक संरचना पर मानवीय क्रियाओं का प्रभाव अनुकूल नहीं पड़ रहा है । पृथ्वी

के पर्यावरण पर कार्बन डाई आक्साइड, मीथेन, नाईट्रस आक्साइड, क्लोरोफ्लोरो कार्बन तथा नमी आदि के प्रभाव से पृथ्वी को परा बैंगनी से सुरक्षित रखने वाली ओजोन परत क्षतिग्रस्त हो रही है। परिणामतः ओजोन परत में छिद्र होने का अनुमान लगाया जा रहा है। जो कि मानवीय जगत के लिए विनाशकारी संकेत है। आधुनिकता की अत्याधिक व विकास की इस अन्धी दौड़ में स्पेश क्राफ्ट जैसे परीक्षणों से ओजोन परत को अत्याधिक क्षति पहुँच रही है और रेडियो धर्मी प्रभाव के फलस्वरूप पृथ्वी पर तापमान की मात्रा में वृद्धि हो रही है जो मानवीय जीवन के लिए घातक संकेतक है।

सीमित साधनों पर बढ़ते दबाव

विकसित व विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि के सम्बन्ध में अलग-अलग दृष्टिकोण रहे हैं। विकसित देश जनसंख्या वृद्धि को उचित तरीके से अप्रयोजित प्राकृतिक संसाधनों में लगाकर लगातार उत्पादन क्षमता में वृद्धि कर रहे हैं। जबकि विकासशील राष्ट्र जहाँ जनसंख्या वृद्धि की दर विकसित देशों से अधिक है। यहाँ जनसंख्या वृद्धि की तीव्र दर होने के कारण अनेक समस्यायें जन्म लेती हैं। जैसे उनके रहन-सहन, भोजन व आवास समस्या प्रमुख हैं। इसका कारण यह है कि इन देशों में प्राकृतिक संसाधन जो पर्याप्त मात्रा में होते हुए भी उचित रूप से विदोहित नहीं किए

जा रहे हैं क्योंकि उनके पास इनके विदोहन के लिए पर्याप्त मात्रा में कुशल संसाधनों की कमी है। इसलिए उन्हें विकसित देशों के सहारे अपनी योजनायें क्रियान्वित करनी पड़ती है। साथ ही विकासशील देशों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण प्राकृतिक संरचना व संसाधनों पर अत्याधिक दबाव पड़ रहा है।[1]

भारत जैसे विकासशील देश के लिए जनसंख्या वृद्धि एक अभिशाप है। यहाँ पर जनसंख्या वृद्धि के कारण 1961 में प्रति व्यक्ति भूमि 0.60 हेक्टेयर थी जो 1988 में प्रति व्यक्ति 0.41 हेक्टेयर रह गई है और यह आशंका है कि सन् 2000 तक यह 0.33 हेक्टेयर रह जायेगी। तेजी के साथ वनों की कटाई के कारण अनेक समस्यायें उत्पन्न होने के संकेत हैं। एक अनुमान के अनुसार भारत में 0.15 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र प्रति वर्ष वनविहीन हो रहे हैं। और यह आशंका या अनुमान है कि इस दर पर यदि तीव्र अंकुश नहीं लगाया गया तो सन् 2050 तक भारतवर्ष वनरहित हो जायेगा।

आठवीं योजना हेतु वैज्ञानिक सलाहकार समिति ने भारतीय प्रधान मन्त्री को यह सुझाव दिया है कि वह देश की जनसंख्या को 2001

1- डा० मिश्रा, ए०पी०, इन्फ्लुयेन्स ऑफ पोपुलेशन ग्रोथ ऑन एन्वायरमेंट के निबन्ध से अनुवादित, योजना, जनवरी 26, 1990, पेज 40.

तक 97 करोड़ के अन्दर सीमित करने का प्रयत्न करें । जनसंख्या वृद्धि से वन विनाश और वातावरण की दैनिक परिस्थितियों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, और साथ-साथ परम्परागत संसाधनों की माँग भी बढ़ती जाती है ।

पीने के पानी की समस्या और जनसंख्या वृद्धि

वर्तमान वैज्ञानिक दृष्टिकोण समाज कल्याण सम्बन्धी औचित्य पर अधिक झुकाव ले रहा है । अब मिट्टी की जाँच व उत्पादकता को ज्ञात करने हेतु परीक्षण किये जाते हैं जिससे उत्पादकता में वृद्धि हो रही है । जहाँ तक पीने के पानी की समस्या का प्रश्न है । यह समस्या हमारे देश में अभी तक विकराल स्थिति में है । आज भी 1 लाख 62 हजार गाँव शुद्ध पानी की समस्या का सामना कर रहे हैं जिससे 200 लाख जनसंख्या प्रभावित हो रही है । यदि हम इन 200 लाख जनसंख्या को 40 लीटर प्रतिदिन प्रति व्यक्ति शुद्ध पानी की व्यवस्था करें तो इसका तात्पर्य 8000 लीटर पीने के पानी की प्रतिदिन अतिरिक्त व्यवस्था करना । जिसकी व्यवस्था के लिए अत्याधिक व्यय लागत आयेगी । इस सम्बन्ध में दो विशेष बातें हैं, प्रथम यह कि बढ़ती जनसंख्या के साथ प्रति व्यक्ति शुद्ध जल की उपलब्धता कम होती जायेगी और दूसरी विश्व में विशेष रूप से भारतीय उप महाद्वीप में 21वीं शताब्दी के मध्य में बढ़ती हुई गर्मी की समस्या को

सुलझाने के लिए व्यवस्था के लिए बहुत से उपाय जैसे पीनी की खोज, पानी की जाँच, पानी की गुणवत्ता, समुद्र के पानी का उपयोग और यांत्रिक विकास आदि किये जाने की आवश्यकता होगी और इस कार्यक्रम के प्रभावशाली क्रियान्वयन के लिये गम्भीरता पूर्वक यन्त्रों तथा पानी की खोज तथा पानी को पीने योग्य बनाने की व्यवस्थाओं पर आने वाले व्यय को प्रति इकाई कम करने के बारे में सोचना होगा । इस सम्बन्ध में बहुत से ऐसे निगम हैं जिसमें सार्वजनिक उपक्रम में भेल मुख्य है, ने अच्छा योगदान दिया है । भेल में 100 से अधिक ऐसे यन्त्र का निर्माण चल रहा है, इतना सब होते हुए भी इस पर आने वाला व्यय अधिक है ।

भारतीय मनोवैज्ञानिकों के लिये इस क्षेत्र में कार्य करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है । विश्व की जलवायु का बदलाव भारत सहित सभी देशों को प्रभावित कर रहा है । भारत में यह समस्या और भी जटिल है, क्योंकि भारतीय क्षेत्र को यह विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता है । भारतवर्ष क्योंकि मानसून पर अधिक निर्भर करता है । भारतीयों को यह समझना चाहिये कि धीरे-धीरे वातावरण में जो यह गर्मी उत्पन्न हो रही है वह मानसून को प्रभावित करने में उसका अधिक हाथ है । द्वितीय यह कि अंटार्टिक क्षेत्र में ओजोन में जो छिद्र हो गये हैं वह भी और अधिक हानिकारक है यदि ओजोन में इसी प्रकार छिद्र होते रहे और भारतीय उपमहाद्वीप के ऊपर

की ओजोन परत पतली होती गयी तो भारत का एक बड़ा भाग यूवी-बी-रेडियेशन से उतना ही अधिक प्रभावित होता जायेगा । इसके दो प्रभाव होंगे एक तो खाल का केन्सर, दूसरा विरले मिलने वाली जातियों पर एवं इसका गम्भीर परिणाम खाद्य उत्पादन पर भी पड़ सकता है ।

नगरीय प्रजननता और पर्यावरण

जैसा कि स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति एवं जीव जन्तुओं पर वातावरण का प्रभाव पड़ता है। वातावरण के अनुरूप उसके रहन - सहन में परिवर्तन आवश्यक होता है और मनुष्य वातावरण के अनुकूल ही अपने को समायोजित करने का प्रयास करता रहता है। वातावरण के अन्तर्गत अनेक कारक आते हैं, जिनमें जल, वायु, पेड़ - पौधे, और प्राकृतिक मौसमी परिवर्तन प्रमुख हैं। ऋतुओं का प्रभाव मनुष्य के दैनिक जीवन के रहने सहने पर पड़ता है। प्राकृतिक रूप से जब शारद ऋतु आती है, तब मनुष्य अपने शरीर के तापमान को संरक्षित

करने एवं शारद ऋतु से बचाव करने के लिये ऊनी कपड़ों का प्रयोग करता है, एवं गर्मी के मौसम में मनुष्य सूर्य की तेज गर्मी से बचने के लिये अधिक खुले और सूती वस्त्र अधिक पसन्द करता है ।

वातावरण का मनुष्य की शारीरिक क्षमता पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है । सर्दी के मौसम में उसकी शारीरिक क्षमता अधिक होती है । जब कि गर्मियों में वह शीघ्र ही थकान का अनुभव करने लगता है ।

वातावरण अर्थात पर्यावरण का मनुष्य की प्रजननता क्षमता पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है । गर्म जलवायु वाले क्षेत्रों में जनसंख्या में वृद्धि का महत्वपूर्ण कारण वहाँ के गर्म वातावरण का प्रभाव है । इसके विपरीत ठन्डे स्थानों पर जनसंख्या में सीमित वृद्धि वहाँ के वातावरण के कारण ही है । इसके अतिरिक्त शिक्षा, सामाजिक वातावरण, मनोरंजन के साधन, राजनैतिक स्थिति, पारिवारिक आर्थिक स्थिति, पारिवारिक सामाजिक वातावरण आदि का प्रभाव प्रजननता पर पड़ता है ।

झाँसी नगर, जो कि अध्ययन का क्षेत्र है, का पर्यावरणीय स्वरूप अत्यन्त जटिल है । नगर के अधिकांश भाग पहाड़ों से आच्छादित हैं, एवं अधिकांश भूमि पथरीली है, अर्थात भौगोलिक भाषा में इसे बुन्देलखण्ड का

पठारी क्षेत्र कहा जाता है। नगर में शिक्षा के लिये प्राइमरी स्कूलों से ले कर विश्वविद्यालय स्तर तक सुविधायें उपलब्ध हैं। साथ ही सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन का पर्याप्त वातावरण है। इन शैक्षणिक गतिविधियों के फलस्वरूप नगर के सामाजिक वातावरण पर अनुकूल प्रभाव पड़ रहा है एवं समाज में व्यक्ति की सोच प्रभावित हुयी है। वह अपने परिवार एवं समाज को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिये एक शक्तिशाली इकाई के रूप में प्रतिष्ठित हो रहा है।

नगर में मनोरंजन के लिये पर्याप्त मात्रा में सिनेमाघर, थियेटर, मनोरंजन क्लब एवं साथ ही विभागीय क्लब उपलब्ध हैं। इसके साथ ही दूरस्थ स्थानों पर आनन्द एवं मनोरंजन प्राप्त करने के लिये पर्यटन स्थल भी विकसित हैं। जिनमें माताटीला बाँध, सुकमा दुकमा बाँध, ओरछा में नदी का मनोहारी दृश्य आदि नगर के लोगों को आकर्षित एवं आनन्दित करने के लिये मनोरंजन के साधन हैं। जिसके लिये व्यक्ति अपने उपलब्ध अवकाश समय का अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार उपयोग करता है।

नगर में रोजगार हेतु पर्याप्त व्यवसायिक सरकारी एवं गैर-सरकारी प्रतिष्ठान स्थापित हैं। जिनमें अशिक्षित वर्ग से ले कर अत्यन्त कुशल और उच्च शिक्षित कुशल व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध होता है। नगर में रेलवे का अत्याधिक विस्तार होने के कारण नगर की जनसंख्या का अधिकांश

सरकारी नियोजित व्यक्तियों में सबसे अधिक प्रतिशत रेलवे में नियोजित व्यक्तियों का है ।

नगर में चिकित्सा और स्वास्थ्य हेतु सरकारी चिकित्सा महाविद्यालय, जिला चिकित्सालय, नेत्र चिकित्सालय, विभागीय रेलवे चिकित्सालय, उपलब्ध हैं साथ ही साथ परिवार नियोजन हेतु सम्भागीय ब्यूरो स्थापित है ।

दूरस्थ स्थानों पर जाने के लिये रेल एवं बस की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध है । स्थानीय स्तर पर आवागमन के लिये टैम्पो, जीप, एवं स्कूटर आदि पर्याप्त मात्रा में प्रत्येक समय उपलब्ध रहते हैं ।

नगर में बिजली एवं पीने का पानी की व्यवस्था सुचारु है । अधिकांश समय बिजली उपलब्ध रहती है । जिससे कि नगरवासी अपने कार्य को सुचारु एवं व्यवस्थित ढंग से समयानुसार पूर्ण करते हैं ।

नगरीय प्रजननता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक

<u>शिक्षा का प्रभाव</u> :- अध्ययन क्षेत्र झाँसी नगर सम्पूर्ण सुविधा सम्पन्न है अर्थात यहाँ पर जीवन उपयोगी एवं आधुनिक सभी प्रकार की वस्तुयें अथवा सुविधायें, सुविधापूर्वक प्राप्त हो जाती है । जैसा कि स्पष्ट

है कि शिक्षा का प्रभाव मनुष्य के बौद्धिक विकास पर पड़ता है । इस नगर में शिक्षा प्राप्त करने हेतु पर्याप्त सुविधायें उपलब्ध हैं । ऐसे शिक्षित समाज में जो कि पूर्ण रूप से शैक्षिक वातावरण में प्रतिस्थापित है, का प्रभाव उनके दैनिक जीवन के प्रत्येक क्रिया कलापों पर पड़ता है । अतः इनकी प्रजननात्मक क्रिया कलापों पर महत्वपूर्ण रूप से प्रभाव पड़ा है । नगर में शैक्षणिक परिपक्वता होने के कारण लोग अपने परिवार के आकार को सीमित रखने पर विशेष जोर देते हैं । सामान्यतः दो बच्चों के जन्म उपरान्त अपने परिवार को इससे अधिक बढ़ाने की विचारधारा नहीं रखते हैं । एवं अपने दैनिक जीवन, की प्रजननता सम्बन्धी शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति एवं परिवार को सीमित रखने सम्बन्धी विचार को दृष्टिगत रखते हुए अनेक वैकल्पिक साधन जैसे "निरोध एवं कापर टी आदि का उपयोग करते हैं । यह उनके शैक्षणिक एवं सामाजिक परिवेश का प्रभाव ही है जो कि वह अपनी आर्थिक भविष्यगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये अपने परिवार को सीमित रखने का प्रयास करते हैं ।

<u>मनोरंजन का प्रभाव</u> :- मनोरंजन का हमारे दैनिक व सम्पूर्ण जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रहता है । झाँसी नगर में पर्याप्त मात्रा में मनोरंजन के साधन उपलब्ध हैं । उसका प्रभाव नगर के व्यक्तियों पर पड़ना अवश्यम्भावी है । अनेक अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि व्यक्ति अपने

कार्य धन्धे के अतिरिक्त शेष समय को आनन्दपूर्वक ढंग से व्यतीत करना चाहता है और यदि, मनोरंजन के साधन उपलब्ध न हो तो वह अपने अवकाश के समय को प्रजनन सम्बन्धी कार्य कलापों में समायोजित करता है। जिसका प्रभाव प्रजननता दर पर पड़ता है परन्तु नगर में पर्याप्त संख्या में सिनेमा घर उपलब्ध हैं, एवं अधिकांश परिवारों में टेलीविजन रेडियो, टेप रिकार्डर, आदि मनोरंजक साधन उपलब्ध हैं। यहाँ पर यह तत्व महत्वपूर्ण है कि टेलीविजन ने मनोरंजन के साधन के रूप में अधिक प्रसिद्धि प्राप्त की है। यहाँ तक कि मध्यम एवं निम्न वर्गीय परिवार भी इसकी ओर आकर्षित हुये हैं। जिससे कि उनका अधिकतम अवकाश का समय, जो प्रजनन सम्बन्धी क्रिया कलापों में व्यतीत होता था उसमें से अधिकांश समय अब टेलीविजन के मनोरंजक कार्यक्रमों में व्यतीत हो जाता है। इससे स्पष्ट हुआ है कि मनोरंजन के साधनों का प्रभाव नगर के परिवारों के प्रजननता सम्बन्धी कार्य कलापों पर पड़ा है और इससे प्रजननता प्रभावित हुई है।

आर्थिक प्रभाव

सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ है उन परिवारों में प्रजननता दर कम है क्योंकि उन्हें पर्याप्त मात्रा में आधुनिक मनोरंजक साधन आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं जिससे कि वह अपने सामान्य अवकाश के समय को इनके द्वारा व्यतीत कर लेते हैं। जबकि नगर के निम्न

आर्थिक स्थिति के परिवारों का सर्वेक्षण करने से ज्ञात हुआ है कि उनके पास मनोरंजन के साधनों का अभाव, आर्थिक परेशानी, व्यवसायिक कठिनाई एवं दैनिक जीवन की विभिन्न प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण वह अपने अवकाश के समय को मनोरंजक एवं आनन्दपूर्वक ढंग से व्यतीत करने के लिए प्रजनन सम्बन्धी क्रिया कलापों से अपने समय को आनन्द पूर्वक ढंग से व्यतीत करने का प्रयास करता है। इस दौरान इस बात की उसे चिन्ता नहीं रहती कि इन क्रिया कलापों से उसके परिवार की संख्या बढ़ जायेगी और परिणामस्वरूप भविष्य में अनेक कठिनाईयाँ उत्पन्न होंगी इसलिये परिवारों की आर्थिक स्थिति का प्रजननता दर पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

रोजगार का प्रभाव

सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि नगर में व्यक्तियों के लिये पर्याप्त रोजगार के साधन हैं। परन्तु मध्यम आय वर्ग के परिवारों के युवक जो कि शिक्षित होते हुये भी बेरोजगार हैं शादी करने की लिये पूर्ण मनोबल से तैयार नहीं हैं, क्योंकि उनके पास रोजगार का कोई स्थाई साधन उपलब्ध नहीं है। उच्च धनी वर्ग में यह समस्या नहीं है क्योंकि उनके बेरोजगार होने की स्थिति से शादी करने या न करने से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसका कारण उनकी पारिवारिक आर्थिक सुदृढ़ता है। उनका शिक्षा प्राप्त करना सामान्यतः सामाजिक प्रतिष्ठा एवं ज्ञान वृद्धि के लिये ही होता है। इसलिये नगर में सर्वेक्षण

से ज्ञात हुआ है कि उच्च श्रेणी वर्ग का विचार प्रजननता दर के बारे में उनके लिये कोई चिन्ता का विषय नहीं है। निम्न आय वर्ग में जिनके आय के साधन सीमित होते हैं अर्थात वह अपनी आय द्वारा दैनिक उपभोग वस्तुयें कठिनता से खरीद पाते हैं। उनके लिये रोजगार के अवसरों की कमी नहीं है। उनके परिवार के बच्चे होटल रैस्टोरैन्ट एवं चाय की दुकान पर कार्य करते हैं एवं उनके परिवार की महिलायें उच्च व मध्यम उच्च वर्ग के घरों पर झाडू व बर्तन साफ करने सम्बन्धी कार्य करती हैं। जब कि परिवार का मुखिया गृह निर्माण या अन्य मजदूरी के कार्यों में रोजगार की तलाश करता है। सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि नगर में निम्न वर्ग के परिवारों की स्थिति अत्यन्त दयनीय है, क्योंकि उनके रोजगार का प्रकार स्थाई नहीं है अर्थात उनके रोजगार में नियमितता का अभाव है। इसके कारण उनकी आर्थिक स्थिति हमेशा दयनीय रहती है जिससे कि वह अन्य सुविधाओं से व आधुनिक साधनों से वंचित रहते हैं और तनाव की स्थिति में रहते हैं। इस तनाव को कम करने के लिये वे प्रजनन को महत्वपूर्ण मनोरंजक साधन के रूप में लेते हैं और इसी साधन के द्वारा अपने को सन्तुष्ट कर लेते हैं। परिणामस्वरूप उनके बच्चों की संख्या अनियमित रूप से बढ़ती चली जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि रोजगार का प्रभाव प्रजननता दर पर प्रभावशाली ढंग से पड़ता है और नगर में प्रजननता दर पर विशेष प्रभाव निम्न आय वर्ग पर रोजगार की असंतुलित स्थिति के कारण अधिक पड़ा है।

<u>चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाओं का प्रभाव</u>

सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि नगर में पर्याप्त मात्रा में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध है परन्तु जैसा कि सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि चिकित्सा का क्षेत्र व्यवसायिक रूप में परिवर्तित हुआ है जिससे अर्थ-सम्पन्न परिवार ही इन आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं को प्राप्त कर रहे हैं और निम्न और मध्यम वर्ग इन सुविधाओं को नगण्यरूप में प्राप्त कर पाते हैं क्योंकि आधुनिक चिकित्सा प्रणाली अत्यन्त महंगी है। आधुनिक चिकित्सा सम्बन्धी उपकरण सरकारी चिकित्सालयों में सीमित मात्रा में उपलब्ध है। परन्तु निजी क्षेत्र में स्थापित नर्सिंग होम्स में व्यवसायिक चिकित्सकों द्वारा आधुनिक चिकित्सा सम्बन्धी उपकरणों की सुविधायें अत्यन्त महंगी दर पर उपलब्ध की जा रही है। जिसका लाभ केवल उच्च आय वर्ग ही पूर्ण रूप से प्राप्त कर रहा है। उक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि निम्न आय वर्ग के परिवार उचित समय पर उचित चिकित्सा सुविधा प्राप्त करने से वंचित रहते हैं जिससे कि इनके परिवारों के सदस्यों की मृत्यु दर उच्च आय वर्ग की अपेक्षा अधिक रहती है। नगर में प्रसूति सम्बन्धी चिकित्सालय पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है परन्तु वह अधिकांश निजी क्षेत्र में, जो कि निम्न आय वर्ग की पहुँच के बाहर है। नगर में प्रजननता दर और चिकित्सा सुविधाओं में ऋणात्मक सम्बन्ध

है अर्थात चिकित्सा सुविधा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने के कारण जाये तो प्रजननता दर आवश्यक रूप से बढ़ती है, क्योंकि जो निम्न आय वर्ग के व्यक्ति को यदि उचित समय पर यदि चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो जाये तो उनके बच्चों की संख्या अनियन्त्रित रूप से बढ़ जायेगी जिसका प्रभाव प्रजननता दर पर पड़ेगा । नगर में चिकित्सा सुविधाओं की कमी के कारण प्रजननता दर में भी कमी आयेगी परन्तु निम्न आय वर्ग पर चिकित्सा सुविधाओं की कमी के कारण प्रजननता दर पर अवश्य पड़ा है ।

इसके अतिरिक्त परिवार नियोजन सम्बन्धी विज्ञापनों का, जो नियमित रूप से टेलीविजन और रेडियो आदि में सुनाये व दिखाये जाते हैं उनसे भी निम्न व मध्यम वर्ग की प्रजननता दर प्रभावित हुयी है । इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा संचालित परिवार नियोजन विभाग के कार्यकर्ता समय समय पर परिवार को सीमित करने हेतु अनेक प्रकार के सुझाव व वैकल्पिक उपाय मध्यम व निम्न वर्ग को बताते हैं । नगर में इन क्रिया कलापों के माध्यम से भी उनकी प्रजननता दर प्रभावित हुयी है और वह स्वेच्छा से नसबन्दी कराने हेतु प्रेरित हुये हैं । समग्र रूप से हम कह सकते हैं कि चिकित्सा सुविधाओं व परिवार नियोजन गतिविधियों का नगर की प्रजननता पर प्रभावशाली व महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है ।

आवागमन का प्रभाव

नगर में आवागमन के पर्याप्त साधन उपलब्ध है । दूरस्थ एवं स्थानीय आवागमन के लिये हर समय सुविधायें उपलब्ध रहती हैं । इसका प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से प्रजननता पर पड़ता है क्योंकि निकटस्थ स्थानों पर कार्य करने वाले व्यक्ति अपने नियमित समय पर सायं को अपने निवास पर पहुँच जाते हैं और अपने परिवार के साथ रात्रि व्यतीत करते हैं परिणामस्वरूप प्रजननता दर पर इसका प्रभाव पड़ता है ।

इसके अतिरिक्त विद्युत, जल जैसी बुनियादी सुविधा की पर्याप्त उपलब्धता के कारण नगरवासी अपने प्रत्येक क्रियाकलाप सुचारू रूप से इच्छानुसार उचित समय पर सम्पन्न करते हैं । इन बुनियादी सुविधाओं का प्रभाव प्रजननता पर अप्रत्यक्ष रूप से अनुकूल पड़ रहा है । परन्तु शैक्षिक स्तर में वृद्धि होने के कारण नगर निवासी परिवार को सीमित रखने हेतु वैकल्पिक साधनों का प्रयोग करते हैं ।

रहन-सहन का प्रभाव

जैसा कि ज्ञात है कि प्रति व्यक्ति अपने आय के अनुरूप ही रहन-सहन पर व्यय करता है । नगर के सर्वेक्षण के आधार पर यह तथ्य प्रकाश में आया

है कि नगरवासी अनेक क्षेत्रों में अपनी आर्थिक सुदृढ़ता के कारण ही विभाजित है। उच्च आय वर्ग की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है और उसके पास पर्याप्त सुविधा सम्पन्न निवास स्थान उपलब्ध होता है जिसके कारण वह अपने बढ़ते परिवार को विभाजित या संयुक्त रखने की पूर्ण क्षमता रखता है। जबकि नगर में मध्यम आय वर्ग के पास बढ़ते परिवार को समायोजित करने के लिये पर्याप्त स्थान जुटाने में कठिनाई होती है, एवं निम्न आय वर्ग बढ़ते परिवार को समुचित स्थान नहीं दे पाता क्योंकि वह पहले से ही असुविधाजनक व अपर्याप्त स्थान पर रहता है। उच्च आय वर्ग में पर्याप्त स्थान उपलब्ध होता है इसलिये प्रजनन सम्बन्धी क्रियाकलापों में असुविधा का अनुभव नहीं होता परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि उच्च आय वर्ग के परिवारों में प्रजननता दर अधिक होती है क्योंकि उनका शैक्षणिक वातावरण विकसित होता है। इसलिये उनके परिवार पर इस तथ्य का कोई प्रभाव नहीं पड़ता कि रहन सहन का स्तर क्या है। मध्यम आय वर्ग के परिवार सीमित निवास स्थान की उपलब्धता एवं भविष्यगत आर्थिक स्थिति को मद्दे नजर रखते हुये अपने परिवार को सीमित रखने का प्रयास करते हैं परन्तु निम्न आय वर्ग के परिवार इस तथ्य पर कोई ध्यान नहीं देते है कि बच्चों की संख्या अधिक होने पर रहन सहन अन्य नैतिक दायित्व कितनी मात्रा में बढ़ जायेगा। इसी कारण निम्न

आय वर्ग के परिवारों की प्रजननता दर पर उनके रहने के स्थान का प्रभाव नगण्य रूप में ही पड़ता है ।

ग्रामीण प्रजननता और पर्यावरण

जनपद झाँसी के विभिन्न विकास खण्डों में से रेन्डम आधार पर चयनित विकास खण्ड बड़ा गाँव को चुना गया है जिसमें इस विकास खण्ड के अन्तर्गत दो गाँव को चुना गया है । चिरगाँव विकास खण्ड में दो एवं बबीना विकास खण्ड में दो गाँव चुने गये हैं । अध्ययन के लिये ऐसे ग्रामीण क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया है जहाँ कुछ औद्योगिक गतिविधियाँ हों, औद्योगिक गतिविधियों से दूर परन्तु कृषि की दृष्टि से पर्याप्त विकसित हों तथा ऐसे गाँव जहाँ पर कृषि एवं उद्योग के विकास का स्तर नगण्य हो । गाँव की स्थिति झाँसी शहर से सड़क के किनारे 20 किलोमीटर परिधि में स्थित, शहर को जोड़ने वाली मुख्य सड़कों से लगभग 25 किलो मीटर दूर स्थित तथा आवागमन के उपयुक्त साधनों से वंचित गाँव भी अध्ययन के लिये चुने गये हैं ।

उपर्युक्त आधार पर सर्वेक्षित गाँव का अध्ययन करने पर अनेक महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आये हैं गाँवों जो शहर के निकट स्थित है या सड़क के किनारे स्थित हैं, उन पर शहरीय वातावरण जैसे वेशभूषा, मनोरंजन के आधुनिक

साधन, शिक्षा ग्रहण करने के प्रति रुचि, आवागमन के आधुनिक साधनों के प्रति झुकाव का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ है । जबकि नगरीय वातावरण से दूर स्थित गाँवों में शहरीय वातावरण का प्रभाव अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से नहीं पड़ा है ।

नगर की परिधि में स्थित तीन विकास खण्डों को लिया गया है एवं इन विकास खण्डों के अन्तर्गत बड़ागाँव, चिरगाँव, एवं बबीना विकास खण्ड लिये गये हैं । बड़ागाँव विकास खण्ड के जो कि झाँसी नगर से लगभग 10 किलोमीटर पर स्थित है, के अन्तर्गत बूढ़ा और आरी दो गाँव को लिया गया है । ग्राम बूढ़ा जो नगर से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर सड़क के किनारे स्थित है, का सर्वेक्षण करने से ज्ञात हुआ है कि यहाँ के परिवारों का शैक्षिक स्तर, आधुनिकतम, मनोरंजन साधन एवं नगर में उपलब्ध रोजगार के साधनों पर निर्भरता का स्पष्ट प्रभाव पड़ा है । जिससे कि गाँव की प्रजननता दर में कमी आयी है । सर्वेक्षित ग्राम आरी जो नगर से 8 किलो मीटर की दूरी पर स्थित है और इस गाँव में जाने के लिये केवल 5 किलोमीटर ही सड़क उपलब्ध है, पर नगर की विकासोन्मुखी गतिविधियों का अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ा है । इस गाँव पर प्रजननता दर को नियन्त्रित करने हेतु चलाये जा रहे सरकारी कार्यक्रमों का प्रभाव नगण्य इसलिये रहा है कि यहाँ के निवासियों का शैक्षणिक स्तर अत्याधिक निम्न है ।

अध्ययन हेतु लिये गये विकास खण्ड चिरगाँव में ग्राम बकवाँ एवं गढ़ूका का सर्वेक्षण करने से ज्ञात हुआ है कि ग्राम बकवाँ जो नगर से 60 किलोमीटर पर स्थित है, पर नगरीय विकासोन्मुख गतिविधियों का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है एवं सरकार द्वारा चलाये जा रहे परिवार नियोजन सम्बन्धी कार्यक्रमों से इस गाँव की प्रजननता दर प्रभावित हुयी है, क्योंकि गाँव में शिक्षा के लिये एक सरकारी प्राइमरी स्कूल एवं गाँव से 8 किलोमीटर दूर चिरगाँव में इन्टर तक शिक्षा प्राप्त करने हेतु साधन उपलब्ध हैं। गाँव की प्रजननता पद प्रभावित होने का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि यह गाँव झाँसी नगर से बस द्वारा सीधा जुड़ा हुआ है जिससे यहाँ के निवासियों पर नगर की गतिविधियों एवं शैक्षणिक क्रियाकलापों का स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। गाँव गढ़ूका जो नगर से लगभग 62 किलोमीटर पर स्थित है, पर नगरीय गतिविधियों का प्रभाव इसलिये नहीं पड़ा है कि यह गाँव सीधे रूप में सड़क से नहीं जुड़ा हुआ है बल्कि यह सड़क से हट कर स्थित है।

विकास खण्ड बबीना के अन्तर्गत लिया गया गाँव बिजौली नगर का औद्योगिक रूप से विकसित गाँव है। इस गाँव पर नगरीय गतिविधियों का पूर्ण प्रभाव है एवं सरकार द्वारा चलाये गये प्रजननता दर को नियन्त्रित करने सम्बन्धी सभी कार्यक्रम सुचारू रूप से संचालित हो रहे हैं जिससे यहाँ की प्रजननता दर प्रभावित हुई है एवं यहाँ के निवासी अपनी आर्थिक परिस्थितियों

से भविष्यगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये अपने परिवार को सीमित रखने का प्रयास करते हैं एवं प्रजनन एवं मनोरंजन हेतु वैकल्पिक साधन जैसे कि निरोध आदि का प्रयोग करते हैं। सर्वेक्षित गाँव भट्टागाँव भी आधुनिक वातावरण व नगरीय वातावरण से प्रभावित हुआ है परन्तु यह प्रभाव बिजौली गाँव की अपेक्षा कम है क्योंकि यह गाँव सड़क से एक किलोमीटर दूर स्थित है।

उपर्युक्त विकास खण्डों के अन्तर्गत सर्वेक्षित किये गये गाँव का अध्ययन करने से यह ज्ञात हुआ है कि गाँव पर या गाँव में रहने वाले निवासियों पर शहरी वातावरण का प्रभाव पड़ा है परन्तु परिवार का आकार या प्रजननता इस बात पर निर्भर करती है कि उनका शिक्षा का स्तर, समझदारी, प्रजननता हेतु आधुनिक वैकल्पिक साधनों के प्रति दृष्टिकोण, परिवार की आर्थिक स्थिति, गांव की परम्परागत सोच ग्राँव की सामाजिक सोच आदि क्या है, और किस दिशा में है।

नगरीय-ग्रामीण प्रजननता विभिन्नता

अध्ययन के अन्तर्गत लिये गये नगर झाँसी एवं उसकी परिधि पर स्थित छः गाँवों का सर्वेक्षण किया गया है। सर्वेक्षणोपरान्त कई महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आये हैं जो कि प्रजननता पर महत्वपूर्ण प्रभाव

डालते है । नगर में शैक्षणिक वातावरण रोजगार की पर्याप्त उपलब्धता रहने के लिये समुचित मकान एवं बिजली और पानी की आवश्यकता सुविधायें तथा मनोरंजन के लिये पर्याप्त साधनों की उपलब्धता होती है। जिसका प्रभाव सर्वेक्षित नगरवासियों के दैनिक जीवन पर पड़ा है तदानुसार नगर में प्रजननता दर पर अनेक तथ्यों का प्रभाव पड़ा है और लोगों में जागृति की भावना उत्पन्न होने के फलस्वरूप उसने अपनी आर्थिक स्थिति एवं भविष्य गत आवश्यकताओं को ध्यान रखते हुये परिवार को सीमित करने का प्रयास किया । नगर में परिवार नियोजन विभाग द्वारा संचालित कार्यक्रमों का पुर्जोर से स्वागत हुआ है जिसके कारण प्रजननता दर में कमी आयी है । इसके विपरीत सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्रों के उन क्षेत्रों पर नगरीय वातावरण का विशेष प्रभाव पड़ा है । जो सड़क के किनारे स्थित है एवं जो गाँव सड़क से दूर स्थित हैं उन पर नगरीयकरण का प्रभाव अल्प मात्रा में पड़ा है । सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के साधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हैं और जिन गाँवों में उपलब्ध भी है तो उनमें निश्चितता एवं नियमितता का अभाव है । जिसके कारण ग्रामीण अपनी आर्थिक स्थिति के प्रति चिन्तित रहता है । गाँवों में हर समय आवागमन के साधनों का अभाव है जिसके कारण ग्रामीण उचित समय पर उचित स्थान पर पहुँचने में असुविधा का अनुभव करता है । जबकि नगर में ऐसी स्थिति नहीं है । ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीणों के निवास करने

के स्थान अपर्याप्त एवं असुविधाजनक स्थिति में होते हैं। जिसके कारण वह अपना दैनिक जीवन भी सुचारु रूप से व्यतीत नहीं कर पाता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामवासियों पर परम्पराओं, रूढ़ियों और अन्य विश्वासों का बहुत अधिक प्रभाव है। जिसके कारण वह अनेक लाभकारी कार्य भी करने से मना करता है वह अपने गाँव से बाहर अन्य स्थान पर रोजगार हेतु कार्य करने के लिये इच्छुक नहीं होता है जिसके कारण उसकी आय कम होती है। आय कम होने के कारण उसके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है फलस्वरूप उनके बच्चे शैक्षिक गतिविधियों में सम्मिलित नहीं हो पाते और उनका बौद्धिक एवं शैक्षिणिक स्तर परम्परागत स्थिति में ही बना रहता है। ग्रामीणों के निम्न वर्ग में जिसकी प्रजननता दर सर्वाधिक स्पष्ट हुई है, में यह धारणा पायी जाती है कि अधिक बच्चे होने पर परिवार की आय भी अधिक होगी। वे इस तथ्य को ध्यान में नहीं रखते कि हमें बच्चे का बौद्धिक व सामाजिक विकास भी करना है और अपने एक मात्र मनोरंजन साधन का उपयोग करके बच्चों की कतार खड़ी नहीं करना है। उन्हें इस बात की भी चिन्ता नहीं रहती है कि बच्चा बड़ा होने पर किस प्रकार के रोजगार में समायोजित होगा। उसका रोजगार का साधन स्थानीय होता है और बच्चा बड़ा होने पर वह उसे स्थानीय स्तर पर उपलब्ध रोजगार में समायोजित कर लेता है। जबकि

नगरीय क्षेत्र में सुविकसित शैक्षणिक स्तर के कारण व्यक्ति अपने बच्चे का विकास समग्र रूप से करना चाहता है जिससे कि वह समाज में महत्वपूर्ण स्थान बना सके और देश के लिये कुछ कर सके ।

सर्वेक्षित ग्रामों में मुख्य व्यवसाय या मुख्य आय का साधन कृषि है । मात्र बिजौली ग्राम को छोड़कर सभी सर्वेक्षित ग्रामों में मुख्य आय का साधन कृषि है । ग्रामीणों में यह धारणा प्रबल होती है कि यदि उनके परिवार में बच्चों की संख्या अधिक हो तो वह उन्हें कृषि कार्य में समायोजित करके अपने उत्पादन को अधिक बढ़ा सकता है । इसी विचार से प्रभावित हो कर वह अपने परिवार को असीमित कर लेते हैं । तदानुसार समग्र रूप से उनकी प्रजननता दर अधिक होती है । सर्वेक्षित ग्रामों में इस विचारधारा का प्रवाह स्पष्ट दृष्टिगत हुआ है । इसके विपरीत नगरों में अधिकांश परिवार व्यवसाय या सरकारी संस्थानों में कार्यरत व्यक्तियों द्वारा संचालित होते हैं । जो इस बात से भिन्न होते हैं कि अधिक बच्चे होने पर उनको समुचित एवं समग्र आवश्यकताओं को उपलब्ध करना कठिन होगा । अतः नगर के सर्वेक्षित किये गये अधिकांश परिवारों में उनकी विचारधारा यह है कि वे अपने बच्चों को सम्पूर्ण रूप से विकसित करने के इच्छुक हैं और उनकी संख्या बढ़ाने में उनकी कोई रुचि नहीं है । इस विचार-धारा के कारण नगर में प्रजननता दर नियन्त्रित रूप से बढ़ रही है जबकि

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता दर अनियन्त्रित रूप से बढ़ी है ।

नगर में मनोरंजन के लिये सिनेमा, टेलीविजन, रेडियो, टेपरिकार्डर आदि साधन है इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक क्लब, एकता प्रदर्शनी, खेलकूद के लिये स्टेडियम एवं समय समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है । जिसमें व्यक्ति अपने उपलब्ध अवकाश के समय को इन गतिविधियों में व्यतीत कर लेता है और उसका ध्यान पारिवारिक प्रजनन सम्बन्धी क्रियाकलापों में सीमित रूप में व्यय होता है जिससे प्रजननता दर नियन्त्रित रहती है । जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन के पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं हैं । जैसे वहाँ टहलने के लिये पर्याप्त स्वच्छ वातावरण होता है परन्तु रात्रि अवकाश का समय वह प्रजनन सम्बन्धी क्रियाकलापों में व्यय करते हैं एवं वैकल्पिक साधनों निरोधात्मक साधन प्रयोग न करने के कारण उनके परिवार की संख्या बढ़ रही है जिसका प्रभाव प्रजननता दर पर पड़ रहा है ।

ग्रामीण, बच्चे का जन्म ईश्वरीय देन मानते हैं औरर उनका यह भी मानना है कि यह कार्य ईश्वर की इच्छा के अनुरूप ही होता है इससे भी ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता दर अधिक है जबकि नगर के सर्वेक्षित परिवारों का विचार है कि बच्चे का जन्म व्यक्ति के प्रजनन सम्बन्धी

कार्यकलापों पर आधारित है और वह इन कार्यकलापों को नियन्त्रित ढंग से करके अपने परिवार को सीमित रख सकता है इस कारण भी सर्वेक्षित नगरीय परिवारों की प्रजनन दर में वृद्धि नियन्त्रित रूप से हुई है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में पर्यावरणीय विभिन्नता के कारण प्रजननता दर प्रभावित हुई है।

• अध्याय - 5 •

आर्थिक स्तर और ग्रामीण - नगरीय प्रजनता विभिन्नता

किसी देश के अन्तर्गत निवास करने वाले व्यक्तियों, समाजोंव वर्गों का जीवन स्तर उसकी आर्थिक उन्नति का सूचक होता है। विकसित व विकासशील देशों की परिस्थितियों में अनेक विभिन्नतायें विद्यमान होती है। एक ओर विकसित देशों में पूँजी व संसाधनों के पर्याप्त साधन होते हैं और उसकी जनसंख्या वृद्धि दर कम होती है जिससे वहाँ के निवासी अपनी आवश्यकता की पूर्ति आसानी से कर लेते हैं, वहीं दूसरी ओर विकासशील देशों में पूँजी व आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता, जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर की तुलना में बहुत ही कम हुआ करती है। जिसके कारण इन देशों में बेरोजगारी, भुखमरी, पूँजी निर्माण की न्यून दर, शैक्षणिक व सामाजिक स्तर आदि में समुचित प्रभावकारी ~~समुचित~~ सन्तुलित नहीं हो पाती है।

हमारा देश एक विकासशील देश है जिसमें जनसंख्या की वृद्धि अत्यन्त ही तीव्र गति से बढ़ रही है। विश्व में हमारे देश का जनसंख्या की वृद्धि में दूसरा स्थान है। बढ़ती जनसंख्या के कारण अनेक समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं। जैसे जनसंख्या बढ़ने से उत्पत्ति ह्रास नियम लागू हो रहा है अर्थात देश में जनसंख्या की वृद्धि श्रम व अन्य साधनों अर्थात भूमि तथा पूँजी की अपेक्षा बहुत अधिक हो रही है परिणामस्वरूप कुल उत्पादन घटती हुई दर से बढ़ रहा है अर्थात सीमान्त उत्पादन तथा औसत उत्पादन घट रहा है। दूसरे शब्दों में उत्पत्ति ह्रास नियम लागू हो जाता है, परन्तु यदि

श्रम के साथ-साथ भूमि तथा पूँजी में भी वृद्धि हो तो उत्पत्ति ह्रास नियम लागू नहीं होगा। परन्तु पूँजी में वृद्धि तो हो सकती है परन्तु भूमि में वृद्धि नहीं हो सकती है क्योंकि वह सीमित है। केवल एक सीमा तक ही गहन खेती द्वारा भूमि की "प्रभावोत्पादक पूर्ति" को बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार अति जनसंख्या हानिकारक सिद्ध होती है क्योंकि उसकी वृद्धि के साथ अन्य उत्पत्ति के साधनों को विशेषतया: भूमि को उसी अनुपात में नहीं बढ़ाया जा सकता है जिस अनुपात में जनसंख्या बढ़ती है।

जनसंख्या में वृद्धि के साथ खाद्य पदार्थों, वस्त्रों, मकानों इत्यादि की माँग में बहुत अधिक वृद्धि होती है परन्तु इन वस्तुओं की पूर्ति को उसी अनुपात में नहीं बढ़ाया जा सकता क्योंकि उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील रहता है। परिणामस्वरूप जीवन स्तर गिरने लगता है तथा लोगों को गरीबी तथा कष्टों का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण अधिकांश जनसंख्या का आर्थिक स्तर बहुत ही निम्न स्तर का रहता है। आर्थिक स्तर न्यून होने के कारण पूँजी निर्माण में रुकावट होती है और अधिक विकास के लिए कृषि, उद्योग, स्वास्थ्य, शिक्षा इत्यादि क्षेत्रों में विनियोग करने के लिए विदेशी ऋणों पर निर्भरता बढ़ती जाती है। अर्थात उच्च जन्म दर और अति जनसंख्या से बचतों में कमी आती है, जिससे पूँजी निर्माण की दर निम्न हो जाती है। अत: हमारे जैसे देश में उक्त परिस्थितियों के कारण पूँजी निर्माण की दर बहुत निम्न है जिसके कारण देश के आर्थिक

विकास में बहुत सी बाधायें होती हैं ।

यदि अन्य बातें समान रहें तो जनसंख्या की वृद्धि से प्रति व्यक्ति आय कम हो जाती है । इसके विपरीत जिन देशों में जनसंख्या कम है और प्राकृतिक साधनों का विकास नहीं हुआ है, वहाँ जनसंख्या की वृद्धि से प्रति व्यक्ति आय बढ़ जाती है । इसी प्रकार जिन देशों में उत्पादन में भूमि व श्रम का योगदान अधिक है या अर्थतन्त्र कृषि पर आधारित है, वहाँ जनसंख्या बढ़ने से प्रति व्यक्ति आय कम हो जाती है ।

जनसंख्या द्वारा तकनीक का स्तर भी प्रभावित होता है अर्थात जहाँ जनसंख्या शिक्षित है वहाँ नई तकनीक की खोज होती है परन्तु जहाँ जनसंख्या अशिक्षित होती है वहाँ पिछड़ी और परम्परागत तकनीक का प्रचलन होता है ।

जनसंख्या की संरचना का आर्थिक विकास पर बहुत ही महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है । विकसित देशों की जनसंख्या में उत्पादकों की संख्या अधिक होती है । कम विकसित देशों की जनसंख्या में आश्रितों की संख्या अधिक और उत्पादकों की संख्या कम होती है । यह दशा ही हमारे देश के आर्थिक विकास में बाधक है ।

जनसंख्या की वृद्धि से उपभोग में भी वृद्धि होती है । उपभोग की मात्रा और स्वभाव जनसंख्या में प्रचलित रीति रिवाजों पर निर्भर है। जनसंख्या

की संरचना में परिवर्तन होने से उपभोग की वस्तुओं की प्रकृति भी बदल जाती है।

भारत जैसे कम विकसित देशों में जनसंख्या की वृद्धि से जीवन स्तर गिर जाता है। जनसंख्या के अनुपात में रोजगार कम हो जाते हैं और आवश्यकता बढ़ जाती है। प्रति व्यक्ति साधनों और पूँजी की कमी हो जाती है फलस्वरूप आर्थिक विकास प्रभावित होता है।

इस प्रकार कम विकसित देशों में जनसंख्या की वृद्धि को आर्थिक विकास के लिये बाधक माना जाता है। इससे जीवन स्तर गिरता है और आर्थिक प्रगति के लाभ प्रभावहीन हो जाते हैं।

अध्याय के अन्तर्गत आर्थिक स्तर पर ग्रामीण-नगरीय प्रजननता विभिन्नता के अन्तर्गत निम्न प्रकार से शोध क्षेत्र को शोध प्राविधियों के अनुसार लिया गया है -

अध्ययन के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड क्षेत्र के झाँसी जनपद व कुछ समीपवर्ती गाँवों को लिया गया है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में झाँसी सभी साधनों की दृष्टि से अन्य जिलों की अपेक्षा सुविकसित जनपद है। जनपदान्तर्गत बाहर आने-जाने के रेल, बस आदि के पर्याप्त साधन उपलब्ध है व शिक्षा की दृष्टि से विश्व-विद्यालय स्तर तक अध्ययन हेतु साधन उपलब्ध है। आर्थिक विकास के प्रगति पथ पर जनपद में औद्योगिक विकास अपने तीव्रतम प्रगति की ओर अग्रसर है।

अध्ययन के अन्तर्गत रैन्डम आधार पर चुने गये तीन विकास खण्डों चिरगाँव, बड़ागाँव और बबीना हैं। इन चुने गये गाँवों को चुनते समय कुछ कसौटी को ध्यान रखा गया है अर्थात ऐसे ग्रामीण क्षेत्रों ~~का प्रतिनिधित्व करते है~~ जहाँ कुछ औद्योगिक गतिविधियाँ आरम्भ हुई हैं। औद्योगिक गतिविधियों से दूर परन्तु कृषि गतिविधियों की दृष्टि से पर्याप्त विकसित है तथा ऐसे गाँव जहाँ पर कृषि तथा उद्योग के विकास का स्तर नगण्य है। झाँसी शहर से सड़क के किनारे 20 किलो मीटर की परिधि में स्थित, शहर, को जोड़ने वाली मुख्य सड़कों से लगभग ~~का~~ 25 किलो मीटर दूर स्थित तथा आवागमन के उपयुक्त साधनों से वंचित गाँव भी अध्ययन के लिये चुने गये हैं। उपर्युक्त आधार पर चुने गये क्षेत्रों में उन ग्रामों या स्थानों की परिवार संख्या का 2 प्रतिशत न्यायादर्श सर्वेक्षण के लिये चुना गया है।

आर्थिक स्तर के आधार पर ग्रामीण प्रजननता का अध्ययन करने के लिये विकास खण्ड बड़ागाँव के अन्तर्गत शोध प्राविधि के अनुरूप ग्राम बूढ़ा व आरी, चिरगाँव विकास खण्ड में ग्राम बैलवाँ व गढ़ौका और विकास खण्ड बबीना के अन्तर्गत बिजौली व भट्टा गाँव को लिया गया है। इसके अतिरिक्त आर्थिक स्तर पर नगरीय प्रजननता का अध्ययन करने के लिये झाँसी तहसील के अन्तर्गत सेवानियोजित कर्मचारियों में से 100 परिवारों को रैन्डम आधार पर अध्ययन हेतु लिया गया है। शहर क्षेत्र या नगरीय क्षेत्र के अध्ययन हेतु लिये गये अधिकांश परिवार रेलवे विभाग में सेवारत हैं।

ग्रामीण व नगरीय सर्वेक्षित परिवारों की आर्थिक स्तर एवं प्रजननता पर का अध्ययन के लिये उन्हें जाति के आधार पर विभाजित किया गया है क्योंकि यह सर्व विदित मान्यता रही है कि उच्च जाति के परिवार आर्थिक दृष्टि से अधिक सुदृढ होते हैं जब कि निम्न जाति वर्ग के परिवार आर्थिक दृष्टि से सुदृढ नहीं होते हैं इसके साथ ही अन्य सम्प्रदाय जैसे मुसलमान व ईसाई परिवारों का अध्ययन भी आर्थिक आधार पर करने का प्रयास किया गया है।

जैसा कि ज्ञात है कि उच्च जातियों में अनेक उपजातियाँ सम्मिलित होती हैं और इसी प्रकार पिछड़ी, अनुसूचित जाति में भी अनेक उपजातियाँ सम्मिलित होती है अतः अध्ययन की सुविधा व स्पष्ट निराकरण के लिए सर्वेक्षण के अन्तर्गत उपलब्ध हिन्दू जातियों को निम्न प्रकार विभाजित किया गया है।

<u>उच्च वर्ग</u> :- ब्राहम्ण, वैश्य, कायस्थ, ठाकुर, पठान व शेख आदि।

<u>पिछड़ा वर्ग</u>- यादव, लोधी, कुशवाहा, प्रजापति, सुनार, बरार, पाल, ढीमर, लुहार, दर्जी इत्यादि।

<u>अनुसूचित जाति वर्ग</u> - चमार, कोरी, धोबी, बसोर, भंगी आदि।

भारत में विभिन्न धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं के कारण लड़की का विवाह जल्दी किया जाता है। लड़की का विवाह जितनी जल्दी होता है,

माता-पिता अपने को उतना ही निश्चिन्त समझते हैं। 1929 में पारित शारदा अधिनियम के बावजूद भी लाखों लड़कियों की शादी बाल्यकाल में ही हो जाती है। सन् 1951 की जनगणना के अनुसार, 1 करोड़ विवाहित लड़के-लड़कियों की आयु 18 और 14 वर्ष से कम थी। 1951 में विवाह के समय लड़कियों की औसत आयु 15.6 वर्ष थी। इस प्रकार कम आयु में विवाह होने से स्त्रियों का प्रजनन काल लम्बा होता है। इससे सन्तानोत्पादन की संख्या अधिक रहती है। इसके विपरीत, यदि लड़कियों का विवाह 25 वर्ष की आयु के बाद होता है तो इससे न केवल प्रजनन काल कम होता है, बल्कि प्रजनन शक्ति में भी कमी हो जाती है। भारत में विवाह की औसत आयु पुरुषों में 18 और लड़कियों में 15 वर्ष है। इसके अतिरिक्त विधवा पुनर्विवाहों में वृद्धि से भी जन्म दर प्रभावित हुयी है।

विवाह की आयु प्रजनन दर को अत्यन्त प्रभावित करती है। डा० एस० एन० अग्रवाल का मत है कि भारत में यदि विवाह की आयु 19 वर्ष हो अर्थात प्रथम बच्चे के जन्म के समय आयु 20 वर्ष से कम न हो, तो भारत में प्रजनन दर 25 वर्षों के अन्दर 40% कम हो जायेगी। इस प्रकार लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा किये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार यदि विवाह की आयु 12.5 वर्ष से बढ़ाकर 17.5 वर्ष कर दी जाये तो उत्तर प्रदेश में अनुमानित जन्म दर 43.63 प्रति हजार से गिरकर 40.67 प्रति हजार हो

जायेगी । इस आयु को यदि 25·5 वर्ष कर दिया जाये तो प्रजनन दर 33·8 प्रति हजार तक कम हो जायेगी ।

प्रजनन अवधि के प्रारम्भिक काल में प्रजनन दर अधिक होती है। अतः यदि विवाह देर से हुआ तो प्रजनन अवधि कम रहती है और सन्तानोत्पादन की संख्या कम हो जाती है । भारत में यह प्रजनन काल 15 से 45 वर्ष माना जाता है । इसके अतिरिक्त अधिक आयु में विवाह होने के कारण पुनरुत्पादन शक्ति भी कम होती है ।

सामान्य रूप से धनी परिवारों में विवाह की औसत आयु अधिक होती है । यह विलम्ब उनकी शिक्षा तथा रोजगार में व्यवस्थित होने के कारण होता है । धनी परिवारों के सदस्यगण प्रायः तब तक विवाह नहीं करते जब तक कि वे अपनी शिक्षा पूरी करके किसी व्यवसाय में व्यवस्थित न हो जायें । लेकिन भारतीय जनसंख्या का अधिकांश स्तर गरीब है । वे जिस प्रकार के रोजगार व व्यवसाय द्वारा आजीविका अर्जित करते हैं उसके लिए न तो लम्बी अवधि तक शिक्षा चालू रहती है और न उन्हें लड़कों को किसी रोजगार में व्यवस्थित करने तक की प्रतीक्षा रहती है । फलस्वरूप 16-17 वर्ष की आयु में ही विवाह कर देते हैं ।

भारतीय सामाजिक संरचना भी विवाह की औसत आयु को प्रभावित करती है धार्मिक मान्यताओं के अनुसार लड़की का विवाह अनिवार्य है । अशिक्षा

और किसी प्रकार का व्यावसायिक प्रशिक्षण न होने के कारण लड़कियाँ आत्मनिर्भर नहीं हो पाती। विवाह ही उनके लिये एक मात्र विकल्प होता है। अतः जितना जल्दी लड़की का विवाह हो जावे, उतना ही माता-पिता अपने को दायित्व से मुक्त समझते हैं। इसके अतिरिक्त दहेज प्रथा के प्रचलन के कारण अधिक आयु की लड़कियों के विवाह में अधिक दहेज देना पड़ता है। अतः 13-14 वर्ष के बाद जल्दी से जल्दी लड़की का विवाह करने का प्रयास किया जाता है।

आयु वर्ग के आधार पर विभिन्न जाति समूहों में प्रजननता का अध्ययन करने के लिये सर्वेक्षित महिलाओं में आयु वर्ग के अन्तर्गत प्रजननित बच्चों की संख्या के आधार यह आंकलित करने का प्रयास किया गया है, किस आयु वर्ग में महिलाओं द्वारा बच्चों की अधिक संख्या प्रजननित की जाती है और साथ ही इन महिलाओं को जाति समूहों के अनुसार विभाजित करके यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि किन जाति समूहों में निर्धारित आयु वर्ग में बच्चों की संख्या अधिक या कम प्रजननित की जाती है।

विकास खण्ड बड़ागाँव के अन्तर्गत ग्राम बूढ़ा की ग्रामीण महिलाओं का सर्वेक्षण जाति समूहों के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग के अन्तर्गत किया गया है जिसे सारणी 5.1 में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी - 5·1

सर्वेक्षित ग्राम बुढ़ा के ग्रामीण परिवारों का जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या							
				15-20 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	20-25 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	25-30 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	30-35 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1·	उच्च जाति	3	1	1 [1]	2 [2]	-	-	1 [1]	2 [2]	1 [1]	1 [1]
2·	पिछड़ी जाति	35	9	4 [0·44]	8 [0·88]	8 [0·88]	6 [0·66]	9 [1]	13 [1·44]	9 [1]	10 [1·1]
3·	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	20	5	3 [0·6]	6 [1·2]	5 [1]	10 [2]	5 [1]	6 [1·6]	3 [0·6]	7 [1·4]
4·	मुसलमान	3	3	3 [1]	6 [2]	2 [0·66]	7 [2·33]	1 [0·33]	3 [1]	1 [0·33]	2 [0·66]
5·	ईसाई	7	7	5 [0·71]	7 [1·0]	4 [0·57]	8 [1·14]	5 [0·71]	3 [0·42]	4 [0·57]	7 [1·0]
	योग	68	25	16 [0·64]	29 [1·16]	19 [0·76]	31 [1·24]	21 [0·84]	27 [1·08]	18 [0·72]	27 [1·08]

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या					
				35-40 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	40-45 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	45-50 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1.	उच्च जाति	3	1	-	-	-	-	-	-
2.	पिछड़ी जाति	35	9	3 (0.33)	7 (0.77)	2 (0.22)	4 (0.44)	2 (0.22)	1 (0.11)
3.	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	20	5	2 (0.4)	4 (0.8)	-	-	-	-
4.	मुसलमान	3	3	1 (0.33)	1 (0.33)	1 (0.33)	1 (0.33)	1 (0.33)	1 (0.33)
5.	ईसाई	7	7	6 (0.85)	1 (0.14)	-	-	1 (0.14)	1 (0.14)
	योग	68	25	12 (0.48)	13 (0.52)	3 (0.12)	5 (0.2)	4 (0.16)	3 (0.12)

" सारणी - 5.1 "

सर्वेक्षण के अन्तर्गत ग्रामीण महिलाओं को 5 जाति समूहों में वर्गीकृत किया गया है। ग्राम बूढ़ा के कुल 69 परिवारों में से 25 परिवारों की महिलाओं को सर्वेक्षण के अन्तर्गत लिया गया है। जिसमें 1 महिला उच्च जाति, 9 पिछड़ी जाति, 5 अनुसूचित जाति, 3 मुसलमान सम्प्रदाय व 7 महिलायें ईसाई सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं।

निर्धारित आयु वर्ग के अनुसार उच्च जाति के 15-20 आयु वर्ग में एक महिला ने 2 बच्चों को जन्म दिया तदुपरान्त 25-30 आयु वर्ग में 2 और 30-35 आयु वर्ग में एक बच्चे को जन्म दिया।

ग्राम बूढ़ा के 35 पिछड़ी जाति के परिवारों में से 9 परिवारों का सर्वेक्षण किया गया है जिसमें 15-20 आयु वर्ग की 4 महिलाओं ने 8 बच्चों को जन्म दिया, 20-25 आयु वर्ग की 8 महिलाओं ने 6 बच्चों को जन्म दिया, 25-30 आयु वर्ग में 9 महिलाओं ने 13 बच्चों को, 30-35 आयु वर्ग की 9 महिलाओं ने 19 बच्चों को, 35-40 आयु वर्ग में 7 बच्चों को, 40-45 आयु वर्ग में 4 बच्चों को और 45-50 आयु वर्ग में 2 महिलाओं को एक बच्चे को जन्म दिया।

अनुसूचित जाति के 5 सर्वेक्षित परिवारों में 15-20 आयु वर्ग में 3 महिलाओं ने 6 बच्चों, 20-25 आयु वर्ग में 10 बच्चों को, 25-30 आयु वर्ग में 5 महिलाओं ने 6 बच्चों को, 30-35 आयु वर्ग में महिलाओं ने 7

बच्चों को, 35-40 आयु वर्ग में 2 महिलाओं ने 4 बच्चों को जन्म दिया ।

ग्राम में मुस्लिम सम्प्रदाय के 3 परिवारों में से तीनों का सर्वेक्षण किया गया है जिसमें 15-20 आयु वर्ग में 3 महिलाओं ने 6 बच्चों, 20-25 आयु वर्ग में 2 महिलाओं ने 7 बच्चों को, 25-30 आयु वर्ग में एक महिला ने 3 बच्चों को, 30-35 आयु वर्ग में एक महिला ने 2 बच्चों को, 35-40 आयु वर्ग में एक-एक महिला ने एक बच्चे को इसी प्रकार 40-45 व 45-50 आयु वर्ग में एक-एक महिला ने एक-एक बच्चे को जन्म दिया ।

ग्राम के ईसाई सम्प्रदाय के 7 परिवारों के सर्वेक्षण में 15-20 आयु वर्ग के अन्तर्गत 5 महिलाओं ने 7 बच्चों, 20-25 आयु वर्ग में 4 महिलाओं ने 8 बच्चों, 25-30 आयु वर्ग में 5 महिलाओं ने 3 बच्चों को, 30-35 आयु वर्ग में 4 महिलाओं ने 7 बच्चों, 35-40 आयु वर्ग में 6 महिलाओं ने एक बच्चे को और 45-50 आयु वर्ग में एक महिला ने एक बच्चे को जन्म दिया ।

समग्र रूप से ग्राम बुढ़ा में 68 परिवारों में से 25 परिवारों का सर्वेक्षण किया गया है जिसमें 1 परिवार उच्च जाति, 9 पिछड़ी जाति, 5 अनुसूचित जाति, 3 मुसलमान और 7 ईसाई परिवारों की महिलाओं का विभिन्न आयु वर्ग के अन्तर्गत प्रजननित बच्चों का सर्वेक्षण किया गया है । ग्राम के सर्वेक्षित परिवारों की 15-20 आयु वर्ग की 16 महिलाओं ने 29

बच्चों को, 20-25 आयु वर्ग की 19 महिलाओं ने 31 बच्चों, 25-30 आयु वर्ग की 21 महिलाओं ने 27 बच्चों, 30-35 आयु वर्ग की 18 महिलाओं ने 27 बच्चों, 35-40 आयु वर्ग की 12 महिलाओं ने 13 बच्चों को, 40-45 आयु वर्ग की 3 महिलाओं ने 5 बच्चों और 45-50 आयु वर्ग में 4 महिलाओं ने 3 बच्चों को जन्म दिया ।

सारणी 5.1 का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने से यह तथ्य प्रकट होता है कि पिछड़ी जाति की सर्वेक्षित महिलाओं ने निर्धारित प्रत्येक आयु वर्ग में बच्चों को जन्म दिया है अर्थात इस जाति वर्ग की महिलायें 15-20 आयु वर्ग से लेकर 45-50 आयु वर्ग तक बच्चों को जन्म देने की प्रवृत्ति रखती हैं । जैसा कि सारणी से स्पष्ट है कि इस जाति वर्ग की महिलाओं द्वारा 25-30 आयु वर्ग में अत्याधिक बच्चों को प्रजनित किया है अर्थात इनका इस आयु वर्ग में प्रजनन अनुपात 1.44 स्पष्ट हुआ ।

सर्वेक्षित उच्च जाति वर्ग के परिवारों का सर्वेक्षण एवम् इस वर्ग की महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों के अनुपात को, इसलिये महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता है क्योंकि इसके अन्तर्गत केवल एक परिवार का सर्वेक्षण किया गया जिसका की प्रजनन अनुपात औसत 1:2 है ।

गाँव के अनुसूचित जाति वर्ग में सर्वेक्षण करने से यह तथ्य प्रकाश में

आया है कि 15-20 आयु वर्ग में इनका प्रजनन अनुपात 1:2 है, 20-25 में इनका प्रजनन अनुपात 1:2 है, जबकि 25-30 आयु वर्ग में इनका प्रजनन अनुपात 1·6 है, सारणी से स्पष्ट होता है कि 15-20 आयु वर्ग व 20-25 आयु वर्ग में इस जाति समूह की महिलाओं को बच्चों को जन्म देने की क्षमता अधिक होती है । इस जाति समूह में 40-45 आयु वर्ग एवम् 45-50 आयु वर्ग में बच्चों को जन्म देने की प्रवृत्ति नहीं है जैसा कि सारणी से स्पष्ट है ।

सारणी 5·1 में प्रदर्शित सर्वेक्षित मुसलमान परिवारों की प्रजनन शक्ति का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि इन परिवार की महिलाओं की प्रजनन क्षमता के लिये गये प्रत्येक आयु वर्ग में विद्यमान है । इस वर्ग की महिलाओं में 15-20 आयु वर्ग एवम् 20-25 आयु वर्ग में प्रजनन अनुपात अन्य आयु वर्ग की अपेक्षा सर्वाधिक होता है । 15-20 आयु वर्ग की इस वर्ग की महिलाओं का अनुपात 1:2, 20-25 आयु वर्ग में इनका प्रजनन अनुपात 0·7: 2·33 प्रकट हुआ है । इसके अतिरिक्त इस वर्ग में महिलाओं की प्रजनन क्षमता 45-50 आयु वर्ग तक विद्यमान रहती है ।

सर्वेक्षित ईसाई सम्प्रदाय के सात परिवारों की महिलाओं में 15-20 आयु वर्ग, 20-25 आयु वर्ग एवम् 30-35 आयु वर्ग में प्रजनन क्षमता अधिक होती है एवम् 40-45 और 45-50 आयु वर्ग में प्रजनन क्षमता कम हो

जाती है ।

सर्वेक्षित ग्राम झूठा की विभिन्न जाति समूह में निर्धारित आयु वर्ग के अन्तर्गत पिछड़ी जाति एवं मुसलमानों वर्ग के अन्तर्गत प्रजनन क्षमता सर्वाधिक स्पष्ट हुई है ।

" तारणी - 5.2"

विकास खण्ड बड़ागाँव के अन्तर्गत ग्राम आरी के ग्रामीण परिवारों की महिलाओं की प्रजनन क्षमता का विश्लेषण तारणी 5.2 के अन्तर्गत किया गया है । तारणी 5.2 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि उच्च जाति वर्ग में प्रजनन अनुपात तुलनात्मक दृष्टि से अन्य जाति वर्ग की अपेक्षा निम्न है । जबकि अनुसूचित जाति वर्ग एवं मुसलमान सम्प्रदाय की महिलाओं का प्रजनन अनुपात अधिक है ।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित पाँच परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 15-20 आयु वर्ग में अधिक है अर्थात 0.6:1 है, तदनन्तर इनका प्रजनन अनुपात कम होता गया है । इसी प्रकार अनुसूचित जाति वर्ग में 15-20 आयु वर्ग में महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0.4:0.8 है और इनके बाद के आयु वर्ग में इस वर्ग की महिलाओं का प्रजनन अनुपात कम होता गया यही स्थिति मुसलमान सम्प्रदाय के सर्वेक्षित परिवार में पायी गयी है ।

"सारणी - 5·2"

सर्वेक्षित ग्राम आरी के ग्रामीण परिवारों का जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या							
				15-20 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	20-25 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	25-30 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	30-35 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	उच्च जाति	35	5	2 (0·4)	2 (0·4)	2 (0·4)	4 (0·8)	3 (0·6)	4 (0·8)	3 (0·6)	3 (0·6)
2	पिछड़ी जाति	45	5	3 (0·6)	5 (1)	3 (0·6)	4 (0·8)	4 (0·8)	5 (1)	1 (0·2)	2 (0·4)
3	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	30	5	2 (0·4)	4 (0·8)	3 (0·6)	4 (0·8)	3 (0·6)	4 (0·8)	3 (0·6)	4 (0·8)
4	मुसलमान	3	3	2 (0·66)	2 (0·66)	3 (1)	4 (1·33)	3 (1)	5 (1·66)	2 (0·66)	2 (0·66)
5	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	113	18	9 (0·5)	13 (0·72)	11 (0·6)	16 (0·8)	13 (0·7)	18 (1)	9 (0·5)	11 (0·6)

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या					
				35-40 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	40-45 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	45-50 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1·	उच्च जाति	35	5	-	-	-	-	-	-
2·	पिछड़ी जाति	45	5	-	-	-	-	-	-
3·	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	30	5	1 (0·2)	1 (0·2)	-	-	-	-
4·	मुसलमान	3	3	1 (0·3)	1 (0·3)	-	-	1 (0·3)	1 (0·3)
5·	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	113	18	2 (0·1)	2 (0·1)	-	-	1 (0·05)	1 (0·05)

"सारणी – 5.3"

सर्वेक्षित ब्लॉकों के ग्रामीण परिवारों का जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या							
				15-20 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	20-25 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	25-30 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	30-35 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1.	उच्च जाति	10	5	4 (0.8)	7 (1.4)	4 (0.8)	7 (1.4)	3 (0.6)	4 (0.8)	–	–
2.	पिछड़ी जाति	25	5	2 (0.4)	3 (0.6)	3 (0.6)	4 (0.8)	3 (0.6)	5 (1)	2 (0.4)	3 (0.6)
3.	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	15	5	4 (0.8)	4 (0.8)	3 (0.6)	3 (0.6)	3 (0.6)	4 (0.8)	2 (0.4)	2 (0.4)
4.	मुसलमान	2	2	–	–	2 (1)	3 (1.5)	2 (1)	3 (1.5)	2 (1)	4 (2)
5.	ईसाई	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
	योग	52	17	10 (0.58)	14 (0.82)	12 (0.7)	17 (1.0)	11 (0.64)	16 (0.96)	6 (0.35)	9 (0.52)

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल प परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या					
				35-40 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	40-45 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	45-50 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1·	उच्च जाति	10	5	-	-	-	-	-	-
2·	पिछड़ी जाति	25	5	2 (0·4)	2 (0·4)	1 (0·2)	1 (0·2)	2 (0·4)	2 (0·4)
3·	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	15	5	1 (0·2)	1 (0·2)	1 (0·2)	2 (0·4)	1 (0·2)	2 (0·4)
4·	मुसलमान	2	2	-	-	-	-	-	-
5·	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	52	17	3 (0·17)	3 (0·17)	2 (0·11)	3 (0·17)	3 (0·17)	4 (0·23)

" सारणी - 5.4 "

सर्वेक्षित ग्राम गढ़ुका के ग्रामीण परिवारों का जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या							
				15-20 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	20-25 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	25-30 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	30-35 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1.	उच्च जाति	25	5	2 (0.4)	3 (0.6)	4 (0.8)	4 (0.8)	4 (0.8)	8 (1.6)	1 (0.2)	1 (0.2)
2.	पिछड़ी जाति	41	5	2 (0.4)	2 (0.4)	2 (0.4)	2 (0.4)	3 (0.6)	4 (0.8)	2 (0.4)	2 (0.4)
3.	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	33	5	2 (0.4)	2 (0.4)	4 (0.8)	5 (1)	4 (0.8)	8 (1.6)	2 (0.4)	2 (0.4)
4.	मुसलमान	3	3	2 (0.66)	3 (1)	3 (1)	5 (1.6)	2 (0.66)	3 (1)	2 (0.66)	4 (1.33)
5.	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	102	18	8 (0.44)	10 (0.55)	13 (0.72)	16 (0.88)	13 (0.72)	23 (1.27)	7 (0.38)	9 (0.50)

समग्र रूप से ग्राम आरी की ग्रामीण महिलाओं में 20-25 और 25-30 आयु वर्ग में प्रजनन अनुपात सर्वाधिक स्पष्ट हुआ है ।

" सारणी - 5.3 "

विकासखण्ड चिरगाँव के अन्तर्गत सर्वेक्षण हेतु लिये गये ग्राम बछवाँ का सारणीबद्ध आंकलन सारणी 5.3 में प्रदर्शित किया गया है ।

सर्वेक्षण हेतु लिये गये उच्च जाति वर्ग के 5 परिवारों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि इस जाति वर्ग की महिलाओं में 15-20 आयु वर्ग और 20-25 आयु वर्ग में प्रजनन अनुपात 0.8:1.4 समान रहा है इसके बाद 30-35 आयु वर्ग में इनका प्रजनन अनुपात कम हो कर 0.6:0.8 हो गया अर्थात 25 वर्ष की आयु के उपरान्त इस जाति समूह की महिलाओं में कमी पायी गयी और 30 वर्ष के उपरान्त प्रजनन दर शून्य हो गई ।

सर्वेक्षित पिछड़ी जाति की पाँच परिवार की महिलाओं का अध्ययन करने से सारणी द्वारा स्पष्ट हुआ है कि इस जाति वर्ग की महिलाओं ने प्रत्येक निर्धारित आयु वर्ग में बच्चों को जन्म दिया है और इनका उस वर्ग की महिलाओं का सर्वाधिक प्रजनन अनुपात 0.6:1, 25-30 आयु वर्ग में रहा ।

अनुसूचित जाति वर्ग के पाँच परिवारों की महिलाओं का अध्ययन करने से स्पष्ट हुआ है कि इस वर्ग की महिलाओं ने प्रत्येकआयु वर्ग में बच्चों को जन्म दिया है ।

ग्राम बैंक्वा में उपलब्ध मुसलमान सम्प्रदाय के दो परिवारों का अध्ययन करने से यह ज्ञात हुआ है कि इन परिवारों की महिलाओं की बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति वृद्धि की ओर उन्मुख है ।

ग्राम बक्वाँ के समस्त सर्वेक्षित परिवारों की महिलाओं की तीव्र प्रजनन प्रवृत्ति 15-20, 20-25, 25-30 एवम् 30-35 आयु वर्ग में सर्वाधिक परिलक्षित हुई है और इसके बाद उनकी प्रजनन प्रवृत्ति में गिरावट आयी है।

" सारणी - 5·4 "

विकासखण्ड चिरगाँव के अन्तर्गत लिये गये ग्राम गढ़का का सर्वेक्षण सारणी 5·4 में स्पष्ट किया गया है ।

उच्च जाति के परिवार की महिलाओं का सर्वेक्षण करने से सारणी 5·4 से यह स्पष्ट होता है कि इस परिवार की महिलाओं में सर्वाधिक प्रजनन प्रवृत्ति 25-30 आयु वर्ग में पायी गयी है अर्थात इस आयु वर्ग में जाति समूह में महिलाओं का अनुपात 0·8:1·6 परिलक्षित हुआ है ।

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या					
				35-40 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	40-45 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	45-50 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1.	उच्च जाति	25	5	1 (0·2)	1 (0·2)	1 (0·2)	1 (0·2)	1 (0·2)	1 (0·2)
2.	पिछड़ी जाति	41	5	1 (0·2)	1 (0·2)	2 (0·4)	3 (0·6)	1 (0·2)	1 (0·2)
3.	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	33	5	1 (0·2)	4 (0·8)	-	-	-	-
4	मुसलमान	3	3	3 (1)	3 (1)	2 (0·66)	2 (0·66)	-	-
5.	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	102	18	6 (0·33)	9 (0·50)	5 (0·27)	6 (0·33)	2 (0·11)	2 (0·11)

पिछड़ी जाति वर्ग की महिलाओं में भी 25-30 आयु वर्ग में प्रजनन अनुपात 6:0·8 अन्य आयु वर्ग की अपेक्षा सर्वाधिक स्पष्ट हुआ है।

अनुसूचित जाति वर्ग में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात 0·8:1·6, 25-30 आयु वर्ग के अन्तर्गत सर्वाधिक स्पष्ट हुआ है। जबकि मुसलमान सम्प्रदाय के परिवार की महिलाओं में विभिन्न आयु वर्ग के प्रजनन अनुपातों में विशेष उतार-चढ़ाव नहीं हुये हैं।

समग्र रूप से सर्वेक्षित ग्राम गढ़ूका की ग्रामीण महिलाओं में निर्धारित प्रत्येक आयु वर्ग के विभिन्न जाति समूह के अन्तर्गत ग्रामीण महिलाओं ने बच्चों को जन्म दिया है और जैसा कि सारणी से स्पष्ट है कि ग्राम की महिलाओं में 25-30 आयु वर्ग की महिलाओं ने सर्वाधिक बच्चों को जन्म दिया है अर्थात इस आयु वर्ग में प्रजनन अनुपात 0·72:1·27 रहा है।

"सारणी - 5·5"

सर्वेक्षित विकासखण्ड बबीना के अन्तर्गत लिये गये ग्राम बिजौली की ग्रामीण महिलाओं का जाति के आधार पर सर्वेक्षण करने से सारणी 5·5 से स्पष्ट होता है कि उच्च जाति वर्ग में सर्वेक्षित चार परिवारों में 25-30 आयु वर्ग के अन्तर्गत महिलाओं का प्रजनन अनुपात सर्वाधिक रहा है अर्थात इस आयु वर्ग में अनुपात 0·5:1·25 अन्य आयु वर्ग की तुलना में

" सारणी - 5·5 "

सर्वेक्षित ग्राम बिजौली के ग्रामीण परिवारों का जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या							
				15-20 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	20-25 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	25-30 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	30-35 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1·	उच्च जाति	14	4	4 (1)	6 (1·5)	4 (1)	6 (1·5)	2 (0·5)	5 (1·25)	1 (0·25)	2 (0·5)
2·	पिछड़ी जाति	28	6	5 (0·83)	9 (1·5)	4 (0·6)	7 (1·16)	4 (0·6)	5 (0·83)	-	-
3·	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	25	5	5 (1)	9 (1·8)	5 (1)	5 (1)	2 (0·4)	3 (0·6)	1 (0·2)	1 (0·2)
4·	मुसलमान	5	5	3 (0·6)	8 (1·6)	4 (0·8)	5 (1)	3 (0·6)	6 (1·2)	3 (0·6)	4 (0·8)
5·	ईसाई	15	5	3 (0·6)	4 (0·8)	3 (0·6)	5 (1)	3 (0·6)	3 (0·6)	-	-
	योग	87	25	20 (0·8)	36 (1·44)	20 (0·8)	28 (1·12)	14 (0·56)	22 (0·88)	5 (0·2)	5 (0·2)

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या					
				35-40 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	40-45 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	45-50 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1·	उच्च जाति	14	4	-	-	-	-	-	-
2·	पिछड़ी जाति	28	6	-	-	-	-	-	-
3·	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	25	5	-	-	-	-	-	-
4·	मुसलमान	5	5	2 (0·4)	4 (0·8)	1 (0·2)	1 (0·2)	1 (0·2)	1 (0·2)
5·	ईसाई	15	5	-	-	-	-	-	-
	योग	87	25	2 (0·08)	4 (0·16)	1 (0·04)	1 (0·04)	1 (0·04)	1 (0·04)

सर्वाधिक उद्घाटित हुआ है और 35 वर्ष के बाद इस वर्ग के महिलाओं की प्रजनन क्षमा शून्य हो गयी है।

पिछड़ी जाति वर्ग के सर्वेक्षित छः परिवारों में महिलाओं में 15-20, और 20-25 आयु वर्ग में सर्वाधिक बच्चों को जन्म दिया है।

अनुसूचित जाति वर्ग के सर्वेक्षित पाँच ग्रामीण परिवारों की महिलाओं में 15-20 आयु वर्ग में सर्वाधिक बच्चों को जन्म दिया है अर्थात इस जाति वर्ग की महिलाओं में इतने कम आयु वर्ग में बच्चों की सर्वाधिक जन्म दर अनुपात होने से यह स्पष्ट होता है कि ग्राम के अन्तर्गत इस वर्ग में बाल विवाह की प्रथा प्रचलित है।

ग्राम के अन्तर्गत सर्वेक्षित किये गये उपलब्ध पाँच मुस्लिम परिवारों का सर्वेक्षण करने से सारणी 5.5 से यह स्पष्ट होता है कि इस सम्प्रदाय की महिलाओं की प्रजनन क्षमता अत्याधिक लम्बे समय तक अर्थात 50 वर्ष तक विद्यमान रहती है। इस सम्प्रदाय की महिलाओं के सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि इनका विवाह अल्प आयु में हुआ है क्योंकि 15-20 आयु वर्ग के मध्य इनकी प्रजनन क्षमता अन्य आयु वर्ग की अपेक्षा प्रकट हुई है अर्थात इस आयु वर्ग में इनका अनुपात 0.6:1.6 रहा है।

ग्राम के अन्तर्गत सर्वेक्षित पाँच ईसाई सम्प्रदाय की महिलाओं का सर्वेक्षण करने से स्पष्ट हुआ है कि इस सम्प्रदाय की महिलाये अत्याधिक

जनसंख्या वृद्धि में सहायक नहीं है क्योंकि इनका प्रजनन काल 15-30 वर्ष तक ही पाया गया है।

सम्पूर्ण रूप से ग्राम बिजौली के सर्वेक्षित 25 परिवारों में विभिन्न जाति समूह में समग्र प्रजनन काल 15-20, 25-30 एवम् 25-30 अर्थात 15-30 आयु वर्ग के बीच प्रजनन अर्थात बच्चे उत्पन्न करने का काल सर्वाधिक उपयुक्त कहा जा सकता है और 30 वर्ष के उपरान्त तदनन्तर गिरावट आती गयी है।

" सारणी - 5.6 "

सर्वेक्षित विकासखण्ड बबीना के अन्तर्गत ग्राम भट्टागाँव की ग्रामीण महिलाओं की प्रजनन क्षमता को विभिन्न जाति एवम् निर्धारित आयु समूह के अन्तर्गत स्पष्ट करने के लिये आँकड़ों को सारणी 5.6 में स्पष्ट किया गया है।

उच्च जाति के पाँच परिवारों का सर्वेक्षण करने से यह स्पष्ट होता है कि 15-20 और 20-25 आयु वर्ग में इन परिवार की महिलाओं की प्रजनन क्षमता अधिक है।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित पाँच परिवारों की महिलाओं में विभिन्न आयु वर्ग में कोई अधिक उतार-चढ़ाव नहीं है।

A STUDY OF GENETICS OF YIELD CAMPONENTS IN BARLEY (*Hordium vulgare* L.)

THESIS

Submitted in Partial Fulfilment of the Requirements for the Award of the Degree of

Master of Science

IN

AGRICULTURE

(Genetics & Plant Breeding)

Bundelkhand University, Jhansi (U.P.)

1992

BY

PAVAN KUMAR
Roll No. 16410

Under the Supervision of

DR. S. P. SINGH
Head of the Department

DEPARTMENT OF GENETICS & PLANT BREEDING
BRAHMANAND POST GRADUATE COLLEGE
RATH (HAMIRPUR) U. P.

" सारणी – 5.6 "

सर्वेक्षित ग्राम भट्टागाँव के ग्रामीण परिवारों का जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या							
				15-20 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	20-25 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	25-30 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	30-35 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1·	उच्च जाति	10	5	3 [0·6]	5 [1]	5 [1]	7 [1·4]	5 [1]	5 [1]	2 [0·4]	3 [0 6]
2	पिछड़ी जाति	35	5	5 [1]	6 [1·2]	5 [1]	6 [1·2]	5 [1]	8 [1·6]	2 [0·4]	2 [0·4]
3·	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	41	5	3 [0·6]	6 [1·2]	4 [0·8]	7 [1·4]	3 [0·6]	3 [0·6]	1 [0·2]	4 [0·8]
4	मुसलमान	3	3	2 [0·66]	6 [2]	3 [1]	6 [2]	3 [1]	3 [1]	1 [0·3]	1 [0·3]
5·	ईसाई	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
	योग	89	18	13 [0·72]	23 [1 27]	17 [0·94]	26 [1·44]	16 [0·88]	19 [1·05]	6 [0·33]	10 [0·55]

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या					
				35-40 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	40-45 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	45-50 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1.	उच्च जाति	10	5	1 (0·20)	1 (0·20)	-	-	-	-
2.	पिछड़ी जाति	35	5	-	-	-	-	-	-
3	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	41	5	1 (0·2)	1 (0·2)	1 (0·2)	1 (0·2)	-	-
4	मुसलमान	3	3	-	-	-	-	-	-
5	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	89	18	2 (0·11)	2 (0·11)	1 (0·05)	1 (0 05)		

जबकि अनुसूचित जाति वर्ग के सर्वेक्षित पाँच परिवारों में 15-20, 20-25 आयु वर्ग में बच्चा पैदा करने की प्रवृत्ति अधिक है और जैसा कि सारणी से स्पष्ट है कि इस जाति वर्ग की महिलाओं का प्रजनन काल 45 वर्ष तक घटते हुये क्रम में चलता है ।

भट्टागाँव में उपलब्ध तीन मुस्लिम परिवारों का सर्वेक्षण करने से ज्ञात होता है कि इस सम्प्रदायों की महिलाओं में प्रजनन क्षमता अधिक होती है क्योंकि 15-20 आयु वर्ग और 20-25 आयु वर्ग में इनका अनुपात क्रमशः 0·66:2 और 1:2 पाया गया ।

ग्राम भट्टा गाँव के विभिन्न जाति वर्ग के परिवारों का सर्वेक्षण करने से यह स्पष्ट होता है कि इस ग्राम में 15-20 आयु वर्ग में महिलाओं की प्रजनन क्षमता सर्वाधिक उद्घाटित हुई है अर्थात इस आयु वर्ग में प्रजननता बच्चों का अनुपात 0·7:1·27 रहा है । तदन्तर इसमें गिरावट आयी है ।

" <u>सारणी - 5·7</u> "

विकासखण्डों के अन्तर्गत शोध प्रविधियों द्वारा चयनित किये गये छः ग्रामों की ग्रामीण महिलाओं को विभिन्न जाति वर्ग के अन्तर्गत विभाजित करके उन्हें निर्धारित आयु वर्ग के आधार पर जन्म दिये बच्चों का आंकलन

सारणी 5·7 द्वारा स्पष्ट किया गया है -

सारणी 5·7 द्वारा स्पष्ट है कि सर्वेक्षण हेतु लिये गये 121 ग्रामीण परिवारों की महिलाओं को विभिन्न जाति समूह के अन्तर्गत विभाजित किया गया है जिनमें 25 परिवारों, उच्च जाति, 35 पिछड़ी जाति, 30 अनुसूचित जाति, 13 मुसलमान एवं 12 ईसाई वर्ग के ग्रामीण परिवारों को अध्ययन हेतु लिया गया है।

उच्च जाति की ग्रामीण महिलाओं का विभिन्न आयु वर्ग में सर्वेक्षण करने से सारणी द्वारा यह स्पष्ट होता है कि इस वर्ग की महिलाओं में 25-30 आयु वर्ग में बच्चे अधिक पैदा होते हैं, अपेक्षाकृत अन्य आयु वर्ग की तुलना में। वैसे 15-20 और 20-25 आयु वर्ग में भी प्रजनन अनुपात अधिक रहता है जबकि 35 वर्ष की आयु के उपरान्त इनकी प्रजनन प्रवृत्ति नगण्यता की ओर अग्रसर हो जाती है।

पिछड़ी जाति की ग्रामीण महिलाओं में सर्वाधिक बच्चा पैदा करने की प्रजनन काल 25-30 आयु वर्ग के बीच सर्वेक्षण द्वारा स्पष्ट हुआ है। इस आयु वर्ग में इन महिलाओं का बच्चा पैदा करने का अनुपात 0·8:1·14 रहा है।

सर्वेक्षित अनुसूचित जाति की ग्रामीण महिलाओं में सर्वाधिक बच्चे 15-20 आयु वर्ग में पैदा हुये हैं इससे यह स्पष्ट होता है कि इस जाति समूह

में अल्प आयु में विवाह करने की प्रवृत्ति अभी भी विद्यमान है।

मुसलमान सम्प्रदाय की ग्रामीण महिलाओं के सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता कि इस सम्प्रदाय की महिलाओं में बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति बहुत अधिक है और इनका 15-20, 20-25, 25-30 और 30-35 आयु वर्ग में प्रजनन अनुपात क्रमशः 0·6:1·31, 0·89:1·57, 0·78:1·27, और 0·57:1·10 प्रकट हुआ है। जिससे स्पष्ट होता है कि विभिन्न जाति समूहों में विभाजित समस्त हिन्दू परिवारों की अपेक्षा मुस्लिम परिवार की महिलाओं की बच्चे पैदा करने का अनुपात एवम् प्रजनन काल अधिक होता है।

सर्वेक्षित ईसाई वर्ग की ग्रामीण महिलाओं में 15-20 और 20-25 आयु वर्ग में अधिक बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति होती है परन्तु 40 वर्ष के उपरान्त इस सम्प्रदाय में बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति शून्य हो जाती है। समस्त सर्वेक्षित परिवारों की अपेक्षा ईसाई सम्प्रदाय में प्रजनन काल कम होता है। जो कि सारणी से स्पष्ट है।

सर्वेक्षित समस्त ग्रामीण महिलाओं में उच्च प्रजनन काल 15-30 वर्ष के मध्य स्पष्ट हुआ है और इसके उपरान्त इसमें गिरावट आती गयी है। जो कि सारणी से स्पष्ट होता है। 20-25 आयु वर्ग में ग्रामीण महिलाओं में अधिक बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति परिलक्षित हुयी है।

A STUDY OF GENETICS OF YIELD CAMPONENTS IN BARLEY (*Hordium vulgare* L.)

THESIS

Submitted in Partial Fulfilment of the Requirements for the Award of the Degree of

Master of Science

IN

AGRICULTURE

(Genetics & Plant Breeding)

Bundelkhand University, Jhansi (U.P.)

1992

BY

PAVAN KUMAR
Roll No. 16410

Under the Supervision of

DR. S. P. SINGH

Head of the Department

DEPARTMENT OF GENETICS & PLANT BREEDING
BRAHMANAND POST GRADUATE COLLEGE
RATH (HAMIRPUR) U. P.

सारणी 5.7

सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र के परिवारों की महिलाओं का जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	मद		समस्त ग्रामों का कुल योग				
			परिवारों की श्रेणियाँ				
			उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति एवं जनजाति	मुसलमान	ईसाई	
1	2		(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
1.	कुल परिवारों की संख्या		97	209	164	64	22	556
2.	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या		25	35	30	19	12	121
3.	"ए" समूह	15-20 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	16 (0.64)	21 (0.6)	19 (0.63)	12 (0.63)	8 (0.66)	76 (0.62)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	25 (1.0)	33 (0.9)	30 (1)	25 (1.31)	11 (0.91)	124 (1.02)
	"बी" समूह	20-25 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	19 (0.76)	25 (0.71)	24 (0.82)	17 (0.89)	7 (0.58)	92 (0.76)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	28 (1.12)	29 (0.82)	34 (0.13)	30 (1.57)	13 (1.08)	134 (1.10)
	"सी" समूह	25-30 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	18 (0.72)	28 (0.8)	19 (0.63)	15 (0.78)	9 (0.75)	89 (0.73)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	28 (1.12)	40 (1.14)	28 (0.93)	23 (1.21)	6 (0.50)	125 (1.03)
	"डी" समूह	30-35 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	8 (0.32)	16 (0.45)	12 (0.4)	11 (0.57)	4 (0.33)	51 (0.42)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	10 (0.4)	19 (0.54)	20 (0.6)	21 (1.10)	7 (0.58)	77 (0.63)

क्रमांक	मद	समस्त ग्रामों का कुल योग — परिवारों की श्रेणियाँ: उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति एवं जनजाति	मुसलमान	ईसाई	
1	2	33	34	35	36	37	38
1·	कुल परिवारों की संख्या	97	209	164	64	22	556
2·	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	25	35	30	19	12	121
3·	"ई" समूह 35–40 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	2 (0·08)	6 (0·17)	6 (0·2)	7 (0·36)	6 (0·75)	27 (0·22)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	2 (0·08)	10 (0·26)	11 (0·36)	9 (0·47)	1 (0·08)	33 (0·27)
	"एफ" समूह 40–45 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	1 (0·04)	5 (0·14)	2 (0·06)	4 (0·21)	–	12 (0·09)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	1 (0·04)	8 (0·22)	3 (0·10)	4 (0·21)	–	16 (0·13)
	"जी" समूह 45–50 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	1 (0·04)	5 (0·14)	1 (0·03)	3 (0·15)	–	10 (0·08)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	1 (0·04)	4 (0·11)	2 (0·06)	3 (0·15)	–	10 (0·08)

" सारणी - 5·8 "

सर्वेक्षित नगरीय क्षेत्र झाँसी के परिवारों का जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या							
				15-20 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	20-25 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	25-30 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	30-35 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1·	उच्च जाति	-	20	7 (0·35)	12 (0 60)	13 (0·65)	27 (1·35)	8 (0·40)	15 (0·75)	8 (0·40)	10 (0·50)
2	पिछड़ी जाति	-	20	8 (0·40)	8 (0·40)	17 (0·85)	31 (1·55)	3 (0·15)	7 (0·35)	8 (0 40)	11 (0·55)
3	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	-	20	15 (0·75)	30 (1·50)	15 (0·75)	20 (1)	10 (0·50)	10 (0 50)	5 (0·25)	5 (0·25)
4·	मुसलमान	-	20	20 (1)	44 (2 20)	16 (0·80)	40 (2)	16 (0·80)	16 (0 80)	-	-
5·	ईसाई	-	20	10 (0·50)	10 (0·50)	20 (1)	20 (1)	20 (1)	20 (1)	-	-
	योग		100	60 (0·60)	104 (1·04)	81 (0·81)	138 (1·38)	57 (0·57)	68 (0·68)	21 (0·21)	26 (0 26)

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में महिलाओं के आयु वर्ग के अनुसार जन्म दिये बच्चों की संख्या					
				35-40 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	40-45 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	45-50 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1.	उच्च जाति	-	20	-	-	-	-	-	-
2.	पिछड़ी जाति	-	20	-	-	-	-	-	-
3	अनुसूचित जाति या निम्न वर्ग	-	20	-	-	-	-	-	-
4.	मुसलमान	-	20	-	-	-	-	-	-
5	ईसाई	-	20	-	-	-	-	-	-
	योग	-	100	-	-	-	-	-	-

"सारणी – 5.8"

सारणी 5.8 में सर्वेक्षित नगरीय क्षेत्र झाँसी के परिवारों का जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या का अंकन स्पष्ट किया गया है।

जैसा कि पूर्व में उल्लेखित किया गया है कि नगरीय क्षेत्र के सर्वेक्षण हेतु अधिकांश परिवार सेवा नियोजित सरकारी कर्मचारी हैं। सर्वेक्षण के अन्तर्गत 100 परिवारों को अध्ययन हेतु शोध प्रविधि के अनुसार चुना गया अध्ययन के लिये गये प्रत्येक वर्ग में परिवारों की संख्या समान है। उच्च जाति के अन्तर्गत सर्वेक्षित 20 परिवारों की महिलाओं का सर्वेक्षण करने से ज्ञात हुआ है कि उच्च जाति में 15-35 वर्ष के मध्य महिलाओं में बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति पर्याप्त मात्रा में पायी जाती है जबकि 35-50 आयु वर्ग में बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति शून्य होती है। इसके अतिरिक्त 20-25 आयु वर्ग में महिलाओं का प्रजनन अनुपात सर्वाधिक है। अर्थात इस आयु वर्ग में इसका अनुपात 0.65:1.35 है।

सर्वेक्षित पिछड़ी जाति के 20 परिवारों में भी प्रजननता अनुपात 20-25 आयु वर्ग में सर्वाधिक पाया गया है।

सर्वेक्षित अनुसूचित जाति के 20 नगरीय परिवारों में ~~सर्वाधिक~~ महिलाओं में सर्वाधिक प्रजननता अनुपात 15-20 आयु वर्ग में सर्वाधिक परिलक्षित हुआ

है अर्थात इस आयु वर्ग में नगरीय महिलाओं में अनुपात 0·75:1·50 है।

सर्वेक्षित नगरीय मुस्लिम महिलाओं में प्रजननता दर 15-30 वर्ष के मध्य बहुत ही अत्याधिक पायी गयी है अर्थात 15-20, 20-25 और 25-30 आयु वर्ग में मुसलमान महिलाओं का प्रजननता अनुपात क्रमशः 1:2·20, 0·80:2 और 0·80:0 80 पाया गया ।

सर्वेक्षित ईसाई सम्प्रदाय के नगरीय परिवारों में प्रजननता अनुपात 15-30 वर्ष तक समान गति से स्थिर पाया गया ।

सारणी 5·8 का अवलोकन करने से एक महत्वपूर्ण तथ्य यह उद्घाटित होता है कि नगरीय क्षेत्र की महिलाओं में 35 वर्ष के उपरान्त बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति नहीं पायी गयी है। यह तथ्य प्रत्येक जाति एवम् सम्प्रदाय वर्ग के अंकन से स्पष्ट होती है। समग्र रूप से नगरीय महिलाओं में 15-20 एवम् 20-25 आयु वर्ग में प्रजननता अनुपात क्रमशः 0·60:1·04 और 0·81:1·38 पाया गया है जबकि 25-30, 30-35 और 35-40 आयु वर्ग में प्रजननता अनुपात क्रमशः कम होता गया है और 35 वर्ष के उपरान्त सम्पूर्ण नगरीय महिलाओं की प्रजनन दर नगण्य अंकलित हुयी है।

"सारणी- 5·9"

सारणी 5·9 में ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं का जाति के

सारणी - 5·9

समस्त सर्वेक्षित ग्रामीण व नगरीय परिवारों को महिलाओं का जाति के आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में प्रजनित बच्चों की संख्या द्वारा ग्रामीण व नगरीय प्रजननता विभिन्नता का आँकलन

क्रमांक	मद	ग्रामीण सर्वेक्षित परिवारों की श्रेणियाँ					नगरीय सर्वेक्षित परिवारों की श्रेणियाँ					ग्रामीण	नगरीय
		उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति जनजाति	मुसलमान	ईसाई	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति जनजाति	मुसलमान	ईसाई		
1	कुल परिवारों की संख्या	91	209	164	64	22	-	-	-	-	-	556	-
2·	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	25	35	30	19	12	20	20	20	20	20	121	100
"ए"	15-20 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	16 (0·64)	21 (0·6)	19 (0·63)	12 (0·63)	8 (0·66)	7 (0·35)	8 (0·40)	15 (0·75)	20 (1)	10 (0·80)	76 (0·62)	60 (0·60)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	25 (1·0)	33 (0·9)	30 (1)	25 (1·3)	11 (0·91)	12 (0·60)	8 (0·40)	30 (1·50)	44 (2·20)	10 (0·50)	124 (1·02)	104 (1·04)
"बी"	20-25 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	19 (0·76)	25 (0·7)	24 (0·82)	17 (0·89)	7 (0·58)	13 (0·65)	17 (0·85)	15 (0·75)	16 (0·80)	20 (1)	92 (0·76)	81 (0·81)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	28 (1·12)	29 (0·82)	34 (1·13)	31 (1·57)	13 (1·08)	27 (1·35)	31 (1·55)	20 (1)	40 (2)	20 (1)	134 (1·10)	138 (1·38)
"सी"	25-30 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	18 (0·72)	28 (0·8)	19 (0·63)	15 (0·78)	9 (0·75)	8 (0·40)	3 (0·15)	10 (0·50)	16 (0·80)	20 (1)	89 (0·73)	57 (0·5)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	28 (1·12)	40 (1·14)	28 (0·93)	23 (1·21)	6 (0·50)	15 (0·75)	7 (0·35)	10 (0·50)	16 (0·80)	20 (1)	125 (1·03)	68 (0·68)

क्रमांक	मद	ग्रामीण सर्वेक्षित परिवारों की श्रेणियाँ					नगरीय सर्वेक्षित परिवारों की श्रेणियाँ					ग्रामीण	नगरीय
		उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति/जनजाति	मुसलमान	ईसाई	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति/जनजाति	मुसलमान	ईसाई		
1·	कुल परिवारों की संख्या	91	209	164	64	22	-	-	-	-	-	556	-
2·	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	25	35	30	19	12	20	20	20	20	20	121	100
"डी"	30-35 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	8 (0·32)	16 (0·45)	12 (0·4)	11 (0·57)	4 (0·33)	8 (0·40)	8 (0·40)	5 (0·25)	-	20 (1)	51 (0·42)	21 (0·2)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	10 (0·4)	19 (0·54)	20 (0·6)	21 (1·10)	7 (0·58)	10 (0·50)	11 (0·55)	5 (0·25)	-	20 (1)	77 (0·63)	26 (0·2)
"ई"	35-40 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	2 (0·08)	6 (0·17)	6 (0·2)	7 (0·36)	6 (0·75)	-	-	-	-	-	27 (0·22)	-
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	2 (0·08)	10 (0·28)	11 (0·36)	9 (0·47)	1 (0·08)	-	-	-	-	-	33 (0·27)	-
"एफ"	40-45 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	1 (0·04)	5 (0·14)	2 (0·06)	4 (0·21)	-	-	-	-	-	-	12 (0·09)	-
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	1 (0·04)	8 (0·22)	3 (0·10)	4 (0·21)	-	-	-	-	-	-	16 (0·13)	-
"जी"	45-50 आयु वर्ग में परिवारों में महिलाओं की संख्या	1 (0·04)	5 (0·14)	1 (0·03)	3 (0·15)	-	-	-	-	-	-	10 (0·08)	-
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	1 (0·04)	4 (0·11)	2 (0·06)	3 (0·15)	-	-	-	-	-	-	10 (0·08)	-

आधार पर निर्धारित आयु वर्ग में प्रजननता विभिन्नता का विश्लेषण किया गया है।

जैसा कि सारणी से स्पष्ट है कि 15-20 आयु वर्ग में ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं का प्रजननता अनुपात क्रमशः 1.02 और 1.04 है। और 20-25 में यह अनुपात क्रमशः 1.10 और 1.38 है। एवम् 25-30 आयु वर्ग में अनुपात क्रमशः 1.03 और 0.68 हो गया। अनुपातिक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 15-25 आयु वर्ग तक ग्रामीण एवम् नगरीय महिलाओं में महत्वपूर्ण प्रजननता विभिन्नता नहीं है। जबकि 25-30 आयु वर्ग में बहुत ही अधिक प्रजननता विभिन्नता पाई गई है। अर्थात नगरीय क्षेत्र में प्रजनन अनुपात 0.68 और ग्रामीण क्षेत्र में 1.03 पाया गया है। इसके अतिरिक्त 30-35 और 35-40 आयु वर्ग में ग्रामीण और नगरीय प्रजननता में बहुत अन्तर पाया गया है और यह अनुपात क्रमशः 0.42:0.63, और 0.2:0.2 पाया गया जैसा कि सारणी से स्पष्ट होता है कि 35 वर्ष के उपरान्त नगरीय क्षेत्र में प्रजननता अनुपात शून्य हो गया जबकि ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में पर्याप्त प्रजननता परिलक्षित होता है।

इसके अतिरिक्त सारणी 5.9 से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में प्रजननता काल बहुत लम्बे समय तक होता है अर्थात 50 वर्ष तक बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति होती है जबकि नगरीय क्षेत्र में प्रजनन प्रवृत्ति मुख्य रूप से 35 वर्ष तक ही पायी है अर्थात सारणी से

स्पष्ट होता है कि ग्रामीण और नगरीय क्षेत्र की महिलाओं में विभिन्न आयु वर्ग में प्रजननता विभिन्नता पायी जाती है।

वर्तमान समय में प्रति व्यक्ति आय को आर्थिक स्तर व आर्थिक उन्नति या आर्थिक प्रगति का सूचक माना जाता है। जबकि हमारे देश में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के कारण से आर्थिक उन्नति का स्पष्ट सूचक नहीं माना जा सकता क्योंकि माँग की अपेक्षा पूर्ति में न्यूनता के कारण वस्तुओं के मूल्यों में हुई वृद्धि की अपेक्षा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि नहीं हुई है। वैसे आर्थिक विकास या आर्थिक स्तर के मापन के लिए कोई समुचित व स्पष्ट तकनीक अभी विकसित नहीं हो पायी है, इसलिये इसी आधार पर आर्थिक उन्नति का मापन किया जाता है और वर्तमान में हमारे देश में प्रति व्यक्ति की वार्षिक आय के आधार पर गरीबी की रेखा का निर्धारण किया जाता है, वैसे प्रति व्यक्ति कैलोरिक उपभोग द्वारा भी उसकी आर्थिक सम्पन्नता का मापन किया जा सकता है परन्तु इसका निर्धारण करना अत्यन्त जटिल व प्रक्रिया अधिक लम्बी है। इसलिये आर्थिक स्तर पर ग्रामीण-नगरीय प्रजननता विभिन्नता का मापन प्रति व्यक्ति वार्षिक आय द्वारा मापने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में आर्थिक स्तर के आधार पर प्रजननता विभिन्नता का आंकलन उनकी वार्षिक आय के आधार पर किया

A STUDY OF GENETICS OF YIELD CAMPONENTS IN BARLEY (*Hordium vulgare* L.)

THESIS

Submitted in Partial Fulfilment of the Requirements for the Award of the Degree of

Master of Science

IN

AGRICULTURE

(Genetics & Plant Breeding)

Bundelkhand University, Jhansi (U.P.)

1992

BY

PAVAN KUMAR

Roll No. 16410

Under the Supervision of

DR. S. P. SINGH

Head of the Department

DEPARTMENT OF GENETICS & PLANT BREEDING
BRAHMANAND POST GRADUATE COLLEGE
RATH (HAMIRPUR) U. P.

" तारणी - 5·10 "

सर्वेक्षित ग्राम बूढ़ा के ग्रामीण परिवारों का वार्षिक आय व जाति के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में वार्षिक आय के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या									
				3500 से कम आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	3500-5000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	5000-7000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	7000-10000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	10000 से ऊपर आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1·	उच्च जाति	3	1	-	-	-	-	-	-	1 (1)	5 (5)	-	-
2	पिछड़ी जाति	35	9	-	-	2 (0·22)	12 (1·33)	1 (0·11)	3 (0·33)	1 (0·11)	4 (0·44)	4 (0·44)	18 (2)
3	अनुसूचित जाति एवं जनजाति	20	5	-	-	-	-	-	-	-	-	5 (1)	32 (6·4)
4·	मुसलमान	3	3	-	-	-	-	-	-	-	-	3 (1)	15 (5)
5·	ईसाई	7	7	-	-	1 (0·14)	4 (0·58)	-	-	1 (0·14)	7 (1)	5 (0·72)	30 (4·3)
	योग	68	25	-	-	3 (0·12)	16 (0·64)	1 (0·04)	3 (0·12)	3 (0·12)	16 (0·64)	17 (0·68)	95 (3·8)

गया है। सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र में विकास खण्ड बड़ागाँव के ग्राम कूढ़ा में जाति के आधार पर सर्वेक्षित 25 परिवारों को 5 आय समूह में विभाजित किया गया है। और इसी प्रकार प्रत्येक ग्राम के परिवारों को 5 आय समूहों में विभाजित किया गया है।

"सारणी - 5·10"

सारणी 5·10 का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि ग्राम कूढ़ा के सर्वेक्षित एक उच्च जाति के परिवार में प्रजननता अनुपात 1:5 है अर्थात 7,000-10,000 आय वर्ग में परिवार में 5 बच्चों का जन्म हुआ इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सम्पन्नता होने के कारण बच्चों की बढ़ती संख्या पर अंकुश लगाने का प्रयास नहीं किया जा रहा है।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 9 परिवारों का अनेक दृष्टिकोणों से विश्लेषण किया जा सकता है। जैसा कि सारणी 5·10 से स्पष्ट है कि 3500-500 आय वर्ग के 2 परिवारों में 12 बच्चों का जन्म हुआ अर्थात अनुपात 0·22:1·33 रहा, जो कि तुलनात्मक दृष्टि से अन्य आय वर्ग के इन्हीं जाति के परिवारों में सर्वाधिक है अतः स्पष्ट है कि पिछड़ी जाति में आय कम प्राप्त परिवार इस और अधिक ध्यान नहीं दे रहे हैं कि आय कम है तो बच्चे कम पैदा करें इसका कारण अज्ञान, अशिक्षा व भविष्य के प्रति

A STUDY OF GENETICS OF YIELD CAMPONENTS IN BARLEY (*Hordium vulgare* L.)

THESIS

Submitted in Partial Fulfilment of the Requirements for the Award of the Degree of

Master of Science

IN

AGRICULTURE

(Genetics & Plant Breeding)

Bundelkhand University, Jhansi (U.P.)

1992

BY

PAVAN KUMAR

Roll No. 16410

Under the Supervision of

DR. S. P. SINGH

Head of the Department

DEPARTMENT OF GENETICS & PLANT BREEDING

BRAHMANAND POST GRADUATE COLLEGE

RATH (HAMIRPUR) U. P.

सजगता में कमी हो सकता है ।

सर्वेक्षित अनुसूचित जाति वर्ग के 5 परिवारों में प्रजननता अनुपात 1:6 2 पाया गया है यह अनुपात 10,000 आय से अधिक परिवारों का है । अर्थात जैसा कि उच्च जाति के इसी ग्राम के सर्वेक्षण से स्पष्ट है कि प्रजनन अनुपात 10,000 से अधिक आय वर्ग में अधिक पाया गया है । परन्तु अनुसूचित जाति वर्ग में अधिक पाया गया है । परन्तु अनुसूचित जाति वर्ग में इस आय वर्ग में प्रजनन अनुपात उच्च जाति वर्ग के इसी आय वर्ग के अनुपात से अधिक है ।

मुसलमान सम्प्रदाय जो कि 10,000 से अधिक आय वर्ग के अन्तर्गत आते हैं, में प्रजनन अनुपात 1:5 है । अर्थात 10,000 से आय वर्ग के ~~अधिक~~ एक मुसलमान परिवार ने 5 बच्चों को जन्म दिया है ।

ग्राम बूढ़ा के सर्वेक्षित 7 ईसाई परिवारों को तीन आय समूह में विभाजित किया गया है इसमें सबसे अधिक प्रजनन अनुपात 7000-10000 आय वर्ग के परिवार का है अर्थात 1:7 है परन्तु इस वर्ग में सर्वेक्षित एक परिवार ही आता है, अतः महत्वपूर्ण निर्णयात्मक निष्कर्ष नहीं माना जा सकता है, जबकि 10,000 से अधिक आय वाले 5 परिवारों में 30 बच्चे पैदा हुए है अर्थात इस वर्ग में इस सम्प्रदाय का प्रजनन अनुपात 0·72:4·3 उद्घाटित हुआ है ।

A STUDY OF GENETICS OF YIELD CAMPONENTS IN BARLEY (*Hordium vulgare* L.)

THESIS

Submitted in Partial Fulfilment of the Requirements for the Award of the Degree of

Master of Science

IN

AGRICULTURE

(Genetics & Plant Breeding)

Bundelkhand University, Jhansi (U.P.)

1992

BY

PAVAN KUMAR

Roll No. 16410

Under the Supervision of

DR. S. P. SINGH

Head of the Department

DEPARTMENT OF GENETICS & PLANT BREEDING
BRAHMANAND POST GRADUATE COLLEGE
RATH (HAMIRPUR) U. P.

समग्र रूप से ग्राम बूढ़ा में 3500-5000, 7000-10000 एवं 10000 से अधिक आय वर्ग के परिवारों में प्रजनन अनुपात क्रमश: 0·12: 0·64, 0·12:0·64 एवं 0·68:3·8 पाया गया है, जो लगभग समान स्पष्ट होता है।

"सारणी - 5·11"

विकासखण्ड बड़ागाँव के अन्तर्गत सर्वेक्षित दूसरे गाँव आरी में 18 परिवारों का विभिन्न आय समूह के अन्तर्गत सर्वेक्षण किया गया है जिसमें 5 परिवारों को 5 जाति व सम्प्रदाय श्रेणी में विभाजित किया गया है। उच्च जाति में सर्वाधिक प्रजननता 3500 से 5000 आय वर्ग में परिवारों में, पिछड़ी जाति में 10000 से ऊपर आय वाले परिवारों में, अनुसूचित जाति वर्ग में 3500 से कम आय वर्ग के परिवारों में एवं मुसलमान सम्प्रदाय में 3500 से 5000 आय वर्ग के परिवारों में सर्वाधिक प्रजननता उपरोक्त सारणी द्वारा उद्घाटित हुयी है।

सम्पूर्ण सर्वेक्षित परिवारों में 3500 से 5000 आय में सर्वाधिक प्रजननता अर्थात बच्चे प्रजनन की प्रवृत्ति पायी गयी है अर्थात इस आय व में प्रजनन अनुपात 0·5:1·94 प्रदर्शित हुआ है।

"सारणी -5·11"

सर्वेक्षित ग्राम आरी के ग्रामीण परिवारों का वार्षिक आय व जाति के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में वार्षिक आय के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या									
				3500 से कम आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	3500 से 5000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	5000-7000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	7000-10000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	10000 से ऊपर आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1·	उच्च जाति	35	5	2 (0·4)	4 (0·8)	2 (0·4)	8 (1·6)	-	-	-	-	1 (0·2)	2 (0·4)
2·	पिछड़ी जाति	45	5	1 (0·2)	3 (0·6)	1 (0 2)	3 (0·6)	-	-	-	-	3 (0·6)	10 (2)
3·	अनुसूचित जाति एवं जनजाति	30	5	1 (0 2)	4 (0·8)	4 (0·8)	14 (2·8)	-	-	-	-	-	-
4·	मुसलमान	3	3	1 (0·33)	4 (1·33)	2 (0·66)	10 (3 3)	-	-	-	-	-	-
5·	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	113	18	5 (0·27)	15 (0·83)	9 (0·5)	35 (1·94)	-	-	-	-	4 (0·22)	12 (0·66)

" सारणी - 5.12 "

सर्वेक्षित ग्राम बक्की के ग्रामीण परिवारों का वार्षिक आय व जाति के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवार की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में वार्षिक आय के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या									
				3500 से कम आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	3500 से 5000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	5000-7000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	7000-10000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	10000 से ऊपर आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1.	उच्च जाति	10	5	-	-	2 (0·4)	6 (1·2)	3 (0·6)	12 (2·4)	-	-	-	-
2.	पिछड़ी जाति	25	5	3 (0·6)	9 (1·8)	1 (0·2)	3 (0·6)	1 (0 2)	5 (1·0)	-	-	-	-
3	अनुसूचित जाति जनजाति	15	5	3 (0·6)	8 (1·6)	2 (0·4)	10 (2·0)	-	-	-	-	-	-
4.	मुसलमान	2	2	-	-	1 (0·5)	5 (2·5)	-	-	1 (0·5)	5 (2·5)	-	-
5.	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	52	17	6 (3·6)	17 (1·0)	6 (3·6)	24 (1·4)	4 (0·24)	17 (1·0)	1 (0·06)	5 (0·25)	-	-

"सारणी - 5.13"

सर्वेक्षित ग्राम गढ़ूका के ग्रामीण परिवारों का वार्षिक आय व जाति के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवार की जाति-श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में वार्षिक आय के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या									
				3500 से कम आये वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	3500-5000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	5000-7000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	7000 से 10000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	10000 से ऊपर आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1.	उच्च जाति	25	5	1 (0.2)	2 (0.4)	2 (0.4)	3 (0.6)	2 (0.4)	4 (0.8)	-	-	-	-
2.	पिछड़ी जाति	41	5	-	-	3 (0.6)	10 (2)	2 (0.4)	6 (1.2)	-	-	-	-
3	अनुसूचित जाति जनजाति	33	5	3 (0.6)	13 (2.6)	2 (0.4)	8 (1.6)	-	-	-	-	-	-
4.	मुसलमान	3	3	-	-	-	-	-	-	3 (1)	18 (6)	-	-
5.	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	102	18	4 (0.22)	15 (0.83)	7 (0.38)	21 (1.1)	4 (0.22)	10 (0.55)	3 (0.16)	18 (1)	-	-

"सारणी - 5.12"

सारणी 5.12 के अन्तर्गत ग्राम बक्वाँ के सर्वेक्षित ग्रामीण परिवारों का वार्षिक आय व जाति के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या को उद्घाटित किया गया है।

सारणी से स्पष्ट है कि उच्च जाति में सर्वाधिक प्रजननता 5000-7000 आय वर्ग के परिवारों में है अर्थात इस वर्ग में जनन अनुपात 0.6:2.4 रहा है। पिछड़ी जाति में सर्वाधिक में भी इसी वर्गान्तर्गत सर्वाधिक प्रजननता अनुपात अर्थात 0.2:1.0 रहा है। जब कि अनुसूचित जाति वर्ग में 3500 से 500 आय वर्ग में सर्वाधिक अनुपात रहा है। मुसलमान सम्प्रदाय में 3500 से 5000 और 7000 से 10000 आय वर्ग में प्रजनन अनुपात समान अर्थात 0.5:2.5 रहा है। समग्र रूप से ग्राम आरी में 5000 से 7000 व 7000 से 10000 आय वर्ग के सर्वेक्षित परिवारों में अधिक बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति पायी गयी है।

"सारणी - 5.13"

सारणी 5.13 के अन्तर्गत ग्राम गढ़ुवा के ग्रामीण परिवारों का सर्वेक्षण जाति व आय वर्ग/समूह के आधार पर किया गया है।

आंकलन द्वारा स्पष्ट है कि उच्च जाति के परिवारों में 3500 से कम आय व 5000 से 7000 वार्षिक आय वर्ग वाले परिवारों में बच्चे प्रजनन का अनुपात समान है अर्थात 0·2:0·4 व 0·4:0·8 रहा है। पिछड़ी जाति में 3500 से 5000 व 5000 से 7000 वार्षिक आय वाले 3 व 2 परिवारों में प्रजनित बच्चों की संख्या क्रमश: 10 व 6 रही है और उनमें अनुपात क्रमश: 0·6:2 व 0 4:1 2 रहा है। अनुसूचित जाति वर्ग में सर्वेक्षित 5 परिवारों में 3 परिवारों में प्रजनन अनुपात 0·6: 2·6 रहा है, यह अनुपात 3500 से कम वार्षिक आय वर्ग के परिवारों का रहा जबकि इसी जाति के 3500 से 5000 वार्षिक आय वर्ग के परिवारों में जनित बच्चों का अनुपात 0·4:1·6 रहा। मुसलमान सम्प्रदाय के उपलब्ध 3 परिवारों 7000 से 10000 आय वर्ग के अन्तर्गत आता है जिसमें अत्याधिक प्रजननता अनुपात अर्थात 1:6 पाया गया है जो कि अन्य हिन्दू जाति वर्ग के परिवारों से अधिक है और समग्र गाँव में मुसलमान सम्प्रदाय में ही सर्वाधिक प्रजननता उद्घाटित हुयी है।

"सारणी – 5·14"

सारणी 5·14 द्वारा स्पष्ट होता है कि ग्राम बिजौली के सर्वेक्षित ग्रामीण परिवारों के अन्तर्गत उच्च जाति के 3500 से 5000 वार्षिक आय वर्ग

"सारणी – 5.14"

सर्वेक्षित ग्राम बिजौली के परिवारों का वार्षिक आय व जाति के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवार की जातिश्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में वार्षिक आय के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या									
				3500 से कम आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	3500–5000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	5000–7000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	7000–10000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	10000 से ऊपर आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1.	उच्च जाति	14	4	–	–	4 (1)	16 (4)	–	–	–	–	–	–
2.	पिछड़ी जाति	28	6	–	–	5 (0.83)	21 (3.66)	1 (0.16)	4 (0.66)	–	–	–	–
3.	अनुसूचित जाति जनजाति	25	5	4 (0.8)	14 (2.8)	1 (0.2)	4 (0.8)	–	–	–	–	–	–
4.	मुसलमान	5	5	1 (0.2)	4 (0.8)	4 (0.8)	24 (4.8)	–	–	–	–	–	–
5.	ईसाई	15	5	–	–	2 (0.4)	4 (0.8)	2 (0.4)	5 (1)	1 (0.2)	3 (0.6)	–	–
	योग	87	25	5 (0.2)	18 (0.61)	16 (0.64)	69 (2.6)	3 (0.12)	9 (0.36)	1 (0.04)	3 (0.12)	–	–

"सारणी - 5·15"

सर्वेक्षित ग्राम भट्टागाँव के ग्रामीण परिवारों का वार्षिक आय व जाति के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवार की जातिश्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की वार्षिक आय के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या									
				3500 से कम आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	3500-5000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	5000-7000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	7000-10000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	10000 से ऊपर आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1·	उच्च जाति	10	5	1 (0·2)	3 (0·6)	3 (0·6)	13 (2·6)	-	-	1 (0·2)	5 (1)	-	-
2·	पिछड़ी जाति	35	5	2 (0·4)	9 (1·8)	2 (0·4)	9 (1·8)	1 (0·2)	4 (0·8)	-	-	-	-
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	41	5	3 (0·6)	12 (2·4)	1 (0·2)	6 (1·2)	1 (0·2)	5 (1)	-	-	-	-
4·	मुसलमान	3	3	-	-	2 (0·67)	11 (3·6)	1 (3·4)	8 (2·6)	-	-	-	-
5·	ईसाई	89	18	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	89	18	6 (0·33)	24 (1·3)	8 (0·44)	39 (2·6)	3 (0·16)	17 (0·94)	1 (0·05)	5 (0·27)	-	-

के परिवारों में बच्चे पैदा करने का अनुपात 1:4 है जबकि पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 6 परिवारों में 5 परिवारों 3500-5000 व । परिवार 5000-7000 आय वर्ग के अन्तर्गत आता है स्पष्ट है कि 3500 से 5000 वार्षिक आय वर्ग के पिछड़ी जाति के परिवारों में बच्चे जनने के अनुपात अधिक है अर्थात 0·83:3·66 रहा है। अनुसूचित जाति के 3500 से 5000 आय वर्ग के सर्वेक्षित 5 परिवारों में 4 परिवारों की वार्षिक आय 3500 रुपये से कम है जब कि उनका प्रजनन अनुपात 0·8:2·8 रहा जो कि सामान्य रहा है। सर्वाधिक प्रजननता का अनुपात मुसलमान सम्प्रदाय में परिलक्षित हुआ है अर्थात 3500 से 5000 आय वर्ग में मुसलमान परिवारों का जनन अनुपात 0·8:4·8 रहा और 5 सर्वेक्षित ईसाई परिवारों में बच्चे पैदा करने का अनुपात सामान्य व सामान्य से भी कम है। इस सम्प्रदाय का सभी आय वर्ग में जिसमें सर्वेक्षित परिवार आये है, में अनुपात कम रहा है।

समग्र रूप से ग्राम बिजौली के उन ग्रामीण परिवारों में जो 3500 से 5000 वार्षिक आय समूह के अन्तर्गत आते हैं, उनका जनन अनुपात सर्वाधिक रहा है अन्य आय समूहों की तुलना में।

"सारणी - 5.15"

सारणी 5.15 में भट्टागाँव के सर्वेक्षित ग्रामीण परिवारों का

वार्षिक आय व जाति के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या का आंकलन किया गया है।

ग्राम के अन्तर्गत लिए गए उच्च जाति के 5 परिवारों में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात 7000-10000 आय वर्ग के ग्रामीण उच्च जाति के परिवारों में पाया गया जो 1:5 रहा है। पिछड़ी जाति के 3500 से कम व 3500 से 5000 वार्षिक आय वर्ग में प्रजनन अनुपात समान व अन्य आय वर्ग की तुलना में अधिक पाया गया है अर्थात यह अनुपात 0·4:1·8 रहा है। ग्राम के अनुसूचित जाति वर्ग के परिवारों के 3500 से 5000 वार्षिक आय वर्ग के परिवार में प्रजनन अनुपात सर्वाधिक पाया गया है अर्थात यह अनुपात 1:6 रहा है।

मुसलमान सम्प्रदाय के सर्वेक्षित व उपलब्ध 3 परिवारों में प्रजनन ता बहुत ही अधिक प्रदर्शित व आंकलित हुई है अर्थात 3500 से 5000 व 5000 से 7000 वार्षिक आय वर्ग के परिवारों के क्रमशः 2 व 1 परिवारों में 11 व 8 बच्चों का जन्म हुआ है जो कि ग्राम हिन्दू जाति वर्ग के परिवारों से अधिक है।

समग्र रूप से इस ग्राम में 3500 से कम वार्षिक आय से लेकर 1000-1000 वार्षिक आय वर्ग के ग्रामीण परिवारों में बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति अति तीव्र पायी गयी है।

सारणी 5.16

सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र के परिवारों की वार्षिक आय व जाति के आधार पर महिलाओं द्वारा जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	मद		समस्त ग्रामों का कुल योग					समग्र योगात्मक औसत
			परिवारों की श्रेणियाँ					
			उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति या निम्नजाति	मुसलमान	ईसाई	
1	2		3	4	5	6	7	8
1.	कुल परिवारों की संख्या		97	209	164	64	22	556
2.	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या		25	35	30	19	12	121
3.	"ए" समूह	3500 से कम आय वाले परिवारों की संख्या	4 (0·16)	6 (0·17)	14 (0·46)	2 (0·10)	-	28 (0·23)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	9 (0·36)	21 (0·6)	51 (1·70)	8 (0·26)	-	89 (0·73)
	"बी" समूह	3500-5000 आय वाले परिवारों की संख्या	13 (0·52)	14 (0·4)	10 (0·33)	9 (0·30)	3 (0·25)	49 (0·4)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	46 (1·84)	58 (0·60)	42 (1·40)	54 (1·80)	8 (0·66)	208 (1·7)
	"सी" समूह	5000-7000 आय वाले परिवारों की संख्या	5 (0·2)	6 (0·17)	1 (0·03)	1 (0·03)	-	13 (0·1)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	20 (0·8)	22 (0·62)	5 (0·16)	8 (0·26)	-	55 (0·45)
	"डी" समूह	7000-10000 आय वाले परिवारों की संख्या	2 (0·02)	1 (0·02)	-	5 (0·26)	-	8 (0·06)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	10 (0·4)	4 (0·11)	-	30 (1·57)	-	44 (0·36)
	"ई" समूह	10000 से ऊपर आय वाले परिवारों की संख्या	1 (0·04)	7 (0·20)	5 (0·16)	3 (0·15)	5 (0·41)	21 (0·17)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	2 (0·02)	28 (0·80)	32 (1·06)	15 (0·78)	30 (2·50)	105 (0·86)

" सारणी - 5.16"

सारणी 5.10 से 5.15 तक सर्वेक्षित 6 गाँवों का प्रति व्यक्ति वार्षिक आय के आधार पर प्रजनित बच्चों का विश्लेषण जाति वर्ग व आय समूह के आधार पर किया गया है ।

सारणी 5.16 से समग्र सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र का विश्लेषण किया जा सकता है । सम्पूर्ण सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र में 121 ग्रामीण परिवारों को विभिन्न जाति समूह व वार्षिक आय समूह के अन्तर्गत किया गया है ।

जैसा कि सारणी 5.16 से स्पष्ट है कि उच्च जाति के 3500 से कम वार्षिक आय के आय समूह में 4 परिवारों ने 9 बच्चों को जन्म दिया अर्थात् इस वार्षिक आय वर्ग में इस जाति समूह में प्रजनित बच्चों का अनुपात 0.16:0.36 रहा जब कि पिछड़ी जाति में इसी वार्षिक आय वर्ग में अनुपात 0.17:0.6, अनुसूचित जाति वर्ग में 0.46:1.70, मुसलमान परिवारों में 0.16:0.26 रहा अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि इस वार्षिक आय समूह में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात मुसलमान सम्प्रदाय में परिलक्षित हुआ है ।

3500-5000 रुपये वार्षिक आय वर्ग में उच्च जाति के 13 परिवारों में 46 बच्चों को जन्म दिया अर्थात इस वार्षिक आय वर्ग में इस जाति समूह के

A STUDY OF GENETICS OF YIELD CAMPONENTS IN BARLEY (*Hordium vulgare* L.)

THESIS

Submitted in Partial Fulfilment of the Requirements for the Award of the Degree of

Master of Science

IN

AGRICULTURE

(Genetics & Plant Breeding)

Bundelkhand University, Jhansi (U.P.)

1992

BY

PAVAN KUMAR

Roll No. 16410

Under the Supervision of

DR. S. P. SINGH

Head of the Department

DEPARTMENT OF GENETICS & PLANT BREEDING
BRAHMANAND POST GRADUATE COLLEGE
RATH (HAMIRPUR) U. P.

परिवारों का प्रजनन अनुपात 0·52:1·84 रहा और सर्वेक्षित अन्य जाति समूह जैसे पिछड़ी जाति में यह अनुपात 0·4:0·6, अनुसूचित जाति समूह में 0 3:1·4 , मुसलमान सम्प्रदाय में 0·30:1·80 एवं ईसाई सम्प्रदाय में यह अनुपात 0·25:0 6 रहा है। तुलनात्मक दृष्टि से इस आय वर्ग में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात मुसलमान सम्प्रदाय में ही पाया गया है जो कि 0·30:1·80 पाया गया।

5000 से 7000 वार्षिक आय वर्ग में उच्च जाति में 0 2:0·4, पिछड़ी जाति में 0·17:0·62, अनुसूचित जाति में 0·03:0·16 एवं मुसलमान सम्प्रदाय में यह अनुपात 0·03:0·26 रहा, जो कि अन्य हिन्दू जाति वर्ग के परिवारों के प्रजनन अनुपात से सर्वाधिक रहा, अर्थात इस आय वर्ग में हिन्दू जाति के अनुसूचित जाति परिवार वर्ग में अनुपात सर्वाधिक अर्थात 0·03:0 16 रहा जो कि अन्य सर्वेक्षित हिन्दू जाति के परिवारों से अधिक है परन्तु सर्वेक्षित सभी इस आय वर्ग के सभी परिवारों में सर्वाधिक प्रजननता मुसलमान सम्प्रदाय में पायी गयी है।

7000 से 10000 आय वर्ग में उच्च जाति के परिवारों में प्रजनन अनुपात अर्थात परिवारों की संख्या व बच्चों की संख्या में अनुपात 0·02: 0·4, जब कि पिछड़ी जाति समूह में यह अनुपात 0·02:0·11 एवं मुसलमान सम्प्रदाय में 0·26:1·57 रहा, ईसाई व अनुसूचित वर्ग में इस आय समूह में कोई सर्वेक्षित परिवार नहीं आ सके है। इस वार्षिक आय वर्ग में मुसलमान

सम्प्रदाय ही प्रजनन में सबसे आगे परिलक्षित हुआ है ।

10000 से अधिक आय वाले उच्च जाति के सर्वेक्षित परिवारों में प्रजनन अनुपात 1:2, पिछड़ी जाति में 0 20:0·80, अनुसूचित जाति में 0 16:1·06, मुसलमान सम्प्रदाय में 0·15:0·78 एवं ईसाई सम्प्रदाय में 0 41:2·50 पाया गया , तुलनात्मक दृष्टि से इस वार्षिक आय में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात मुसलमान सम्प्रदाय में ही परिलक्षित हुआ है ।

समग्र ग्रामीण सर्वेक्षण द्वारा यह स्पष्ट होता है कि 3500 से कम आय के 28 परिवारों में प्रजनन अनुपात 0·23:0·73, 3500-5000 आय वर्ग के परिवारों में 0·4:1·7, 5000 से 7000 आय वर्ग में 0·1:0 45, 7000 से 10000 आय वर्ग में 0·06:0·36 एवं 10000 से अधिक वार्षिक आय वर्ग के परिवारों में प्रजनन अनुपात 0·17:0·86 पाया गया है ।

तुलनात्मक दृष्टि से ग्रामों में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात अधिक वार्षिक आय प्राप्त करने वाले परिवारों में पाया गया है अर्थात 7000-10000 आय वर्ग में 0·06:0·36 व 10000 से ऊपर आय वाले परिवारों में 0·17:0·86 पाया गया है । अतः हम स्पष्ट रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि अधिक वार्षिक आय वाले परिवार प्रजनन दर व बच्चों की बढ़ती संख्या पर अंकुश लगाने के साधनों का प्रयास नहीं कर रहे हैं अर्थात आय की

A STUDY OF GENETICS OF YIELD CAMPONENTS IN BARLEY (*Hordium vulgare* L.)

THESIS

Submitted in Partial Fulfilment of the Requirements for the Award of the Degree of

Master of Science

IN

AGRICULTURE

(Genetics & Plant Breeding)

Bundelkhand University, Jhansi (U.P.)

1992

BY

PAVAN KUMAR
Roll No. 16410

Under the Supervision of
DR. S. P. SINGH
Head of the Department

DEPARTMENT OF GENETICS & PLANT BREEDING
BRAHMANAND POST GRADUATE COLLEGE
RATH (HAMIRPUR) U. P.

पर्याप्तता के कारण वह बढ़ते बच्चों की संख्या की ओर ध्यान नहीं देते हैं जब कि आय कम प्राप्त करने वाले परिवार बच्चों की बढ़ती संख्या पर नियन्त्रण रखने का प्रयास करते हैं।

"सारणी - 5·17"

सारणी 5·17 में सर्वेक्षित नगरीय क्षेत्र झाँसी के परिवारों का वार्षिक आय व जाति वर्ग के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

नगरीय सर्वेक्षण के अन्तर्गत 100 परिवारों को लिया गया है जिनमें निर्धारित 5 जाति व सम्प्रदाय वर्ग के अन्तर्गत 20-20 परिवारों को लिया गया है।

सारणी 5·17 से स्पष्ट है कि नगरीय क्षेत्र में 3500 से कम से 5000 से 7000 वार्षिक आय के अन्तर्गत परिवारों की संख्या शून्य है अर्थात उक्त आय वर्ग के अन्तर्गत कोई परिवार नहीं आते हैं। सर्वेक्षित उच्च जाति के 20 परिवारों में 5 परिवार 7000-10000 से अधिक वार्षिक आय वर्ग में आये हैं। 7000-10000 आय वर्ग में उच्च जाति वर्ग के परिवारों का प्रजनन अनुपात 0·25:0·5, एवं मुसलमानों में यह अनुपात 0·5:3 पाया गया है अर्थात इस आय वर्ग में मुसलमानों या मुस्लिम परिवारों का जनन अनुपात

285

"तालिका - 5·17"

सर्वेक्षित नगरीय क्षेत्र झाँसी के परिवारों का वार्षिक आय व जाति के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवार की जातिश्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में वार्षिक आय के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या									
				3500 से कम आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	3500-5000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	5000-7000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	7000-10000 आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	10000 से ऊपर आय वाले परिवारों की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1·	उच्च जाति	-	20	-	-	-	-	-	-	5 (0·25)	10 (0·5)	15 (0·75)	44 (2·2)
2·	पिछड़ी जाति	-	20	-	-	-	-	-	-	-	-	20 (1)	62 (3·1)
3	अनुसूचित जाति जनजाति	-	20	-	-	-	-	-	-	-	-	20 (1)	60 (3)
4·	मुसलमान	-	20	-	-	-	-	-	-	10 (0·5)	60 (3)	10 (0·5)	40 (2)
5·	ईसाई	-	20	-	-	-	-	-	-	-	-	20 (1)	45 (2·25)
	योग		100	-	-	-	-	-	-	15 (0·15)	70 (0·7)	85 (0·85)	251 (2·51)

अधिक है । 10000 से अधिक वार्षिक आय के अन्तर्गत उच्च जाति के 15 परिवारों में जनन अनुपात 0·75:2·2, पिछड़ी जाति के 20 परिवारों जनन अनुपात 1:3·1, अनुसूचित जाति वर्ग में 1:3, मुसलमान सम्प्रदाय में 0·5:2 एवं ईसाई सम्प्रदाय में जनन अनुपात 1:2 25 पाया गया है ।

समग्र रूप से 10000 से अधिक आय वर्ग में सर्वाधिक जनन अनुपात मुसलमान सम्प्रदाय में ही पाया गया है जबकि हिन्दू परिवारों में पिछड़ी जाति का सर्वाधिक है अर्थात 1:3 । है ।

"सारणी – 5.18"

सारणी–5.18 के अन्तर्गत वार्षिक आय के आधार पर नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता विभिन्नता का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है ।

सारणी 5.18 से यह स्पष्ट है कि नगरीय क्षेत्र में प्रति व्यक्ति आय व प्रति परिवार आय ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक है अर्थात नगरीय क्षेत्र में सर्वेक्षित सभी परिवारों की वार्षिक आय 7000 से अधिक है जब कि 7000 से कम अर्थात 3500 से कम व 7000 वार्षिक आय प्राप्त करने वाले परिवार ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त मात्रा में प्रत्येक जाति व सम्प्रदाय

"सारणी – 5·18"

समग्र सर्वेक्षित परिवारों का वार्षिक आय के आधार पर ग्रामीण-नगरीय जन्मदर विभिन्नता

क्रमांक	मद	ग्रामीण सर्वेक्षित परिवारों की श्रेणियाँ					नगरीय सर्वेक्षित परिवारों की श्रेणियाँ					ग्रामीण जन्मदर	नगरीय जन्मदर
		उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति या निम्नवर्ग	मुसलमान	ईसाई	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति या निम्नवर्ग	मुसलमान	ईसाई	समग्र ग्रामीण योग	समग्र नगरीय योग
1·	कुल परिवारों की संख्या	97	209	164	64	22	–	–	–	–	–	556	–
2·	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	25	35	30	19	12	20	20	20	20	20	121	100
3·	"ए" समूह 3500 से कम आय वाले परिवारों की संख्या	4 (0·1)	6 (0·1)	14 (0·46)	2 (0·1)	–	–	–	–	–	–	28 (0·2)	–
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	9 (0·3)	21 (0·6)	51 (1·7)	8 (0·2)	–	–	–	–	–	–	89 (0·7)	–
	"बी" समूह 3500–5000 आय वाले परिवारों की संख्या	13 (0·5)	14 (0·4)	10 (0·3)	9 (0·3)	3 (0·2)	–	–	–	–	–	49 (0·4)	–
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	46 (1·8)	58 (0·6)	42 (1·4)	54 (1·8)	8 (0·6)	–	–	–	–	–	208 (1·7)	–
	"सी" समूह 5000–7000 आय वाले परिवारों की संख्या	5 (0·2)	6 (0·1)	1 (0·03)	1 (0·03)	–	–	–	–	–	–	13 (0·1)	–
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	20 (0·8)	22 (0·6)	5 (0·16)	8 (0·2)	–	–	–	–	–	–	55 (0·4)	–
	"डी" समूह 7000–10000 आय वाले परिवारों की संख्या	2 (0·02)	1 (0·02)	–	5 (0·7)	–	5 (0·25)	–	–	10 (0·5)	–	8 (0·06)	15 (0·15)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	10 (0·4)	4 (0·11)	–	30 (1·57)	–	10 (0·5)	–	–	60 (3)	–	44 (0·36)	70 (0·7)
	"ई" समूह 10000 से ऊपर आय वाले परिवारों की संख्या	1 (0·02)	7 (0·2)	5 (0·16)	3 (0·1)	5 (0·4)	15 (0·75)	20 (1)	20 (1)	10 (0·5)	20 (1)	21 (0·17)	85 (0·85)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	2 (0·02)	28 (0·8)	32 (1·0)	15 (0·7)	30 (2·5)	44 (2·2)	62 (3·1)	60 (3)	40 (2)	45 (2·25)	105 (0·8)	251 (2·5)

वर्ग में उपलब्ध है । अतः 3500 से कम से 5000-7000 वार्षिक आय वर्ग की नगरीय-ग्रामीण प्रजननता की तुलना असम्भव है क्योंकि उक्त वर्ग में नगरीय क्षेत्र में कोई परिवार उपलब्ध नहीं पाये गये हैं ।

रु० 7000-10000 वार्षिक आय वर्ग में ग्रामीण क्षेत्र के 8 परिवारों ने 44 बच्चों को जन्म दिया अर्थात ग्रामीण क्षेत्र में प्रजनन अनुपात 0·06:0 36 पाया गया है जब कि इसी आय वर्ग में नगरीय क्षेत्र के 13 परिवारों ने 70 बच्चों को जन्म दिया अर्थात प्रजननता अनुपात 0·13: 0·7 पाया गया है । आँकड़ों से स्पष्ट है कि इस वार्षिक आय वर्ग में नगरीय क्षेत्र का प्रजननता अनुपात कम है । रु० 10000 से अधिक वार्षिक आय प्राप्त करने वाले ग्रामीण परिवारों के 21 परिवारों में 105 बच्चे पैदा हुए अर्थात ग्रामीण क्षेत्र में इस आय वर्ग में प्रजनन अनुपात 0·1:0·8 एवं नगरीय क्षेत्र में इसी वार्षिक आय वर्ग में प्रजनन अनुपात 0·8:2 5 पाया गया है । अर्थात इस आय वर्ग में ग्रामीण क्षेत्र में प्रजनन अनुपात अधिक परिलक्षित हुआ है । वार्षिक पारिवारिक आय के आधार पर ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में प्रजनन विभिन्नता सारणी 5·18 द्वारा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है । इसका तात्पर्य यह है कि यदि ग्रामीण क्षेत्र में अधिक आय परिवार की वार्षिक आय अधिक है तो नगरीय क्षेत्र की तुलना में प्रजनन अनुपात अधिक रहता है और एक तथ्य यह भी स्पष्ट परिलक्षित

हुआ है कि आय में वृद्धि होने के साथ-साथ प्रजनन अनुपात में कमी आती है। यह कमी नगरीय व ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में आती है परन्तु नगरीय क्षेत्र में यह कमी अधिक अनुपात में पायी गयी है।

A STUDY OF GENETICS OF YIELD CAMPONENTS IN BARLEY (*Hordium vulgare* L.)

THESIS

Submitted in Partial Fulfilment of the Requirements for the Award of the Degree of

Master of Science

IN

AGRICULTURE

(Genetics & Plant Breeding)

Bundelkhand University, Jhansi (U.P.)

1992

BY

PAVAN KUMAR
Roll No. 16410

Under the Supervision of
DR. S. P. SINGH
Head of the Department

DEPARTMENT OF GENETICS & PLANT BREEDING
BRAHMANAND POST GRADUATE COLLEGE
RATH (HAMIRPUR) U. P.

" अध्याय - 6 "

व्यवसाय एवं ग्रामीण नगरीय प्रजनता विभिन्नता

किसी भी देश में जनसंख्या के व्यावसायिक वितरण का प्रभाव उसकी प्रजननता दर पर आवश्यक रूप से पड़ता है। जैसा कि ज्ञात है कि जनसंख्या अनेक व्यवसायों में संलग्न रहती है। व्यावसायिक वितरण को ज्ञात करने से पूर्व कार्यशील जनसंख्या को जानना आवश्यक है।

सम्पूर्ण जनसंख्या को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :-

1) काम करने वाली जनसंख्या, तथा

2) काम न करने वाली जनसंख्या

काम करने वाली जनसंख्या के अन्तर्गत उन लोगों को सम्मिलित किया जा सकता है जो किसी रोजगार, व्यवसाय, उद्योग तथा नौकरी आदि में लगे हुए हैं। इसके विपरीत काम न करने वालों में उन व्यक्तियों को शामिल किया जा सकता है जो किसी प्रकार का उत्पादक कार्य नहीं करते यथा बच्चे, बूढ़े, पराश्रयी आदि। चिकित्सालयों, जेलों तथा अनाथालयों में रहने वाले व्यक्तियों को भी काम न करने वालों में शामिल किया जा सकता है।

देश के अर्थतन्त्र में जनसंख्या के व्यावसायिक वितरण का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। एक विकसित अर्थतन्त्र के लिये यह आवश्यक है कि विभिन्न व्यवसायों के बीच जनसंख्या के वितरण में सन्तुलन हो। जिस देश में अधिकांश जनता कृषि व्यवसायों में संलग्न है, वह देश आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होता है। इसके विपरीत जिस देश में जनसंख्या का कम प्रतिशत कृषि में और अधिक प्रतिशत उद्योग व अन्य व्यवसायों में संलग्न होता है, वह देश आर्थिक दृष्टि से विकसित होता है।

भारत में कृषि के ऊपर जनसंख्या का अत्याधिक भार होने का कारण यह है कि जनसंख्या की वृद्धि के अनुपात में रोजगार के अवसर नहीं बढ़े हैं। कार्यरत व्यक्तियों में उन व्यक्तियों को भी शामिल किया गया है जो अर्द्ध या मौसमी बेरोजगारी से पीड़ित हैं।

इस अध्याय के अन्तर्गत जनपद झाँसी में व्यवसाय के आधार पर नगरीय व ग्रामीण प्रजननता पर प्रभाव का अध्ययन किया है।

अध्यायान्तर्गत जनपद झाँसी में व्यवसाय के आधार पर नगर व ग्रामीण प्रजननता का अध्ययन किया गया है। सम्प्रति, विश्लेषण हेतु सर्वेक्षित परिवारों के प्रमुख व्यवसाय को लिया गया है।

जनपद झाँसी उ0 प्र0 का एक पिछड़ा व अविकसित जिला है परन्तु वर्तमान में हम इसे विकासशील कह सकते हैं क्योंकि यहाँ सरकार द्वारा क्षेत्र के विकास हेतु अनेक योजनायें स्वीकृत की जा चुकी हैं।

उत्तर प्रदेश को 5 आर्थिक क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। इसमें बुन्देलखण्ड व अन्य सम्भागों में विभिन्न व्यवसायों में संलग्न जनसंख्या का तुलनात्मक अध्ययन के लिये निम्न सारणी को अवलोकित किया जा सकता है :-

सारणी 6·1

मुख्य कर्मकारों का उद्योग वर्गानुसार आर्थिक क्षेत्रवार प्रतिशत वितरण - 1981·

आर्थिक क्षेत्र	कृषक	कृषि श्रमिक	पारिवारिक उद्योग	गैर पारिवारिक उद्योग	अन्य	समस्त
1	2	3	4	5	6	7
1· पर्वतीय	63·8	5·5	1·5	4·3	24·9	100·00
2· पश्चिमी	53·7	15·4	3·7	7·5	19·7	100·00
3· केन्द्रीय	64·4	11·3	2·5	5·4	16·4	100·00
4· पूर्वी	59·5	19·6	4·7	3·8	12·4	100·00
5· बुन्देलखण्ड	57·2	21·1	3·1	2·6	16·0	100·00
उत्तर प्रदेश	58·5	16·0	3·7	5·4	16·4	100·00

सारणी 6.1; स्त्रोत - उत्तर प्रदेश की आर्थिक समीक्षा, 1990-91, अर्थ एवं संख्या प्रभाग, राज्य नियोजन संस्थान, उ०प्र०, लखनऊ।

सारणीगत आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि प्रदेश के कुल मुख्य कर्मकारों में से 58.5 प्रतिशत कृषक और 16.0 प्रतिशत कर्मकर कृषि श्रमिक थे। इस प्रकार कृषि खण्ड में कार्यरत कर्मकरों का अंश 74.5% रहा। उद्योग वर्ग के अन्तर्गत कुल कर्मकरों के 9.1% {3.7% पारिवारिक उद्योग वर्ग में तथा 5.4% गैर-पारिवारिक उद्योग वर्ग में} कर्मकर थे, जबकि अन्य क्रियाकलापों में लगे व्यक्तियों का अंश 16.4% था। इसके विपरीत देश में {असम को छोड़ कर} कृषि खण्ड, उद्योग तथा अन्य क्रियाकलापों में लगे कर्मकारों का अंश क्रमश: 66.5%, 11.3% तथा 22.2% था। इससे स्पष्ट है कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था मुख्यत: कृषि पर निर्भर है, क्योंकि प्रदेश की कार्यशक्ति का 74% से अधिक अंश जीवनयापन हेतु मुख्यत: कृषि पर निर्भर है।

सारणीगत आँकड़ों से यह भी विदित होता है कि प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में कर्मकरों का सर्वाधिक 79.1% अंश कृषि खण्ड से सम्बद्ध था। इसके साथ ही बुन्देलखण्ड तथा केन्द्रीय क्षेत्र में भी कृषीय कार्यकलापों में लगे व्यक्तियों का अंश भी क्रमश: 78.3% तथा 75.7% रहा। इन तीनों ही आर्थिक क्षेत्रों में पर्वतीय तथा पश्चिमी क्षेत्र की अपेक्षा जीवन यापन हेतु

कृषि खण्ड पर निर्भरता अधिक है व पारिवारिक तथा गैर-पारिवारिक उद्योग वर्ग के अन्तर्गत पाये गये कर्मकारों का सर्वाधिक 11.2% अंश पश्चिमी क्षेत्र में था जो प्रदेशीय औसत से अधिक रहा । बुन्देलखण्ड तथा पर्वतीय क्षेत्र में यह अंश क्रमशः 5.7% तथा 5.8% ही पाया गया । इससे स्पष्ट होता है कि इन दोनों ही आर्थिक क्षेत्रों में औद्योगिक कार्यकलापों का विस्तार किये जाने की आवश्यकता है । अर्थव्यवस्था के अन्य खण्ड में कार्यरत व्यक्तियों का अंश पूर्वी क्षेत्र में 12.4% तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र में 16.0% प्रदेशीय औसत 16.4% की तुलना में कम था । 1971-81 के दशक में प्रदेश की जनसंख्या में हुई 25.5% की वृद्धि के समक्ष कुल कर्मकारों की संख्या में 24.6% की ही वृद्धि हुई । इसके विपरीत राष्ट्रीय स्तर पर कुल जनसंख्या में होने वाली 25.0% की वृद्धि के समक्ष कुल कर्मकरों की संख्या में 38.8% की वृद्धि समक्ष दृष्टिगोचर हुई । प्रदेश में कर्मकरों की अपेक्षा कुल जनसंख्या में हुई अधिक वृद्धि फलस्वरूप कुल जनसंख्या में कर्मकरों का अंश 1971 के 30.9% से गिरकर 1981 में 30.7% ही रह गया जब कि राष्ट्रीय स्तर पर यह अंश 1981 में 36.8% रहा । 1981 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति के व्यक्तियों का अंश प्रदेश के 21.2% की तुलना में राष्ट्रीय स्तर पर 15.3% ही था । प्रदेश में 1971-81 के दशक के अन्तर्गत कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का अंश यद्यपि 14.0% से बढ़कर 17.9% हो गया तथापि यह अंश राष्ट्रीय औसत (23.3%) की तुलना में कम रहा । राष्ट्रीय औसत की अपेक्षा प्रदेश की जनसंख्या में होने

वाली अधिक वृद्धि, कर्मकारों की संख्या में हुई न्यून वृद्धि, कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति में व्यक्तियों का अधिक अंश होने तथा नगरीकरण की मन्द गति के कारण प्रदेश के आर्थिक विकास की गति अवरुद्ध रही ।

किसी व्यक्ति की प्रजननता पर उसकी व्यवसायिक या धनोपार्जक साधन के प्रकार का प्रभाव बहुत अधिक पड़ता है क्योंकि व्यक्ति का व्यवसाय अधिक थकित करने वाला होने पर वह प्रजनन सम्बन्धी कार्यकलापों की अपेक्षा आराम करने में अधिक रुचि रखता है, साथ ही यदि व्यक्ति का कार्य अधिक थकित करने वाला नहीं होने की स्थिति में वह प्रजनन क्रिया कलापों में अधिक रुचि के साथ हिस्सा ले सकता है। वैसे यह उसके भविष्य-गत योजना या ज्ञान पर निर्भर करता है कि वह प्रजनन द्वारा अपने परिवार को कितना करना चाहता है। प्रजननपर व्यक्ति के व्यवसाय या रोजगार प्राप्त स्थान पर कार्य के प्रकार का भी प्रभाव पड़ता है।

व्यावसाय के आधार पर ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में प्रजननता विभिन्नता ज्ञात करने के लिए अध्यायन्तर्गत परिवार के मुख्य आय के स्त्रोतों को ही व्यवसाय माना गया है। इसके अन्तर्गत सर्वेक्षित ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में समान व्यावसायिक कालमों को लिया गया है। व्यावसायिक वर्गीकरण के अन्तर्गत कृषि कार्य, खेतिहर मजदूर, परम्परागत कार्य, नौकरी एवं

सारणी - 6·2

सर्वेक्षित ग्राम आरी के ग्रामीण परिवारों का व्यवसाय व जाति के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवार की श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में व्यवसाय के आधार पर सर्वेक्षित महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या									
				कृषि कार्य परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	खेतिहर मजदूर परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	परम्परागत कार्य परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	नौकरी वाले परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	दुकान वाले परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1·	उच्च जाति	35	5	3 (0·6)	10 (2·0)	-	-	-	-	2 (0·4)	4 (0·8)	-	-
2·	पिछड़ी जाति	45	5	4 (0·8)	14 (2·8)	-	-	-	-	1 (0·20)	2 (0·40)	-	-
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	30	5	4 (0·80)	15 (3·00)	-	-	-	-	1 (0·20)	2 (0·40)	-	-
4·	मुसलमान	3	3	3 (1·0)	14 (4·67)	-	-	-	-	-	-	-	-
5·	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
6·	योग	113	18	14 (0·78)	53 (2·94)	-	-	-	-	4 (0·22)	8 (0·44)	-	-

दुकान व्यवसाय लिया गया है। इन रोजगार के साधनों में संलग्न परिवारों में जाति के आधार पर महिलाओं की संख्या और उनके द्वारा जनित बच्चों की संख्या द्वारा ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों के व्यवसाय व जाति के आधार पर प्रजननता विभिन्नता को आंकलित करने का प्रयास किया गया है।

सारणी 6·2 के अन्तर्गत सर्वेक्षित ग्राम आरी में ग्रामीण परिवारों का व्यवसाय व जाति के आधार पर महिलाओं द्वारा प्रजननता बच्चों की संख्या का आंकलन किया गया है।

सारणी से स्पष्ट है कि ग्राम में खेतिहर मजदूरी, परम्परागत कार्य, व दुकान व्यवसाय किसी भी सर्वेक्षित परिवार का नहीं है। ग्राम के उच्च जाति सर्वेक्षित 5 परिवारों में कृषि कार्य में संलग्न 3 परिवारों में प्रजनन अनुपात 0·6:2·0 है और इसी जाति के 2 परिवारों में जो नौकरी में संलग्न, में प्रजनन अनुपात 0·4:0·8 है। स्पष्ट है कि कृषि कार्य में संलग्न इस जाति के परिवार अधिक प्रजनन अनुपात संचित कर रहे हैं, नौकरी में संलग्न परिवारों की तुलना में संलग्न है और इस कार्य में

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 5 परिवारों में 4 परिवारों कृषि कार्य में संलग्न है और इस कार्य में संलग्न परिवार की महिलाओं ने 14 बच्चों को जन्म दिया अर्थात इनमें अनुपात 0·8:2·8 रहा। जबकि इसी जाति के सर्वेक्षित एक परिवार में, जो नौकरी में संलग्न है उसका प्रजनन अनुपात 0·20:0·40 रहा। अर्थात इस जाति में भी नौकरी में संलग्न परिवारों की अपेक्षा कृषि कार्य में संलग्न

महिलाओं में प्रजननता अधिक प्रदर्शित हुई है ।

अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित 5 परिवारों में से 4 परिवार कृषि कार्य में संलग्न है जिनका प्रजनन अनुपात 0·80:3·00 है जबकि इसी जाति का एक परिवार जो नौकरी में संलग्न है मे प्रजननअनुपात 0·20:0·40 है । अर्थात इस जाति समूह में भी नौकरी व्यवसाय में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं से कम है ।

सर्वेक्षित व तीन परिवार जो मुसलमान सम्प्रदाय से सम्बन्धित है, मे प्रजनन अनुपात 1:4·67 पाया गया, ये सभी परिवार कृषि कार्य में संलग्न है।

सारणी 6·2 में ग्राम आरी के सर्वेक्षित 18 परिवारों में कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रजनन अनुपात नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं से अधिक प्रदर्शित होता है ।

सारणी 6 3, से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित है कि सर्वेक्षित ग्राम कुढ़ा में सर्वेक्षित परिवारों में परम्परागत कार्य व दुकान व्यवसाय में कोई भी परिवार नहीं है। एवं उच्च जाति का एक परिवार जो कृषि कार्य में संलग्न है, मे महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1:5 है। ग्राम में उच्च जाति का एक ही परिवार उपलब्ध है अतः इस एक परिवार के आधार पर निर्णायक टिप्पणी नहीं की जा सकती ।

सारणी - 6·3

सर्वेक्षित ग्राम बूढ़ा के ग्रामीण परिवारों का व्यवसाय व जाति के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवार की श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में व्यवसाय के आधार पर सर्वेक्षित महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या									
				कृषि कार्य परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	खेतिहर मजदूर परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	परम्परागत कार्य में संलग्न महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	नौकरी में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	दुकान वाले परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1·	उच्च जाति	3	1	1 (1·0)	5 (5·0)	-	-	-	-	-	-	-	-
2·	पिछड़ी जाति	35	9	8 (0·89)	37 (4·11)	1 (0·11)	4 (0·44)	-	-	-	-	-	-
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	20	5	1 (0·20)	7 (1·40)	2 (0·40)	13 (2·60)	-	-	2 (0·40)	12 (2·40)	-	-
4·	मुसलमान	3	3	-	-	3 (1·0)	15 (5·0)	-	-	-	-	-	-
5·	ईसाई	7	7	4 (0·57)	19 (2·71)	2 (0·29)	12 (1·71)	-	-	1 (0·14)	2 (0·29)	-	-
6·	योग	68	25	14 (0·56)	68 (2·72)	8 (0·32)	44 (1·76)	-	-	3 (0·12)	14 (0·56)	-	-

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 9 परिवारों में 8 परिवार कृषि कार्य व एक परिवार खेतिहर मजदूरी में संलग्न है इन परिवारों की महिलाओं में प्रजननता अनुपात क्रमशः 0·89:4·11 एवं 0·11:0·44 प्रदर्शित हुआ है अर्थात कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रजनन अनुपात अधिक है।

सर्वेक्षित ग्राम ने अनुसूचित जाति 5 परिवारों में, 1 परिवार कृषि कार्य, 2 परिवार खेतिहर मजदूरी व 2 नौकरी में संलग्न है इन विभिन्न कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात क्रमशः 0·20:1·40 0·40:2·60 एवं 0·40:2·40 है। तुलनात्मक रूप से इस जाति में कृषि कार्य में संलग्न परिवार की महिला का प्रजनन अनुपात सर्वाधिक है वैसे तो सभी कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात अन्य सर्वेक्षित जातियों से अधिक है।

सर्वेक्षित 3 मुसलिम परिवार खेतिहर मजदूरी में संलग्न है इन परिवारों की महिलाओं में प्रजनन अनुपात 1:5 पाया गया है। ईसाई सम्प्रदाय के सर्वेक्षित 7 परिवारों में 4 परिवार कृषि कार्य, 2 खेतिहर मजदूरी एवं एक नौकरी में संलग्न है, इस सम्प्रदाय की महिलाओं में प्रजनन अनुपात क्रमशः 0·57:2·71, 0·29:1·71 एवं 0·14:0·29 पाया गया है। सर्वाधिक प्रजनन खेतिहर मजदूरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं एवं कम प्रजनन अनुपात नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में पाया गया है।

समग्र रूप से सर्वेक्षित ग्राम बूढा के 25 परिवारों में 14 परिवार

सारणी - 64

सर्वेक्षित ग्राम बिजौली के परिवारों का व्यवसाय व जाति के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवार की श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में व्यवसाय के आधार पर सर्वेक्षित महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या									
				कृषि कार्य परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	खेतिहर मजदूर में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	परम्परागत कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की	जन्म दिये बच्चों की संख्या	नौकरी में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	दुकान व्यवसाय में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1·	उच्च जाति	14	4	2 (0·5)	10 (2·5)	1 (0·25)	4 (1·00)	-	-	1 (0·25)	2 (0·50)	-	-
2·	पिछड़ी जाति	28	6	2 (0·33	9 (1·50)	3 (0·50)	13 (2·17)	-	-	1 (0·17)	3 (0·50)	-	-
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	25	5	1 (0·20)	5 (1·00)	3 (0·60)	11 (2·20)	-	-	-	-	1 (0·20)	2 (0·40)
4·	मुसलमान	5	5	5 (1·00)	28 (5·60)	-	-	-	-	-	-	-	-
5·	ईसाई	15	5	-	-	2 (0·40)	4 (0·80)	-	-	3 (0·60)	8 (1·60)	-	-
6·	योग	87	25	10 (0·40)	52 (2·08)	9 (0·36)	32 (1·28)	-	-	5 (0·20)	13 (2·60)	1 (0·04)	2 (0·08)

कृषि कार्य, 8 खेतिहर मजदूरी एवं 3 परिवार नौकरी में संलग्न हैं इन परिवारों में प्रजनन अनुपात क्रमशः 0·56:2·72, 0·32:1·76 एवं 0·12:0·56 पाया गया है। सर्वाधिक प्रजनन अनुपात खेतिहर मजदूरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रदर्शित हुआ है जबकि सबसे कम प्रजनन अनुपात नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में पाया गया है।

सारणी 6·4 के अन्तर्गत सर्वेक्षित ग्राम बिजौली के परिवारों का व्यवसाय व जाति के आधार पर महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या का आंकलन किया गया है।

उच्च जाति के सर्वेक्षित 4 परिवारों में, 2 परिवार कृषि कार्य 1 खेतिहर मजदूरी व 1 परिवार नौकरी में संलग्न है। इस जाति के कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·5:2·5, खेतिहर मजदूरी व नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रजनन अनुपात क्रमशः 0·25:1·00 एवं 0·25:0·50 पाया गया है अर्थात नौकरी में संलग्न परिवार की महिला का प्रजनन अनुपात सबसे कम व कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं प्रजनन अनुपात अधिक है।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 6 परिवारों में 2 परिवार कृषि कार्य, 3 खेतिहर मजदूरी व 1 परिवार नौकरी में संलग्न है। इस जाति वर्ग के कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात अन्य

कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं से अधिक प्रदर्शित होता है। अर्थात कृषि कार्य में संलग्न परिवार की महिलाओं में प्रजनन अनुपात 0·33:1·50, खेतिहर मजदूरी व नौकरी में संलग्न परिवार की महिलाओं में प्रजनन अनुपात क्रमशः 0·50:2·17 एवं 0·17:0·50 है।

अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित 5 परिवारों में 1 परिवार कृषि कार्य, 3 परिवार खेतिहर मजदूरी व 1 परिवार दुकान व्यवसाय में संलग्न है। इस जाति की महिलाओं में प्रजनन अनुपात क्रमशः 0·20:1·00, 0·60:2·20, एवं 0·20:0·40 पाया गया है अर्थात सर्वाधिक प्रजननता कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रदर्शित हुई है।

मुसलमान सम्प्रदाय के सर्वेक्षित 5 परिवार कृषि कार्य में संलग्न है और इस सम्प्रदाय की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1·00:5·60 पाया गया है।

सारणी 6·4 से स्पष्ट होता है कि कृषि कार्य में संलग्न सर्वेक्षित उच्च, पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति में परिवारों की अपेक्षा मुसलमान सम्प्रदाय की महिलाओं में प्रजननता अनुपात सर्वाधिक पाया गया है।

ईसाई सम्प्रदाय के सर्वेक्षित 5 परिवारों में 2 खेतिहर मजदूर व तीन नौकरी में संलग्न है। इस सम्प्रदाय की महिलाओं में प्रजननता अनुपात क्रमशः 0·40:0·80 एवं 0·60:1·60 पाया गया है। इस सम्प्रदाय

में नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रजननता अनुपात अधिक आंकलित हुआ है ।

समग्ररूप से ग्राम बिजौली के सर्वेक्षित 25 परिवारों में 10 परिवार कृषि कार्य, 9 परिवार खेतिहर मजदूरी, 5 नौकरी व 1 दुकान व्यवसाय में संलग्न है । इन सभी व्यवसायों में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं में पाया गया है जैसा कि सारणी 6.4 से स्पष्ट होता है ।

सारणी 6.5 में सर्वेक्षित ग्राम भट्टा गाँव का व्यवसाय व जाति के आधार पर परिवारों में महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या का आँकलन किया गया है ।

ग्राम में सर्वेक्षित उच्च जाति के 5 परिवारों में 2 परिवार कृषि कार्य, 1 परिवार खेतिहर मजदूरी, 2 नौकरी में संलग्न है । इस जाति के परिवारों की महिलाओं में कृषि कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की अनुपात 0.40:1.60, खेतिहर मजदूरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में 2.20:0.60 व नौकरी में संलग्न परिवारों की महि-लाओं में प्रजननता अनुपात 0.40:2.00 पाया गया है ।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 5 परिवारों में 4 परिवार कृषि कार्य व एक परिवार नौकरी में संलग्न है । जैसा कि सारणी से स्पष्ट

सारणी - 6·5

सर्वेक्षित ग्राम भट्टागाँव के ग्रामीण परिवारों का व्यवसाय व जाति के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवार की श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में व्यवसाय के आधार पर सर्वेक्षित महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या									
				कृषि कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	खेतिहर मजदूर में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	परम्परागत कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	नौकरी में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	दुकान व्यवसाय में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1·	उच्च जाति	10	5	2 (0·40)	8 (1·60)	1 (0·20)	3 (0·60)	-	-	2 (0·40)	10 (2·00)	-	-
2·	पिछड़ी जाति	35	5	4 (0·8)	18 (3·6)	-	-	-	-	1 (0·20)	4 (0·80)	-	-
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	41	5	2 (0·40)	8 (1·60)	3 (0·60)	15 (3·00)	-	-	-	-	-	-
4·	मुसलमान	3	3	1 (0·33)	6 (2·00)	2 (0·67)	13 (4·33)	-	-	-	-	-	-
5·	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
6·	योग	89	18	9 (0·50)	40 (2·22)	6 (0·33)	31 (1·72)	-	-	3 (0·17)	14 (0·78)	-	-

है कि इस जाति के परिवार जो कृषि कार्य से जुड़े है उनकी महिलाओं में प्रजननता अनुपात अन्य व्यवसाय जैसे नौकरी से अधिक है अर्थात कृषि कार्य से जुड़े परिवारों की महिलाओं में प्रजननता अनुपात 0·8:3·6 एवं नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रजननता अनुपात 0·20:0·80 पाया गया है।

सर्वेक्षित अनुसूचित जाति के 5 परिवारों में 2 परिवार कृषि कार्य 3 परिवार खेतिहर मजदूरी में संलग्न है। इस जाति के कृषि कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·40:1·60 व खेतिहर मजदूरी वाले परिवारों में महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·60:3·00 है अर्थात कृषि कार्य में लगे परिवारों की महिलाओं का प्रजननता अनुपात खेतिहर मजदूरी में लगी महिलाओं के प्रजनन अनुपात से अधिक है।

मुसलमान सम्प्रदाय के सर्वेक्षित 3 परिवारों में 1 परिवार कृषि कार्य व 2 खेतिहर मजदूरी में संलग्न है। कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0·33:2·00 एवं खेतिहर मजदूरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·67:4·33 है। स्पष्ट है कि कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात, खेतिहर मजदूरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं से अधिक है।

समग्र्य से ग्राम भट्टा गाँव के सर्वेक्षित 18 परिवारों

में 9 परिवार कृषि कार्य, 6 परिवार खेतिहर मजदूरी व 3 परिवार नौकरी में लगे हुए हैं। इनमें से खेतिहर मजदूरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रजननता अनुपात सर्वाधिक है अर्थात 0·33:1·72 है जबकि कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं में 0·50:2·22 एवं नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में 0·17:0·78 है।

सारणी 6·6 से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित ग्राम बकवा में उच्च जाति के सर्वेक्षित 5 परिवार कृषि कार्य में संलग्न हैं और इस जाति के कृषि कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1:3·6 है।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 5 परिवार भी कृषि कार्य में संलग्न हैं और इस व्यवसाय के परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1:3·40 है। जबकि अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित सभी 5 परिवार खेतिहर मजदूरी करते हैं और इस व्यवसाय से संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1:3·6 पाया गया है।

जैसा कि उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित हिन्दू वर्ग की तीनों जातिगत श्रेणियों में महिलाओं का प्रजननता अनुपात 3·4 से 3·6 के अन्तर्गत है परन्तु सर्वेक्षित मुस्लिम सम्प्रदाय के 5 परिवारों में प्रजननता अनुपात 1:5 है। इस सम्प्रदाय के सर्वेक्षित सभी परिवार कृषि कार्य में जुड़े हैं।

सारणी - 6.6

सर्वेक्षित ग्राम बक्वा के ग्रामीण परिवारों का व्यवसाय व जाति के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवार की श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में व्यवसाय के आधार पर सर्वेक्षित महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या									
				कृषि कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	खेतिहर मजदूर में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	परम्परागत कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	नौकरी में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	दुकान व्यवसाय में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1.	उच्च जाति	10	5	5 (1.0)	18 (3.6)	-	-	-	-	-	-	-	-
2.	पिछड़ी जाति	25	5	5 (1.0)	17 (3.40)	-	-	-	-	-	-	-	-
3.	अनुसूचित जाति जनजाति	15	5	-	-	5 (1.0)	18 (3.6)	-	-	-	-	-	-
4.	मुसलमान	2	2	2 (1.0)	10 (5.0)	-	-	-	-	-	-	-	-
5.	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
6.	योग	52	17	12 (0.71)	45 (2.65)	5 (0.27)	18 (1.06)	-	-	-	-	-	-

सारणी 6·6 को देखने से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित सभी परिवार कृषि कार्य या खेतिहर मजदूरी व्यवसाय/कार्य से सम्बन्धित है और जैसा कि सारणी के योग के कालम से स्पष्ट है सर्वेक्षित 17 ग्रामीण परिवारों में 12 परिवार कृषि कार्य व 5 परिवार खेतिहर मजदूरी से जुड़े हैं। समग्ररूप से खेतिहर मजदूरों के परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात, कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं से कम तो है परन्तु कोई खास अन्तर नहीं है अर्थात कृषि कार्य से जुड़े परिवारों की महिलाओं में प्रजननता अनुपात 0·71:2·65 एवं खेतिहर मजदूरी से जुड़े परिवारों की महिलाओं में प्रजननता अनुपात 0·27:1·06 है।

सारणी 6·7 में ग्राम गढ़का में सर्वेक्षित 5 परिवारों में, जो उच्च जाति से सम्बन्धित हैं, में सभी सर्वेक्षित परिवार कृषि कार्य में संलग्न हैं। इस कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रजननता अनुपात 1:3·6 पाया गया है।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 5 परिवार जो कृषि कार्य से जुड़े हैं, के परिवार की महिलाओं में प्रजननता अनुपात 1:3·2 पाया गया है।

अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित 5 परिवारों में एक परिवार कृषि कार्य व 4 परिवार खेतिहर मजदूरी में संलग्न हैं। इस जाति वर्ग के परिवारों में खेतिहर मजदूरी के परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·80:3·20

सारणी - 6·7

सर्वेक्षित ग्राम गढ़ूका के ग्रामीण परिवारों का व्यवसाय व जाति के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवार की श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में व्यवसाय के आधार पर सर्वेक्षित महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या									
				कृषि कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	खेतिहर मजदूर में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	परम्परागत कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	नौकरी में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	दुकान व्यवसाय में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1	उच्च जाति	25	5	5 (1·0)	18 (3·6)	-	-	-	-	-	-	-	-
2	पिछड़ी जाति	41	5	5 (1·0)	16 (3·20)	-	-	-	-	-	-	-	-
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	33	5	1 (0·20)	3 (0·60)	4 (0·80)	16 (3·20)	-	-	-	-	-	-
4·	मुसलमान	3	3	3 (1·0)	18 (6 0)	-	-	-	-	-	-	-	-
5·	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
6·	योग	102	18	14 (0·78)	55 (3·06)	4 (0·22)	16 (0·8%)	-	-	-	-	-	-

है, जो इसी जाति के कृषि कार्य में संलग्न परिवार की महिला से अधिक है इस व्यवसाय/कार्य में संलग्न परिवार की महिला का प्रजनन अनुपात 0·20: 0·60 है।

ग्राम के 3 मुसलिम परिवार जो कृषि कार्य में जुड़े है, की महिलाओं का प्रजनन अनुपात, इस गाँव के सर्वेक्षित अन्य परिवारों की महिलाओं से अधिक है। अर्थात मुसलिम सम्प्रदाय वर्ग के कृषि कार्य में लगे परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1:6 रहा, जो अन्य जाति वर्ग श्रेणी से सबसे अधिक प्रदर्शित हुआ है।

समग्ररूप से ग्राम गढ़का में खेतिहर मजदूरी से संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·22:0·89 है जो कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं के प्रजनन अनुपात 0·78:3·06 से अधिक है।

सारणी 6·8 में सर्वेक्षित समस्त ग्रामीण परिवारों में महिलाओं की जाति एवं परिवार के मुख्य व्यवसाय के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या का आंकलन किया गया है।

उच्च जाति के सर्वेक्षित 25 परिवारों में 18 परिवार कृषि कार्य, 2 परिवार खेतिहर मजदूरी व 5 परिवार नौकरी में संलग्न है। इस जाति के 18 परिवार जो कृषि कार्य में संलग्न है, उनमें महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·72:2·76 खेतिहर मजदूरी के 2 परिवारों में महिलाओं का प्रजनन

सारणी - 6·8

सर्वेक्षित समस्त ग्रामीण परिवारों में महिलाओं की जाति एवं परिवार के मुख्य व्यवसाय के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	मद		समस्त सर्वेक्षित ग्रामों का जाति के आधार पर योग					समस्त ग्रामीण क्षेत्रों का योग
			उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति : जनजाति	मुसलमान	ईसाई	
1	कुल परिवारों की संख्या		97	209	164	19	22	511
2	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या		25	35	30	19	12	121
3·	"ए" समूह	कृषि कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	18 (0·72)	28 (0·80)	9 (0·30)	14 (0·74)	4 (0·33)	73 (0·60)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	69 (2·76)	111 (3·17)	38 (1·27)	76 (4·00)	19 (1·58)	313 (2·59)
4·	"बी" समूह	खेतिहर मजदूर में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	2 (0·08)	4 (0·11)	17 (0·57)	5 (0·26)	4 (0·33)	32 (0·26)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	7 (0·28)	17 (0·49)	73 (2·43)	28 (1·47)	16 (1·33)	141 (1·17)
5·	"सी" समूह	परम्परागत कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	-	-	-	-	-	-
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	-	-	-	-	-	-
6·	"डी" समूह	नौकरी में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	5 (0·20)	3 (0·09)	3 (0·10)	-	4 (0·33)	15 (0·21)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	16 (0·64)	9 (0·26)	14 (0·47)	-	10 (0·83)	49 (0·40)
7·	"ई" समूह	दुकान व्यवसाय में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	-	-	1 (0·03)	-	-	+ (0·01)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	-	-	2 (0·07)	-	-	2 (0·02)

अनुपात 0·08:0·28 एवं नौकरी में संलग्न 5 परिवारों में महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·20:0·64 है। तुलनात्मक दृष्टि से सर्वाधिक प्रजनन अनुपात कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं में दृष्टिगत होता है और सबसे कम प्रजनन अनुपात नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं का है।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 35 परिवारों में 28 परिवार कृषि कार्य, 4 परिवार खेतिहर मजदूरी एवं 3 परिवार नौकरी कार्य में संलग्न हैं। कृषि कार्य में संलग्न 28 परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·80:3·17, खेतिहर मजदूरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रजनन अनुपात 0·11:0·49 एवं नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रजनन अनुपात 0·09:0·26 दृष्टिगत होता है। तुलनात्मक दृष्टि से सर्वाधिक प्रजनन अनुपात खेतिहर मजदूरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं एवं सबसे कम प्रजनन अनुपात नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं का स्पष्ट हुआ है।

अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित 30 परिवारों में 9 परिवार कृषि कार्य, 17 परिवार खेतिहर मजदूरी, 3 परिवार नौकरी व 1 परिवार दुकान व्यवसाय में संलग्न है। इस जाति के 9 कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रजनन अनुपात 0·30:1·27, खेतिहर मजदूरी में संलग्न

परिवारों की महिलाओं में प्रजनन अनुपात 0·57:2·43, नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·10:0·47 एवं दुकान व्यवसाय में संलग्न परिवार की महिला का प्रजनन अनुपात 0·03:0·07 पाया गया है। तुलनात्मक दृष्टि से सर्वाधिक प्रजनन अनुपात नौकरी कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं में फिर खेतिहर मजदूर व कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं में है। सबसे कम प्रजनन अनुपात दुकान व्यवसाय में संलग्न परिवार की महिला का पाया गया है परन्तु इस वर्ग में केवल एक परिवार ही आया है अतः निष्कर्ष सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता।

सर्वेक्षित 19 मुस्लिम परिवारों में 14 परिवार कृषि कार्य व 5 परिवार खेतिहर मजदूरी के कार्य में संलग्न है इस सम्प्रदाय में कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·74:4·00 एवं खेतिहर मजदूरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में प्रजनन अनुपात 0·26:1·47 पाया गया है। सर्वाधिक प्रजनन अनुपात खेतिहर मजदूरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं में दृष्टिगत होता है।

सर्वेक्षित ईसाई सम्प्रदाय के 12 परिवारों में 4 परिवार कृषि कार्य, 4 परिवार खेतिहर मजदूरी एवं 4 परिवार नौकरी

में संलग्न हैं । कृषि कार्य में संलग्न 4 परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·33:1·58, खेतिहर मजदूरी कार्य में संलग्न परिवार की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·33:1·33 एवं नौकरी में संलग्न परिवार की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·33:0·83 पाया गया है । सर्वाधिक प्रजनन दर अनुपात कृषि कार्य में संलग्न परिवार की महिलाओं में स्पष्ट हुआ है ।

समस्त ग्रामीण क्षेत्रों के सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकलता है कि सर्वेक्षित ग्रामीण परिवारों में 73 परिवार कृषि कार्य में, 32 परिवार खेतिहर मजदूरी, 15 नौकरी व एक परिवार दुकान व्यवसाय में संलग्न है । कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0·60:2·59, खेतिहर मजदूरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं का 0·26:1·17 नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं का 0·21:0·40 एवं दुकान व्यवसाय में संलग्न परिवार की महिला का 0·01:0·02 रहा । सर्वाधिक प्रजनन अनुपात खेतिहर मजदूरी कार्य में संलग्न परिवारों की महिलाओं का व सबसे कम नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं का रहा है । दुकान व्यवसाय के एक परिवार को निर्णायक निष्कर्ष हेतु औचित्यपूर्ण नहीं कहा जा सकता । अतः नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात कम दृष्टिगत होना, औचित्यपूर्ण है ।

सारणी - 6.9

सर्वेक्षित नगरीय क्षेत्र झाँसी के नगरीय परिवारों का व्यवसाय व जाति के आधार पर प्रजननित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों के व्यवसाय के आधार पर सर्वेक्षित महिलाओं द्वारा प्रजननित बच्चों की संख्या									
				कृषि कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	प्रजननित बच्चों की संख्या	खेतिहर मजदूर में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	प्रजननित बच्चों की संख्या	परम्परागत कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	प्रजननित बच्चों की संख्या	नौकरी में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	प्रजननित बच्चों की संख्या	दुकान व्यवसाय में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	प्रजननित बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1.	उच्च जाति	-	20	-	-	-	-	-	-	20 (1.0)	62 (3.1)	-	-
2.	पिछड़ी जाति	-	20	-	-	-	-	-	-	20 (1.0)	60 (3.0)	-	-
3.	अनुसूचित जाति जनजाति	-	20	-	-	5 (0.25)	20 (1.0)	-	-	15 (0.75)	40 (2.00)	-	-
4.	मुसलमान	-	20	-	-	15 (0.75)	75 (3.75)	-	-	5 (0.25)	25 (1.25)	-	-
5.	ईसाई	-	20	-	-	-	-	-	-	20 (1.0)	50 (2.50)	-	-
6.	योग	-	100	-	-	20 (0.20)	95 (0.95)	-	-	80 (0.80)	237 (2.37)	-	-

सारणी 6.9 द्वारा स्पष्ट है कि:-

सर्वेक्षित नगर झाँसी के 100 परिवारों में उच्च जाति के 20 परिवारों में सभी परिवार नौकरी में संलग्न है और इस जाति की महिलाओं में प्रजननता अनुपात 1:3.1 पाया गया है जबकि पिछड़ी जाति के 20 परिवारों जो नौकरी में संलग्न है की महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1:3 है।

अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित 20 परिवारों में 15 परिवार नौकरी व 5 परिवार खेतिहर मजदूरी में संलग्न हैं। खेतिहर मजदूर के परिवारों में महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0.25:1.0 और नौकरी में संलग्न परिवारों में यह अनुपात 0.75:1.00 पाया गया है।

मुसलमान सम्प्रदाय के 20 परिवारों में 15 परिवार खेतिहर मजदूरी वर्ग व 5 नौकरी में संलग्न हैं। मजदूरी वर्ग के मुस्लिम परिवारों में महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0.75:3.75 एवं नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0.25:1.25 पाया गया है।

ईसाई सम्प्रदाय के सभी सर्वेक्षित 20 परिवार नौकरी में संलग्न हैं और उनका प्रजननता अनुपात 1.0:2.50 है।

सर्वेक्षित नगरीय क्षेत्र का आंकलन सारणी 6.9 में प्रदर्शित किया गया है। सर्वेक्षित नगरीय क्षेत्र में कृषि कार्य, परम्परागत कार्य व दुकान व्यवसाय वर्ग का कोई भी परिवार सर्वेक्षण के अन्तर्गत नहीं आया है। सर्वेक्षित 100 परिवारों में 20 परिवार खेतिहर मजदूरी अर्थात दैनिक निर्माण कार्य या फैक्टरी आदि अन्य कार्य के परिवारों की महिलाओं में प्रजननता अनुपात 0.20:0.95 पाया गया है और नगरीय क्षेत्र के सर्वेक्षित 80 परिवार नौकरी से सम्बन्धित हैं। इन 80 परिवारों की महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0.80:2.37 आंकलित हुआ है अर्थात नगरीय क्षेत्र में मजदूर वर्ग की महिलाओं में नौकरी वर्ग की महिलाओं से प्रजननता अनुपात अधिक है।

सारणी 6.10 में समस्त ग्रामीण नगरीय परिवारों का जाति एवं निर्धारित व्यवसाय के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या एवं ग्रामीण-नगरीय प्रजननता विभिन्नता का विवेचन किया गया है।

जैसा कि सारणी 6.10 से स्पष्ट होता है कि कृषि कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या ग्रामीण सर्वेक्षित परिवारों में 73 है जबकि नगरीय क्षेत्र में कृषि कार्य में एक भी परिवार उपलब्ध नहीं हुआ है। इसी प्रकार परम्परागत कार्य व दुकान व्यवसाय में नगरीय क्षेत्र में सर्वेक्षित

सारणी – 6·10

समग्र सर्वेक्षित ग्रामीण एवं नगरीय परिवारों का जाति के आधार पर निर्धारित व्यवसाय में प्रजनित बच्चों की संख्या एवं ग्रामीण-नगरीय प्रजननता विभिन्नता

क्रमांक		मद	ग्रामीण सर्वेक्षित परिवारों की श्रेणियाँ				
			उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति जनजाति	मुसलमान	ईसाई
1		2	3	4	5	6	7
1·		कुल परिवारों की संख्या	97	209	164	19	22
2·		सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	25	35	30	13	12
3·	"ए" समूह	कृषि कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	18 (0·72)	28 (0·80)	9 (0·30)	14 (0·74)	4 (0·33)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	69 (2·76)	111 (3·17)	38 (1·27)	76 (4·00)	19 (1·58)
	"बी" समूह	खेतिहर मजदूर में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	2 (0·08)	4 (0·11)	17 (0·57)	5 (0·26)	4 (0·33)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	7 (0·28)	17 (0·49)	73 (2·43)	28 (1·47)	16 (1·33)
	"सी" समूह	परम्परागत कार्य में संलग्न परिवारो में महिलाओं की संख्या	-	-	-	-	-
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	-	-	-	-	-
	"डी" समूह	नौकरी में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	5 (0·20)	3 (0·09)	3 (0·10)	-	4 (0·33)
		जन्म दिये बच्चो की संख्या	16 (0·64)	9 (0·26)	14 (0·47)	-	10 (0·83)
	"ई" समूह	दुकान व्यवसाय में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	-	-	1 (0·03)	-	-
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	-	-	2	-	-

सारणी - 6.10

...2...

क्रमांक	मद		नगरीय सर्वेक्षित परिवारों की श्रेणियाँ					ग्रामीण	नगरीय
			उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति : जनजाति	मुसलमान	ईसाई		
1	2		8	9	10	11	12	13	14
1.	कुल परिवारों की संख्या		-	-	-	-	-	511	-
2.	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या		20	20	20	20	20	121	100
3.	"ए" समूह	कृषि कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	-	-	-	-	-	73 (0.60)	-
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	-	-	-	-	-	313 (2.59)	-
	"बी" समूह	खेतिहर मजदूर में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	-	-	5 (0.25)	15 (0.75)	-	32 (0.26)	20 (0.20)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	-	-	20 (1.0)	75 (3.75)	-	141 (1.17)	95 (0.95)
	"सी" समूह	परम्परागत कार्य में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	-	-	-	-	-	-	-
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	-	-	-	-	-	-	-
	"डी" समूह	नौकरी में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	20 (1.0)	20 (1.0)	15 (0.75)	5 (0.25)	20 (1.0)	15 (0.21)	80 (0.80)
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	62 (3.1)	60 (3.0)	40 (2.00)	25 (1.25)	50 (2.50)	49 (0.40)	237 (2.37)
	"ई" समूह	दुकान व्यवसाय में संलग्न परिवारों में महिलाओं की संख्या	-	-	-	-	-	1 (0.01)	-
		जन्म दिये बच्चों की संख्या	-	-	-	-	-	2 (0.02)	-

परिवार एकभी नहीं है अतः इन व्यवसाय के आधार पर ग्रामीण नगरीय प्रजननता विभिन्नता का विश्लेषण सम्भव नहीं है ।

ग्रामीण सर्वेक्षण खेतिहर मजदूर परिवार वे परिवार है जो कृषि व निर्माण आदि स्थानीय कार्यों में संलग्न हैं परन्तु इसी वर्ग में रखे गए नगरीय परिवार कृषि सम्बन्धी मजदूरी के कार्यों में संलग्न नहीं है क्यों कि नगरीय क्षेत्र में कृषि कार्य की स्थितियाँ उपलब्ध नहीं रहती है अतः नगरीय क्षेत्र में मजदूर परिवार निर्माण व फैक्टरी सम्बन्धी कार्य में संलग्न रहते हैं और इन्हीं कार्यों में लगे मजदूरों को खेतिहर मजदूर वर्ग में सारणी में रखा गया है ।

खेतिहर मजदूर वर्ग में ग्रामीण क्षेत्र में 32 परिवार सर्वेक्षित किए गए हैं। इस कार्य में संलग्न परिवारों में 32 महिलाओं ने 141 बच्चों को जन्म दिया अर्थात प्रजननता अनुपात 0·26:1·17 है जबकि नगरीय क्षेत्र में खेतिहर कार्य में संलग्न परिवारों की 20 महिलाओं ने 95 बच्चों का जन्म दिया और इनमें प्रजननता अनुपात 0·20:0·95 है । तुलनात्मक दृष्टि या प्रजननता विभिन्नता की दृष्टि से नगरीय क्षेत्र में खेतिहर मजदूरी वर्ग के परिवारों की महिलाओं में, ग्रामीण क्षेत्र की इसी व्यवसाय/कार्य में संलग्न महिलाओं की अपेक्षा प्रजननता अधिक स्पष्ट होती है । अर्थात ग्रामीण

क्षेत्र में प्रजननता औसत 4·40 व नगरीय क्षेत्र में 4·75 उपरोक्त वर्ग में सर्वेक्षित आँकड़ो के आधार पर आंकलित किया जा सकता है ।

नौकरी में संलग्न सर्वेक्षित ग्रामीण व नगरीय परिवारों के आधार पर भी प्रजननता विभिन्नता विश्लेषित की जा सकती है । सारणी 6·10 में सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र के परिवारों में 15 परिवार नौकरी में संलग्न सर्वेक्षित किए गए है जबकि नगरीय क्षेत्र में नौकरी में संलग्न 80 परिवार है । ग्रामीण क्षेत्र में नौकरी में संलग्न परिवारों में महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0·21:0·40 है जबकि नगरीय क्षेत्र में नौकरी में संलग्न परिवारों में महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0·80:2·37 है । अर्थात ग्रामीण क्षेत्र में प्रजननता औसत 3·26 व नगरीय क्षेत्र 2·96 नौकरी में संलग्न परिवारों में महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या के आधार पर आंकलित होता है इससे स्पष्ट होता है कि इस व्यवसाय/कार्य में संलग्न ग्रामीण परिवारों की महिलाओं में नगरीय क्षेत्र की अपेक्षा प्रजननता दर अधिक है ।

सारणी 6·10 द्वारा खेतिहर मजदूरी और नौकरी वर्ग में ही ग्रामीण-नगरीय प्रजननता विभिन्नता का आंकलन किया जा सकता है क्योंकि यह व्यवसाय/कार्य वर्ग में ही नगर व ग्रामीण परिवारों में महिलाओं व उनके द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या उपलब्ध है । व्यवसाय के आधार पर ग्रामीण

व नगरीय प्रजननता विभिन्नता के अन्तर्गत सारणी द्वारा स्पष्ट है कि खेतिहर मजदूर वर्ग में महिलाओं की प्रजननता, नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं से अधिक है। इसके अतिरिक्त खेतिहर मजदूरी में संलग्न ग्रामीण व नगरीय परिवारों की महिलाओं में प्रजननता उपरोक्त विवेचन से भिन्न-भिन्न प्रमाणित हुई है। इसी प्रकार नौकरी में संलग्न ग्रामीण व नगरीय परिवारों की महिलाओं की प्रजननता भी भिन्न-भिन्न प्रमाणित हुई है, अर्थात निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि परिवार के व्यवसाय/कार्य/आय के स्त्रोत का प्रभाव महिलाओं की प्रजननता पर पड़ता है और कार्य के स्थान सामाजिक वातावरण में परिवर्तन होने के कारण ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र में एक ही व्यवसाय में लगे परिवारों की महिलाओं की प्रजननता भिन्न-भिन्न होती है।

" अध्याय - 7 "

शिक्षा स्तर एवं ग्रामीण नगरीय प्रजननता विभिन्नता

शिक्षा स्तर तथा सन्तानोत्पादन के बीच पारस्परिक सम्बन्ध है। सामान्यतः शिक्षितों की अपेक्षा अशिक्षितों में अधिक बच्चे होते हैं। शिक्षित स्त्रियों की अपेक्षा अशिक्षित स्त्रियों के अधिक बच्चे होते हैं। ज्यों - ज्यों आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार होता है, उसी के अनुसार सन्तानोत्पादन की संख्या में भी कमी आती जाती है। शिक्षित लोग अपने जीवन स्तर को बनाये रखने के लिये नियोजित परिवार को अधिक महत्व देते हैं। इस प्रकार यह अनुमान है कि शिक्षा स्तर जन्म दर को प्रभावित करता है।

1951 की जनगणना के अनुसार, भारत में 16.6 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर थे। पुरुषों में 24.9 प्रतिशत लोग साक्षर थे और स्त्रियों में 7.9% स्त्रियाँ साक्षर थीं। इस साक्षर का अभिप्राय अधिक शिक्षा न हो कर, केवल किसी भाषा को पढ़ने और लिखने की योग्यता से है। सन् 1961 की जनगणना के अनुसार भारत में 24.0 प्रतिशत लोग साक्षर थे। पुरुषों में साक्षरता का अनुपात 34.5% था और स्त्रियों में यह अनुपात 13.0% था। 1965-66 के अनुमानों के अनुसार, भारतीय जनसंख्या का लगभग 30.0 प्रतिशत साक्षर है।

सन् 1951 में 19.2 व्यक्ति साक्षर थे। 1951 से 1961 के बीच

10 वर्षों में साक्षर व्यक्तियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई। इसके साथ ही जनसंख्या में वृद्धि के फलस्वरूप निरक्षर व्यक्तियों की संख्या भी बढ़ी है। 5 से 19 वर्ष के आयु वर्ग में 45.6 प्रतिशत जनसंख्या निरक्षर है।

ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 15.7 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर थी। पुरुषों और स्त्रियों में 7.5 जनसंख्या साक्षर थी। नगरों में साक्षरता का प्रतिशत अधिक रहा है। 1961 की जनगणना के अनुसार नगरीय जनसंख्या का 27.3 प्रतिशत साक्षर थी। नगरों में 31.2 प्रतिशत पुरुष और 22.5% स्त्रियाँ साक्षर थीं।

राज्य नियोजन संस्थान, उ0 प्र0 लखनऊ ने 1981 में साक्षरता के सम्बन्ध में निम्न आँकड़े उपलब्ध कराये है, जिससे ग्रामीण-नगरीय व पुरुष स्त्री की साक्षर का तुलनात्मक दिग्दर्शन किया जा सकता है।

सारणी - 7.1

साक्षरता अनुपात 1981

मद	उत्तर प्रदेश	बुन्देलखण्ड	झाँसी जिला
कुल	27.16	28.92	37.83
पुरुष	38.76	41.79	50.66
स्त्री	14.04	13.92	21.36
ग्रामीण	23.06	24.32	28.76
नगरीय	45.88	47.37	50.58

उपरोक्त से यह तथ्य उद्घाटित होता है कि झाँसी जिले में साक्षरता अनुपात उत्तर प्रदेश व बुन्देलखण्ड क्षेत्र से अधिक है। अर्थात झाँसी जनपद में शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है।

अध्यायान्तर्गत यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर का महिलाओं की प्रजननता दर व अनुपात पर कैसा प्रभाव पड़ रहा है।

महिलाओं की शिक्षा के आधार पर उनके द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या का ग्रामीण व नगरीय सर्वेक्षणों द्वारा उनकी प्रजननता विभिन्नता को आंकलित करने का प्रयास किया गया है।

महिला शिक्षा के आधार पर ग्रामीण सर्वेक्षण के अन्तर्गत पूर्व निर्धारित छः गाँवों को लिया गया है और सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या का नगरीय क्षेत्र की महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या से तुलनात्मक विवेचन शिक्षा के आधार पर किया गया है।

सारणी 7.2 मे ग्राम आरी के परिवारों मे महिलाओं की शिक्षा के आधार पर उन्हे विभिन्न जाति श्रेणियों में विभाजित करके

सारणी - 7.2

सर्वेक्षित ग्राम आरी के ग्रामीण परिवारों की महिलाओं का जाति के आधार पर निर्धारित शिक्षा स्तर में प्रजननित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में महिलाओं के शिक्षा स्तर के अनुसार प्रजननित बच्चों की संख्या							
				निरक्षर	जन्म दिये बच्चों की संख्या	प्राइमरी	जन्म दिये बच्चों की संख्या	जूनियर हाई स्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या	हाई स्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1.	उच्च जाति	35	5	1 (0.2)	2 (0.4)	3 (0.6)	10 (2)	-	-	1 (0.2)	2 (0.4)
2.	पिछड़ी जाति	45	5	1 (0.2)	3 (0.6)	4 (0.8)	13 (2.6)	-	-	-	-
3.	अनुसूचित जाति जनजाति	30	5	2 (0.4)	6 (1.2)	3 (0.6)	18 (3.6)	-	-	-	-
4.	मुसलमान	3	3	3 (0.6)	14 (2.8)	-	-	-	-	-	-
5.	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	113	18	7 (0.3)	25 (1.3)	10 (0.5)	41 (2.27)	-	-	1 (0.05)	2 (0.11)

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में महिलाओं के शिक्षा स्तर के अनुसार प्रजननित बच्चों की संख्या					
				इण्टरमीडिएट	जन्म दिये बच्चों की संख्या	स्नातक व उच्च	जन्म दिये बच्चों की संख्या	अन्य	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1.	उच्च जाति	35	5	-	-	-	-	-	-
2.	पिछड़ी जाति	45	5	-	-	-	-	-	-
3.	अनुसूचित जाति जनजाति	30	5	-	-	-	-	-	-
4.	मुसलमान	3	3			-	-	-	-
5.	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	113	18	-	-	-	-	-	-

उनके द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या का आंकलन किया गया है।

सारणी 7.2 से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षण के अन्तर्गत लिये गये उच्च जाति के 5 परिवारों में 1 महिला निरक्षर, 3 प्राइमरी व 1 हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त है। निरक्षर महिला का प्रजनन अनुपात 0.2:0.4, प्राइमरी महिलाओं का 0.6:2 एवं हाईस्कूल महिला का प्रजनन अनुपात 0.2:0.4 है। इस जाति श्रेणी में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात प्राइमरी तक शिक्षा प्राप्त महिलाओं मे पाया गया है।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 5 परिवारों में एक महिला निरक्षर श्रेणी व 4 महिलायें प्राइमरी शैक्षिक स्तर तक पायी गयी। इस जाति वर्ग में निरन्तर शैक्षिक स्तर की महिला का प्रजनन अनुपात 0.2:0.6 व प्राइमरी शैक्षिक वर्ग की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0.8:2.6 पाया गया है।

अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित 5 परिवारों में 2 महिलायें निरक्षर वर्ग में व 3 महिलायें प्राइमरी शैक्षिक वर्ग में पायी गयी इनमे प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.4:1.2 एवं 0.6:3.6 पाया गया।

सर्वेक्षित मुस्लिम सम्प्रदाय के 3 परिवारों में निरन्तर शैक्षिक

सारणी - 7·3

सर्वेक्षित ग्राम बूढ़ा के ग्रामीण परिवारों की महिलाओं का जाति के आधार पर निर्धारित शिक्षा के स्तर में जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में महिलाओं के शिक्षा स्तर के अनुसार प्रजननित बच्चों की संख्या							
				निरक्षर	जन्म दिये बच्चों की संख्या	प्राइमरी	जन्म दिये बच्चों की संख्या	जूनियर हाईस्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या	हाई स्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1·	उच्च जाति	3	1	-	-	1 (1)	5 (5)	-	-	-	-
2·	पिछड़ी जाति	35	9	3 (0·3)	20 (2·2)	4 (0·4)	17 (1·8)	2 (0·2)	8 (0·88)	-	-
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	20	5	5 (1)	36 (7·2)	-	-	-	-	-	-
4·	मुसलमान	3	3	3 (1)	15 (5)	-	-	-	-	-	-
5·	ईसाई	7	7	-	-	3 (0·4)	15 (2·1)	1 (0·14)	7 (1)	2 (0·28)	12 (1·7)
	योग	68	25	11 (0·44)	71 (2·84)	8 (0·32)	37 (1·48)	3 (0·12)	15 (0·60)	2 (0·08)	12 (0·48)

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में महिलाओं के शिक्षा स्तर के अनुसार प्रजननित बच्चों की संख्या					
				इण्टरमीडिएट	जन्म दिये बच्चों की संख्या	स्नातक व उच्च	जन्म दिये बच्चों की संख्या	अन्य	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1.	उच्च जाति	3	1	-	-	-	-	-	-
2.	पिछड़ी जाति	35	9	-	-	-	-	-	-
3.	अनुसूचित जाति जनजाति	20	5	-	-	-	-	-	-
4.	मुसलमान	3	3	-	-	-	-	-	-
5.	ईसाई	7	7	2 (0.2)	7 (1)	-	-	-	-
	योग	68	25	2 (0.08)	7 (0.28)	-	-	-	-

स्तर की 3 महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0.6:2.8 पाया गया है।

सारणी 7.2 में सर्वेक्षित 18 परिवारों में 18 महिलाओं में से 7 निरक्षर, 10 प्राइमरी व एक हाईस्कूल शैक्षिक स्तर की पायी गयी, इनमें प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.3:1.3, 0.5:2.27 एवं 0.05:0.11 पाया गया है। सर्वाधिक औसत प्रजनन तीव्रता या बच्चों की संख्या प्राइमरी शैक्षिक स्तर की महिलाओं की प्रदर्शित हुई है। एवं सबसे कम प्रजनन अनुपात हाईस्कूल शैक्षिक स्तर की महिला में पाया गया है।

सारणी 7.3 में ग्राम बूढा के सर्वेक्षित परिवारों मे महिलाओं के शैक्षिक स्तर एव जाति के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या का विवेचन किया गया है।

उच्च जाति के सर्वेक्षित 1 परिवारों में एक महिला जो प्राइमरी शैक्षिक स्तर की पायी गयी, का प्रजनन अनुपात 1:5 प्रदर्शित हुआ है। जबकि पिछड़ी जाति के अन्तर्गत सर्वेक्षित 9 परिवारों में 3 महिलाये निरक्षर, 4 प्राइमरी व 2 जूनियर हाईस्कूल शैक्षिक स्तर की पायी गयी है, इनका प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.3:2.2, 0.4:1.8 एव 0.2:0.88 पाया गया है। आनुपातिक आधार पर सर्वाधिक प्रजनन अनुपात निरक्षर शैक्षिक स्तर की महिलाओं व सबसे कम प्रजनन अनुपात मिडिल शैक्षिक स्तर की महिलाओं में

प्रकट हुआ है, जिससे स्पष्ट होता है कि इस जाति वर्ग के इस गाँव में पिछड़ी जाति की महिलाओं में ज्यों- ज्यों शैक्षिक स्तर बढ़ रहा है, त्यों - त्यों प्रजनन दर में कमी हो रही है अर्थात इस जाति वर्ग में सर्वेक्षित ग्राम में शिक्षा का प्रभाव प्रजननता पर स्पष्ट रूप से पड़ रहा है।

अनुसूचित जाति के 5 सर्वेक्षित परिवारों की समस्त 5 महिलाये निरक्षर शैक्षिक स्तर की है और इनमे प्रजनन अनुपात 1:7.2 पाया गया है।

सर्वेक्षित मुसलिम सम्प्रदाय के 3 परिवारों की महिलाये निरक्षर शैक्षिक स्तर मे आती है जिनमे प्रजननता अनुपात 1:5 पाया गया है।

ईसाई सम्प्रदाय के सर्वेक्षित 7 परिवार की महिलाओं में 3 प्राइमरी, 1 जूनियर हाई स्कूल, 2 हाई स्कूल एव 2 इण्टरमीडिएट शैक्षिक स्तर की पायी गयी है इनमे प्रजनन अनुपात क्रमश: 0.4:2.1, 0.14:1.0, 0.28:1.7 एवं 0.2:1.0 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सबसे कम प्रजनन अनुपात इण्टरमीडिएट शैक्षिक स्तर की महिलाओं मे दृष्टिगोचर हुआ है। निष्कर्षत: हम कह सकते है शैक्षिक स्तर में वृद्धि का प्रभाव महिलाओं द्वारा जनित बच्चों की संख्या पर इस सम्प्रदाय वर्ग में भी पड़ रहा है।

सारणी - 7·4

सर्वेक्षित ग्राम बिजौली के ग्रामीण परिवारों की महिलाओं का जाति के आधार पर निर्धारित शिक्षा स्तर में प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों में महिलाओं के शिक्षास्तर के अनुसार प्रजनित बच्चों की संख्या							
				निरक्षर	जन्म दिये बच्चों की संख्या	प्राइमरी	जन्म दिये बच्चों की संख्या	जूनियर हाईस्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या	हाई स्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1.	उच्च जाति	14	4	-	-	3 [0·7]	5 [1·2]	2 [0·5]	6 [1·5]	-	-
2.	पिछड़ी जाति	28	6	-	-	5 [0·8]	23 [3·8]	-	-	-	-
3.	अनुसूचित जाति जनजाति	25	5	5 [1]	28 [5·6]	-	-	-	-	-	-
4.	मुसलमान	5	5	4 [0·8]	22 [4·4]	1 [0·2]	6 [1·2]	-	-	-	-
5.	ईसाई	15	5	-	-	1 [0·2]	3 [0·6]	2 [0·4]	3 [0·6]	1 [0·2]	3 [0·6]
	योग	87	25	9 [0·36]	50 [2]	10 [0·4]	37 [1·48]	4 [0·16]	9 [0·36]	1 [0·04]	3 [0·12]

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की महिलाओं के शिक्षा स्तर के अनुसार प्रजनित बच्चों की संख्या					
				इण्टरमीडियट	जन्म दिये बच्चों की संख्या	स्नातक व उच्च	जन्म दिये बच्चों की संख्या	अन्य	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1·	उच्च जाति	14	4	1 (0·2)	5 (1·2)	-	-	-	-
2·	पिछड़ी जाति	28	6	1 (0·16)	4 (0·6)	-	-	-	-
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	25	5	-	-	-	-	-	-
4·	मुसलमान	5	5	-	-	-	-	-	-
5·	ईसाई	15	5	-	-	1 (0·2)	1 (0·2)	-	-
	योग	87	25	2 (0·08)	9 (0·36)	1 (0·04)	1 (0·04)	-	-

ग्राम बूढा के सर्वेक्षित 25 परिवारों में 11 महिलायें निरक्षर, 8 प्राइमरी, 3 जूनियर हाई स्कूल, 2 हाई स्कूल व 2 इण्टरमीडिएट शैक्षिक स्तर की है इनमें सबसे अधिक प्रजनन अनुपात निरक्षर शैक्षिक स्तर की महिलाओं में प्रदर्शित हुआ है और सबसे कम प्रजनन अनुपात इण्टरमीडिएट शैक्षिक स्तर की महिलाओं में प्रकट हुआ है। अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि शैक्षिक स्तर में वृद्धि से प्रजननता दर में कमी आती जा रही है अर्थात शिक्षा का प्रभाव महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या पर पड़ रहा है।

सारणी 7.4 में ग्राम बिजौली के सर्वेक्षण के अन्तर्गत उच्च जाति के अन्तर्गत 4 परिवारों को लिया गया है। उच्च जाति के 4 परिवारों में 3 महिलायें प्राइमरी, 2 जूनियर हाईस्कूल व 1 इण्टरमीडिएट शैक्षिक स्तर की पायी गयी। इनका प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.7:1.2, 0.5:1.5 एवं 0.2:1.2 आंकलित किया गया है।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 6 परिवारों में 5 महिलायें प्राइमरी व 1 महिला इण्टरमीडिएट स्तर की पायी गयी। इनका प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.8:3.8 एवं 0.1:0.6 पाया गया। सारणी से स्पष्ट है कि इस जाति की प्राइमरी वर्ग की महिलाओं की अपेक्षा इण्टरमीडिएट

वर्ग के शैक्षिक स्तर में आने वाली महिला का प्रजनन अनुपात कम है अर्थात शिक्षा स्तर बढ़ने के साथ प्रजनन दर घट रही है।

अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित 5 परिवारों में सभी 5 महिलायें निरक्षर शैक्षिक स्तर की है जिनका प्रजनन अनुपात 1:5.6 पाया गया है।

मुसलमान सम्प्रदाय के सर्वेक्षित 5 परिवारों की 4 महिलाये निरक्षर व 1 प्राइमरी स्तर शिक्षित पायी गयी है। इनका प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.8:4.4 एवं 0.2:1.2 पाया गया है।

ईसाई सम्प्रदाय के सर्वेक्षित 5 परिवारों में से 1 प्राइमरी, 2 जूनियर हाई स्कूल, 1 इण्टरमीडिएट व 1 स्नातक स्तर महिलाये शिक्षित पायी गयी जिनका प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.2:0.6, 0.4:0.6, 0.2:0.6 एवं 0.2:0.2 पाया गया है। सर्वाधिक प्रजनन अनुपात प्राइमरी व हाई स्कूल वर्ग की महिलाओं में व सबसे कम प्रजनना अनुपात स्नातक शैक्षिक स्तर की की महिलाओं में परिलक्षित हुआ है।

समस्त ग्राम बिजौली के सर्वेक्षित 25 परिवारों मे 9 निरक्षर 10 प्राइमरी, 4 जूनियर हाई स्कूल, 2 इण्टरमीडिएट, 1 हाईस्कूल व एक

सारणी - 7.5

सर्वेक्षित ग्राम बकवा के ग्रामीण परिवारों की महिलाओं का जाति के आधार पर निर्धारित शिक्षा के स्तर में प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित ग्रामीण परिवारों में महिलाओं के शिक्षा स्तर के अनुसार प्रजनित बच्चों की संख्या							
				निरक्षर	जन्म दिये बच्चों की संख्या	प्राइमरी	जन्म दिये बच्चों की संख्या	जूनियर हाई स्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या	हाई स्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1.	उच्च जाति	10	5	-	-	4 (0.8)	16 (3.2)	1 (0.2)	2 (0.4)	-	-
2.	पिछड़ी जाति	25	5	5 (1)	17 (3.4)	-	-	-	-	-	-
3.	अनुसूचित जाति जनजाति	15	5	5 (1)	18 (3.6)	-	-	-	-	-	-
4.	मुसलमान	2	2	1 (0.5)	7 (3.5)	-	-	-	-	-	-
5.	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	52	17	11 (0.64)	42 (2.47)	4 (0.23)	16 (0.94)	1 (0.05)	2 (0.11)	-	-

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित ग्रामीण परिवारों में महिलाओं के शिक्षा स्तर के अनुसार प्रजननित बच्चों की संख्या					
				इण्टरमीडिएट	जन्म दिये बच्चों की संख्या	स्नातक व उच्च	जन्म दिये बच्चों की संख्या	अन्य	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1·	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1·	उच्च जाति	10	5	-	-	-	-	-	-
2·	पिछड़ी जाति	25	5	-	-	-	-	-	-
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	15	5	-	-	-	-	-	-
4·	मुसलमान	2	2	1	5	-	-	-	-
5·	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	52	17	01 (0·05)	5 (0·29)	-	-	-	-

स्नातक स्तर के शिक्षा स्तर की महिलाये पायी गयी, इनका प्रजनन अनुपात क्रमशः 0·36:2·0, 0·4:1·48, 0·16:0·36, 0·08:0·36, 0·04:0·12 एवं 0·04:0·04 पाया गया है। सारणी के समग्र योग से स्पष्ट है कि निरक्षर शैक्षिक स्तर की महिलाओं का प्रजनन अनुपात सर्वाधिक है और स्नातक स्तर की महिलाओं का प्रजनन अनुपात सबसे कम है। स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है इस गाँव में भी शैक्षिक स्तर का प्रभाव महिलाओं की प्रजनित बच्चों की संख्या पर पड़ा है।

सारणी 7·5 में सर्वेक्षित ग्राम बनवाँ के ग्रामीण परिवारों में जाति के आधार पर विभाजित निर्धारित शिक्षा स्तर के अन्तर्गत महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या का आंकलन किया गया है।

ग्रामान्तर्गत उच्च जाति के सर्वेक्षित 5 परिवारों में 4 महिलाएँ प्राइमरी व 1 जूनियर हाईस्कूल स्तर तक शिक्षा प्राप्त है इस शैक्षिक स्तर की महिलाओं का प्रजनन अनुपात क्रमशः 0·8:3·2 एवं 0·2:0·4 पाया गया। इस जातिश्रेणी में प्राइमरी तक शिक्षा प्राप्त महिलाओं का प्रजनन अनुपात जूनियर हाईस्कूल प्राप्त महिलाओं से अधिक है।

सर्वेक्षित पिछड़ी जाति के 5 परिवारों की 5 महिलाये निरक्षर शैक्षिक स्तर की है जिनका प्रजनन अनुपात 1:3·4 पाया गया। अनुसूचित

जाति श्रेणी के सर्वेक्षित 5 परिवार की 5 महिलाये भी निरक्षर है और इनका प्रजनन अनुपात 1:3.6 पाया गया ।

मुसलमान सम्प्रदाय के सर्वेक्षित 2 परिवारों में एक महिला निरक्षर व एक इण्टरमीडिएट शैक्षिक स्तर की है परन्तु इनका प्रजननअनुपात क्रमशः 0.5:3.5 एवं 0.5:2.5 पाया गया अर्थात शिक्षित मुस्लिम महिला का प्रजनन अनुपात, अशिक्षित या निरक्षर महिला से कम है अर्थात इस सम्प्रदाय की शिक्षित महिलाओं का प्रजनन अनुपात भी शिक्षा के स्तर से प्रभावित हो रहा है ।

सर्वेक्षित ग्राम बकर्रा में 17 परिवारों का सर्वेक्षण किया गया है इन परिवारों के अन्तर्गत 11 महिलाये निरक्षर, 4 प्राइमरी, 1 जूनियर हाईस्कूल व एक इण्टरमीडिएट शैक्षिक स्तर की पायी गयी है । सर्वाधिक प्रजनन अनुपात इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त महिला की प्रदर्शित होती है परन्तु सर्वेक्षण के अन्तर्गत व केवल एक महिला ही इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त है । अतः यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है कि इस गाँव में अधिकतम शिक्षित महिलाये ही अधिक प्रजनन अनुपात प्रदर्शित करती है । सबसे कम प्रजनन अनुपात जूनियर हाईस्कूल प्राप्त एक महिला का है परन्तु सर्वेक्षण के अन्तर्गत एक महिला होने के कारण इस निष्कर्ष को पूर्ण गाँव के लिये सामान्य रूप से नहीं कहा जा सकता है ।

सारणी - 7·6

सर्वेक्षित ग्राम भट्टागाँव के ग्रामीण परिवारों की महिलाओं का जाति एवं निर्धारित शिक्षा स्तर में प्रजननित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की महिलाओं के शिक्षा स्तर के अनुसार प्रजननित बच्चों की संख्या							
				निरक्षर	जन्म दिये बच्चों की संख्या	प्राइमरी	जन्म दिये बच्चों की संख्या	जूनियर हाई स्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या	हाईस्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1·	उच्च जाति	10	5	-	-	2 (0·4)	10 (2)	2 (0·4)	6 (1·2)	1 (0·2)	5 (1)
2·	पिछड़ी जाति	35	5	2 (0·4)	8 (1·6)	3 (0·6)	14 (2·8)	-	-	-	-
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	41	5	5 (1)	23 (4·6)	-	-	-	-	-	-
4·	मुसलमान	3	3	2 (0·6)	14 (4·6)	1 (0·3)	5 (1·6)	-	-	-	-
5·	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
6·	योग	89	18	9 (0·50)	45 (2·50)	6 (0·33)	29 (1·61)	2 (0·11)	6 (0·33)	1 (0·05)	5 (0·27)

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित ग्रामीण परिवारों की महिलाओं के शिक्षा स्तर के अनुसार प्रजननित बच्चों की संख्या					
				इण्टरमीडिएट	जन्म दिये बच्चों की संख्या	स्नातक व उच्च	जन्म दिये बच्चों की संख्या	अन्य	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1.	उच्च जाति	10	5	-	-	-	-	-	-
2.	पिछड़ी जाति	35	5	-	-	-	-	-	-
3.	अनुसूचित जाति जनजाति	41	5	-	-	-	-	-	-
4.	मुसलमान	3	3	-	-	-	-	-	-
5.	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	89	18	-	-	-	-	-	-

सारणी 7.6 द्वारा ग्राम भट्टा गाँव के ग्रामीण परिवारों की महिलाओं का जाति एवं शिक्षा स्तर के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या का आंकलन किया गया है।

ग्रामान्तर्गत सर्वेक्षित उच्च जाति श्रेणी के 5 परिवारों में 2 महिलायें प्राइमरी, 2 जूनियर हाईस्कूल व एक महिला हाईस्कूल शैक्षिक स्तर की पायी गयी है। इन शैक्षिक स्तरों पर उक्त महिलाओं का प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.4:2.0, 0.4:1.2, 0.2:1 पाया गया है। सर्वाधिक प्रजनन अनुपात जूनियर हाईस्कूल शिक्षा स्तर की महिलाओं में पाया गया है।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 5 परिवारों में 2 महिलायें निरक्षर 3 प्राइमरी शिक्षा स्तर की है। इनका प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.4:1.6 एवं 0.6:2.8 प्रदर्शित होता है। अर्थात सर्वाधिक प्रजनन अनुपात प्राइमरी तक शिक्षित महिलाओं में पाया गया है।

अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित 5 परिवारों की 5 महिलायें निरक्षर शिक्षा स्तर की है इनका प्रजनन अनुपात 1:4.6 पाया गया है।

मुसलमान सम्प्रदाय के सर्वेक्षित 3 परिवारों में 2 महिलाये

निरक्षर एवं एक प्राइमरी शिक्षा स्तर की है। इनका प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.6:4.6 एवं 0.3:1.6 पाया गया है। इस सम्प्रदाय की निरक्षर महिलाओं की प्रजननता अनुपात, प्राइमरी शिक्षा प्राप्त महिलाओं से अधिक है।

ग्राम भट्टागाँव के 18 परिवारों के सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है कि 18 परिवारों में 9 महिलायें निरक्षर, 6 प्राइमरी, 2 जूनियर हाई स्कूल एवं एक हाईस्कूल शिक्षा स्तर की है इनका प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.50:2.50, 0.33:1.61, 0.11:0.33 एवं 0.05:0.27 प्रकट होता है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि सर्वाधिक प्रजननता अनुपात निरक्षर महिलाओं में प्रकट होता है और सबसे कम प्रजननता अनुपात जूनियर हाईस्कूल शिक्षा प्राप्त महिलाओं की प्रकट होती है। तात्पर्य यह प्रकट होता है कि शिक्षा स्तर का प्रभाव महिलाओं द्वारा प्रजनित सन्तति की संख्या पर पड़ता है।

सारणी 7.7 में ग्राम गढ़ूका के ग्रामीण परिवार की महिलाओं का उनकी जाति एवं शिक्षा के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या का विवेचन किया गया है।

सारणी - 7·7

सर्वेक्षित ग्राम गढ़ुका के ग्रामीण परिवारों की महिलाओं का जाति के आधार पर निर्धारित शिक्षा में प्रजननित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित ग्रामीण परिवारों की महिलाओं के शिक्षा स्तर के अनुसार प्रजननित बच्चों की संख्या							
				निरक्षर	जन्म दिये बच्चों की संख्या	प्राइमरी	जन्म दिये बच्चों की संख्या	जूनियर हाईस्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या	हाई स्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	उच्च जाति	25	5	1 (0·2)	5 (1)	2 (0·4)	10 (2)	2 (0·4)	6 (1·2)	-	-
2·	पिछड़ी जाति	41	5	3 (0·6)	8 (1·6)	2 (0·4)	6 (1·2)	-	-	-	-
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	33	5	4 (0·8)	17 (3·4)	1 (0·2)	2 (0·4)	-	-	-	-
4·	मुसलमान	3	3	2 (0·6)	14 (4·6)	1 (0·3)	4 (1·3)	-	-	-	-
5·	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	102	18	10 (0·55)	44 (2·44)	6 (0·33)	22 (1·22)	2 (0·11)	6 (0·33)	-	-

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित ग्रामीण परिवारों की महिलाओं के शिक्षा स्तर के अनुसार प्रजनित बच्चों की संख्या					
				इण्टरमीडिएट	जन्म दिये बच्चों की संख्या	स्नातक व उच्च	जन्म दिये बच्चों की संख्या	अन्य	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1.	उच्च जाति	25	5	-	-	-	-	-	-
2.	पिछड़ी जाति	41	5	-	-	-	-	-	-
3.	अनुसूचित जाति जनजाति	33	5	-	-	-	-	-	-
4.	मुसलमान	3	3	-	-	-	-	-	-
5.	ईसाई	-	-	-	-	-	-	-	-
	योग	102	18	-	-	-	-	-	-

अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित 5 परिवारों में 4 महिलाये निरक्षर व एक प्राइमरी शिक्षा स्तर की पायी गयी है। इनमें प्रजननता अनुपात क्रमशः 0·8:3·4 एवं 0·2:0·4 प्रकट होता है। इस जाति श्रेणी की निरक्षर महिलाओं का प्रजननता अनुपात प्राइमरी तक शिक्षित महिलाओं से अधिक है।

सर्वेक्षित मुसलमान सम्प्रदाय के 3 परिवारों में 2 महिलाये निरक्षर व 1 प्राइमरी शैक्षिक स्तर की है। इस सम्प्रदाय की निरक्षर महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0·6:4·6 एवं प्राइमरी तक शिक्षित महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0·3:1·3 प्रकट हुआ है। इस सम्प्रदाय की निरक्षर महिलाओं में प्रजननता अनुपात अन्य जाति श्रेणी की निरक्षर महिलाओं से सर्वाधिक प्रकट हुआ है।

सारणी 8·7 में प्रदर्शित ग्राम गहूका के सर्वेक्षण से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि निरक्षर महिलाओं में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात है और तुलनात्मक दृष्टि से यह अनुपात सर्वेक्षित महिलाओं की जूनियर हाई स्कूल तक शिक्षित महिलाओं से अधिक है। इसका तात्पर्य यह है कि ग्राम के सर्वेक्षण से यह बात स्पष्ट होती है कि शिक्षित महिलाओं का प्रजनन अनुपात अशिक्षित या निरक्षर की तुलना में कम होता है अर्थात इस गाँव में भी शिक्षा का प्रभाव प्रजननता पर पड़ा है।

सारणी - 7·8

सर्वेक्षित समस्त गाँवों के परिवारों की महिलाओं का शिक्षा स्तर के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या का आकलन

मद			समस्त ग्रामों का कुल योग					
			परिवारों की संख्या					
			उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति एवं जनजाति	मुसलमान	ईसाई	योग
कुल परिवारों की संख्या			97	209	164	19	22	511
सर्वेक्षित परिवारों की संख्या			25	35	30	19	12	121
"ए"	:	निरक्षर	2 (0·08)	14 (0·4)	26 (0·86)	15 (0·78)	-	57 (0·47)
	:	जन्म दिये बच्चों की संख्या	7 (0·28)	56 (1·6)	128 (4·26)	86 (4·52)	-	277 (2·28)
"बी"	:	प्राइमरी	15 (0·60)	18 (0·51)	4 (0·13)	3 (0·15)	4 (0·33)	40 (0·33)
	:	जन्म दिये बच्चों की संख्या	54 (2·16)	73 (2·08)	20 (0·66)	15 (0·78)	18 (1·50)	162 (1·33)
"सी"	:	जूनियर हाई स्कूल	7 (0·28)	2 (0·05)	-	-	3 (0·25)	12 (0·09)
	:	जन्म दिये बच्चों की संख्या	20 (0·80)	8 (0·22)	-	-	10 (0·83)	38 (0·31)

मद		समस्त ग्रामों का कुल योग					
		परिवारों की संख्या					
		उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति स्वजनजाति	मुसलमान	ईसाई	योग
कुल परिवारों की संख्या		97	209	164	19	22	511
सर्वेक्षित परिवारों की संख्या		25	35	30	19	12	121
"डी"	हाईस्कूल	2 (0·08)	-	-	-	3 (0·25)	5 (0·41)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	7 (0·28)	-	-	-	15 (1·25)	23 (0·18)
"ई"	इण्टरमीडिएट	1 (0·04)	1 (0·02)	-	1 (0·05)	2 (0·16)	5 (0·41)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	65 (0·20)	4 (0·11)	-	5 (0·26)	7 (0·58)	21 (0·17)
"एफ"	स्नातक व उच्च	-	-	-	-	1 (0·08)	1 (0·008)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	-	-	-	-	1 (0·08)	1 (0·008)
"जी"	अन्य	-	-	-	-	-	-
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	-	-	-	-	-	-

सारणी 7·8 में समस्त सर्वेक्षित ग्रामों के परिवारों की शिक्षा एवं जाति के आधार पर सर्वेक्षित महिलाओं द्वारा जन्म दिये बच्चों की संख्या का आंकलन किया गया है।

उच्च श्रेणी के अन्तर्गत सर्वेक्षित 25 परिवारों में 2 महिलायें निरक्षर, 15 प्राइमरी स्तर, 7 जूनियर हाईस्कूल, 2 हाईस्कूल व एक इन्टर-मीडिएट तक शिक्षा प्राप्त है। इन शैक्षिक स्तरों में इस जातिश्रेणी की महिलाओं का प्रजननता अनुपात क्रमशः 0·08:0·28, 0·60:2·16, 0·28:0·80, 0·08:0·28 एवं 0·04:0·20 प्रकट हुआ है। इन सभी शैक्षिक स्तर की महिलाओं में से सर्वाधिक प्रजनन अनुपात प्राइमरी स्तर तक शिक्षा प्राप्त महिलाओं का प्रकट हुआ है।

पिछड़ी जाति के अन्तर्गत सर्वेक्षित 35 परिवारों में 14 निरक्षर, 18 प्राइमरी, 2 जूनियर हाईस्कूल व एक इन्टरमीडिएट तक शैक्षिक स्तर की है। इन शैक्षिक स्तरों में इस जातिश्रेणी की महिलाओं का प्रजननता अनुपात क्रमशः 0·4:1·6, 0·51:2·08, 0·05:0·22 एवं 0·02:0·11 प्रकट हुआ है। इन सभी शैक्षिक स्तर की महिलाओं में से सर्वाधिक प्रजनन अनुपात प्राइमरी स्तर तक शिक्षा प्राप्त महिलाओं का है परन्तु जैसा कि आंकलन से स्पष्ट हुआ है कि इस जाति के सभी शैक्षिक स्तर की महिलाओं का प्रजनन स्तर लगभग समान है।

अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित 30 परिवारों मे 26 महिलाये निरक्षर शैक्षिक स्तर की है एवं 4 प्राइमरी स्तर तक शिक्षा प्राप्त है । इस जाति श्रेणी की महिलाओं का प्रजनन अनुपात क्रमश: 0·86:4·26 एवं 0·13:0·66 प्रकट हुआ है । इस जाति वर्ग की महिलाओं का प्रजनन अनुपात लगभग समान है ।

मुसलमान सम्प्रदाय के सर्वेक्षित 19 परिवारों में 15 महिलाये निरक्षर, 3 प्राइमरी व एक इन्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त है । इस सम्प्रदाय की महिलाओं का प्रजननता अनुपात क्रमश: 0·98:4·52, 0·15:0·78 एवं 0·05:0·26 पाया गया है । सर्वाधिक प्रजननता अनुपात निरक्षर महिलाओं मे प्रकट हुआ है ।

ईसाई सम्प्रदाय के 12 परिवारों मे 4 महिलाये प्राइमरी, 3 जूनियर हाई स्कूल, 3 हाई स्कूल, 2 इन्टरमीडिएट व एक स्नातक स्तर तक शिक्षित है। इस सम्प्रदाय में कोई भी महिला निरक्षर नहीं पायी गयी है । एव सर्वाधिक प्रजननता अनुपात हाईस्कूल तक शिक्षित महिलाओं मे प्रकट होता है । परन्तु महिला की संख्या इस शिक्षा स्तर में एक है अत: यह तथ्य सामान्यीकृत नहीं हो सकता बल्कि प्राइमरी स्तर पर प्रजननता को

सामान्यीकृत कहा जा सकता है जिनमे महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0.33:1.50 दृष्टिगत हुआ है व सबसे कम प्रजनन अनुपात स्नातक स्तर तक शिक्षित महिला का स्पष्ट हुआ है ।

सारणी 7.8 से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र मे महिलाओं का शिक्षा स्तर जैसे - जैसे बढ़ रहा है वैसे ही उनके द्वारा जनित बच्चों की संख्या मे कमी आती जा रही है । निरक्षर स्तर की महिलाओं मे प्रजननता सर्वाधिक प्रकट हुई है जबकि स्नातक तक शिक्षित महिलाओं मे प्रजननता अनुपात सबसे कम है ।

सारणी 7.8 से तथ्य स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कि पिछड़ी व अनुसूचित जाति की महिलाओं मे प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा का प्रजननता पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है

सारणी - 7·9

सर्वेक्षित क्षेत्र झाँसी के नगरीय परिवारों की महिलाओं का जाति के आधार पर निर्धारित शिक्षास्तर में प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित नगरीय परिवारों में महिलाओं के शिक्षास्तर के अनुसार प्रजनित बच्चों की संख्या							
				निरक्षर	जन्म दिये बच्चों की संख्या	प्राइमरी	जन्म दिये बच्चों की संख्या	जूनियर हाईस्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या	हाई स्कूल	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1·	उच्च जाति	-	20	2 [0·1]	7 [0·35]	-	-	3 [0·15]	12 [0·6]	3 [0·15]	10 [0·5]
2·	पिछड़ी जाति	-	20	9 [0·45]	15 [0·75]	-	-	2 [0·1]	6 [0·3]	3 [0·15]	14 [0·7]
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	-	20	5 [0·25]	20 [1·0]	5 [0·25]	20 [1·0]	-	-	5 [0·25]	10 [0·5]
4·	मुसलमान	-	20	16 [0·8]	76 [3·8]	4 [0·2]	24 [1·2]	-	-	-	-
5·	ईसाई	-	20	-	-	-	-	-	-	5 [0·25]	15 [0·75]
	योग	-	100	32 [0·32]	118 [1·18]	9 [0·09]	44 [0·44]	5 [0·05]	18 [0·18]	16 [0·16]	49 [0·49]

क्रमांक	परिवारों की जाति व श्रेणी	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित नगरीय परिवारों में महिलाओं के शिक्षास्तर के अनुसार प्रजननित बच्चों की संख्या					
				इण्टरमीडिएट	जन्म दिये बच्चों की संख्या	स्नातक व उच्च	जन्म दिये बच्चों की संख्या	अन्य जैसे डिप्लोमा आदि	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	13	14	15	16	17	18
1·	उच्च जाति	-	20	4 (0·2)	12 (0·6)	7 (0·35)	15 (0·25)	1 (0·05)	3 (0·15)
2·	पिछड़ी जाति	-	20	-	-	6 (0·3)	15 (0·25)	-	-
3·	अनुसूचित जाति जनजाति	-	20	5 (0·25)	10 (0·5)	-	-	-	-
4·	मुसलमान	-	20	-	-	-	-	-	-
5·	ईसाई	-	20	5 (0·25)	10 (0·5)	10 (0·5)	8 (0·4)	-	-
	योग	-	100	14 (0·14)	32 (0·32)	23 (0·23)	38 (0·38)	1 (0·01)	3 (0·03)

सारणी 7.9 में सर्वेक्षित नगरीय क्षेत्र झाँसी की महिलाओं का जाति एवं शिक्षा स्तर के आधार पर जन्म दिये बच्चों की संख्या का स्पष्टीकरण सारणीबद्ध किया गया है।

सारणी 7.9 से स्पष्ट होता है कि उच्च जातिश्रेणी के सर्वेक्षित 20 परिवारों की महिलाओं में 2 निरक्षर, 3 जूनियर हाईस्कूल, 3 हाईस्कूल, 4 इन्टरमीडिएट, 7 स्नातक व 1 स्नातक डिप्लोमाधारी है। इन परिवारों में महिलाओं द्वारा जनित बच्चों का प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.1:0.35, 0.15:0.6, 0.15:0.5, 0.2:0.6, 0.35:0.25 एवं 0.05:0.15 प्रकट हुआ है। सर्वाधिक प्रजनन अनुपात प्राइमरी तक शिक्षित महिलाओं में प्रकट हुआ है व सबसे कम स्नातक तक शिक्षित महिलाओं में प्रकट हुआ है। जैसा कि उच्च जातिश्रेणी की महिलाओं द्वारा जनित बच्चों की संख्या की प्रवृत्ति से स्पष्ट है कि शिक्षा के स्तर में वृद्धि के साथ ही महिलाओं की प्रजननता पर या जनित बच्चों की संख्या में कमी आती जाती है।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 20 परिवारों में 9 महिलायें निरक्षर, 2 जूनियर हाईस्कूल, 3 हाईस्कूल व 6 स्नातक तक शिक्षा प्राप्त है। इस जातिश्रेणी की महिलाओं का प्रजनन अनुपात क्रमशः 0.45:0.75, 0.1:0.3, 0.15:0.7 एवं 0.3:0.25 प्रकट हुआ है। सर्वाधिक प्रजनन अनुपात हाईस्कूल

शिक्षित महिलाओं में तथा सबसे कम निरक्षर महिला परिवारों में प्रदर्शित हुआ है।

अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित 20 परिवारों में 5 निरक्षर, 5 प्राइमरी, 5 हाईस्कूल व 5 इन्टरमीडिएट तक शिक्षा स्तर की है इनका प्रजनन अनुपात क्रमशः 0·25:1·0, 0·25:1·0, 0·25:0·5 एवं 0·25:0·5 प्रकट होता है। सारणी को देखने से यह भी स्पष्ट होता है कि हाईस्कूल व इन्टरमीडिएट तक शिक्षित महिलाओं की प्रजनन दर निरक्षर व प्राइमरी शिक्षा स्तर की महिलाओं से कम है।

मुसलमान परिवारों के 20 सर्वेक्षित परिवारों में 16 महिलाये अशिक्षित व निरक्षर व 4 प्राइमरी शिक्षा स्तर तक है इनका प्रजनन अनुपात 0·8:3·8 एवं 0·2:1·2 प्रकट हुआ है जो कि अन्य जातिश्रेणी की तुलना में सबसे अधिक दृष्टिगोचर होता है।

ईसाई सम्प्रदाय के 20 परिवारों में कोई भी महिला अशिक्षित या निरक्षर उपलब्ध नहीं हुयी है। इस सम्प्रदाय में 5 महिलाये हाईस्कूल, 5 इन्टरमीडिएट व 10 स्नातक स्तर तक शिक्षित प्रकट हुयी है। इस शैक्षिक स्तर की महिलाओं का प्रजनन अनुपात क्रमशः 0·25:0·75, 0·25:0·5 एवं 0·5:0·4 प्रकट हुआ है। सर्वाधिक प्रजनन अनुपात हाईस्कूल

शिक्षा प्राप्त महिलाओं का प्रकट हुआ है। सारणी से यह स्पष्ट होता है कि इस सम्प्रदाय में शिक्षा के स्तर में वृद्धि के साथ ही महिलाओं के प्रजनन अनुपात में कमी आती गयी है।

नगर क्षेत्र के सर्वेक्षित 100 परिवारों में 32 महिलाये निरक्षर, 9 प्राइमरी, 5 जूनियर हाई स्कूल, 16 हाईस्कूल, 14 इन्टरमीडिएट, 23 स्नातक एवं 1 स्नातक डिप्लोमाधारी उद्घाटित हुयी है। इनका प्रजनन अनुपात क्रमश: 0·32:1·18, ·09: ·44, ·05: 0·18, 0·16: 0·49, 0·14: 0·32, 0·23: 0·38 एवं 0·01:0·03 प्रकट हुआ है। सबसे अधिक प्रजनन अनुपात प्राइमरी महिलाओं का प्रकट हुआ है व सबसे कम स्नातक स्तर तक शिक्षित महिलाओं का दृष्टिगोचर हुआ है।

नगरीय क्षेत्र के पिछड़े वर्ग की महिलाओं मे यह प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुयी है कि शिक्षा स्तर में वृद्धि के साथ ही उनके द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या में वृद्धि होती रही है। जबकि अनुसूचित जाति वर्ग की महिलाओं में शिक्षा स्तर में वृद्धि के साथ ही प्रजनन अनुपात में कमी आने की प्रवृत्ति है।

सारणी - 7·10

समग्र सर्वेक्षित परिवारों की महिलाओं का जाति के आधार पर निर्धारित शिक्षा स्तर में प्रजनित बच्चों की संख्या एवं ग्रामीण - नगरीय प्रजननता विभिन्नता का आकलन

क्रमांक	मद	ग्रामीण सर्वेक्षित परिवारों की श्रेणियाँ					नगरीय सर्वेक्षित परिवारों की श्रेणियाँ					ग्रामीण	नगरीय
		उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति: जनजाति	मुसलमान	ईसाई	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति: जनजाति	मुसलमान	ईसाई		
1·	कुल परिवारों की संख्या	91	209	164	64	22	-	-	-	-	-	556	-
2·	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	25	35	30	19	12	20	20	20	20	20	121	100
"ए"	निरक्षर	2 (0·08)	14 (0·4)	26 (0·86)	15 (0·78)	-	2 (0·1)	9 (0·45)	5 (0·25)	16 (0·8)	-	57 (0·47)	32 (0·32)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	7 (0·28)	56 (1·6)	128 (4·26)	86 (4·52)	-	7 (0·35)	15 (0·75)	20 (1·0)	76 (3·8)	-	277 (2·28)	118 (1·18)
"बी"	प्राइमरी	15 (0·6)	18 (0·51)	4 (0·13)	3 (0·15)	4 (0·33)	-	-	5 (0·25)	4 (0·2)	-	40 (0·33)	9 (0·09)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	54 (2·16)	73 (2·08)	20 (0·66)	15 (0·78)	18 (1·5)	-	-	20 (1·0)	24 (1·2)	-	162 (1·33)	44 (0·44)
"सी"	जूनियर हाईस्कूल	7 (0·28)	2 (0·05)	-	-	3 (0·25)	3 (0·15)	2 (0·1)	-	-	-	12 (0·09)	5 (0·05)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	20 (0·80)	8 (0·22)	-	-	10 (0·83)	12 (0·6)	6 (0·3)	-	-	-	38 (0·31)	13 (0·13)

क्रमांक	मद	ग्रामीण सर्वेक्षित परिवारों की श्रेणियाँ					नगरीय सर्वेक्षित परिवारों की श्रेणियाँ					ग्रामीण	नगरीय
		उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति: जनजाति	मुसलमान	ईसाई	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनुसूचित जाति: जनजाति	मुसलमान	ईसाई		
1.	कुल परिवारों की संख्या	91	209	164	64	22	-	-	-	-	-	556	-
2.	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	25	35	30	19	12	20	20	20	20	20	121	1 00
"डी"	हाईस्कूल	2 (0·08)	-	-	-	3 (0·25)	3 (0·15)	3 (0·15)	5 (0·25)	-	5 (0·25)	5 (0·041)	16 (0·16)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	7 (0·28)	-	-	-	15 (1·25)	10 (0·5)	14 (0·7)	10 (0·5)	-	15 (0·75)	23 (0·19)	49 (0·49)
"ई"	इण्टरमीडिएट	1 (0·04)	1 (0·02)	-	1 (0·05)	2 (0·16)	4 (0·2)	-	5 (0·25)	-	5 (0·25)	5 (0·041)	14 (0·14)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	5 (0·2)	4 (0·11)	-	5 (0·26)	7 (0·58)	12 (0·6)	-	10 (0·5)	-	10 (0·8)	21 (0·17)	32 (0·32)
"एफ"	स्नातक व उच्च	-	-	-	-	1 (0·08)	7 (0·35)	6 (0·3)	-	-	10 (0·5)	1 (0·008)	23 (0·23)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	-	-	-	-	1 (0·08)	15 (0·25)	15 (0·25)	-	-	8 (0·4)	1 (0·008)	38 (0·38)
"जी"	अन्य	-	-	-	-	-	1 (0·05)	-	-	-	-	-	1 (0·01)
	जन्म दिये बच्चों की संख्या	-	-	-	-	-	3 (0·15)	-	-	-	-	-	3 (0·03)

सारणी 7.10 के अन्तर्गत सर्वेक्षित ग्रामों एवं नगरीय क्षेत्र के परिवारों में शिक्षा स्तर के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या एवं उनमें प्रजननता विभिन्नता आकलित करने का प्रयास किया गया है।

जैसा कि सारणी में स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र का सर्वेक्षण 121 परिवारों की महिलाओं का किया गया है जिसमें 57 परिवारों की 57 महिलाओं ने 277 बच्चों को जन्म दिया है।ऽ 40 महिलायें प्राइमरी स्तर तक शिक्षित है और उन्होंने 162 बच्चों को जन्म दिया। 12 जूनियर हाई स्कूल महिलाओं ने 38, 5 हाई स्कूल ने 23, 5 इन्टरमीडिएट ने 21 एवं 1 स्नातक महिला ने 1 बच्चे को जनित किया। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा स्तर के आधार पर प्रजननता अनुपात क्रमश: 0.47:2.28, 0.33:1.33, 0.09: 0.31, 0.041: 0.18, 0.041: 0.17 एव 0.008 : 0.008 पाया गया है एवं सबसे अधिक प्रजननता अनुपात निरक्षर महिलाओं उद्घाटित हुआ है जबकि सबसे कम प्रजननता अनुपात स्नातक स्तर तक शिक्षित महिलाओं में दृष्टिगत हुआ है। आंकड़ा से यह साफ तौर से स्पष्ट हुआ है कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता पर महिलाओं की शिक्षा का प्रभाव पड़ा है और अन्य शब्दों में महिलाओं के शिक्षित स्तर में वृद्धि के साथ-साथ प्रजननता अनुपात कम होता गया है। अत: कहा जा सकता है महिलाओं का शिक्षित होना प्रजननता दर में कमी के लिये आवश्यक है।

नगरीय सर्वेक्षण के अन्तर्गत 100 परिवारों को लिया गया है। सर्वेक्षण द्वारा ज्ञात हुआ कि 100 परिवारों के अन्तर्गत 32 महिलायें निरक्षर, 9 प्राइमरी, 5 जूनियर हाई स्कूल, 16 हाई स्कूल, 14 इण्टरमीडिएट, 23 स्नातक व 1 स्नातक से उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त है। नगरीय क्षेत्र की महिलाओं का शिक्षा स्तर के आधार पर प्रजननता अनुपात क्रमशः 0.32: 1.18, 0.09: 0.44, 0.05: 0.18, 0.16: 0.44, 0.14: 0.32, 0.23: 0.38 एवं 0.01: 0.03 पाया गया है। सबसे अधिक प्रजननता अनुपात प्राइमरी स्तर की महिलाओं में प्रकट होता है जबकि सबसे कम प्रजननता उच्च शिक्षित महिलाओं में दृष्टिगोचर हुयी है।

अध्यायान्तर्गत परिवारों में महिलाओं की शिक्षा के आधार पर ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र के सर्वेक्षण द्वारा यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा के आधार पर नगर व ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता विभिन्नता है अथवा नहीं है। अतः सारणी 7.10 से हम इस तथ्य को विवेचित कर सकते हैं।

ग्रामीण सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ है कि ग्रामीण निरक्षर महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0.47 : 2.28 तथा नगरीय क्षेत्र में निरक्षर महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0.32 : 1.18 है। निरक्षर ग्रामीण

महिलाओं का औसत प्रजननता अनुपात 4.85 एवं नगरीय निरक्षर महिलाओं का औसत प्रजनन अनुपात 3.68 स्पष्ट हुआ है। इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण निरक्षर महिलाओं की प्रजननता नगरीय निरक्षर महिलाओं से अधिक है अर्थात नगरीय शिक्षित वातावरण का प्रभाव निरक्षर नगरीय महिलाओं पर भी पड़ रहा है एवं ग्रामीण निरक्षर महिलाओं को ग्रामों में शिक्षित वातावरण के अभाव होने के कारण प्रजननता नियन्त्रण पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है। परन्तु यह बात स्पष्ट हो गयी है कि समान शिक्षा ज्ञान के बावजूद भी नगर व ग्रामीण महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता पाई गयी है।

प्राइमरी तक शिक्षित ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में भी प्रजननता विभिन्नता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। ग्रामीण प्राइमरी शिक्षित महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0.33 : 1.33 व नगरीय प्राइमरी शिक्षित महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0.09 : 0.44 पाया गया है। अनुपात से ही स्पष्ट है कि प्राइमरी तक शिक्षित ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता है साथ ही ग्रामीण व नगरीय प्राइमरी शिक्षित महिलाओं की औसत प्रजननता क्रमशः 4.05 एवं 4.88 है। अतः यह स्पष्ट है कि ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों की प्राइमरी स्तर तक शिक्षित महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता पायी जाती है।

जूनियर हाईस्कूल शैक्षिक स्तर की ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता स्पष्ट प्रकट हुयी है। ग्रामीण मिडिल तक शिक्षित महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0.09 : 0.31 व नगरीय मिडिल तक शिक्षित महिलाओं का प्रजनन अनुपात 0.05 : 0.18 है। ग्रामीण व नगरीय जूनियर हाईस्कूल तक शिक्षित महिलाओं की औसत प्रजननता क्रमशः 3.16 एवं 3.6 है। दूसरे शब्दों में, ग्रामीण व नगरीय मिडिल तक शिक्षित महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता है।

सर्वेक्षित ग्रामीण हाईस्कूल तक शिक्षित महिलाओं का प्रजननता अनुपात 0.04 : 0.19 एवं नगरीय महिलाओं ने 0.16 : 0.49 प्रकट हुआ है। ग्रामीण महिलाये जो हाईस्कूल तक शिक्षित है उनकी औसत प्रजननता 4.6 एवं नगरीय हाईस्कूल तक शिक्षित महिलाओं में औसत प्रजननता 3.06 आंकलित की जा सकती है जिससे हाईस्कूल तक शिक्षित ग्रामीण व नगरीय महिलाओं मे प्रजननता विभिन्नता स्पष्ट होती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में लिये गये परिवारों में 5 महिलाये इण्टर-मीडियट तक शिक्षित प्राप्त हुयी है जिनका प्रजननता अनुपात अनुपात 0.041 : 0.17 है जब कि नगरीय क्षेत्र की महिलाओं में प्रजननता अनुपात 0.14 : 0.32 पाया गया है। आंकलित करने पर ग्रामीण महिलाये, जो

इण्टरमीडियट तक शिक्षित है, की औसत प्रजननता 4.2 एवं नगरीय महिलाओं की प्रजननता औसत 2.28 है। जो ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में महिलाओं की प्रजननता विभिन्नता को स्पष्ट करती है। अतः इस शैक्षिक स्तर पर भी ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता स्पष्ट रूप से प्रकट हुयी है।

ग्रामीण सर्वेक्षण में एक मात्र महिला ही स्नातक तक शिक्षा प्राप्त है जिसका प्रजननता अनुपात 0.008 : 0.008 है परन्तु मात्र एक स्नातक महिला को पूरे ग्रामीण क्षेत्र की स्नातक महिलाओं का प्रतिनिधि नहीं मान सकते हैं फिर भी जैसा कि सारणी से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित नगरीय क्षेत्र के स्नातक तक शिक्षित महिलाओं में प्रजननता अनुपात 0.23 : 0.38 है। अतः यह स्पष्ट है कि स्नातक शैक्षिक स्तर की ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में भी प्रजननता विभिन्नता है।

समग्र रूप से ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के सर्वेक्षित परिवारों की विभिन्न शैक्षिक स्तर की महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या में प्रजननता विभिन्नता स्पष्ट परिलक्षित होती है।

" अध्याय - 8 "

धार्मिक सामाजिक संस्थायें एवं ग्रामीण नगरीय प्रजननता विभिन्नता

विवाह की आयु ऐच्छिकता, अनिवार्यता, सन्तानों की संख्या आदि अनेक जनांकिकीय कारक धार्मिक मान्यताओं से प्रेरित तथा प्रभावित होते हैं। हिन्दू शास्त्रकारों के अनुसार रजोदर्शन से पूर्व कन्या का विवाह हो जाना चाहिये। हिन्दू धर्म में विवाह की अनिवार्यता पर बल दिया जाता है। तलाक, विधवा, पुनर्विवाह आदि को सम्मानपूर्ण नहीं माना जाता। इसके विपरीत ईसाई धर्म तथा इस्लाम में विधवा पुनर्विवाह और तलाक को बुरा नहीं माना जाता। इस प्रकार धार्मिक मान्यतायें जनसंख्या के विकास की भावी गति को प्रभावित करती है। अतः धर्म के आधार पर जनसंख्या के गठन का अध्ययन अत्यन्त उपयोगी है।

हमारा देश संवैधानिक रूप से एक धर्म निरपेक्ष देश है, यहाँ प्रत्येक जाति, सम्प्रदाय के लोगों को अपनी अपनी श्रद्धानुसार अपने धर्म की मान्यतायें मानने का मौलिक अधिकार प्राप्त है। हिन्दू धर्म में करोड़ों की संख्या में देवताओं का अस्तित्व अनुयायी स्वीकार करते हैं और हिन्दू धर्मानुसार लगभग प्रत्येक दिन एक त्योहार होता है। इस धर्म के धर्माचार्यों ने कन्या का रजोदर्शन के पूर्व ही विवाह करने पर बल दिया है। जिससे धर्म के अनुयायियों द्वारा अपनी कन्या का विवाह बहुत शीघ्र करने

का प्रचलन है। नगरीय क्षेत्र के निवासी इस प्रकार की मान्यताओं को अब शिक्षा के स्तर में वृद्धि के कारण तरजीह नहीं देते हैं परन्तु गाँवों में अभी भी धर्मोपदेशों के अनुरूप कन्या का विवाह शीघ्र कर दिया जाता है। विवाह शीघ्र होने पर कन्या शीघ्र माँ बन जाती है। अर्थात उसका प्रजनन काल बहुत ही लम्बा हो जाता है और वह इस काल में अनेक सन्तानों को पैदा करती है जिससे जनसंख्या में वृद्धि तीव्र गति से होती है। गाँवों में स्वास्थ्य विभाग या सरकार द्वारा चलाये जा रहे अभियानों को कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता है और ग्रामवासी वैकल्पिक साधनों का प्रयोग नहीं करते, जो जनसंख्या वृद्धि को रोकने में सहायक होते हैं। वे इस मान्यता को महत्व देते हैं कि सन्तान का होना ईश्वर की देन है और बगैर ईश्वर की इच्छा के सम्भव नहीं है जबकि वास्तविकता यह है कि मनुष्य स्वयं ही सन्तान का जन्मदाता है क्योंकि यदि वह चिकित्सा विभाग द्वारा चलाये जा रहे निरोध व कॉपर टी आदि का प्रयोग करे तो निश्चित रूप से सन्तानोत्पत्ति नहीं होगी और वे अपने प्रजनन काल को भी आनन्द से गुजार सकते हैं परन्तु जैसा कि ज्ञात है कि देश की 80% जनसंख्या गाँवों में निवास करती है जिसमें आधी से अधिक अशिक्षित है इसलिये सरकारी प्रयासों का प्रभाव अशिक्षा के कारण पूर्ण रूप से नहीं पड़ रहा है साथ ही धार्मिक मान्यताओं की पैठ उनके मन मस्तिष्क में इतनी गहरी है कि उन्हें निकालना बहुत कठिन कार्य है।

मुस्लिम सम्प्रदाय के धार्मिक ग्रन्थ इस बात पर जोर देता है कि प्रत्येक अनुयायी का दायित्व व पुण्य का कार्य अनुयायियों की संख्या में वृद्धि है अतः प्रत्येक मुसलमान अधिक से अधिक संख्या में बच्चे पैदा करता है, उनके धर्म में बच्चों की अधिक संख्या को अच्छा माना जाता है क्योंकि वह सब मुस्लिम धर्म के अनुयायियों की संख्या में वृद्धि करते हैं इसलिये मुसलमानों आधुनिक निरोध व कापर टी तरीके आदि का प्रयोग नहीं करते हैं और न ही नसबन्दी आदि कराने के लिये इच्छुक रहते हैं जिससे उनकी संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। हमारे देश में सबसे अधिक जन्म दर मुस्लिम सम्प्रदाय में है। इस सम्प्रदाय में तीन-तीन शादियाँ करने की खुली छूट है और पुनर्विवाह का प्रचलन भी है इसलिये भी इस सम्प्रदाय की जनसंख्या शीघ्र व तीव्र गति से बढ़ रही है।

हमारे देश में ईसाइयों की संख्या अधिक नहीं है फिर भी विभिन्न मिशनरियों के माध्यम से इस धर्म के अनुयायी अपने धर्म का प्रचार प्रसार कर रहे हैं और अपनी संख्या बढ़ाने के लिये अन्य सम्प्रदाय के अनुयायियों को प्रलोभन दे कर अपने धर्म में सम्मिलित कर रहे हैं अर्थात यह सम्प्रदाय भी अपनी संख्या में वृद्धि करने के लिये अनेक उपाय अपना रहा है। यह तो स्पष्ट है कि इस सम्प्रदाय के धर्माचार्य या पादरी भी यह तीव्र अभिलाषा रखते हैं कि उनके अनुयायियों की संख्या बढ़े इसलिये यह इस सम्प्रदाय भी जनसंख्या की वृद्धि में सहायता पहुँचा रहा है परन्तु इस सम्प्रदाय में शिक्षा का स्तर व्यापक व अन्य सम्प्रदाय

की अपेक्षा अधिक है अतः इसके अनुयायी अपनी भविष्यगत आवश्यकताओं को ध्यान मे रखते हुए आधुनिक वैकल्पिक निरोधात्मक उपाय अपना रहे है जिसके परिणामस्वरूप यह सम्प्रदाय जनसंख्या की वृद्धि की प्रवृत्ति मे विशेष योग-दान नही कर रहा है परन्तु वृद्धि अवश्य हो रही है ।

धार्मिक आधार पर ग्रामीण नगरीय प्रजननता का अध्ययन करने के लिये वही ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र चुने गये है जो कि पूर्व के अध्यायो मे है । जनपद झाँसी मे किस सम्प्रदाय के अनुयायियो की कितनी संख्या है इसका आंकलन निम्न सारणी से स्पष्ट होता है :-

सारणी 8.1 : जनपद मे प्रमुख धर्मानुसार जनसंख्या, 1981

	प्रमुख धार्मिक सम्प्रदाय	कुल	जनसंख्या ग्रामीण	नगरीय	कुल जनसंख्या मे प्रतिशत
	1	2	3	4	5
1.	हिन्दू	1027636	659506	368130	90.4
2.	मुस्लिम	94460	44623	50837	8.4
3.	ईसाई	6402	661	5741	0.6
4.	सिक्ख	2238	78	2160	0.2
5.	बौद्ध	61	49	12	-
6.	जैन	4579	535	4044	0.4
7.	अन्य धर्म और सम्प्रदाय	655	225	430	-
	योग	1137031	705677	431354	

स्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद झाँसी, 1981
अर्थ एवं संख्या प्रभाग, राज्य नियोजन संस्थान, उ०प्र०

उपरोक्त सारणी 8.1 से स्पष्ट होता है कि जनपद की सम्पूर्ण जनसंख्या में सर्वाधिक भाग हिन्दू सम्प्रदाय का है और इसके बाद मुस्लिम व ईसाई सम्प्रदाय है। जैनियों की संख्या पर्याप्त मात्रा में है परन्तु अध्ययन के अन्तर्गत केवल हिन्दू मुस्लिम व ईसाई धार्मिक सम्प्रदाय के अनुयायियों की महिलाओं की प्रजननता को लिया गया है।

सारणी 8.2 में ग्रामीण सर्वेक्षण के अन्तर्गत लिये गये ग्राम आरी में सर्वेक्षित परिवारों की महिलाओं का धर्म के आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

ग्राम आरी के कुल 113 परिवारों में से 110 परिवार हिन्दू धर्म तथा 3 परिवार मुस्लिम धर्म के अनुयायियों के हैं। कुल हिन्दू परिवारों में से 15 परिवारों की 15 महिलाओं का सर्वेक्षण किया गया है तथा 3 मुस्लिम परिवारों की 3 महिलाओं का सर्वेक्षण किया है। हिन्दू परिवार की 15 महिलाओं ने 50 बच्चों को जन्म दिया है अर्थात इनका प्रजनन अनुपात 1.0:3.33 है जबकि मुसलिम सम्प्रदाय की 3 महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.0:4.6 है। सारणी से स्पष्ट है कि हिन्दू महिलाओं की अपेक्षा मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात अधिक है। सम्पूर्ण ग्राम आरी का प्रजनन अनुपात 1.0: 3.55 है जब कि मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.0: 4.6 है अर्थात सम्पूर्ण ग्राम की गैर मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा मुस्लिम महिलाओं

सारणी - 8.2

सर्वेक्षित ग्राम आरी के ग्रामीण परिवारों के धर्म के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	धार्मिक वर्गीकरण	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6
1.	हिन्दू	110	15	15 (1.00)	50 (3.33)
2	मुसलमान	3	3	3 (1.00)	14 (4.6)
3.	ईसाई	-	-	-	-
4.	योग	113	18	18 (1.00)	64 (3.55)

सारणी - 8·3

सर्वेक्षित ग्राम बूढा के ग्रामीण परिवारों के धर्म के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	धार्मिक वर्गीकरण	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6
1·	हिन्दू	58	15	15 (1·00)	78 (5·2)
2·	मुसलमान	3	3	3 (1·00)	15 (5·0)
3·	ईसाई	7	7	7 (1·00)	41 (5·86)
4·	योग	68	25	25 (1·00)	134 (5·36)

का प्रजनन अनुपात अधिक है ।

सारणी 8.3 के अन्तर्गत ग्राम बूढा का धार्मिक आधार पर महिलाओं का प्रजननता का विवेचन किया गया है ।

जैसा कि सारणी से स्पष्ट है कि कुल 58 हिन्दू परिवारों की 15 सर्वेक्षित परिवारों की 15 महिलाओं ने 78 बच्चों को जन्म दिया और इनका प्रजनन अनुपात 1.0 : 5.2 है जबकि सर्वेक्षित 3 मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.0 : 5.0 है और ईसाई सम्प्रदाय की 7 सर्वेक्षित महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.0 : 5.86 है । स्पष्ट है कि इस ग्राम के ईसाई परिवारों का प्रजनन अनुपात अन्य समुदायों की महिलाओं के प्रजनन अनुपात से अधिक है और यह कहा जा सकता है कि ईसाई महिलाओं का प्रजनन अनुपात समग्र ग्राम की महिलाओं के प्रजनन अनुपात से अधिक है क्योंकि सम्पूर्ण ग्राम की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.0 : 5.36 है जब कि ईसाई महिलाओं का 1.0 : 5.86 प्रकट हुआ है ।

सारणी 8.4 में ग्राम बकवा की महिलाओं का धर्म के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या का विश्लेषण किया गया है ।

सर्वेक्षित 15 हिन्दू महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.0 : 3.53 पाया गया है जबकि सर्वेक्षित 2 मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात

सारणी - 8·5

सर्वेक्षित ग्राम गढ़ुवा के ग्रामीण परिवारों के धर्म के आधार पर प्रजननित बच्चों की संख्या

क्रमांक	धार्मिक वर्गीकरण	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6
1·	हिन्दू	99	15	15 (1·00)	55 (3·66)
2·	मुसलमान	3	3	3 (1·00)	18 (6·00)
3·	ईसाई	-	-	-	-
4·	योग	102	18	18 (1·00)	73 (4·05)

1·00 : 5·00 है । विश्लेषण से स्पष्ट है कि मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात, हिन्दू महिलाओं के प्रजनन अनुपात से अधिक है । मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात समग्र ग्राम की औसत महिलाओं के प्रजनन अनुपात से भी अधिक है क्योंकि ग्राम बकवों की सम्पूर्ण महिलाओं का औसत प्रजनन अनुपात 1·00 : 3·70 है जबकि मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1·00: 5·00 है ।

सारणी 8·5 के अन्तर्गत सर्वेक्षित ग्राम गहूँका की ग्रामीण महिलाओं का उनके धर्म के आधार पर जनित बच्चों की संख्या का विश्लेषण किया गया है ।

ग्रामान्तर्गत सर्वेक्षित 15 हिन्दू परिवारों की 15 महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1·00: 3·66 पाया गया है जब कि 3 सर्वेक्षित मुस्लिम परिवारों की 3 महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1·00 : 6·00 पाया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि इस गाँव की मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात भी हिन्दू धर्म के महिलाओं की अपेक्षा अधिक है । ग्राम में ईसाई धर्म के अनुयायियों के परिवार उपलब्ध नहीं थे ।

ग्राम के सर्वेक्षित समस्त 18 परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1·00 : 4·05 है । सर्वेक्षित महिलाओं के अन्तर्गत मुस्लिम महिलाओं

का प्रजनन अनुपात समस्त ग्रामीण महिलाओं के प्रजनन अनुपात से अधिक है जबकि हिन्दू महिलाओं का प्रजनन अनुपात समस्त ग्रामीण महिलाओं व मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन अनुपात से कम है ।

ग्राम गहूका मे मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात अन्य गैर मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन अनुपात से अधिक है, जो कि उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है ।

सर्वेक्षित ग्राम बिजौली के परिवारों की महिलाओं का धार्मिक आधार पर प्रजननित बच्चों की संख्या का आकलन सारणी 8.6 मे स्पष्ट किया गया है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित 15 हिन्दू परिवारों की 15 हिन्दू महिलाओं ने 59 बच्चों को जनित किया है अर्थात इस सम्प्रदाय की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.00 : 3.93 है । सर्वेक्षित 5 मुस्लिम परिवारों की 5 महिलाओं ने 28 बच्चों को जनित किया है अर्थात इस सम्प्रदाय की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.00 : 5.60 है एवं सर्वेक्षित 5 ईसाई परिवारों की 5 महिलाओं ने 12 बच्चों को जन्म दिया है अर्थात इस सम्प्रदाय की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.00 : 2.40 है ।

तारणी – 8·6

सर्वेक्षित ग्राम बिजौली के ग्रामीण परिवारों के धर्म के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या

क्रमांक	धार्मिक वर्गीकरण	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6
1·	हिन्दू	67	15	15 (1·00)	59 (3·93)
2·	मुसलमान	5	5	5 (1·00)	28 (5·6)
3·	ईसाई	15	5	5 (1·00)	12 (2·4)
4·	योग	87	25	25 (1·00)	99 (3·96)

सारणी – 8·7

सर्वेक्षित ग्राम भट्टागाँव के ग्रामीण परिवारों के धर्म के आधार पर प्रजननित बच्चों की संख्या

क्रमांक	धार्मिक वर्गीकरण	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6
क्रमां 1·	हिन्दू	86	15	15 [1·00]	66 [4·4]
2·	मुसलमान	3	3	3 [1·00]	19 [6·3]
3·	ईसाई	-	-	-	-
4·	योग	89	18	18 [1·00]	85 [4·72]

सारणी 8.6 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक प्रजननता अनुपात मुस्लिम सम्प्रदाय की महिलाओं का है और सबसे कम प्रजनन अनुपात ईसाई महिलाओं का है। ग्राम की महिलाओं का औसत प्रजनन अनुपात 1.00 : 3.96 है। मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात ग्राम के औसत प्रजनन अनुपात से भी अधिक है जब कि अन्य सम्प्रदाय हिन्दू व ईसाई धर्म की महिलाओं का कम है।

अतः स्पष्ट है कि ग्राम बिजौली में मुस्लिम महिलाओं का प्रजननता अनुपात अन्य सम्प्रदायों की अपेक्षा अधिक है।

ग्रामीण क्षेत्रों के सर्वेक्षण अन्तर्गत ग्राम भट्टागाँव के ग्रामीण परिवारों की महिलाओं का धार्मिक वर्गीकरण के आधार पर प्रजननित बच्चों की संख्या सारणी 8.7 द्वारा आंकलित करने का प्रयास किया गया है।

ग्रामान्तर्गत सर्वेक्षित 15 हिन्दू परिवारों की 15 हिन्दू महिलाओं ने 66 बच्चों को जनित किया है अर्थात इस सम्प्रदाय की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.00 : 4.40 पाया गया है। जबकि मुस्लिम सर्वेक्षित 3 महिलाओं ने 19 बच्चों को जनित किया है अर्थात इस सम्प्रदाय की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.00 : 6.3 है। स्पष्ट है कि मुस्लिम सम्प्रदाय

सारणी - 8.8

सर्वेक्षित नगरीय क्षेत्र झाँसी के परिवारों के धर्म के आधार पर प्रजनित बच्चों की संख्या ।

क्रमांक	धार्मिक वर्गीकरण	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1	2	3	4	5	6
1-	हिन्दू	-	60	60 (1.00)	190 (3.16)
2-	मुसलमान	-	20	20 (1.00)	100 (5.00)
3-	ईसाई	-	20	20 (1.00)	50 (2.50)
4-	योग	-	100	100 (1.00)	340 (3.40)

की महिलाओं का प्रजनन अनुपात हिन्दू सम्प्रदाय की महिलाओं से अधिक है ।

ग्राम की सर्वेक्षित 18 महिलाओं का औसत प्रजनन अनुपात 1·00 : 4·72 है जो कि मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात से कम व हिन्दू महिलाओं के प्रजनन अनुपात से अधिक है ।

निष्कर्षत: यह कह सकते है कि ग्राम भट्टागाँव की मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात भी अन्य सम्प्रदाय की महिलाओं से अधिक है ।

धार्मिक आधार पर नगरीय सर्वेक्षण के अन्तर्गत 100 परिवारों को चुना गया है जिसके अन्तर्गत 60 सर्वेक्षित परिवारों की 60 महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1·00 : 3·16 पाया गया है । 20 मुसलमान परिवारों की 20 महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1·00 : 5·00 एवं 20 ईसाई परिवारों की 20 महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1·00 : 2·50 पाया गया है ।

सारणी 8·8 से स्पष्ट होता है कि नगरीय मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात अन्य धार्मिक सम्प्रदाय की महिलाओं से अधिक है।

सर्वेक्षित 100 परिवारों की 100 महिलाओं का औसत प्रजननता अनुपात 1·00 : 3·40 है जो कि सर्वेक्षित मुस्लिम परिवारों की महिलाओं के प्रजनन अनुपात से कम व हिन्दू व ईसाई सम्प्रदाय की महिलाओं

के प्रजनन अनुपात से अधिक है ।

निष्कर्षतः नगरीय क्षेत्र मे मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात मे अन्य सम्प्रदाय की महिलाओं की अपेक्षा अधिक स्पष्टीकृत हुआ है ।

सारणी 8.9 मे सर्वेक्षित ग्रामीण परिवारो की महिलाओं को धर्म के आधार पर जन्म दिये बच्चो की संख्या का समग्र ग्रामीण सर्वेक्षित महिलाओं का आकलन प्रस्तुत किया गया है ।

जैसा कि सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित ग्राम का प्रत्येक महिला का प्रजननता अनुपात भिन्न-भिन्न है । विभिन्न धर्म को मानने वाली महिलाओं की प्रजननता भिन्न-भिन्न है और समान धर्म को मानने वाली महिलाओं की प्रजननता प्रत्येक ग्राम मे भिन्न प्रकट हुयी है ।

सम्पूर्ण ग्रामीण महिलाओं की प्रजननता मे धार्मिक आधार पर विभिन्नता स्पष्ट हुयी है । ग्रामीण हिन्दू परिवारो की 90 महिलाओं ने 361 बच्चो को जन्म दिया अर्थात इस सम्प्रदाय की ग्रामीण महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1.0 : 4.01 पाया गया है ।

सारणी - 8.9

सर्वेक्षित ग्रामीण परिवारों को धर्म के आधार पर विभाजित करने पर सर्वेक्षित महिलाओं द्वारा जन्म दिये बच्चों की संख्या

क्रमांक	सर्वेक्षित ग्राम	हिन्दू				मुसलमान				ईसाई			
		कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1·	आरी	110	15	15 (1·00)	50 (3·33)	3	3	3 (1·00)	14 (4·6)	-	-	-	-
2·	बूँदा	58	15	15 (1·00)	78 (5·2)	3	3	3 (1·00)	15 (5·0)	7	7	7 (1·00)	41 (5·86)
3·	बल्वाँ	50	15	15 (1·00)	53 (3·53)	2	2	2 (1·00)	10 (5·00)	-	-	-	-
4·	गहूका	99	15	15 (1·00)	55 (3·66)	3	3	3 (1·00)	18 (6·00)	-	-	-	-
5·	बिजौली	67	15	15 (1·00)	59 (3·93)	5	5	5 (1·00)	28 (5·6)	15	5	5 (1·00)	12 (2·4)
6·	भट्टागाँव	86	15	15 (1·00)	66 (4·4)	3	3	3 (1·00)	19 (6·3)	-	-	-	-
	योग (ग्रामीण)	470	90	90 (1·00)	361 (4·01)	19	19	19 (1·00)	104 (5·47)	22	12	12 (1·00)	53 (4·42)

9 ग्रामीण मुस्लिम परिवारों की 19 महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1·00 : 5·47 प्रकट हुआ है एवं 12 ग्रामीण ईसाई परिवारों की ग्रामीण महिलाओं में प्रजननता अनुपात 1·00 : 4·42 पाया गया है ।

सर्वाधिक प्रजनन अनुपात मुस्लिम ग्रामीण महिलाओं में अर्थात 1·00 : 5·47 है एवं सबसे कम प्रजनन अनुपात 1·0 : 4·01 हिन्दू ग्रामीण महिलाओं में पाया गया है ।

धर्म के आधार पर ग्रामीण महिलाओं के सर्वेक्षण से यह बात स्पष्ट हुयी है कि ग्रामीण क्षेत्रों में मुस्लिम व ईसाई अनुयायी महिलायें प्रजनन दर में तीव्र वृद्धि कर रही है । इस धर्म के अनुयायी अपनी संख्या में वृद्धि की तीव्र अभिलाषा रखते है इसलिये स्वास्थ्य विभाग द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों में कोई विशेष रुचि नहीं रखते है । जब कि हिन्दू सम्प्रदाय के परिवार स्वास्थ्य विभाग के कार्यक्रमों को पूर्ण रूप से स्वीकार कर रहे है और इन कार्यक्रमों को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहे है ।

सारणी 8·10 द्वारा ग्रामीण व नगरीय महिलाओं की प्रजननता का आंकलन धार्मिक आधार स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

<u>सारणी - 8.10</u>

सर्वेक्षित ग्रामीण व नगरीय महिलाओं का धर्म के आधार पर वर्गीकरण करने पर जन्म दिये बच्चों की संख्या

व

धर्म के आधार पर ग्रामीण - नगरीय प्रजननता विभिन्नता

क्रमांक	सर्वेक्षित क्षेत्र	हिन्दू				मुसलमान				ईसाई			
		कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या	कुल परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	सर्वेक्षित महिलाओं की संख्या	जन्म दिये बच्चों की संख्या
1.	ग्रामीण क्षेत्र	470	90	90 (1.00)	361 (4.01)	19	19	19 (1.00)	104 (5.47)	22	12	12 (1.00)	53 (4.42)
2.	नगरीय क्षेत्र	-	60	60 (1.00)	190 (3.16)	-	20	20 (1.00)	100 (5.00)	-	20	20 (1.00)	50 (2.50)

सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र से 90 हिन्दू महिलाओं को लिया गया है जिनका प्रजननता अनुपात 1·00 : 4·01 पाया गया है जबकि 60 हिन्दू धर्मावलम्बी महिलाओं ने नगरीय क्षेत्र से सर्वेक्षित की है जिनका प्रजननता अनुपात 1·00 : 3·16 पाया गया है। स्पष्ट है कि ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र मे हिन्दू धर्म की महिलाओं मे प्रजननता अनुपात भिन्न-भिन्न पाया जाता है एवं ग्रामीण क्षेत्र की हिन्दू महिलाओं की अपेक्षा नगरीय क्षेत्र की हिन्दू महिलाओं का प्रजननता अनुपात कम होता है।

ग्रामीण सर्वेक्षण के अन्तर्गत 19 मुस्लिम परिवारों की 19 महिलाओं को चुना गया है जिनका प्रजननता अनुपात 1·00 : 5·47 पाया गया है जबकि सर्वेक्षित नगरीय क्षेत्र की मुस्लिम महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1·00 : 5·00 स्पष्ट हुआ है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम महिलाओं का प्रजननता अनुपात नगरीय क्षेत्र की मुस्लिम महिलाओं से अधिक होता है।

ईसाई सम्प्रदाय की 12 महिलाओं को ग्रामीण सर्वेक्षण के अन्तर्गत लिया गया है जिनका प्रजननता अनुपात 1·00 : 4·42 प्रकट हुआ है। नगरीय क्षेत्र के 20 ईसाई परिवार की महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1·00 : 2·50 पाया गया है। स्पष्ट है कि नगरीय क्षेत्र की ईसाई महिलाओं का प्रजननता अनुपात ग्रामीण क्षेत्र की ईसाई महिलाओं से कम होता है।

यह तथ्य साफतौर पर स्पष्ट हो चुका है कि ग्रामीण व नगरीय, दोनों क्षेत्रों में मुस्लिम सम्प्रदाय की महिलाओं में, अन्य सम्प्रदाय की महिलाओं की तुलना में प्रजननता अनुपात अधिक होता है।

जैसा कि सारणी से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित धार्मिक आधार पर वर्गीकृत महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता पायी जाती है। ग्रामीण सर्वेक्षित महिलाओं व नगरीय सर्वेक्षित महिलाओं में सर्वेक्षित प्रत्येक धार्मिक अवलम्बी महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता पायी जाती है ।

कहने का तात्पर्य यह है कि ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र की महिलाओं की प्रजननता धार्मिक मान्यताओं पर बहुत कुछ निर्भर करती है ।

निष्कर्ष: हिन्दू, मुस्लिम व ईसाई ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र की महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता पायी जाती है, यह उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हुआ है ।

" अध्याय - ९ "

उपसंहार - निष्कर्ष एवं सुझाव

भारत के सभी विचारकों, समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों एवं राजनीतिज्ञों ने यह स्वीकार किया है कि तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या ही भारत के आर्थिक विकास में सबसे बड़ी बाधा है। विद्वानों का विचार है कि प्रति व्यक्ति आय की न्यूनता, पूँजी निर्माण की धीमी-गति, खाद्यान्नों की पूर्ति में समस्या, मुद्रा स्फीति को प्रोत्साहन, भुगतान असन्तुलन, कल्याणकारी कार्यों पर अधिक व्यय एवं प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि न होने का प्रमुख कारण जनसंख्या की तीव्रतम वृद्धि है।

देश के परिवार कल्याण विभाग की 1992 - 93 की वार्षिक आख्या के अनुसार देश में 40 वर्षों से परिवार नियोजन कार्यक्रम सख्ती से लागू किये जाने के बावजूद जनसंख्या वृद्धि में ठहराव के लक्ष्य तक पहुँचने में अभी कई दशक लगेंगे। सन् 1983 की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में वर्ष 2000 तक जन्म दर प्रति हजार पर 21 और मृत्यु दर प्रति हजार पर 9 तथा जनसंख्या वृद्धि दर 1.2% का लक्ष्य रखा गया था। यह लक्ष्य वर्ष 2011 - 2016 तक प्राप्त हो सकेगा।

आठवीं योजना के दौरान जन्म दर प्रति एक हजार पर 26 बच्चों की मृत्यु प्रति हजार पर 70, दम्पत्ति सुरक्षा दर 56% करने का लक्ष्य

रखा गया है ।

रिपोर्ट के अनुसार इस लक्ष्य की प्राप्ति न होने के बावजूद विभागों को जनसंख्या वृद्धि दर में कमी लाने में सफलता अवश्य मिली है। वर्ष 1971 - 81 की 2.22% वृद्धि दर के मुकाबले 1981 - 91 में जनसंख्या में 2.14% की वृद्धि हुई । 1921 - 31 से यह पहला मौका है जब जनसंख्या वृद्धि में गिरावट हुई है । आख्यानुसार परम्पराएं, रीति रिवाज तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक आस्थायें जनसंख्या वृद्धि में ठहराव के लक्ष्य में बाधक बने हुए हैं ।

भविष्य में जनसंख्या वृद्धि की दर तथा जनसंख्या के गुणात्मक विकास का पक्ष वर्तमान जनसंख्या के ढाँचे तथा गुणात्मक पक्ष से प्रभावित होता है । वर्तमान में प्रजनन दर केवल कुल जनसंख्या में स्त्री जनसंख्या के अंश पर ही निर्भर नहीं करती अपितु कई ऐसे आर्थिक एवं सामाजिक कारक हैं जो वर्तमान की प्रजनन दर को प्रभावित करते हैं । आर्थिक कारकों में दम्पति का आय स्तर, रहन सहन तथा कार्य क्षेत्र आते हैं । इनमें भी पत्नी [भावी माता] का रोजगार-रत होना या न होना तथा रोजगार-रत होने पर रोजगार का प्रकार, कार्य का स्वभाव, घंटे आदि अति महत्वपूर्ण हैं । गैर आर्थिक कारकों में पति-पत्नी का शैक्षणिक स्तर, विवाह के समय पत्नी की आयु, समाज में वैवाहिक सम्बन्धों के प्रति प्रतिबद्धता, विवाह विच्छेद की

प्रवृत्ति, बच्चों के लालन पालन तथा उन्हें विकसित करने के प्रति दम्पत्ति का दृष्टिकोण आदि महत्वपूर्ण है। लड़कियों के जन्म पर समुदाय विशेष की प्रतिक्रिया भी प्रजनन दर को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करती है क्योंकि नवजात शिशुओं में कन्या शिशु भविष्य में जनसंख्या के पुनरुत्पादन को सुनिश्चित करता है। पुरुष शिशु एवं स्त्री शिशु की देखभाल, शिशु मृत्यु दर तथा आगे महिलाओं के लिए आयु विशिष्ठ मृत्यु दर सर्वाधिक प्रजननता आयु काल आदि वे महत्वपूर्ण संकेतक हैं जो कि भविष्य की जनसंख्या वृद्धि को प्रक्षेपित करने में सहायक होते हैं। इस दृष्टि से प्रजननता की प्रवृत्तियों का अध्ययन अति आवश्यक है।

किसी भी देश की जनसंख्या रहने के स्थान के आधार पर ग्रामीण तथा शहरीय क्षेत्र में बटी हुई है। ग्रामीण-शहरीय क्षेत्रों के विकास कारक विभिन्नता लिये हुये होते हैं। किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या का अध्ययन करते समय ग्रामीण एवं नगरीय प्रजननता विभिन्नता का अध्ययन स्वाभाविक रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि उस क्षेत्र में ग्रामीण एवं नगरीय दोनों प्रकार की जनसंख्या सम्मिलित हो।

उपरोक्त दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुये झाँसी जनपद के ग्रामीण एवं नगरीय परिवारों की महिलाओं पर पर्यावरणीय, परिवार के आर्थिक स्तर, व्यवसाय, शिक्षा एवं धार्मिक मान्यताओं के आधार पर निर्धा

मापदण्डों के अन्तर्गत उनमें प्रजननता विभिन्नता का अध्ययन करने पर निम्नांकित प्रमुख तथ्य प्रकाश में आये हैं जिनका क्रमशः विवेचन किया गया है ।

अध्ययन के अन्तर्गत लिये गये झाँसी नगर एवं उसकी परिधि पर स्थित छः गाँवों का सर्वेक्षण किया गया है । नगरीय - ग्रामीण परिवारों की प्रजननता पर पर्यावरणीय प्रभावों का विवेचन करने से यह कई तथ्य स्पष्ट हुए है । नगर में शैक्षणिक वातावरण, रोजगार की पर्याप्त उपलब्धता, आवास व बिजली, पानी के साथ मनोरंजन के पर्याप्त साधनों की उपलब्धता पाई गई है । जिससे नगरवासियों का दैनिक जीवन सुनियोजित ढंग से चल रहा है जिसका प्रभाव उनके दैनिक कार्य कलापों पर पड़ा ह । इसके अतिरिक्त शैक्षणिक वातावरण व दूर संचार साधनों की पर्याप्तता व परिवार नियोजन कार्यक्रमों के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण से नगरीय प्रजननता प्रभावित हुई है । इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्र जो सर्वेक्षित किए गए हैं, उनमें पर्यावरणीय प्रभाव उन गाँवों पर अधिक पड़ा है जो सड़क के किनारे स्थित है और जिनका सड़क से सीधा सम्पर्क शहरीय क्षेत्र से है ।

ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामवासियों पर परम्पराओं, रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों का बहुत अधिक प्रभाव है जिसके कारण वह आर्थिक प्रगति के लिये गाँव से बाहर जाना पसन्द नहीं करते हैं जब कि नगरवासी शैक्षणिक

दृष्टि से सुविकसित होने के कारण अन्ध विश्वासों व परम्पराओं पर विशेष ध्यान नहीं देते है ।

नगरीय जीवन व्यस्त होने के कारण व मनोरंजन के पर्याप्त साधनों की उपलब्धता के कारण नगरीय लोग प्रजननता सम्बन्धी कार्यकलापों में सीमित समय ही व्यय करते हैं जब कि ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन के साधनों की अनुपलब्धता, रोजगार की अनियमित स्थिती व शैक्षणिक वातावरण के अभाव के कारण अपना अधिक समय प्रजननता सम्बन्धी कार्यकलापों में व्यय करते है जिससे प्रजननता दर प्रभावित होती है ।

ग्रामीण बच्चे का जन्म ईश्वरीय देन मानते हैं और उनका मानना यह भी है कि यह कार्य ईश्वार की इच्छा के अनुरूप ही होता है इससे भी ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता दर अधिक है जबकि नगर के सवैक्षित परिवारों का विचार है कि बच्चे का जन्म व्यक्ति के प्रजनन सम्बन्धी कार्य-कलापों पर आधारित है और वह इन कार्यकलापों को नियन्त्रित करके अपने परिवार को सीमित रखते हैं इस कारण से भी नगरीय परिवारों की प्रजननता दर में वृद्वि नियन्त्रित रूप से हुई है । अर्थात निष्कर्षत: यह कहा सकते हैं कि ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में पर्यावरणीय विभिन्नता के कारण प्रजननता में विभिन्नता परिलक्षित हुई है ।

अध्ययन के अन्तर्गत सर्वेक्षित ग्रामीण व नगरीय परिवारों की महिलाओं को जाति व सम्प्रदाय के आधार पर विभाजित करके उनमें प्रजनन योग्य महिला एवं प्रजनन दर में अनुपात का विश्लेषण प्रत्येक अध्याय में किया गया है। अध्यायों के क्रम में अध्ययन व विश्लेषण करते समय प्रजनन अनुपात सर्वेक्षण के आधार पर वास्तविक प्रजनन योग्य महिलाओं की संख्या व प्रजनन दर में अनुपात निकाला गया है। परन्तु प्रस्तुत निष्कर्ष से सम्बन्धित अध्याय में प्रजनन योग्य महिला को 1 मानकर उसकी प्रजनन दर को आंकलित करने का प्रयास किया गया है।

सर्वप्रथम आयु वर्ग के आधार पर विभिन्न जाति समूहों में प्रजननता का अध्ययन अति महत्वपूर्ण है क्योंकि निर्धारित आयु वर्ग में बच्चों की संख्या के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास है कि किस आयु वर्ग में महिलाओं द्वारा बच्चों की संख्या अधिक प्रजननित होती है और इसके आधार पर ग्रामीण-नगरीय में प्रजननता विभिन्नता पायी जाती है अथवा नहीं। सर्वेक्षित 121 ग्रामीण परिवारों की महिलाओं को विभिन्न जाति समूहों के अन्तर्गत विभाजित किया गया है जिनमें 25 परिवारों उच्च जाति, 35 परिवार पिछड़ी जाति, 30 अनुसूचित जाति, 19 मुसलमान एवं 12 ईसाई वर्ग के परिवारों को अध्ययन हेतु लिया गया है।

उच्च जाति की ग्रामीण महिलाओं का विभिन्न आयु वर्ग में

सर्वेक्षण करने से स्पष्ट होता है कि इस वर्ग की महिलाओं में 25-30 आयु वर्ग में बच्चे अधिक पैदा होते हैं अपेक्षाकृत अन्य आयु वर्ग की तुलना में ।

पिछड़ी जाति की ग्रामीण महिलाओं में सर्वाधिक बच्चे 25-30 आयु वर्ग के बीच स्पष्ट हुआ है, जबकि अनुसूचित जाति की ग्रामीण महिलाओं में सर्वाधिक बच्चे 15 - 20 आयु वर्ग में पैदा होते हैं अर्थात इस जाति समूह में बाल विवाह की प्रथा स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई है ।

मुसलमान सम्प्रदाय की ग्रामीण महिलाओं के सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि इस सम्प्रदाय की महिलाओं में 15 से 35 वर्ष तक बहुत अधिक बच्चे पैदा होने की प्रवृत्ति स्पष्ट हुई है अर्थात इस सम्प्रदाय की महिलाओं में 15-20 आयु वर्ग में प्रजनन अनुपात 1.0 : 2.18, 20 - 25 आयु वर्ग में 1.0: 1.76, 25 - 30 आयु वर्ग में 1.0 : 1.85 एवं 30 - 35 आयु वर्ग में प्रजनन अनुपात 1.0 : 1.92 प्रकट हुआ है । इस सम्प्रदाय की महिलाओं के विभिन्न आयु वर्ग के अनुपात को देखने से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि समस्त हिन्दू परिवारों की अपेक्षा मुस्लिम परिवार की महिलाओं को प्रजनन अनुपात एवं प्रजनन काल बहुत अधिक होता है ।

सर्वेक्षित ईसाई वर्ग की ग्रामीण महिलाओं में 15 - 20 और 20 - 25 आयु वर्ग में अधिक बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति होती है । सारणीगत विवेचन से स्पष्ट होता है कि इस वर्ग में 40 वर्ष की आयु के उपरान्त बच्चे पैदा

करने की प्रवृत्ति शून्य हो जाती है । इसके अतिरिक्त इस सम्प्रदाय में धार्मिक विश्वासों की महिलाओं का प्रजनन काल अन्य सर्वेक्षित परिवारों से कम होता है ।

नगरीय क्षेत्र झाँसी के 100 परिवारों में उच्च जाति के 20 परिवारों की महिलाओं का सर्वेक्षण करने से ज्ञात हुआ है कि इस जाति वर्ग की महिलाओं में 15 - 35 वर्ष के मध्य होती है जबकि 35 - 50 आयु वर्ग में बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति शून्य स्पष्ट होती है । इसके अतिरिक्त 20 - 25 आयु वर्ग में महिलाओं का प्रजनन अनुपात सर्वाधिक है अर्थात इस आयु वर्ग में इसका अनुपात 1·0 : 2·07 है । पिछड़ी जाति के 20 नगरीय परिवारों की महिलाओं में 20 - 25 आयु वर्ग में प्रजननता सर्वाधिक परिलक्षित हुई है । अनुसूचित जाति के 20 परिवारों की नगरीय महिलाओं में 15 - 20 आयु वर्ग में प्रजननता सर्वाधिक है ।

मुस्लिम महिलाओं का 20 नगरीय परिवारों के सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हुआ है कि 15 - 30 आयु वर्ग के अन्तर्गत बहुत अधिक प्रजननता पाई जाती है । जबकि ईसाई सम्प्रदाय के नगरीय परिवारों में प्रजननता अनुपात 15 - 30 वर्ष तक समानगति से स्थिर स्पष्ट हुआ है ।

नगरीय परिवारों के सर्वेक्षण से एक तथ्य बहुत महत्वपूर्ण

परिलक्षित हुआ है कि नगरीय क्षेत्र की महिलाओं में 35 वर्ष के उपरान्त बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति नहीं पायी गयी है । यह तथ्य प्रत्येक सर्वेक्षित जाति एवं सम्प्रदाय के आंकलन से स्पष्ट होती है ।

निष्कर्षतः नगरीय महिलाओं में 15 - 20 व 20 - 25 आयु वर्ग में प्रजननता अनुपात 1·0 : 1·75 और 1·0 : 1·70 पाया गया है जबकि 25 - 30, 30 - 35 और 35 - 40 आयु वर्ग में प्रजननता अनुपात क्रमशः कम होता गया है और 35 वर्ष के उपरान्त सम्पूर्ण नगरीय महिलाओं की प्रजननदर नगण्य हो जाती है ।

सर्वेक्षित विभिन्न आयु वर्गों में विभिन्न जाति एवं सम्प्रदायों में ग्रामीण एवं नगरीय आधार पर महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता के अध्ययन से निर्णायक निष्कर्षों को निम्नांकित रूप में उल्लिखित किया गया है :-

अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि 15 - 20 आयु वर्ग में ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं का प्रजननता अनुपात क्रमशः 2·00 और 2·03 है । 20 - 25 आयु वर्ग में यह अनुपात 2·00 और 2·50 है एवं 25 - 30 आयु वर्ग में प्रजनन अनुपात 2·00 और 1·32 स्पष्ट हुआ है । अनुपातिक विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि 15 - 25 आयु वर्ग तक ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं में महत्वपूर्ण प्रजननता विभिन्नता नहीं है जब कि 25 - 30 आयु वर्ग में ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में बहुत ही अधिक प्रजननता विभिन्नता पाई जाती है । वैसे

30 - 35 और 35 - 40 आयु वर्ग में भी ग्रामीण नगरीय प्रजननता विभिन्नता क्रमशः 1.0 : 1.49 और 1:1 पाई गई है। यह तथ्य अति महत्वपूर्ण है कि 35 वर्ष के बाद नगरीय महिलाओं में प्रजनन अनुपात शून्य हो जाता है जबकि ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में पर्याप्त प्रजननता परिलक्षित होती है।

यह तथ्य भी अति महत्वपूर्ण है कि ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में प्रजननकाल बहुत लम्बा होता है अर्थात 50 वर्ष की आयु में भी बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति है जबकि नगरीय क्षेत्र में प्रजनन प्रवृत्ति मुख्य रूप से 35 वर्ष तक ही पायी गयी है।

उक्त सारगर्भित विवेचन से स्पष्ट है कि ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र की महिलाओं में विभिन्न आयु वर्ग में प्रजननता विभिन्नता पायी जाती है।

वर्तमान में प्रति व्यक्ति आय को आर्थिक स्तर व आर्थिक उन्नति या आर्थिक प्रगति का सूचक माना जाता है इसके अतिरिक्त अभी तक आर्थिक समुन्नति के मापन की कोई अन्य तकनीक विकसित नहीं हुई है। अतः प्रति व्यक्ति आय से आर्थिक स्तर का आंकलन किया जाता है। जैसा कि अनेक शोध अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि व्यक्ति/परिवार के आर्थिक स्तर का उसके सामाजिक स्तर व उसके अन्य व्यक्तिगत क्रियाकलापों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसी दृष्टिकोण से प्रति व्यक्ति आय के आधार पर उनके आर्थिक स्तर को मापन करके

सर्वेक्षित ग्रामीण व नगरीय प्रजननता विभिन्नता का आकलन व विवेचन करने पर निम्नांकित तथ्य प्रकाश में आये हैं :-

सर्वेक्षित छः गाँवों व नगरीय क्षेत्र के परिवारों को उनकी वार्षिक आय को अनुमानित करके 3500 रूपये से कम से 10,000 से अधिक पाँच वर्गों में विभाजित करने व सर्वेक्षित परिवारों को विभिन्न जाति व सम्प्रदाय समूहों में विभाजित करके परिवारों की महिलाओं द्वारा प्रजननित बच्चों की संख्या का आकलन करने पर समग्र ग्रामीण सर्वेक्षण द्वारा यह स्पष्ट होता है कि 3500 से कम आय के 28 परिवारों में प्रजनन अनुपात 1.0 : 3.17, 3500 - 5000 वार्षिक आय वर्ग के परिवारों में 1.0 : 4.25, 5000 - 7000 आय वर्ग में 1.0 : 4.5, 7,000 - 10,000 आय वर्ग में 1.0 : 5.9 एवं 10,000 से अधिक वार्षिक आय वर्ग के परिवारों में प्रजनन अनुपात 1.0 : 5.05 पाया गया है। ग्रामों में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात अधिक वार्षिक आय प्राप्त करने वाले परिवारों में पाया गया है अर्थात 7,000 - 10,000 आय वर्ग में प्रजनन अनुपात 1.0-5.9 व 10,000 से अधिक आय वाले परिवारों में 1.0 : 5.05 पाया गया है।

आर्थिक आधार पर ग्रामीण महिलाओं की प्रजननता के बारे में हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि अधिक वार्षिक आय वाले परिवार प्रजनन दर व बच्चों की बढ़ती संख्या पर अंकुश लगाने के साधनों का प्रयोग नहीं कर रहे हैं अर्थात आय की पर्याप्तता के कारण वह बढ़ते बच्चों की संख्या की ओर

ध्यान नही दे रहे हैं जबकि कम वार्षिक आय प्राप्त करने वाले परिवार बच्चों की बढ़ती संख्या को नियन्त्रित करने का प्रयास कर रहे है ।

नगरीय सर्वेक्षण के अन्तर्गत लिये गये 100 परिवारों को पूर्व निर्धारित आय व विभिन्न जाति व सम्प्रदाय वर्ग में विभाजित करने पर निम्नांकित तथ्य प्रकाश में आये हैं :-

सारणीगत विवेचन से स्पष्ट है किनगरीय क्षेत्र में 3500 से कम से 5000 से 7000 रूपये वार्षिक आय के अन्तर्गत परिवारों की संख्या शून्य है अर्थात उक्त आय वर्ग के अन्तर्गत कोई परिवार नहीं आते है । सर्वेक्षित उच्च जाति के 20 परिवारों में 5 परिवार 7000 - 10,000 वार्षिक आय वर्ग के अन्तर्गत आये हैं और 15 परिवार 10,000 से अधिक वार्षिक आय में आये है । 7,000 - 10,000 आय वर्ग में उच्च जाति वर्ग के परिवारों का प्रजनन अनुपात 1.0 : 2.0 स्पष्ट हुआ है परन्तु इसी आय वर्ग में मुसलमान सम्प्रदाय की महिलाओं मे प्रजनन अनुपात 1.0 : 6.0 पाया गया है अर्थात इस आय वर्ग में मुसलिम महिलाओं का जन्म अनुपात बहुत अधिक परिलक्षित होता है । 10,000 से अधिक वार्षिक आय के अन्तर्गत उच्च जाति के 15 परिवारों में 1 : 2.13 पिछड़ी जाति के 20 परिवारों में जनन अनुपात 1:3.1, अनुसूचित जाति वर्ग में 1:3, मुसलमान सम्प्रदाय में 1.0 : 4.0 एवं ईसाई सम्प्रदाय में जनन अनुपात 1:2.25 पाया गया है ।

विद्यमान है ।

सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र के रू0 10,000 से अधिक आय प्राप्त करने वाले परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.0 : 8.0 एवं इसी आय वर्ग की नगरीय महिलाओं में प्रजनन अनुपात 1.0 : 3.12 पाया गया है अर्थात इस आय वर्ग में भी ग्रामीण व नगरीय प्रजननता विभिन्नता है परन्तु एक तथ्य यह भी स्पष्ट हुआ है कि इस वर्ग में भी ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का प्रजनन अनुपात अधिक है ।

निष्कर्षत: यह बात स्पष्ट हुई है कि ग्रामीण क्षेत्र में यदि परिवार की वार्षिक आय अधिक है तो नगरीय क्षेत्र की तुलना में प्रजनन अनुपात भी अधिक होता है इसके अतिरिक्त आय में वृद्धि होने के साथ-साथ प्रजनन अनुपात में कमी आती है, यह सभी नगरीय व ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में आती है परन्तु नगरीय क्षेत्र के परिवारों की महिलाओं में यह कमी अधिक अनुपात में होती है ।

व्यवसाय के आधार पर ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में प्रजननता विभिन्नता ज्ञात करने के लिये अध्यायन्तर्गत परिवार के मुख्य आय के स्त्रोतों को व्यवसाय वर्ग में माना गया है । व्यवसायिक वर्गीकरण के अन्तर्गत कृषि कार्य, खेतिहर मजदूर, परम्परागत कार्य, नौकरी एवं दुकान व्यवसाय को रखा गया है । इन व्यवसायों अर्थात रोजगार में संलग्न परिवारों को जाति के आधार पर वर्गीकृत करके उन परिवारों की महिलाओं द्वारा जनित बच्चों की संख्या के आधार पर ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में व्यवसाय व जाति के आधार

पर प्रजननता विभिन्नता का आंकलन करने पर निम्नांकित निष्कर्ष स्पष्ट हुए है :-

सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्रों के परिवारों से यह निष्कर्ष निकलता है कि 121 ग्रामीण परिवारों मे 73 परिवार कृषि कार्य, 32 परिवार खेतिहर मजदूरी, 15 नौकरी एवं 1 परिवार दुकान व्यवसाय मे संलग्न है। कृषि कार्य मे संलग्न परिवारों की महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1.0:4.31 खेतिहर मजदूरी मे संलग्न परिवारों की महिलाओं का 1.0 : 4.49, नौकरी मे संलग्न परिवारों की महिलाओं का 1.0 : 5.57 एवं दुकान व्यवसाय मे संलग्न परिवार की महिला का प्रजनन अनुपात 1.0 : 2.0 स्पष्ट हुआ है। सर्वाधिक प्रजनन अनुपात ग्रामीण क्षेत्र के खेतिहर मजदूरी मे कार्य मे संलग्न परिवारों की महिलाओं व सबसे कम नौकरी मे संलग्न परिवारों की महिलाओं का रहा है। दुकान व्यवसाय मे एकपरिवार को निर्णायक निष्कर्ष हेतु औचित्यपूर्ण नहीं कहा जा सकता परन्तु नौकरी मे संलग्न परिवारों की महिलाओं मे प्रजनन अनुपात का कम होना अत्याधिक औचित्यपूर्ण एवं निर्णयात्मक है।

सर्वेक्षित नगरीय क्षेत्र के अन्तर्गत कृषि कार्य, परम्परागत कार्य व दुकान व्यवसाय वर्ग मे कोई भी परिवार सर्वेक्षण के अन्तर्गत नहीं आया है। सर्वेक्षित 100 नगरीय परिवारों मे 20 परिवार खेतिहर मजदूरी अर्थात दैनिक निर्माण कार्य या फैक्टरी सम्बन्धी मजदूरी कार्य मे संलग्न परिवारों की महिलाओं

का प्रजननता अनुपात 1.0 : 4.75 स्पष्ट हुआ है तथा नगरीय क्षेत्र के अन्य 80 परिवार जो नौकरी से सम्बन्धित हैं, के परिवार की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.0 : 2.96 स्पष्ट हुआ है अर्थात नगरीय क्षेत्र मैं मजदूर वर्ग की महिलाओं मैं नौकरी वर्ग की महिलाओं की अपेक्षा प्रजननता अनुपात अधिक दृष्टिगत होता है ।

सर्वेक्षित ग्रामीण व नगरीय परिवारों का व्यवसाय के आधार पर महिलाओं की प्रजननता विभिन्नता का आंकलन खेतिहर मजदूरी और नौकरी वर्ग की महिलाओं का किया जा सकता है क्योंकि इस व्यवसाय वर्ग मैं ही नगर व ग्रामीण परिवार मैं महिलाओं द्वारा प्रजनित बच्चों की संख्या तुलना की दृष्टि मैं उपलब्ध है । व्यवसाय के आधार पर ग्रामीण व नगरीय प्रजननता विभिन्नता का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि खेतिहर मजदूर वर्ग मैं महिलाओं की प्रजननता, नौकरी मैं संलग्न परि...रों की महिलाओं से अधिक है । इसके अतिरिक्त खेतिहर मजदूरी मैं संलग्न ग्रामीण व नगरीय परिवारों की महिलाओं मैं प्रजननता उपरोक्त विवेचन से भिन्न प्रमाणित होती है । इसी प्रकार नौकरी मैं संलग्न ग्रामीण व नगरीय परिवारों की महिलाओं की प्रजननता भी भिन्न-भिन्न दृष्टिगत होती है । निष्कर्षतः हम यह स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि परिवार के व्यवसाय व आय के प्रमुख स्त्रोतों का परिवार की महिलाओं की प्रजननता पर पड़ता है और कार्य के स्थान अर्थात ग्रामीण व नगरीय एवं वहाँ के सामाजिक वातावरण मैं विभिन्नता के कारण ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र मैं एक ही व्यवसाय मैं संलग्न परिवारों की महिलाओं की प्रजननता

समग्र रूप से नगरीय परिवारों में 10,000 से अधिक आय वर्ग में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात मुसलमान सम्प्रदाय में पाया गया है जबकि हिन्दू परिवारों में पिछड़ी जाति का सर्वाधिक परिलक्षित हुआ है ।

वार्षिक आय अर्थात आर्थिक स्तर के आधार पर ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता का विश्लेषण करने पर निम्नांकित उल्लेखनीय विभिन्नतायें परिलक्षित हुई है :-

नगरीय क्षेत्र में प्रति व्यक्ति व प्रति परिवार आय ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक है अर्थात नगरीय क्षेत्र में सर्वेक्षित सभी परिवारों की वार्षिक आय 7,000 से अधिक है जबकि 7,000 से कम अर्थात 3500 से कम व 7,000 वार्षिक आय प्राप्त करने वाले परिवार ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त मात्रा में प्रत्येक जाति व सम्प्रदाय वर्ग में उपलब्ध है । अतः 3500 से कम से 5000 - 7000 वार्षिक आय वर्ग में ग्रामीण - नगरीय प्रजननता की तुलना असम्भव है क्योंकि उक्त वर्ग में नगरीय क्षेत्र में कोई परिवार उपलब्ध नही पाये गये है ।

ग्रामीण क्षेत्र के 7000 - 10000 वार्षिक आय वर्ग में 8 परिवारो का प्रजनन अनुपात 1.0 : 5.9 पाया गया है जबकि नगरीय क्षेत्र के परिवारों महिलाओं में इसी आय वर्ग में प्रजनन अनुपात 1.0 : 4.6 पाया गया है । अनुपातिक अवलोकन से स्पष्ट है नगरीय महिलाओं में प्रजनन अनुपात कम है अर्थात उक्त आय वर्ग में गामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता

भिन्न होती है ।

शिक्षा स्तर और सन्तानोत्पादन के बीच सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ट होता है । सामान्यत: शिक्षितों की अपेक्षा अशिक्षितों में बच्चों की संख्या अधिक होती है । इस महत्वपूर्ण तथ्य के आधार पर महिलाओं की शिक्षा के आधार प्रजननित बच्चों की संख्या का ग्रामीण व नगरीय प्रजननता विभिन्नता का आंकलन किया गया है ।

समस्त सर्वेक्षित ग्रामों के परिवारों की महिलाओं का शिक्षा एवं जाति के आधार पर प्रजननित बच्चों की संख्या के आधार पर निम्नांकित निष्कर्ष उल्लिखित किये जा सकते हैं :-

उच्च श्रेणी के अन्तर्गत सर्वेक्षित 25 परिवारों में 2 महिलायें निरक्षर, 15 प्राइमरी, 7 जूनियर हाईस्कूल, 2 हाई स्कूल एवं 1 इण्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त है । इन शैक्षिक स्तरों पर इस जाति श्रेणी की महिलाओं का प्रजनन अनुपात क्रमश: 1.0 : 3.5, 1.0 : 3.59, 1.0 : 2.85, 1.0 : 3.5 एवं 1.0 : 5.0 प्रकट हुआ है । इन सभी शैक्षिक स्तर की महिलाओं में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात प्राइमरी स्तर तक शिक्षा प्राप्त महिलाओं का प्रकट हुआ है ।

पिछड़ी जाति के सर्वेक्षित 35 परिवारों में 14 निरक्षर, 18 प्राइमरी, 2 जूनियर हाईस्कूल व एक इण्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त है । इन शैक्षिक स्तरों

पर इस जाति श्रेणी की महिलाओं का प्रजनन अनुपात क्रमशः 1.0 : 4.0, 1.0 : 4.0, 1.0 : 4.4 एवं 1.0 : 5.5 हुआ है । इन सभी शैक्षिक स्तरों में सर्वाधिक प्रजनन अनुपात प्राइमरी स्तर तक शिक्षित महिलाओं का है परन्तु स्पष्ट रूप से इस जाति के सभी शैक्षिक स्तर की महिलाओं का प्रजनन दर स्तर लगभग समान है ।

अनुसूचित जाति के सर्वेक्षित 30 परिवारों में 26 महिलायें निरक्षर एवं 4 प्राइमरी स्तर तक शिक्षा प्राप्त हैं जिनका प्रजनन अनुपात क्रमशः 1.0:4.95 एवं 1.0 : 5.07 प्रकट हुआ है । इस जाति वर्ग की महिलाओं का प्रजनन अनुपात भी लगभग समान है ।

मुसलमान सम्प्रदाय के सर्वेक्षित 19 परिवारों में 15 महिलायें निरक्षर, 3 प्राइमरी व एक इण्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त है । इस सम्प्रदाय की महिलाओं का प्रजनन अनुपात शिक्षा के आधार पर क्रमशः 1.0 : 5.79, 1.0: 5.19 एवं 1.0 : 5.2 परिलक्षित हुआ है । सर्वाधिक प्रजनन अनुपात निरक्षर महिलाओं में स्पष्ट हुआ है ।

ईसाई सम्प्रदाय के 12 परिवारों में 4 प्राइमरी, 3 जूनियर हाई स्कूल, 3 हाई स्कूल, 2 इण्टरमीडिएट एवं 1 स्नातक स्तर तक शिक्षित महिलायें हैं । उल्लेखनीय है कि इस सम्प्रदाय में कोई भी महिला निरक्षर नहीं पायी गयी

है । इस सम्प्रदाय की हाईस्कूल तक शिक्षित महिलाओं में सर्वाधिक प्रजननता अनुपात पाया गया है । परन्तु इस शिक्षा स्तर के अन्तर्गत एक महिला ही है अतः यह तथ्य समग्र सम्प्रदाय पर सामान्यीकृत नहीं हो सकता बल्कि प्राइमरी स्तर पर प्रजननता को सामान्यीकृत कहीं जा सकता है जिसमें महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1·0 : 4·54 दृष्टिगत हुआ है व सबसे कम प्रजनन अनुपात स्नातक तक शिक्षित महिलाओं में स्पष्ट हुआ है ।

उक्त ग्रामीण सर्वेक्षण के सारगर्भित विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के शिक्षा स्तर में जैसे-जैसे वृद्धि हो रही है उनकी प्रजनन दर में कमी आ रही है । इसके अतिरिक्त निरक्षर महिलाओं में प्रजननता सर्वाधिक प्रकट हुई है जबकि स्नातक शिक्षित महिलाओं में प्रजननता अनुपात सबसे कम है । पिछड़ी जाति व अनुसूचित जाति की महिलाओं में प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा का प्रजननता पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है ।

शिक्षा के आधार पर नगरीय महिलाओं की प्रजननता के अध्ययन के सन्दर्भ में यह निष्कर्ष स्पष्ट हुआ है कि नगरीय क्षेत्र के सर्वेक्षित 100 परिवारों में 32 महिलायें निरक्षर, 9 प्राइमरी, 5 जूनियर हाई स्कूल, 16 हाईस्कूल, 14 इण्टरमीडिएट, 23 स्नातक एवं 1 स्नातक व डिप्लोमाधारी उद्घाटित हुई है । इनका शिक्षा के आधार पर प्रजनन अनुपात क्रमशः 1·0 : 3·68, 1·0 : 4·8, 1·0 : 3·6, 1·0 :3·06, 1·0 : 2·28, 1·0 : 1·65 एवं 1·0 : 3·0 प्रकट हुआ है । सबसे अधिक प्रजनन अनुपात प्राइमरी महिलाओं का प्रकट हुआ है

सबसे अधिक प्रजनन अनुपात प्राइमरी महिलाओं का प्रकट हुआ है व सबसे कम प्रजनन अनुपात स्नातक तक शिक्षित महिलाओं का दृष्टिगोचर हुआ है ।

नगरीय क्षेत्र के पिछड़े वर्ग की महिलाओं में यह प्रवृत्ति दृष्टिगत हुई है कि शिक्षा स्तर में वृद्धि के साथ ही उनके द्वारा प्रजननित बच्चों की संख्या में वृद्धि होती है जबकि अनुसूचित जाति की महिलाओं में शिक्षा स्तर में वृद्धि के साथ प्रजनन अनुपात में कमी आने की प्रवृत्ति है ।

ग्रामीण व नगरीय प्रजननता विभिन्नता का शिक्षा के आधार पर निष्कर्षात्मक विवेचन निम्नांकित प्रकार से उल्लिखित किया गया है :-

ग्रामीण सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हुआ है कि ग्रामीण निरक्षर महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1.0 : 4.85 तथा नगरीय क्षेत्र की निरक्षर महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1.0 : 3.68 है । ग्रामीण निरक्षर महिलाओं का औसत प्रजननता अनुपात 4.85 एवं नगरीय निरक्षर महिलाओं का 3.68 स्पष्ट हुआ है । तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट है कि ग्रामीण निरक्षर महिलाओं की प्रजननता नगरीय निरक्षर महिलाओं से अधिक है । इससे एक बात स्पष्ट होती है कि समान शिक्षा अज्ञान के बावजूद भी नगर व ग्रामीण महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता पाई जाती है ।

हाई स्कूल शैक्षिक स्तर की ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता अनुपात क्रमशः 1.0 : 4.75 एवं 1.0 : 3.06 प्रकट हुआ है । ग्रामीण महिलाओं में औसत प्रजननता 4.75 एवं नगरीय हाई स्कूल तक शिक्षित महिलाओं में औसत प्रजननता 3.06 परिलक्षित हुई है जिससे हाई स्कूल तक शिक्षित नगरीय व ग्रामीण महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता स्पष्ट होती है।

इण्टरमीडिएट तक शिक्षित ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता अनुपात क्रमशः 1.0 : 4.14 एवं 1.0 : 2.28 पाया गया है एवं इनमें औसत प्रजननता क्रमशः 4.14 एवं 2.28 उद्घाटित हुई है जिससे स्पष्ट होता है कि इस शैक्षिक स्तर पर भी ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता होती है ।

स्नातक शैक्षिक स्तर तक ग्रामीण सर्वेक्षण की एक महिला का प्रजनन अनुपात 1.0 : 1.0 है परन्तु एक मात्र स्नातक महिला को ग्रामीण क्षेत्र की स्नातक महिलाओं का प्रतिनिधि नहीं मान सकते हैं फिर भी सर्वेक्षित नगरीय स्नातक तक शिक्षित महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1.0 : 1.65 की तुलनात्मक विश्लेषण ग्रामीण व नगरीय स्नातक तक शिक्षित महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता पाई जाती है ।

समग्र रूप से विभिन्न शैक्षिक स्तर की ग्रामीण व नगरीय महिलाओं

में प्रजननता विभिन्नता पाई जाती है, जो कि उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है ।

ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में महिलाओं की प्रजननता विभिन्नता का अध्ययन हेतु वैसे तो अनेक तथ्य हैं जिसके आधार पर प्रजननता विभिन्नता का अध्ययन किया जा सकता है परन्तु मेरे विचार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य धार्मिक है क्योंकि यह तथ्य ग्रामीण व नगरीय या व्यक्तिगत भावनाओं, मान्यताओं व आस्थाओं से जुड़ा है और धार्मिक विश्वास को बदलना व परिवर्तित करना या अनुप्रेरित करना व्यक्ति के लिये इस प्रकार है जैसे कि वह ईश्वर या धर्म विरुद्ध कार्य कर रहा हो इसलिये कि हजारों वर्षों से धार्मिक ग्रन्थों व धर्माचार्यों के व्याख्यानों ने व्यक्ति पर बहुत गहरे तक अपनी जड़े जमा ली है अर्थात प्रत्येक धर्मावलम्बी में धार्मिक मान्यता की एक पर्त अवश्य जम गई है जिस पर किसी भी कानून या अधिनियम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है । सम्प्रति शिक्षित वातावरण में वृद्धि से नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र जो शिक्षित वातावरण के सम्पर्क में आये हैं, में धार्मिक कुरीतियों या अंधविश्वासों में कमी अवश्य आई है ।

अतः धर्म के आधार पर ग्रामीण व नगरीय प्रजननता विभिन्नता का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है।धर्म के आधार पर अध्ययन करने पर निम्नांकित

तस्वीर प्रजननता विभिन्नता के रूप में सामने आई है जिसका उल्लेख इस प्रकार है :-

धार्मिक आधार पर ग्रामीण क्षेत्र की सर्वेक्षित महिलाओं को धर्म के आधार पर विभाजित किया गया है । ग्रामीण हिन्दू परिवारों की 90 महिलाओं ने 361 बच्चों को जनित किया अर्थात इस सम्प्रदाय की ग्रामीण महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1.0 : 4.01 पाया गया है । 19 ग्रामीण मुस्लिम परिवारों की महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.00 : 5.47 प्रकट हुआ है जबकि 12 ग्रामीण ईसाई महिलाओं में प्रजननता अनुपात 1.00 : 4.42 परिलक्षित हुआ है ।

सर्वाधिक प्रजनन अनुपात मुस्लिम धर्म की ग्रामीण महिलाओं में अर्थात 1.00 : 5.47 एवं सबसे कम प्रजनन अनुपात 1.0 : 4.01 हिन्दू ग्रामीण महिलाओं में पाया गया है ।

धर्म के आधार पर ग्रामीण महिलाओं से निष्कर्ष स्पष्ट हुआ है कि ग्रामीण क्षेत्रों में मुस्लिम व ईसाई धर्मानुयायी महिलायें प्रजनन दर में तीव्र वृद्धि कर रही हैं ।

धार्मिक आधार पर नगरीय सर्वेक्षण के अन्तर्गत 100 परिवारों में 60 हिन्दू नगरीय महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1.00 : 3.16, 20 मुस्लिम

महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1.00 : 5.00 एवं 20 ईसाई महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.00 : 2.50 प्रकट हुआ है ।

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला है कि नगरीय महिलाओं में मुस्लिम महिलाओं का प्रजनन अनुपात अन्य धार्मिक सम्प्रदाय की महिलाओं से अधिक है ।

धार्मिक आधार पर ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता का अध्ययन करने पर निम्नांकित सारगर्भित निष्कर्ष उद्घाटित हुआ है ।

ग्रामीण क्षेत्र की सर्वेक्षित 90 हिन्दू महिलाओं का प्रजनन अनुपात 1.00 : 4.01 प्रकट हुआ है जबकि 60 नगरीय हिन्दू महिलाओं में प्रजनन अनुपात 1.00 : 3.16 पाया गया है अर्थात ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र की हिन्दू धर्म की महिलाओं में प्रजननता भिन्न पायी जाती है । इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्र की हिन्दू महिलाओं की अपेक्षा नगरीय क्षेत्र की हिन्दू महिलाओं का प्रजननता अनुपात कम होता है ।

मुस्लिम सम्प्रदाय की सर्वेक्षित 19 महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1.00 : 5.47 एवं नगरीय महिलाओं में प्रजननता अनुपात 1.00 : 5.00 प्रकट हुआ है । स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का प्रजननता अनुपात नगरीय

महिलाओं से अधिक होता है ।

ईसाई सम्प्रदाय की सर्वेक्षित 12 ग्रामीण महिलाओं का प्रजननता अनुपात 1.00 : 4.42 एवं नगरीय क्षेत्र की सर्वेक्षित 20 महिलाओं में प्रजननता अनुपात 1.00 : 2.50 पाया गया है । स्पष्ट है कि नगरीय क्षेत्र की ईसाई महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण महिलाओं में प्रजननता अनुपात अधिक होता है ।

यह बात उपरोक्त उल्लेख से स्पष्ट होती है कि प्रत्येक धार्मिक वर्ग की ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता पाई जाती है। इसके अतिरिक्त यह तथ्य भी स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कि ग्रामीण व नगरीय दोनों क्षेत्रों में मुस्लिम सम्प्रदाय की महिलाओं में अन्य सम्प्रदाय की महिलाओं की तुलना में प्रजननता अधिक होती है ।

निष्कर्षतः हिन्दू, मुस्लिम व ईसाई सम्प्रदाय की ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता पाई जाती है ।

सम्पूर्ण अध्ययन के अन्तर्गत पर्यावरण, आर्थिक स्तर, व्यवसाय, शिक्षा स्तर एवं धार्मिक सामाजिक संस्थाओं का ग्रामीण व नगरीय महिलाओं की प्रजननता पर प्रभावों व उनकी प्रजननता पर उक्त तथ्यों के कारण विभिन्नता स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई है । निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि ग्रामीण व

नगरीय महिलाओं पर पर्यावरण, आर्थिक स्तर, व्यवसाय, शिक्षा स्तर एवं धर्म के कारण प्रजननता भिन्न-2 होती है ।

शोध कार्य पूर्व की गई परिकल्पना अध्ययन, विवेचन व निष्कर्ष के अवलोकन से पूर्णतः सत्य प्रकट हुई है । शोध निष्कर्ष को ध्यान में रखते हुए हम ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता को नियन्त्रित करने हेतु निम्न सुझाव देना उपयुक्त समझते हैं । सम्प्रति, यह तथ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि विभिन्न तथ्यों का प्रजननता पर प्रभावों से यह बात प्रत्येक तथ्य द्वारा स्पष्ट हुई है कि ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में नगरीय महिलाओं की अपेक्षा प्रजननता अधिक होती है ।

निष्कर्ष :-

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु परिकल्पना के अनुरूप निम्नांकित निष्कर्ष उद्घाटित हुए हैं :-

1) आर्थिक स्तर तथा प्रजननता में विपरीत सम्बन्ध होता है

ग्रामीण क्षेत्रों के सर्वेक्षण के विवेचन से यह स्पष्ट हुआ है कि आर्थिक वार्षिक आय वाले परिवार प्रजनन दर व बच्चों की बढ़ती संख्या पर अंकुश लगाने के साधनों का प्रयोग नहीं कर रहे हैं । अध्ययन के क्रम में

उच्च जाति, पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति, ईसाई एवं मुसलमान को अलग-2 वर्गों में विभाजित करने पर यह महत्वपूर्ण तथ्य प्रकट हुआ है किप्रत्येक आय वर्ग में मुसलमान सम्प्रदाय की महिलाओं में प्रजननता दर अधिक है अर्थात मुस्लिम सम्प्रदाय में आयवउनकी प्रजननता दर में सम्बन्ध गौण है। ग्रामीण महिलाओं के सर्वेक्षण के परिणामों से यह बात स्पष्ट है कि परिवार की आय अर्थात आर्थिक स्तर तथा प्रजननता में विपरीत सम्बन्ध नहीं होता है।

नगरीय सर्वेक्षण में सर्वेक्षित परिवारों की आय अच्छी है और जैसा कि विश्लेषण से स्पष्ट हुआ है कि सर्वाधिक आय वर्ग में मुसलमान सम्प्रदाय की महिलाओं की प्रजननता सर्वाधिक है जबकि हिन्दू परिवारों में पिछड़ी जाति की महिलाओं में प्रजननता अधिक होती है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आय में वृद्धि के साथ ही प्रजनन दर में कमी आती है।

ग्रामीण व नगरीय दोनों क्षेत्रों के सर्वेक्षण व विश्लेषण से यह निष्कर्ष स्पष्ट हुआ है किआर्थिक स्तर तथा प्रजननता में विपरीत सम्बन्ध होता है परन्तु ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र की महिलाओं में आर्थिक आधार पर प्रजननता विभिन्नता स्पष्ट हुई है। ग्रामीण महिलाओं में उनकी पारिवारिक वार्षिक आय में वृद्धि के अनुरूप जनसंख्या या बच्चों की संख्या में वृद्धि तो होती है परन्तु घटते क्रम में परन्तु नगरीय क्षेत्र की महिलाओं में आर्थिक स्तर में वृद्धि के साथ-2 बच्चों की संख्या अत्यन्त तीव्रता से कम होती है।

2) शिक्षा स्तर तथा प्रजननता में विपरीत सम्बन्ध होता है :-

उक्त परिकल्पना के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन द्वारा स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के शिक्षा स्तर में जैसे-2 वृद्धि हो रही है उनकी प्रजनन दर में कमी आ रही है । ग्रामीण सर्वेक्षण से यह उल्लेखनीय तथ्य प्रकाश में आया है कि निरक्षर महिलाओं में प्रजननता दर सर्वाधिक उद्घाटित हुई है जबकि स्नातक तक शिक्षित महिलाओं में प्रजननता अनुपात सबसे कम है । पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति की महिलाओं में प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा का प्रजननता दर पर कोई विशेष प्रभाव दृष्टिगत नहीं हुआ है ।

नगरीय सर्वेक्षण के अंतर्गत अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि प्राइमरी तक शिक्षित महिलाओं में प्रजननता दर सर्वाधिक है जबकि स्नातक स्तर तक शिक्षित महिलाओं में प्रजननता दर सबसे कम है । उल्लेखनीय है कि नगरीय सर्वेक्षण के अन्तर्गत निरक्षर महिलायें नहीं पाई गई है । इसके अतिरिक्त पिछड़े वर्ग की महिलाओं में यह प्रवृत्ति दृष्टिगत हुई है कि शिक्षा स्तर में वृद्धि के साथ बच्चों की संख्या में वृद्धि हुई है जबकि अनुसूचित जाति की महिलाओं में शिक्षा स्तर में वृद्धि के साथ प्रजननता दर में कमी आने की प्रवृत्ति दृष्टिगत हुई है ।

ग्रामीण अध्ययन के निष्कर्षात्मक विवेचन से स्पष्ट हुआ है कि

ग्रामीण महिलाओं में शिक्षास्तर व प्रजननता में विपरीत सम्बन्ध होता है अर्थात महिलाओं पर यह परिकल्पना सत्य प्रमाणित होती है। सम्प्रति पिछड़ी व अनुसूचित जाति के परिवार की महिलाओं पर यह परिकल्पना सत्य प्रमाणित नहीं हुई है।

नगरीय अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि परिकल्पना शिक्षा स्तर व प्रजननता में विपरीत सम्बन्ध सत्य प्रमाणित हुआ है परन्तु पिछड़ी जाति के परिवार की महिलाओं में यह सम्बन्ध सत्य प्रमाणित नहीं हुआ है।

समग्र रूप से नगरीय व ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा स्तर तथा प्रजननता में विपरीत सम्बन्ध होता है अर्थात परिकल्पना सत्य प्रमाणित हुई है परन्तु पिछड़ी जाति की महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना सत्य प्रमाणित नहीं हुई है।

3॥ महिलाओं के कार्यरत होने तथा प्रजननता में विपरीत सम्बन्ध होता है:-

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिये समुचित रोजगार की अपर्याप्तता के कारण परिवार के मुखिया के व्यवसाय में योगदान को महिलाओं के रोजगार रूप में विचारणीय मानने पर यह स्पष्ट होता है:

सर्वाधिक प्रजनन अनुपात ग्रामीण क्षेत्र के खेतिहर मजदूरी में

संलग्न परिवारों की महिलाओं में व सबसे कम नौकरी में संलग्न परिवारों की महिलाओं का स्पष्ट हुआ है । नगरीय क्षेत्र में मजदूर वर्ग की महिलाओं में नौकरी वर्ग की महिलाओं की अपेक्षा प्रजननता अनुपात अधिक दृष्टिगत होता है ।

विवेचन से स्पष्ट है कि महिलाओं के परिवार के व्यवसाय में भिन्नता के कारण प्रजननता प्रभावित हुई है अर्थात परिवार का व्यवसाय यदि मानसिक है तो प्रजननता कम व यदि कार्य शारीरिक परिश्रमी है तो प्रजननता अधिक है ।

परिकल्पनानुसार ग्रामीण महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में सर्वेक्षण के द्वारा स्पष्ट हुआ है कि वे सीधे रूप में कार्यरत होने की अपेक्षा परिवार के [illegible] या मुख्य व्यवसाय में अपने योगदान को ही देती है अतः ग्रामीण महिलाओं के कार्यरत होने तथा प्रजननता में विपरीत सम्बन्ध नहीं होता है क्योंकि इसका उद्घाटीकरण शोध अध्ययन से स्पष्ट नहीं हुआ है जबकि नगरीय सर्वेक्षण के क्रम में महिलाओं के कार्यरत होने की स्थिति पाई गई है जिससे यह स्पष्ट हुआ है कि नगरीय महिलाओं के कार्यरत होने पर उनकी प्रजननता कम होती है अतः महिलाओं के कार्यरत होने तथा प्रजननता में विपरीत सम्बन्ध नगरीय महिलाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ है और नगरीय महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में उक्त परिकल्पना सत्य प्रकट हुई है जबकि ग्रामीण महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना सत्य प्रमाणित नहीं हुई है ।

4. विभिन्न धर्म तथा जाति वर्गों में प्रजननता भिन्न होती है :-

धार्मिक आधार पर ग्रामीण व नगरीय महिलाओं के प्रजनन विवेचन के अन्तर्गत हिन्दू, मुस्लिम व ईसाई धर्मावलम्बी महिलाओं के सर्वेक्षणोपरान्त विवेचन से यह स्पष्ट हुआ है कि मुस्लिम व ईसाई ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा हिन्दू ग्रामीण महिलाओं की प्रजननता दर कम होती है । ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम महिलाओं की प्रजननता सर्वाधिक प्रकट हुई है, तत्प्रति परिकल्पना के अनुसार सभी धर्मों की महिलाओं में प्रजननता भिन्न प्रकट हुई है अर्थात ग्रामीण महिलाओं में परिकल्पना सत्य प्रमाणित हुई है ।

नगरीय अध्ययन के अन्तर्गत धार्मिक आधार पर महिलाओं के निष्कर्षात्मक विवेचन से यह स्पष्ट हुआ है कि नगरीय मुस्लिम महिलाओं का प्रजननता अनुपात भी अन्य सम्प्रदायों से अधिक होता है । परिकल्पनानुसार प्रत्येक धर्म व वर्ग की महिलाओं की प्रजननता में विभिन्नता स्पष्ट रूप से भिन्न-2 परिलक्षित हुई है अर्थात परिकल्पना सत्य प्रमाणित हुई है ।

समग्र रूप से सर्वेक्षित ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में विभिन्न धर्म तथा जाति वर्गों में प्रजननता विभिन्नता होती है । इसके अतिरिक्त ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में समान धर्म के बावजूद भी प्रजननता विभिन्नता पाई जाती है अर्थात धर्म समान होने पर भी ग्रामीण महिलाओं में नगरीय महिलाओं की अपेक्षा प्रजननता अधिक पाई जाती है ।

5) उपरोक्त सभी वर्गों मे नगरीय जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या की अपेक्षा प्रजननता कम होती है :-

आर्थिक स्तर, शिक्षा, व्यवसाय एवं धर्म के आधार पर विवेचन यह बात स्पष्ट होती है कि ग्रामीण महिलाओं में नगरीय महिलाओं की अपेक्षा प्रजननता अधिक होती है अर्थात वर्गानुसार किये गये विवेचन को दृष्टिगत करने पर यह स्पष्ट हो गया है कि उक्त वर्गों में नगरीय जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या की अपेक्षा प्रजननता कम होती है तदानुसार परिकल्पना सत्य प्रमाणित हुई है ।

6) नगरीय जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या की अपेक्षा सामान्यतः प्रजनन दर कम होती है :-

विभिन्न पहलुओं पर किये गये सर्वेक्षण व विवेचन से यह तथ्य स्पष्ट हो गया है कि नगरीय जनसंख्या की अपेक्षा ग्रामीण जनसंख्या में प्रजनन दर अधिक होती है अर्थात नगरीय जनसंख्या की प्रजनन दर कम होती है ।

विभिन्न जाति व धर्म सम्प्रदाय, आर्थिक स्तर, शिक्षा व व्यवसाय के आधार पर यह बात स्पष्ट रूप से प्रकट हुई कि ग्रामीण महिलाओं की प्रजननदर नगरीय महिलाओं से अधिक होती है ।

सुझाव :-

1) विवाह की आयु जो कि सरकार द्वारा लड़का व लड़की हेतु निर्धारित की गई है परन्तु ग्रामीण क्षेत्र के निम्नजाति वर्ग अर्थात अनुसूचित वर्ग के परिवारों में इसकी ओर कोई भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है इसके साथ ही ग्राम के अन्य जाति वर्ग में भी शीघ्र विवाह करने की प्रवृत्ति देखी गयी है जिसके लिए सरकार को अपने उक्त नियम को कड़ाई के साथ लागू करना चाहिए जिससे कि लोग इसका पालन करें क्योंकि इसके पालन न होने व विवाह शीघ्र हो जाने से हमारी जनसंख्या वृद्धि पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है अर्थात शीघ्र विवाह होने पर प्रजनन काल अधिक होता है और परिणामस्वरूप बच्चों की संख्या भी अधिक होती है जो कि देश के सीमित संसाधनों के कारण देश व समाज के विकास में बाधक होते है । इस ओर ग्रामीण परिवारों में जागरूकता लाने के लिए सरकार को परिवार नियोजन विभाग को इसका दायित्व सौंपा जाना चाहिये क्योंकि जनवृद्धि के पूर्व ही सावधानि बरतना अति आवश्यक व भविष्य की योजना की सफलता बनाने हेतु महत्वपूर्ण भी है ।

2) आर्थिक पहलू प्रत्येक देश व समाज के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य होता है । हमारा देश कृषि प्रधान देश है परन्तु अध्ययनों से स्पष्ट हो चुका है कि कृषि का देश की राष्ट्रीय आय में हिस्सा बहुत कम है परन्तु कृषि पर हमारी तीन-चौथाई आबादी निर्भर है । आज भी हमारी 70% जन-संख्या ग्रामों में निवास कर रही है अतः ग्रामीणों के जीवनस्तर और आर्थिक

स्तर को विकसित करने हेतु उनको पूरे वर्ष रोजगार मुहैया कराने हेतु उपाये किए जाने चाहिए ताकि उनका आर्थिक स्तर विकसित हो और साथ ही उनका शहरों की ओर पलायन रुक सके । ग्रामीणों के आर्थिक स्तर में सुधार होना उनकी प्रजननता वृद्धि की ओर उन्मुखता पर अवश्य ही एक अंकुश होगा जैसा कि नगरीय अध्ययन के तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट हुआ है ।

3) पाश्चात्य देशों के अनुरूप हमारा देश भी आधुनिक तकनीक अपनाकर तकनीक प्रधान औद्योगिक नीति अपना रहा है जिसका हमारे ग्रामीण प्रधान देश के कुटीर उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है और साथ ही बड़े उद्योगों में आधुनिकीकरण के नाम पर मशीनीकरण के कारण हजारों-लाखों मजदूरों को निष्कासित किया जा रहा है इससे श्रम प्रधान देश के तकनीक प्रधान होने की ओर उन्मुख होने के कारण रोजगार की समस्या उत्पन्न हुई है । अतः सरकार को चाहिए कि ऐसे उद्योगों को संरक्षण दे जिसमें उत्पादन श्रमिकों द्वारा उत्पादित किया जाता हो और ग्राम स्तर पर कृषक व अन्य बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध कराने हेतु लघु व कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन करने हेतु विशेष कार्यक्रम व योजनायें बनाये ताकि ग्राम स्तर पर अधिकांश लोग रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायित हों, जहाँ वे अनेक समस्याओं को जन्म देते हैं । साथ ही अनियमि

दैनिक अव्यवस्थताओं के कारण ग्रामीणों के व्यवसाय के प्रति अनिश्चितता की स्थिति समाप्त हो सके। जीवन में सुव्यवस्था का प्रभाव निश्चित रूप से प्रजननता पर पड़ता है। ग्रामों व नगरों में रोजगार के अवसरों में विभिन्नताओं के कारण अनिश्चितता के वातावरण समाप्त होने की सम्भावना प्रजननता कम करने में महत्वपूर्ण तथ्य साबित हो सकती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला रोजगार हेतु सरकार को विशेष कार्यक्रम बनाये जाने चाहिए ताकि वे अवकाश के समय में अपने को आर्थिक कार्यों में समायोजित कर सकें और अपने व अपने परिवार के आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने में योगदान दे सकें। ग्रामों में महिलाओं की लघु व कुटीर स्तर के व्यवसायों में अभिरुचि पैदा करने के लिए सरकार को योजना पूर्व महिला उद्यमता शिविर आयोजित करना चाहिए ताकि उनको योजना की जानकारी के साथ उनमें जाग्रति व आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न की जा सके।

4) सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य जो ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता विभिन्नता का कारण है वह है शिक्षा ग्राम स्तर पर शिक्षा के प्रसार के सरकार को ईमानदारी से कदम उठाना अति आवश्यक है। आजकल ग्रामस्तर पर जहाँ विद्यालय है वहाँ शिक्षा का स्तर बहुत ही निम्न है

जिसके लिए उनके कार्यकलापों का निरीक्षण व पर्यवेक्षण अति आवश्यक है। शिक्षा प्रसार व शैक्षिक वातावरण अलग-2 महत्वपूर्ण कारक हैं क्योंकि ग्रामीण व नगरीय प्रजननता के अध्ययन के क्रम में यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि समान शिक्षा स्तर के बावजूद भी ग्रामीण व नगरीय महिलाओं में प्रजननता विभिन्नतायें परिलक्षित हुई है अतः शिक्षा प्रसार के साथ ही ग्रामीण वातावरण को शैक्षिक वातावरण के रूप में परिवर्तित करना ग्रामीण प्रजननता को नियन्त्रित करने में अति महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को शिक्षित करने हेतु प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों को केवल कागज पर न चला कर वास्तविक रूप से चलाया जाना चाहिये ताकि ग्रामीण महिलाओं की समझदारी में वृद्धि हो और वह अपने घर परिवार को सामाजिक रूप से प्रतिस्थापित करने हेतु छोटे परिवार के महत्व को समझ सके।

5) ग्रामीण महिलाओं में प्रकटित उच्च प्रजनन दर को नियन्त्रित करने हेतु उनके शैक्षिक स्तर का विकास किया जाना अति आवश्यक है। हमारे ग्रामीण समाज में आज भी बहुत पारम्परिक विचारधारा प्रवाहित है। कहने का तात्पर्य यह कि ग्रामों में आज भी लड़की को पढ़ने हेतु स्कूल भेजना अच्छा नहीं माना जाता। उनका विचार यह अभी भी है कि लड़की को पढ़ना लिखना आवश्यक नहीं है क्योंकि उसे घर के अन्दर भोजन व अन्य कृषि दैनिक कार्य ही करना होते हैं इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों

मे प्रचलित मान मर्यादाएँ भी लड़की की शिक्षा के लिए बाधक है जबकि यह सर्वविदित उक्ति है कि बच्चे की प्रथम गुरू माता होती है अतः बच्चे के बौद्धिक विकास एवं उचित मार्ग दर्शन हेतु माँ का शिक्षित होना अति आवश्यक है, जिसके विपरीत ग्रामीणों मे विचार-धारा बहुत गहरे बैठ गई है । इस कुविचार को दूर करने के लिए सरकार को महिला या लड़की के शिक्षित होने की उपयोगिता पर विशेष ध्यान देने हेतु ऐसे कार्यक्रम रेडियो, टी0वी0, समाचार पत्रों व परिवार कल्याण विभाग के कार्यकर्ताओं द्वारा सम्पादित करवाये जाने चाहिए ताकि महिला शिक्षा की दिशा मे ग्रामीणों की विचार-धारा को परिवर्तित किया जा सके और महिला शिक्षा के प्रसार द्वारा प्रजननता दर को नियन्त्रित किया जा सके क्योंकि यह अज्ञान ही है कि ग्रामीण महिलाओं मे प्रजननतादर अधिक है जबकि उनकी आय अत्य अल्प है जबकि नगरीय महिलाये मे शिक्षित होने के कारण ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा कम प्रजनन दर होती है जबकि नगरीय उनकी आय ग्रामीण महिलाओं से काफी अधिक होती है । यह शिक्षित होने का ही परिणाम है ।

6) धर्म हमारी भावनाओं व आस्थाओं से जुड़ा हुआ पहलू है । वैसे तो कोई भी धर्म गलत परम्पराओं व नीतियों का हामी नहीं है परन्तु समय-

समय पर धर्माचार्यों व इनके ठेकेदारों ने धर्म के स्वरूप को निहित स्वार्थवश गलत ढंग से परिभाषित किया है जिसके अनेकों दुष्परिणाम हमारे सामने हैं । अतः ग्रामीण प्रजननता में वृद्धि को दृष्टिगत रखते हुए सभी सम्प्रदायों के धर्माचार्यों को उचित दिशा में समाज को मोड़ने हेतु अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति में परिवर्तन करना चाहिए ताकि ग्राम स्तर पर ग्रामवासियों के मन में सन्देह को दूर किया जा सके । सन्तान पैदा होना ईश्वरीयदेन है, अधिक सन्तान पैदा करना अल्लाह का सबब है और धर्मानुयायियों में वृद्धि ही धर्म, समाज व ईश्वर की सेवा है । ऐसी गलत मान्यताओं को समाप्त कर दिया जाना चाहिए । जनसंख्या में सीमित वृद्धि से ही हम प्रगति की ओर अग्रसर हो सकते हैं ।

धर्म को तार्किक स्तर पर विश्लेषित करने के लिए ज्ञान अर्थात शिक्षा एक आधार शिला की तरह है । अतः यदि हम सही दिशा में योजनाओं की सफलता की ओर अग्रसर होना चाहते हैं तो शिक्षा प्रसार को सर्वोच्च प्राथमिकता देना होगी । शिक्षा प्रसार से ही ग्रामीण पुरूष या महिलाएँ सीमित परिवार के महत्व को समझ सकते हैं और स्वार्थी धर्माचार्यों के उन उद्देश्यों को ध्वस्त कर सकते हैं जो वे जनसंख्या वृद्धि को धार्मिक व ईश्वरीय आदेश कहकर जनसंख्या वृद्धि के लिए लोगों को प्रोत्साहित करते हैं । शिक्षित दम्पति यह निर्णय ले सकता है कि अधिक बच्चे होने पर क्या-क्या कठिनाईयाँ परिवार, समाज व देश

को झेलना पड़ सकती है ।

7) समग्र रूप से ग्रामीण व नगरीय महिलाओं पर शिक्षा, आर्थिक स्तर, परिवार के व्यवसाय, धर्म व उनके निवास करने के स्थान का उनकी प्रजननता पर भिन्न-2 प्रभाव पड़ता है ।

आज भी ग्रामीण क्षेत्र प्रत्येक स्तर पर अविकसित है इसलिए ग्रामीण महिलाओं की प्रजननता नगरीय महिलाओं की अपेक्षा अधिक है । ग्रामीण महिलाओं में प्रत्येक जाति, सम्प्रदाय की जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण इस सन्दर्भ में अति महत्वपूर्ण व आवश्यक है क्योंकि हमारे देश की तीन चौथाई जनसंख्या आज भी ग्रामों में निवास करती है इसलिये ग्रामीण महिलाओं की प्रजननता कम करने हेतु प्रजननता पर पड़ने वाले प्रभावों को प्रभावशाली ढंग से लागू करने हेतु ईमानदारी से प्रयास किये जाने चाहिए । तब ही ग्रामीण व नगरीय प्रजननता विभिन्नता व ग्रामीण प्रजननता पर नियन्त्रण किया जा सकता है ।

SELECTED BIBLIOGRAPHY

REFERENCE BOOKS:-

Agarwal, S.N. : Age at Marriage in India, Allahabad Kitab Mahel, 1962.

Donald, J.Boug : Principal of Demography, New York, John Willey & Sons, 1969.

Donald, J.Boug : "International Migration in Philip M.Homer & Holis Dubley Dunccun (ed.), The study of Population, New Delhi; Asia Publishing House, 1961.

Geoffrey Hawthorn : "The Sociology of Fertility, London, Collier - Macmillian Limited, 1979.

Jain, K.B. : Arthsastra Ke Siddhant, Prashan Kendra, Agra, 9th edition.

Jakaria, K.C. : Migrants in Greater Bombay, Demographic Training & Research Centre Bombay, Research Monograph No.5, Bombay Asia Publishing House, 1968.

Kanitkar, T. & Bhende, Asha A. : Principles of Population Studies Himalaya Publishing House, Bombay 1985.

Krishna Namboodri, Narayan : "Social System and Human Fertility Toward a Theortical Framework, Michigan, University of Michigan, 1963.

Mamoria, C. & Jain, S.C. : Bharat Kee Arthik Samasyaen, Agra, Sahitya Bhavan, 1986.

Mehrotra, G.K. : "Effect of Education of Fertility in Kerala, in R.S.Kurup and K.A.George (ed.), Population Growth in Kerala, Trivandrum Demographic Research Centre,1966.

Patni, R.L. : Jannankikee Avam Jansankhyatmak, Samasyaen, Sanjeev Prakashan, Meerut, 1984.

Prabhu, J.C. : "Social and cultural Determinants of Fertility in India; A Codification of Research Findings, Massachusetts, University of Massachusetts, 1970.

Richard Easterlin : "Towards a Socio-Economic Theory of Fertility; A Survey of Recent Research on Economic Factors in American Fertility in S.I.Behrmen et.al,(eds.) Fertility and Family Planning; A world view, Am Arbor The University of Michigan Press, 1966.

Richard Freedman : Sociology of Human Fertility, New York Irvongton Publishers Inc., 1975.

Tilara, Kuwar Singh : Jannankikee Ke Siddhant, Prakashan Kendra, Lucknow, 1982.

Vijai Laxmi, P. : "Populations Growth and its Control in Rural and Urban Areas; Family Planning Role of Government and Social Organisations in Proceedings of Seminar on Problems Relating to Demography, 1966 Hyderabad, Bureau of Economics & Statistics, 1967.

SEMINAR , REPORTS & JOUNRAL

Abraham, Sarah : Low Age at marriage for females in India in proceedings of Seminar on implications of Raising, the female age at marriage in India, Bombay DTRC, 1968, 55-60.

Agarwal, S.K. : Higher Education and Family Planning News, January 1968, 9(1), 16-18.

'Effect of a rise in Female marriage age on birth rate in India' in proceeding of world population conference,1965, Balgrade, Vol.11, New York, United Nations, 1967, 172-

'Mean Duration of Fertile Union in India from census data, in proceedings of 6th International Conference on Planned Paranthood, New Delhi, London, International Planned Parenthood Federation 1959, 89-93.

Agarwal, S.N. : 'Raising the marriage age for Women- A means to lower the Birth rate' Economic and Political Weekly, 24th,December,1966, 1(19) 797-98.

'Social and Cultural factors effecting fertility in India Population, review, January 1964, 8(i) 73 - 78.

'Widow re-marriage in some rural areas of Northern India, Demography, 1967, 4(i), 126 - 34.

Anand, K. : 'Analysis of Inter-generation Fertility; Indian Journal of Social Works, January 1967, 27(4), 361 - 66.

Basavarajappa, K.G. and Balvalgided, M.I.

'Changes in age at marriage of females and their effect on the birth-rate in India, Engenics Quarterly, March 1967,14(1), 14-26

Bebarta, Profulla, C. : 'Attitude of woman towards family planning; A study in difference by Family type in six village of Delhi quarterly journal of Indian studies in social science, January 1967, 78-84.

'Family type and fertility-A study in six villages; Economic and political weakly, 26 November, 1966, 1(55), 633 - 34.

'Study of differential fertility in certain villages of coastal Orrisa, Bombay IIPS, 1960-33(32).

Bhatia, J.C. : 'Attitudinal study of rural males in Punjab village; Family planning News, July 1967, 8(7), 7-9.

Bisht, N. et.al. : 'Women's attitude towards family planning Swarthhind, December,1959, 3(12), 245.

Chandrase karan, C.et,al: Enquiry into Reproductive Patterns of Bangalee Women, Calcutta, All India Institute of Hygiene and Public Health, 1951.

Chandrasekran, C. : 'Indian Fertility in a changing Economic and Social Setting;Family Planning News, October 1962,3(10), 228-36.

Chaudhari, S.R.N. : Family life Education in School curriculum, Jhansi- Government Intermediate College.

Chaudhury, N.K. and Kotowitz.Y. : Some simple Economic Demographic Relationships- The Canadian Experience, "in Proceedings of World Population Conference,1965, Belgrade, Vol. IV, New York, United Nations, 1967.

Das, Nitai Chandra : 'Note on the Effective postponement of Marriage on the total Fertility and Female Birth Rate, in Proceedings of General Conference of the IUSSP,1969, London, VOL.1.

Das, Nitai Chandra : 'Note on the Effect of postponement of Marriage on Fertility,' in Proceedings of World Population Conference, 1965, Belgrade, 1966.

Datta, J.M. : 'Influence of Marital life on the Reproductive Cycles in Women, 'Journal of Family Welfare June, 1959.

Demographic Research Centre, Trivandrum - 'Social and Cultural Aspects of Fertility of Women in Kerala, Trivandrum DRC, 1970.

Derothe, S. Thomas, Research Memorandum of Migration- Differential, New York, Social Science Research Council Buletin, 1938.

Derothe, S. Thomas, Research Memorandum of Migration- Government of India, Planning Commission, Second Five Years Plan, 1956.

George W. Roberts : 'Fertility Background papers, U.N. World Population Conference, Belgrade, 1965.

Girdhar, G. : 'Study in Trends of Fertility through Birth Internal Data in India, Bombay, Demographic Training and Research Centre, 1970.

Govindachari : 'Education for family Living in proceedings of Fifth All India Conference on Family Planning, Patna, FPAI, 1964.

Govindachari : 'Re-survey of Fertility Behaviour of Employees: The IST-Jadavpur-Institutional Study, 1964-65, Calcutta.

Gulati Subhash, G. : 'Impact of Literacy, Urbanisation and Sex-Ratio on Age at Marriage in India, Artha Vijna, December, 1969.

Gupta, R. : 'Cultural, Factors in Birth-Rate Reduction in Rural Communities of Uttar Pradesh, Family Planning News; Feb, 1965.

Harvey Leibenstein : 'An Interpratation of the Economic Theory of Fertility Promising Path or Blind Alley?" The Journal of Economic Literature.

Husain, I. Z. : 'Educational Status and Differential-Fertility in India; Social Biology, June 1970.

Husain, I. Z. : 'Mean Age at Marriage and Differential, Fertility, in proceeding of General Conference of the IUSSP, 1969, London, Vol. I.

Husain, I. Z. : 'Mean Age at Marriage and Nationality (State and Divisional Estimates), Lucknow Demographic Research Centre, 1962, VI, 68.

Husain, I. Z. : Ministry of Information and Broad-Casting India 1970, Publication Division, New Delhi.

Husain, I. Z. : Ministry of Information and Broadcasting India 1976 & 1984 Publication Division, New Delhi.

Indian Institute of Public Opinion New Delhi: 'Urban Attitudes towards Family Planning' Monthly Coommentary on Indian Economic Conditions, Feb., 1968.

Jain, S. P. : 'Indian Fertility - Our Knowledge and Gaps', Journal & Family Welfare June 1964 and September, 1964.

Jain, S. P. : 'Religion and Social Differentation- A Town in Uttar Pradesh, Economic and Political Weekly, 20 Jan.,1968.

Jorapur, P.B. : 'Fertility Study of Dharwar;Journal ofthe Institute of Economic Research, July 1967.

Joseph, P. J. : 'Timely Sex Education can contribute to Happy Family Life' Family Planning News, July 1969.

Kale, B. D. : 'Contents of Female Education and Age at Marriage in Urban India - A District Level Study; Journal of the Institute of Economic Research July, 1969.

Katti, A. P. and Hasalkar, J. B. : Study of Sterlized Males in Rural Belganm; Dharwar, Institute of Economic Research, 1970.

Kerala, Economics & Statistics, Bureau of 'Demographic Research Centre, Social and cultural Aspects of Fertility of Women in Kerala (Population Studies, 103) Trivandrum Bureau of Economics and Statistics, 1970.

Kingslay Davis and Judith Blake : "Social Structure and Fertility; An Analytic Frame-work," Economic Development and Social changes, Vol. 4, April, 1956.

Kleinmen, D. S. : 'Observations on Economic Correlates of Rural Fertility in India, 'Population Review, December 1970.

Krishna Namboodri, Narayana : 'Social System and Human Fertility towards a Theoretical Framework. Michigan, University of Michigan, 1963.

Rale, J.R. : 'Study of Rural-Urban Fertility Differentials in India, Bombay, International Institute for Population studies, 1959.

Nag, Moni : 'Family type and Fertility; in proceedings of world Population Conference, Belgrade, 1965, New York, United Nations, 1967.

Parkasi, Kanti : 'On some Social Aspects of Fertility and Family in India; Indian Journal of Social Work, July 1966.

Raina, B. L. : Potentialities for Fertility Reduction under a Planned Economy in Indian Population Bulletin No. 3, New Delhi.

Robinson, Warren C. : 'Note on Indian Fertility Differentials, Indian Economic Journal, April 1961.

Robinson, Warren C. : 'Urban - Rural Difference in Indian Fertility; Population Studies, March 1961.

Shankar Singh, V. R. : 'Fertility Difference in Northern & Southern Regions of Mysore State; Journal of Family Welfare, June 1970.

Sinha, J. N. : Differential Fertility and Family Limitation in an Urban Community of Uttar Pradesh, Population Studies, November 1957.

Sinha, Radharaman, P. : Urbanisation and Fertility Differentials Journal of Social Research, March 1962.

Srivastav, M. L. : 'Relationships between Fertility and Mortality Characteristics in Stable Female Population' Eugenics Quarterly, September 1967.

United Nations : 'Population Bulletin of the United Nations, No. 7, 1965, New York, 1965.

United Nations Interim : 'Report on Conditions and Trends of Fertility in the World 1960-65, Population Studies No. 26, New York, 1972, Chapter II and V.

Vaishwanar, P.S. and Deshpande, J. N.:

'Male Factor in Fertility and Infertility, Indian Journal of Physiology and Pharmacology, October, 1959.

Visaria, Pravin. M. : 'Mortality and Eertility in Indian 1951-1961, Milbank Memorial Fund Quarterly January 1969,47(1)

W. Parker, Mauldin : 'Fertility Trends; 1950 - 75' Studies of Family Planning, Vol. 7, No. 9, Sept.1976.